जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरि जीके "आज्ञानुसार"

श्रीधर्मशील सद्गुरुभ्यो नमः

# बृहद् खरतरगण पंचप्रतिक्रमणसूत्रार्थ

## तथा १६ स्तोत्रसूत्रार्थ.

भाषाकर्त्ता उपाध्याय श्री रामऋद्धिसारजी गणिः

(मंत्री वाचक वैद्य)

श्री जीतभद्रजी गणिः प्रवर्तक,

प्रसिद्धकर्त्ता विद्याशाला

शिष्य प्रेमचंद अमरचंद मालक वीकानेर.

वीरस० २४३९ विक्रमस० १९७०

मुंबईमें

निर्णयसागर छापखानेमें रामचंद्र यशवंत शेडगे

इनोंके प्रबंधसे छपवाया

प्रथमावृत्ती १०००

शाके १८३५, सन १९१३

निछरावल २)

Printed by R. Y. Shedge, at the N. S. Press, 23, Kolbhat La
Kalbadevi Road, Bombay.

---

Published by Premchand Amarchand, Bikaner,
Marwar, Rangadi.



## ॥ विज्ञापन ॥



विदितरहै श्रीभगवान महावीर स्वामीके ११ गणधरोका नवगच्छ हुआ सामाचारी सवोंकी एकथी इसतरे सुधर्मा स्वामीसैं पट्टप्रवाह चला, वाद जो जो आचार्योंके नामसैं गच्छ अलग २ होते गये लेकिन् सामाचारी मैं फरक नहीं था वह गच्छोंके नाम कल्प-सूत्रमैं लिखे हुये हैं कालदोषसैं वह गच्छ लुप्त होगये मूल सुधर्मा स्वामीकी पट्टपरपरामैं त्यागी वैरागी आत्मार्थी ज्ञानगर्भित क्रियावत श्रीउद्योतनसूरि एक प्रभावीक आचार्य विक्रमसवत् हजार सरू प्रवेशसमय विचरते थे उनोंके निजशिष्य वर्धमान और वाकी ८३ स्थविरोंके शिष्य गुरु पास विद्याध्ययन करते थे, किसी उत्तम समयमैं धर्मका विशेष उद्योग करणे गुरूने सिद्धवडके नीचे एक निज शिष्य ८३ विद्यार्थियो एव ८४ शिष्योंको सूरिमत्र दे के आचार्यपद दिया वर्द्धमानसूरि निज शिष्यके शिष्य जिनेश्वर-सूरि नें उपकेशरिगच्छी आदिक पार्श्वनाथके सतानी तथा और सव चैत्य द्रव्यभक्षक शिथलाचारी असजतियोंको ज्ञानयुक्त उग्र क्रियासे शास्त्रार्थमैं जिनाज्ञा विरुद्धता उनोका कर्तव्य सिद्ध किया विक्रम सवत एक हजार अस्सीकी शालमें अणहिलपाटणमैं दुर्लभ राजाके समक्ष, तव राजानैं इनोंका सिद्धात शुद्धज्ञान और कठिन क्रिया देख कहा, गुरु खरतर हो, खर कहते क्रिया और ज्ञानसें करडे, तर कहते जादा करके, अथवा खआकाशे, रकहतें, रमति, तर अतिशयेन, इतिखरतर, सूर्यकीतरे ज्ञानक्रियासैं, विशेष देदीप्यमान, इसवास्ते खरतर विरुद दिया, तेसैं लोकभाषासें कहा तमैं खराछो, चैत्यवासियोंको कहा तमेकुअलाछो, इसतरे वृहद्गच्छ पदधारियोंको खरतर विरुद मिला उस वख्त उनोंके सघसघनैं चैत्यवासियोका गच्छ छोडदिया १७ गोत्र जिनेश्वर सूरिः के उपासक भये, फक्त एक गोत्र उनोंको मानते रहे तव चैत्यवासीकेइयक सावधान होकर श्रावकोंको अपणी ममतामैं फसाणे कहणे लगे जिनेश्वर जो तुमको कहगयाहैके महावीरदेवके ६ कल्याणक कल्पसूत्रमें लिखाहै, तथा, पच हत्थुत्तरेहोत्था साइणा परि निव्वुएभयव, यह तो ऐसा लेख कल्याणकका वाचक नहीं किंतु यह पाच वस्तु उत्तरा फाल्गुणीमैं हुयेहैं इनको पाच वस्तु सूत्रकार भद्रवाहुस्वामीनैं कहाहै, ऐसाही पाठ जवूद्वीप पन्नत्तीसूत्रमैं लिखाहै, यथा, उसभेण अरहा कोसलिए पचउत्तरा-साढे अभी इच्छेहोत्यत्ति, तो ऋषभदेव स्वामीका राज्याभिषेक कल्याणक इस अपेक्षा ठहरताहै तो उस राज्याभिषेक कल्याणकका उपवास पोसह प्रमुखक्रिया जिनेश्वरनैं तुमैं क्यों नहीं वतलाई इसवास्ते जिनेश्वरका पक्ष झूठाहै यह गर्भापहार तो निंदनीक कार्य छिपाणेलायक है इत्यादिक कुयुक्तियें लगाणेसैं केइयक अल्पज्ञ भोले गृहस्थी फेर इनो

शिथलाचारियोंसैं परिचय करणे लगे, जिनेश्वरसूरिः मालवदेशमें विचरतेरहे इसवास्ते चैत्यवासियोंका दाव लगा ज्ञानवंत दृढसम्यक्तवंततो, इनकुयुक्तियोंसैं सर्वथा डिगे नहीं, ऐसैं धीरे २ शिथलाचारी फैलणेलगे, जिनेश्वरसूरिः के पट्ट जिनचंद्रसूरिः भये जिनोंनें संवेग रंगशालादिक अनेक ग्रंथ वणाये इसमें शिथलाचार निषेधक अनेक उपदेश किया इनोंके गुरुभाई श्रीअभयदेवसूरि इनोंके पट्टपरस्थापनभये इनोंनें नवांगीवृत्ति, तथा आगम अठोत्तरी, जयतिहुअण ३२ स्तोत्र इत्यादि अनेक ग्रंथ रचे इनोंके जिनवल्लभ-सूरिः पट्टविराजै तव जगे २ चैत्यवासी पूर्वोक्त हठवादके प्रपंचसैं जोरसोर मचाया तव श्रीजिनवल्लभसूरिः नें इनोंका झूठा कदा ग्रह मिटाणे इनोंकों इसतरे निरुत्तर किये, यथा, भो भो पक्षपातियों जो जंवूद्वीपपन्नत्तीका लेख है सो हमकों मंतव्य है लेकिन् अवल तो राज्याभिषेकका दिन कोणसाहै सो उस दिन पच्चख्खाण पोसा कियाजाय, और पोसहमें चिंतन क्या किया जावेगा राज्यसंवंधी रथ, घोडे, हस्ती सेन्या सुभट युद्ध तोप वंदूक अस्त्र शस्त्र किसी कसूर दारकों ताडना वधवंधन वेडी डालना इत्यादिकही विचार कर्म्मवं-धनका हेतु आरंभकाही ध्यान होणेसैं कहो विवेकविकलो भव्य जीवोंकै कोनसा कल्याणका कारण होगा सो व्रत पच्चखाण पोसह किस अपेक्षा भव्यजीव किस तिथीकों करै सो वतलावो और कल्पसूत्रके पाठके लिखे गर्भापहार तो भव्य जीवोंके कल्याणका हेतु है अवल तो गर्भापहारकी तिथी प्रगट है दुसरे सूत्रकारनें तीन २ वखत दृढा २ कर ये पाठ लिखा है गर्भमें आये वाद ८३ मैं दिन इंद्रके हुक्मसैं गर्भापहार कल्याणक हुआ इसमैं व्रत पच्चखाण पोसहमें ऐसा चिंतन भव्यजीव करसकताहै हे जीव तीन लोकके नाथ तरणतारणभी कर्मोंके उदयसैं जातिमद गोत्रमदके करणेसैं भिक्षाचर कुलमें आके पैदा भये इसवास्ते मेरे जैसै जीवकी तो वुन्यादही क्याहै तव वह इत्यादि ध्यानसैं कल्याणताकों प्राप्त होताहै इस न्यायगर्भापहार निश्चै कल्याणकारी होणेसैं कल्याणकहे अगर तुम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें भये ५ कल्याणकोंको ५ वस्तु कहते हो गर्भापहार कल्याणककों निषेध करणे तो इस मैं तो वह दृष्टांत तुमारेमैं सावत होताहै यथा जैसैं चोवेजी छव्वेजीवणणेकों चले आगे जाते दुव्वेलोकोंकै जजमानोंके क्षेत्र आगया, अव चोवेजी, घर २ प्रति जैयमुनामइयाकी जैदाऊदयालकी, जजमान चकानचक्की घुटवादे, करते फिरे जजमानोंनै पूछा आप कोनसै व्राह्मनहो, चोवेजी वोले चोवा, जजमान वोले, दुवे सिवाय व्राह्मण होतेई नहीं अव जहां जिसके घरजावै उहां यही वात तव चोवेजी मारे भूखके, फिरते २ थकगये तव वोले अरे सारे हम तो दुवेही थे, लेकिन् मेरी मूआरांडने भूखसैं मरावेकों चोवा २ नाम धरदिया, हमभी इसीवास्ते तुमें चोवा वतला दिया, दुवेही समझ या पेटकी लाय तो वुझा, तव आटा दाल घी सक्कर भरपूर उसनैं दिया इसतरे दुवेवण २ खूबमालघर २ सैं चखते रहै एक दिन

कोई मथुराका वणिया उसही वस्तीमें किसी व्यापारकेवास्ते चला आया चोवेको पहचानके बोला अजी चोवेजी तुम तो ठग्नेजीवणने गयाजी आयेथे इहा तो उलटे घरकेही दोय खोवैठे तव चोवा वोला अरे वणिये चूलेमें परो चोवा चूलेमें गिरो छ वा चकानचक्की कराणे तो दुवाही अच्छा वह हाल तुमारा है एक गर्भापहारको निषेधणेकों च्यवन १ जन्म २ दीक्षा ३ ज्ञान ४ जो जो कल्याणक तुमारे पूर्वाचार्य तथा समस्त जैनसंघ अनादिकालसें मानते चले आये सो इस पेटभराईके ख्यालमें चोवे जी मुजव निजमतव्यसें जिनाज्ञा भगकर और मूल सद्दर्शन सद्ज्ञान दोनोंही खोवैठे चैत्यवासी होणेसें चारित्रका तो लेशभी नहीं था, तव जिज्ञासूने पूछा भो गुरू, शिथिलाचारी, चैत्यवासी, ये दोनों सदशहै या कुछ फरक है, गुरूने कहा शिथलाचारी अनत ससार नही रुलता लेकिन् चैत्यद्रव्यभक्षक चैत्यवासी अनत ससारी होताहै, फेर हे विवेक विकलो तुम प्ररूपणा करतेहो गर्भापहार, निंदनीक कार्यहै जिसकू कल्याणक नहीं मानना, अरे तत्वबुद्धिरहित पक्षपातियो जरा जिनाज्ञाकाकोप रखो, अगर गर्भापहार निंदनीककार्य होता तो क्षायकसम्यक्तवत सूर्याभदेवता भगवान महावीर प्रभूके समवसरणमें गणधर साधु साध्वियें श्रावक श्राविकायें इद्रादिक देवते इद्राणीप्रमुख देवियें नरपतियोंके सामने भक्तिपूर्वक ३२ वद्धका नाटककरता गर्भापहार नाटक करके दिखायाहै देख रायप्रश्नी उपाग इस अपेक्षाकू विचार अगर कल्याणक न होता निंदनीक होता तो १२ पर्षदाके समक्ष ये गर्भापहारनाटक परमसम्यक्ती सूर्याभदेव कैसें कर दिखाता, इसवास्ते गर्भापहार कल्याणक न माननेसें उत्सूत्रभाषकपणा सिद्ध होताहै तुम अपणा पक्षमें ग्रहस्थोंको करणे सूत्रसें विरुद्ध प्ररूपणा करतेहो इसवास्ते मैं भुजा ठोककर तुमें समझाताहू के गौतमादिक गणधर श्रुतकेवली जो पाटानुपाट गर्भापहार कल्याणक मानते प्ररूपते चलेआये जिसको क्यों स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियोसें सूत्रपाठ निरावते हो इत्यादिक अनेक शुद्ध जिनवचनानुसार समझाणेमें अनेक भव्यजीव समझकर शुद्धश्रद्धानपर थिर हुये इनके पट्टपर श्रीजिनदत्तसूरि हुये जिनोंने अपणे गुरूकी स्तुतिमें लिखाहै हे गुरु ये अपूर्वमहिमा आपकीहै सो जो सूत्रविरुद्ध प्ररूपणा करणेवाले द्रव्यलिंगिये गर्भापहारका कल्याणक नहीं माननेवालोंको नहीं दृष्टिगोचर हुवा ऐसा जो सूत्रपाठ सो आप देखके उनोंके वास्ते प्रगटकर दिखाया आचारागकी टीकामें पाच उत्तराफाल्गुनीमें हुये स्वातीमें निर्वाण पाये ऐसा लिखाहै लेकिन् ५ वस्तु हुवा ऐसा नहीं लिखाहै वाकीके ४ को कल्याणक कहै तो ५ मा कल्याणक स्वत सिद्ध हो चूका, श्रीहरिभद्रसूरिरचित यात्रापचासककी टीकामेंभी अभयदेवसूरि टीका करते सामान्य कथनसें ५ कल्याणक दिखायाहै विशेष कथन उहा नहीं कराहै अगर प्रतिपक्षी ऐसा कहेगेकी अभयदेवसूरि ने गर्भापहारका दिन क्यों नहीं

लिखा गर्भापहार कल्याणक होता तो दिनभी लिखते, अहो प्रतिपक्षियो, जब कल्प-सूत्रके मूलपाठसैं गर्भमें आयेबाद ८३ मां दिनगर्भापहारका लिखदियाहे इससे तिथि प्रगट सिद्धहै आसाढ सुदि ६ गर्भमें अवतरे तब आश्विनसुदि १३ तेरस गर्भापहार कल्याणक तिथी हुईया नहीं जो तुम यात्रापंचासककी टीकामें गर्भापहारका दिन नहीं लिखणेसैं क्या गर्भापहार आश्विनवदि १३ कों नहीं मानोगे तिथी नहीं लिखणेसैं कल्याणक नहीं मानोगेतो अैसे तो वहुतसैं लेखसूत्रोंमेंही नहींहै साधूपाणी रातकों कितना वजनमुजव रखै और संवेगी सवसाधू विद्यमान कालमेंभी रखतेहैं उपाशकदशा-सूत्रमें आनंदजीकै १२ कोटि सोनइये नगदीका वयानहै तो स्त्रीके गहना अणघटित सोना वासण वरतन प्रमुख उसके घरमैं थाया नहीं निशीतसूत्रमें वेप्रमाण ओघा रखणेवालेकों डंड लिखाहै लेकिन् प्रमाण विलकूल लिखा नहीं तो फेर ओघेकी डंडी किस प्रमाण रखणेमें आतीहै प्रवचन सारोद्धार पीछे वणाहै ओघे डांडेके मोगरा किस शास्त्रमैं लिखाहै पातरोंके किसमुजवरंग लगातेहो ये किस शास्त्रमें लिखाहै आनंदजीके ४० हजार गऊथी, कामदेवजीके ८० हजार वतलावो वछावछी होताथा उसकूं रखेतो व्रतभंग वेचे तो कर्मादान लगे इत्यादि लेख शास्त्रोमें हजारों नहींहै तो क्या मानोंगे नहीं गर्भापहारका दिन जब कल्पसूत्रमैं लिखा मौजूदहै तो फेर अैसे उलटे प्ररूपककों क्या समझना सो वुद्धिवान् विचार सकतेहैं, तपगच्छके, कुलमंडणसूरिः अपणे वनाये ग्रंथमैं छकल्याणक महावीरदेवके मंजूर कियाहै वृहद्गच्छ खरतर इसकी सामाचारी आगमानुसार देखके परपक्षियोंनें संवत् सोलेसेमें अपणा सिक्का अलग जमानेकूं किसीअेकने सामाचारी भिन्न करके ३० बोल कुछकेकुछ लिखडाला उनोंके आचार्योंनें खराव समझा तव वह चला नहीं, लेकिन् किसी जगे उस १ का लिखा ग्रंथ रहगया, वह आधुनिक एकनें उसकों विधिमैं प्रकाशकर शुद्धसामाचारी ८४ गच्छकी एकथी उसमें भिन्न सामाचारी प्रगटकर जिनप्रतिमा निंदकमतकों छोड जिन-प्रतिमा कवूल तो करा लेकिन् गुरुकुलवाससैं गीतार्थगुरुसैं आगम नहीं पढणेसैं और पिछले मतका मिथ्यात्व वासना रहणेसैं सोरठदेश शत्रुंजय तीर्थाधिराज जैसी भूमिकोंभी अनार्यदेशकी प्ररूपणाकरी, चतुर्दसीका विलकुल क्षय होणेसैं १३ जो दर्शनतिथी, उसमैं चारित्रतिथीकी क्रिया, उपवास, पोसह, पक्षीका कर्त्तव्यभी करणासरूकरा, भोलेजीवोंनें कवूल करलिया, लिखणेका तात्पर्य यह है की विवेकी जीवोंनें कदा ग्रह छोड जिनाज्ञामुजव खरतरकी सामाचारी जाण के इसकी क्रिया अनुष्ठान आचरण करणा देवचंद्रजी उपाध्याय जस विजयजी विक्रमसंवत् सतरेमें कदा ग्रह मिटाणेका प्रयत्न करा था नवपदजीकी पूजामैं खरतर तपा दोनों रचित एकजगे करकै पढणा

संघमैं सरू करा दिया, थोडी भिन्नता विजयसेनसूरि.जी पूर्वोक्त कदाग्रही ग्रथसैं जो पूर्वोक्त ३० बोलोंमैंसैं गुजरातमैं सरूकीथी, उसकू मिटाय, खरतर तपोकों, सामाचारीसैं एककर देणा विचारा, लेकिन् आयुष्य दोनोका पूर्ण होगया, अबभी समयानुसार दोनों गीतार्थ मिलकै अेकता करसकतेहैं, मुक्ति पहुचणे, दोनों साधुओनें स्त्री परिग्रह छोडाहै, भेदभाव मिटाणा आत्मार्थियोंकों कामहै, इस एकतासैं, धर्मकी निश्चै-वृद्धि होगी, तपागच्छी कहतेहैं जिनवल्लभसूरि नैं ६ कल्याणक, महावीर प्रभूके प्ररूपे, खरतर गच्छवाले कहतेहैं गणधरोंसैंही पट्कल्याणककी प्ररूपणा चली आतीहै, जिसकों चैत्यवासी शिथिलाचारियोंनें उत्थापकर ५ की प्ररूपणा करी, उनोंमुजब ही धर्मसागरजी उपाध्याय विजयदानसूरि. जीके चेलेनें ३० बोलोंमें, ६ कल्याणकभी उत्थाप दिया, कुमतिकुद्दाल नामका ग्रथ बणाया, औष्ट्रिक वगेरे अपशब्दोकी वृष्टि करी, इससे पहिले तपगच्छका कोईभी ग्रथ खरतर गच्छसैं भिन्न सामाचारीके कदा ग्रहका नहींहै, तब श्रीजिनचद्रसूरि. पाटणमें, सब वर्त्तमान उस वक्तके गीतार्थ आचार्य उपाध्याय, वाचक, पन्यासोंकों, एकठेकर, सभामें धर्मसागरजीको बुलाया, सब आये, धर्मसागरजी नहीं आये, तब ये बात, हीरविजयसूरि.जीनें सुणी, और विजयदानसूरि जीकों लिखा, विजयदानसूरि. मेडतानग्रमें, जो प्रतियें इस कुमतिकुद्दाल ग्रथकी पाई, सब जलशरण करदी, लेकिन् कोई प्रति किसी जगे रहगई, ये बात सुण हीरविजयसूरि.ने, अपणे संघमैं, हुक्मनामा जारी किया, उसमैं ७ हुक्महै, ये पत्र तो विकानेरवडे उपासरेके भडारमैं अभी मौजूदहै, उसमैं खरतर गच्छको अपणे मतव्यमुजब जिनाज्ञामुजब लिखाहै, आजकलकै ग्रथभापामैं बणाके छपाणेवालोंनें जो जिनवल्लभसूरि श्रीजिनदत्त-सूरिकों अपशब्द लिखा, तो फेर उन लिखणेवालोकी पोलभी, केई २ पडितोंनैं खोलणेमैं कमी नहीं रखीहै, रैलिक इत्यादि, खरतर तपा दोनो पूर्वाचार्योंके रचे ग्रथ दोनोंही गच्छवाले, वाचतेहैं, अगर अेकता नहीं होती तो सभामैं, पढके कैसैं सुणाते, बस अेकता करणाही श्रेयहै

कोई आजकल ऐसाभी कहतेहैं साधवी व्याख्यान सर्वथा नहीं करे, ये कहणाभी असगतहै, सूत्रोंमैं साध्वियोंकों, इग्यारे अगोंकी पढणेवालिया फरमाईहै, व्याख्यान, साधवी, श्रावक, श्राविका, दोनों उपस्थितमैं, करसकतीहै, फक्त श्रावकोंकेसन्मुख नहीं करसक्ती, इसवावत तपागच्छी सेनप्रश्नमें इसतरे लिखाहै

तथा साध्वी श्राद्धानामग्रे व्याख्यान न करोतीत्यक्षराणि कुत्र ग्रथेसतीति, अत्र दशवैकालिकवृत्ति प्रमुखग्रथमध्ये, यति केवलश्राद्धीसभाग्रे, व्याख्यान न करोति, रागहेतुत्वादि-

त्युक्तमस्ति, तदनुसारेण साध्व्यपि केवलश्राद्धसभाग्रे व्याख्यानं न करोति, रागहेतुत्वादिति ज्ञायते, इति ॥ १३ ॥

केईयक ऐसाभी कहतेहैं जो ग्रहस्थ १२ व्रतधारी नहींहै उनोंनें प्रतिक्रमण क्यों करणा क्योंके प्रतिक्रमण तो व्रतोंमें अतीचार लगे, उसकूं करणा योग्यहै. उत्तर, हे महोदय, जैसें सरकारी सेनाके सिपाही, कवायत, प्रेटं, त्रिकट, करतेहैं, इसकारणकों समझो, ये करणा, उस आगामी कार्यसिद्धिकेवास्तेहै, जो व्यवहार रावेगा, वह किसीनकिसीदिन, काललब्धिसें, निश्चय आवश्यकका फलभी हासल करेगा; तैंसेंही, यह प्रतिक्रमणकूं, आवश्यक कहाहै, यदवश्यंक्रियते तदावश्यकं, जो अवश्य करणा उसकूं आवश्यक कहतेहैं, हमारे जैनसंघमें, इस आवश्यकका अर्थ जाणनेवाले स्वल्पहै, केवलसूत्रोच्चारणमात्र, प्रतिक्रमण करते हैं, उनोंकों, फक्त द्रव्यआवश्यक समझणा, भावप्रतिक्रमण जबही सिद्ध होगा की, जब यह प्रतिक्रमणसूत्रके उच्चारतेसमय, अर्थोंपर लक्ष देतेंरहेंगें, इसवास्ते मैंनें, अर्थयुक्त छपानेका प्रयत्न कियाहै, विस्ताररुचिवाले कहैंगेंकी संक्षेप अर्थ लिखाहै, सचहै, विस्तारअर्थनीचे लिखाजाणेसें, सूत्रका मूलअर्थ, अल्पज्ञोंके, समझमें, आणा मुस्कल था, इसवास्ते, सूत्रार्थही, अबोधिजीवोंके,बोधकेवास्ते लिखाहै, संक्षेपजाणेबाद, विस्तारार्थ जाणना सुलभ होगा, दूसरा आजकल जैनसंप्रदाईयोंका, खयालत, यहभी बहोतहै, इसपुस्तकके दाम जादाहै, छापेका क्या, अेक पोथीदीकी,झटहजार दो हजार नकल,तइयार होजातीहै, इसमें तो, हम इतनाही, कहणाकाफी समझतेहै, गर्भवंतीकी वेदना, वंध्यास्त्री क्या समझतीहै, जो ग्रंथ वणातेहैं, लिखतेहैं, और शुद्ध करतेहैं, वही तत्वज्ञ, इसस्वरूपके वेत्ताहैं,दामफक्त लगीहुई रकमके, साहूकारके व्याजअदातक,लगाणा वाजवहैं, हजार पुस्तक कितनेवर्षोंसें विकेगी, विवेकीजाणसक्ते हैं सीधा छपाणेसें, टब्बार्थ छपाणेमें, दामडोढेलगेहैं, मेरे घरमें प्रेस नहींहै, सो सस्तादाम वणादूं, गुणकेग्राहक तो अपूर्वपरिश्रम देख,मन और धनसें उत्साहता दिखलातेहैं, अेक मुस्त सबकोई खरीदेतो, सवाया दाम लगाके, मैं देसक्ताहूं, सत्यप्रतिज्ञाहै, अन्यथा तो, कृपणोंका स्वभावहै, दिलचाहेसो कहै, यतः नार्घंति रत्नानिसमुद्रजानि, परीक्षका यत्र न संति देशे, आभीरघोषे किल चंद्रकांतं, त्रिभिर्वराटैप्रवदंतिगोपाः,' १, अर्थ, समुद्रके पैदाभयेरत्नपूजाप्रतिष्ठा नहीं पातेहैं, परीक्षक जिस देशमें नहींहो, आभीरदेशकेघोष निश्चै चंद्रकांतरत्नका गोवालिये तीनकोडी मोल कहतेहैं, तद्वत्, अस्तु, इस अर्थके लिखणेमें दोष रहाहोय तो विबुधजन शुद्धकर पढेगें, मुझे इस प्रतिक्रमणसूत्रकी टीका मिली नहीं, न सब स्तोत्रोंकी, लेकिन सद्गुरु, तथा वाग्वरदाकी कृपासें, भाषार्थ लिखाहै, शब्दोंका अर्थ अनेकांतहै, छापेके दोषसे जो अशुद्धियां रहीहोय, तो महाशय क्षमेंगें.

---

## ( छपेहुये ग्रंथोंका विज्ञापन )

नूतन रत्नमागर, मजबूत कागद आगेसें बहोत उपयोगी वस्तुये ज्यादा जैनधर्मका सब धर्मकर्त्तव्य इसमें लिखाहै ५)

पूजामहोदधी, ३७ पूजा गायन विधियुक्त २।)

वैद्यदीपक, जैनवैद्यकीका अपूर्वग्रंथ ३५ हजार इसमें देशी युनानी डाक्तरी होमियोपथी सर्वविद्या इसमें मोजूदहै यथानामा तथागुणा ५)

शकुनशास्त्र, श्रीजिनदत्तसूरिरचित, इसमें दोपग्गे, चोपग्गेका शकुनफल, अंगफुरकण, गिलेरीपटन, वस्तुकीतेजीमदी, कालसुकाल देखणा, जमीनश्रेष्ठनेष्ट इत्यादि अनेक विवरण, राजियेका दोहा ॥=)

महाजनमुक्तावली, अश्वपति ६७६ गोत्रउत्पत्ति महेश्वरी, अग्रवाल, श्रावगी, हूंवड इत्यादिक ४ वर्णोत्पत्ती अनेक विवरण १॥)

सत्ज्ञानचिंतामणि, शोलेचाणाक्यका अर्थ मनचिंता कहणेकी शकुनावली, जैनस्वरोदय भाषा, ॥=)

सिद्धमूर्त्ति, मुसलमान, ईसाई, कबीर, दादू, नानक, इत्यादि मतोंसे मूर्तिसिद्ध, आर्यासामाजियोंकों उत्तर, जैनधर्म सबधर्मोंसे आदिसिद्ध दर्शायाहै, ॥)

सिद्धमूर्ति भाग दूसरा, ३२ सूत्रोंके मूलपाठसें मूर्तिपूजासिद्ध दर्शाईहै, २२।१३ पथियोंके ७४ प्रश्नोंका उत्तर, ३२ सूत्रोंमे जो फर्कहै, वहभी दर्शायाहै, ॥।)

ग्रहस्थ व्यवहार, ससारनीति, धर्मनीति, धन कमाणेका यह ग्रंथ है, १)

करुणाबत्तीसी, दादागुरुकी मनयुक्त गायनपूजा, मनकामनासिद्धिगत ।)

गुणविलाश २२ समुदायका, इसमें १३ पथीयोंको उत्तर, भावनानिलाम, २४ जिनसवइया, अणगार ३२ पाचसमवायसवइया, साधूकरणी, श्रावककरणी, और वैराग्यउपदेशके अनेक स्तवन १)

सामुद्रकस्वप्नकल्पतरु, इसमें पुरुष और स्त्रियोंके अगके शुभाशुभफल, स्वप्नआताहै उसका फल, ॥=)

## ( पुस्तक मिलणेका पत्ता )

१ बीकानेर मारवाड उपाध्याय श्रीरामलालजीगणि.की विद्याशाला मोहलारांघटी
२ मुंबई निचला भोईवाडा, श्रीचिंतामणिजीका मंदिर वैद्य,वाचक श्रीजीवणमलजीगणि.
३ मुंबई पायधोणी जैनमागरोलसभा, मेघजी हीरजी बुकसेलरपास.

---

# खरतर वृहद्गच्छ अर्पणपत्रिका.

श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनचारित्रसूरीश्वरजी वीकानेर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनचंद्रसूरीश्वरजी, जयपुर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीसिद्धसूरीश्वरजी, वीकानेर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनरत्नसूरीश्वरजी लखनेऊ.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनफत्तेंद्रसूरीश्वरजी बालोतरा.
श्रीमन् संवेगी आचार्य श्रीजिनयशसूरिः
श्रीमन् संवेगी मुनिराजपंडितप्रवर श्रीकृपाचंद्रजीमुनिः
संवेगी श्रीमन् पं. प्र. तिलोकसागरजीमुनिः.
श्रीमन् पं. प्र. सुमतिसागरजीमुनिः मणिसागरजीमुनिः
श्रीमती संवेगण साध्वी लक्ष्मीश्रीजी पुण्यश्रीजी सोवनश्रीजी प्रतापश्रीजी विवेकश्रीजी सिणगारश्रीजी विमलश्रीजी प्रेमश्रीजी प्रमुखठाणे १५१ खरतरगण धर्मोपदेशक यती वर्ग १०००१ जयतु रायसाहब श्रीवद्रीदासजी राजकुमार सिंहजी रायकुमारसिंहजी कलकत्ता.
सेठ श्रीमान् चांदमलजी केसरीमलजी रतलाम.
सेठ श्रीमान् जीतमलजीनथमलजी, लस्कर गवालियर
सेठ श्रीमान् फूलचंदजी नेमिचंदजी, फलवर्धी.

औरभी दादागुरुदेवकेभक्त खरतरगछानुरागी सर्वश्रीसंघके येपुस्तक मैं अर्पणकर्त्ताहूं. अगर श्रीमान मुझें मदतदेतेरहेंगें तो जरूर मैं खरतरवृहद्गच्छकी जैसी सेवा वजाताहूं क्षयोपशम मुजवदिन २ अधिक २ तर वजाता रहूंगा.

आपका कृपाभिलाषी जैनधर्मोपदेशक उपाध्यायश्रीरामलालगणिः वाचक. श्रीजीवणमलगणिः शिष्य पं. फूलचंद्र पं. विजयचंद्र, चि. प्रेमचंद्र चि. अमरचंद्र, वृहत्खरतर भट्टारकगच्छ वीकानेर मारवाड विद्याशाला, ये सर्व पुस्तक सरकारके अेनमुजव रजिष्टरहै कोई दूसरा छापेगा तो दंड भागीहोगा.

---

# अनुक्रमणिका.


| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| नवकार मंत्र .. | १ | ज्ञानादिगुणयुताना | ३१ |
| इरियावहि . | १ | यस्या क्षेत्रसमाश्रित्य | ३१ |
| लोगस्स . . | २ | परसमयतिमिरतरणिं | ३१ |
| करेमिभंते | ३ | अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु | ३२ |
| भयव दसण्णभद्दो | ४ | वरकणयसखविद्रुम | ३२ |
| जयतिहुअण . . | ४ | सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो | ३२ |
| जयउ सामिहि | १२ | श्री सेढीतटनितटे | ३३ |
| कम्मभूमिहि . | १२ | चउक्कसाय | ३३ |
| नमोत्थुण . , | १३ | अर्हंतोभगवंत | ३४ |
| उवसग्गहरपास . | १४ | करेमिभंते पोसह | ३४ |
| जयवीयराय जगगुरु | १५ | ठाणे कमणे चकमणे | ३४ |
| अरिहतचेईयाण . | १५ | संथारा उवट्टणकी . | ३५ |
| वेयावच्चगराण | १५ | जगचूडामणि उपदेशमालासिझाय | ३५ |
| वदणवत्तियाए | १५ | निस्सही २ राईसंथारागाथा | ४० |
| ससार दावानलस्तुति | १६ | देसावगासी पच्चक्खाण, अर्हन्नमते० | ४३ |
| पुक्खरवर दीवड्ढे | १७ | चवदे नियमगाथा | ४४ |
| सिद्धाण बुद्धाण . | १७ | पच्चक्खाणअर्थ | ४४ |
| वादणा . | १८ | अठारे पापस्थानक | ४७ |
| अतीचारकी ८ गाथा | १९ | लघुशाति | ४७ |
| देवसिय आलोएमि | २० | दूजथुई महीमंडण | ५० |
| वदित्तु | २१ | पचमीथुई पचानतक | ५१ |
| अब्भुट्ठिओमिअब्भितर | २१ | एकादशीथुई अरस्यप्रव्रज्या | ५२ |
| आयरिय उवज्झाए | २८ | चतुर्दशीथुई द्रेंद्रेंकि | ५३ |
| इच्छामोणुसट्ठि | २९ | तिजयपुहत्त स्तोत्र | ५४ |
| नमोस्तुवर्द्धमानाय | २९ | दोसावहार द्वात्रयी | ५६ |
| जयमहायस | ३० | भक्तामरस्तोत्र | ५९ |
| सुवर्णशालिनी स्तुति | ३० | कल्याणमंदिरस्तोत्र | ७२ |
| चतुर्वर्णीय सघाय स्तुति | ३० | वृहच्छांतिस्तोत्र | ८४ |
| यासाक्षेत्रगतासति | ३१ | जिनपंजरस्तोत्र | ९२ |
| कमलदलविपुलनयना .... .... | ३१ | ऋषिमडलस्तोत्र | ९५ |
| | | जगद्गुरुस्तोत्र ... .... | १०२ |

| | पृष्ट. | | पृष्ट. |
|---|---|---|---|
| दशपच्चरक्खाणमूल .... .... | १०५ | सीमंधरस्तवन .... .... | १२३ |
| आगार संक्षा गाथा .... .... | १०७ | सिद्धाचलस्तवन .... .... | १२३ |
| सोगन दिराणेका पच्चक्खाण .... | १०७ | वडास्तवन प्रतिक्रमणमें कहणेका .... | १२३ |
| पच्चक्खाण पारणेकीगाथा .... | १०७ | पार्श्वनाथजीका छोटास्तवन .... | १२४ |
| नवग्रहमंत्र पूजाशांतिविधि ... | १०७ | सप्तस्मरण .... .... .... | १२४ |
| पांचूंतिथियोंकाचैत्यवंदन .... .... | ११३ | अठपहरी पोसहविधि, देववंदनविधि, अष्टमी, | १५२ |
| रोहणीतपचैत्यवंदन .... .... | ११४ | पोसह पारणविधी .... .... | १५६ |
| सीमंधरजिनचैत्यवंदन .... .... | ११४ | दिनचोपहरी पोसहविधि .... .... | १५६ |
| सिद्धाचलचैत्यवंदन .... .... | ११४ | रातचोपहरी पोसहविधि .... .... | १५७ |
| सामायकलेणेकीविधि .... .... | ११४ | अष्टमीथुई दशमीथुई अमावसस्तुति | १५७ |
| सामायकपारणेकीविधि .... .... | ११५ | नपपदथुई .... .... .... | १५९ |
| देवसी प्रतिक्रमणविधि .... .... | ११५ | पर्यूपणथुई .... .... .... | १५९ |
| राई प्रतिक्रमणविधि .... .... | ११७ | अतीचार आलोयण .... .... | १५८ |
| सद्गत्त्या चैत्यवंदन अर्थ .... .... | ११८ | साधुप्रतिक्रमण सूत्र .... .... | १६७ |
| पक्खीप्रतिक्रमणविधि .... | १२१ | दादासाहबका स्तवन .... .... | १७५ |
| चोमासी प्रतिक्रमणविधि .... .... | १२२ | दादासाहबका सवइया .... .... | १७५ |
| संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि .... .... | १२३ | प्रशस्ति .... | १७५ |




## प्रथम ग्राहक महाशय.

| | |
|---|---|
| ज यु-प्र भ १००८ श्रीजिनचारित्रसूरि॰ बृहत्खरतराचार्य, | ५ |
| साधवी श्री सोवनश्रीजी फत्तेश्रीजी सा श्री आनदश्रीजी श्रीकल्याणश्रीजी | ५ |
| प श्री गणेशचद्रजीमुनि॰ वीदाशर | १ |
| सा श्री गोपालचद्रजी वाठिया, वीकानेर | १ |
| सा श्री पेमकरणजी मरोटी, वीकानेर | १ |
| साधवीश्री प्रेमश्रीजी | ५ |
| सा श्री जमुनालालजी कोठारी | ५ |
| रायसाहव वद्रीदासजीराज कुमार रायकुमारसिंह कलकत्ता. | ५ |
| सा श्री धनसुखदास मेघराज लूणिया वीकानेर. | १ |
| सा श्रीइश्वरदास पूनमचद चोपडा वीकानेर | १ |
| सा. श्री मानमल केसरीचदसाड वीकानेर. | १ |
| सेठ श्री मगलचदजी शिवचद श्रावक वीकानेर | १ |
| सा श्री फूलचद नेमचद गुलावचद गोलछा फलोधी | १ |
| प. प्र श्री पूनमचद सुमेरमलमुनि॰ वीकानेर | १ |
| सा श्री सुगुणचद्र गगाराम वेगाणी वीकानेर | १ |
| सेठ श्री पूनमचदजी दीपचदजी सावणसुखा वीकानेर. | १ |
| सा श्री सदाराम शिखरचद गोलछा वीकानेर | १ |
| मा श्री शिववगसजी कोचरमुहता वीकानेर | १ |
| सा श्री पूनमचद आनदमल कोठारी वीकानेर | १ |
| सा श्री उकारजी भेरूलाल माणकलाल महिदपुर | १ |
| श्रीयुत हेमकरणजी मरोटी चद्रपुर | १ |
| सा श्रीसूरजकरणजी अमाणी वीकानेर. | १ |
| सा महकिरण मरोटी मुकाम चघनूर | १ |
| मा केसरीमल मारला तिनरी | १ |
| सा अमोलकचदजी चोरडीया खजवाणा | १ |
| सा चुनीलालजी छाजेड किसनगढ | १ |

श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः

# खरतरबृहद्गच्छीयसार्थपंचप्रतिक्रमणसूत्र

नमस्कारअरिहंतोंको, नमस्कारसिद्धोंको, नमस्कारआचार्योंको,
**नमोअरिहंताणं, नमोसिद्धाणं, नमोआयरिआणं,**
नमस्कारउपाध्यायोंकों, नमस्कारलोकमेंसर्वसाधुओंको, येपाचनमस्कार,
**नमोउवज्झायाणं, नमोलोएसव्वसाहूण, एसोपंचनमोक्कारो**
सर्वपापोंकानासकरणेवाला, मंगलफेरसर्वोमें, प्रथमहोयमंगल, १
**सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणंचसव्वेसि, पढमंहवइमंगलं, १**
चाहताहू हेक्षमाश्रमणसाधू, वंदनाकरणे शक्तियुक्त,, शरीरसेति,
**इच्छामिखमासमणो, वंदिउजावणिज्जाए, निसीहिआए,**
मस्तकसें वंदनकरताहू, १, इच्छाकर्त्ताहूंहेभगवान्, सुखसेंरात्री, सुखसेंदिन,
**मत्थएणवंदामि, १, इच्छकारभगवन, सुहराइ, सुहदेवसी,**
सुखसेंतपस्या, शरीररोगरहित, सुखसेतीसंजमकीजात्रा, सुखसेंनिभातेहो,
**सुखतप, शरीरनिरावाध, सुखसंजमजात्रा सुखेनिरवरोछो,**
है स्वामीआपकेसुखशाता,
**है स्वामीसुखशाता,**
इच्छाकरकै, आज्ञादेओ, हेभगवान्, रस्तेगमनकरते पीछाहटताहू,
**इच्छाकारेण, संदिसह, भगवन्, इरियावहियंपडिक्कमामि,**
गुरुकहे पीछाहट, प्रमाणमुजब, चाहताहू, पीछेहटना, रस्तेमेंचलते
**(पडिक्कमह), इच्छं इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए,**
जीवकीविराधना, जाते, आते प्राणियोंकोदावाहो, वीजोंकोदावाहो,
**विराहणाए, गमणा, गमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे,**
गीलीवनस्पतीदावीहो, ओस, कीडीनगरा, फूलण, पाणी, मट्टी, मकडीकाजाला,
**हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कड, संताणा,**
दावाहो, जो कोइ मेनें जीवविराधाहो, एकेंद्रीयजीव, दोइंद्रीयजीव, तीनइ-
**संकमणे, जेमेजीवाविराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदि-**

द्रिय, चारइंद्रियजीव, पांचइंद्रियजीव, सन्मुखआतेहणा, धूडसेंढका, जमीनपरघसा,
**या, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया,**
सामलकिया, अडाया, परितापउपजाया, खेदपहुंचाया, त्रासपहुंचाया,
**संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया,**
एकठिकाणेसें दूसरीजगेरखा, जीवितव्यसेंरहितकिया, उसकापापमिथ्या
**ठाणाओठाणसंकामिया, जीवियाओववरोविया, तस्समिच्छामि**
हुओमेरा, उसकाफेरशुद्धिकरणेकूं, प्रायश्चित्तकरणेकूं, विशेषपणेशुद्धिक
**दुक्कडं, तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर**
रणेकूं, शल्यरहितकरणेकूं, पाप, कर्म्मोंका, समस्तपणेघातकरणेकूं
**णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणठाए,**
करताहूं कायोत्सर्ग, ये१२वातवर्जके, उंचाश्वास, नीचाश्वासलेणेसें, खासीसें,
**ठामिकाउसग्गं, अन्नत्थ, उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं,**
छीकसें, जंभाइखाणेसें, डकारसें, अधोवायुनिकलणेसें, चक्करआणेसें, पित्त
**छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त**
कीमूर्छासें, जरासाअंगहिलाणेसें, जरासा खंखारके आणेसें,
**मुच्छाए, सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,**
जरा आंखेटमकारणेचलाणेसें, इनोंकोंआदिलेकर, आगारवर्जके, अखंडित
**सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो,**
अविराधित, हुओमेरा, कायाकाउत्सर्ग, जहांतक, अरिहंत, भगवं
**अविराहिओ, हुज्जमे, काउसग्गो, जाव, अरिहंताणं भग**
तोंकों, नमस्कारकरके, नहीमेंपारपहुंचाउं, उहांतककायाकूं, एकठिकाणे, मौनसें,
**वंताणं, नमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं**
ध्यानसें, आत्माकूं वोसराताहूं,
**झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि,**
लोककेविषैउद्योतकारी, धर्मतीर्थकेकरणेवालेजिन, अरिहंतोंकोमेंकीर्त्तनकरूंगा,
**लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंतेकित्तिइस्सं,**
चोवीसोकेवलीभगवान,१, ऋषभफेरअजितकोंवंदू, संभवअभिनंदन, फेर,
**चउवीसंपिकेवली,१, उसभमजिअंचवंदे, संभवमभिणंदणं, च,**

सुमतीकों, पद्मप्रभुकोसुपार्श्वकों, जिनऔरफेरचंद्रप्रभकोवंदू,२, सुविधिफेरदूसु
**सुमइंच, पउमप्पहंसुपासं, जिणंच चंदप्पहंवंदे,२, सुविहिंच**
रानामपुष्पदंतकों, शीतल, श्रेयांसकों, फेरवासुपूज्यकों, विमल, अनंतफेरजिनकों,
**पुप्फदंत, सियल, सिज्जंस, वासुपुज्जंच, विमल, मणंतंचजिणं,**
धर्मकों, फेरशांतिकोवांदताहू,३, कुंथु,अर, फेरमल्लिकों, वंदताहूमुनिसुव्रतकों, नमि
**धम्मं, संतिंचवंदामि,३, कुंथुअरंचमल्लिं, वंदेमुणिसुव्वयं, नमिजि**
जिनकों, वंदताहूअरिष्टनेमिकों, पार्श्वतैसेंफेरवर्धमानकों,४, एसेंमेंनेस्तवेहुये,
**णंच, वंदामिरिट्ठनेमि, पासंतहवद्धमाणंच,४, एवंमएअभि**
झडकायाँहैकर्मरजमैल, क्षयकिये जरामरण, चौवीसोंहीसामान्यकेवलि
**थुआ, विहुयरयमला, पहीणजरमरणा, चउवीसंपिजिण**
योंमेंश्रेष्ठ, तीर्थंकरोमेरेपरकृपाकरो, ५, कीर्त्तनायोग्य, वंदनायोग्य पूजाकेयोग्य, जोइस
**वरा, तित्थयरामेपसीयंतु, ५, कित्तिय, वंदिय, महिया, जेएलो**
लोकमें, उत्तमसिद्धभये, निरोगता सम्यक्दर्शनकालाभ, समाधिप्रधानउत्तमदेओ६,
**गस्स, उत्तमासिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमंदिंतु ६,**
चंद्रमाकेसमूहोंसेजादानिर्मल, सूर्योंकेसमूहोंसेंजादाप्रकाशकारक, समुद्रकीतरे प्रधान
**चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसुअहियंपयासयरा, सागरवर**
गंभीर सिद्धभगवानोसिद्धिमुझकोंदो,
**गंभीरा, सिद्धासिद्धिं ममदिसंतु,**

इच्छाकरके आज्ञादेओ, हेभगवान्, जाणेआणेमेंभयापापकोनिचारूं,
**इच्छाकारेणसंदिसह, भगवन्, गमणागमणआलोउंजी,**
इच्छाकरके, आज्ञादेओ, हेभगवन्, प्रसादकरके, समताकरणेकादंडकपढावो,
**इच्छाकारेण, संदिस्सह, भगवन्, पसायकरी, सामायकदंडकउच्चरावो**
कर्त्ताहूं हेपूज्यसामायक, पापकारीजोगकाप्रत्याख्यान, जहांतकनियममें,
**करेमिभंते सामाइयं, सावज्जंजोगंपचक्खामि, जावनियमं**
सेवाकर्त्ताहूं, दोप्रकारतेसेंतीनप्रकार, मनकरके, वचनकरके, कायाकरके,
**पज्जुवासामि, दुविहंतिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं,**
नहींकरूं, नहींकराउं, उसपापोंसेंहेपूज्यपीछाहटताहूं, निंदताहूं, गुरुकी
**नकरेमि, नकारवेमि, तस्सभंतेपडिक्कमामि, निंदामि, गरि**

साखनिंदताहूं, आत्माकूं पापोसेंछुटाताहूं,
**हामि, अप्पाणं वोसिरामि,**
भगवान् दशार्णभद्र, सुदर्शन, थूलभद्र, वज्रस्वामीआदिक, सफलकि
**भयवंदसणभद्दो, सुदंसणो, थूलभद्द, वयरोय, सफली**
यागृहस्थावासछोडके, साधूइसप्रकारकैहोतेहैं, १, साधुओंकेवंदनकरणेसें.
**कयगिहचाया, साहूएवंविहाहुंति, १, साहूणवंदणेणं,**
नासहोताहैपाप, शंकारहितभावोंसें, प्रासुकदाणदेनेसें, निर्जराकर्मोंकीहोतीहैं,
**नासइपावं, असंकियाभावा, फासुअदाणे, निज्जर,**
समस्तपणेग्रहणहोताहैज्ञानादिकका, २, छद्मस्थपणेमनकीमूर्खतासें, कितनेमा
**अभिग्गहोनाणमाईणं, २, छउमत्थोमूढमणो, कित्तिय**
त्रभी, यादकरेयेजीव, जोफेरनहींयादआवैमुझकों, मिथ्या, मेरा,
**मित्तंपि, संभरइजीवो, जंचनसंभरामिअहं, मिच्छा, मि,**
पाप, उनसवोंका, ३ जोजो, मनकरकेविचाराहो, अशुभ, वचनसें, भाषणकिया,
**दुक्कडं, तस्स, ३ जंजं, मणेणचिंतिय, मसुहं, वायाए, भासि**
होथोडासाभी, अशुभकायासेंकियाहो, मिथ्याहुओमेरापापउनसवोंका, ४,
**यंकिंचि, असुहंकाएणकयं, मिच्छामिदुक्कडंतस्स, ४,**
सामायकपोषधमेंअच्छीतरेरहेभये, जीवोंकाजाताहैजोकाल,
**सामाइयपोसहसंठियस्स, जीवस्सजाइजोकालो,**
वहसफलजाणना, वाकीसवसंसारफलके, कारणहै, ५,
**सोसफलोबोधव्वो, सेसोसंसारफलहेउ, ५,**
अबचैत्यवंदन, जयवंतरहो, हेतीनभुवनमें, प्रधानकल्पवृक्ष,
**अथचैत्यवंदन, जय, तिहुअण, वरकप्परुख्ख,**
जयवंत, जिनधन्वंतरवैद्य, जयवंततीनभुवनमेंकल्याणकेभंडार, पाप,
**जय, जिणधन्नंतरि, जयतिहुअणकल्लाणकोस, दुरि**
रूपहस्तीकूंसिंहजेसें, तीनभुवनकेमनुष्योंने, नहींउलंघीहेआज्ञाजिनोंकी,
**यक्करिकेसरी, तिहुअणजण, अविलंघियाण, भुवण**
हेतीनभुवनकेस्वामी, करोसुखोंकों, हेसामान्यकेवलियोंकेईश्वर, पार्श्वप्रभूस्तंभन
**त्तयसामिय, कुणसुसुहाइं, जिणेस, पासथंभणयपु,**

कपुरमेंरहेहुये,१, तुझकोस्मरते, पावै, जल्दी, प्रधान, पुत्रकलत्रस्त्रियादिकोंको,
**रहिय,१, तइंसमरंत, लहंति, झत्ति, वर, पुत्तकलत्तहि,**
धान्य, सोना, अणघडामयासोनासेंभराभया, मनुष्यभोगेराज्यको, देखेअनुभवे,
**धन्न, सुवन्न, हिरन्नपुन्न, जणभुंजइरज्जहि, पिख्खहि,**
मोक्षका, वेगिणतीकासुख, तुमारीकृपासेंहेपार्श्वप्रभू, इसकारण, हेतीनभु
**मुख्ख, असंखसुख्ख, तुहपासपसाइण, इय, तिहुअ,**
वनकेप्रधानकल्पवृक्ष, सुखोंकोंकरो, मेरेहेजिनराज,२ ज्वरसेंजर्जर,
**णवरकप्परुख्ख, सुख्खहिंकुण, मह्जिण,२, जरजज्जर,**
गलतकोढसेंशडेहुयेकान, गयेहैंहोठ, एसेकुष्टी, फूटीहेआख, क्षीणभयेक्षयसें
**परिजुन्नकन्नु, नट्ठुट्ठ, सुकुट्ठिण, चख्खुख्खीण, खए**
दुर्वल, मनुष्य, शूलरूपीशल्यवत, हेजिनतुमारे, स्मरणतथासरणरूप
**णखुन्न, नर सल्लिअसूलिण, तुहजिण, सरणरसायणे**
रसायणसे, जलदीहोय, फेरनये, हेजगधन्वतर, पार्श्वप्रभुमेराभी, तुमरोगके,
**ण, लहहुंति, पुणन्नव, जयधन्नंतरि, पासमहवि, तुहरो**
हरणेवालेहुओ, ३, विद्या, जोतिष, मन, औरतत्रोंकी, सिद्धियें, विनायल
**गहरोभव, ३, विज्जा, जोइस, मंत, तंत, सिद्धिओ, अपय**
किये, तीनभुवनमेंअचरजकारी, आठप्रकारकीसिद्धि सिद्धहोयतुमारेनामसे,
**त्तिण, भुवणब्भुअ, अठविहसिद्धि, सिज्झइतुहनामिण,**
फेरतुमारेनामसें, अपवित्र, मनुष्यभी, पवित्रहोताहे नीचकुलकाभीउच्चपदधराताहै,
**तुहनामिण, अपवित्तओवि, जणहोई, पवित्तओ, तं**
इसवास्तेतीनभुवनकेकल्याणकोसभडारतुमकोहेपार्श्वपडितोनेकहा, ४, दुष्टजो
**तिहुअणकल्लाणकोसतुहपासनिरुत्तउ, ४, खुदप**
कियाभत्रतनजनउनोंकोंनिरफलकरताहै, जगमऔरथावरजहरग्रहमगलादि
**उत्ताइमंततंतजताइंविसुत्तई, चरथिरगरलगहुग्ग**
तलवारयुक्तवैरियोंकावगोंकोंगजताहै, दुःखीजनोंकेसमूह, जोकीअनर्थमेंफसग
**ख्खग्गरिउवग्गविगंजइ, दुत्थिअसत्थ, अणत्थघ**
योंकों, सुखीकरतेहैंदयाकरके, उपद्रवोंकोहरो, श्रीपार्श्वदेव, इसकारण
**त्थ, नित्थारइदयकरि, दुरियइहरउ, सुपासदेव, दु**

आपदुरितगजकोंसिंहजेसेहो, ५, तुमारीआज्ञाथंभदेतीहै, डरावणेमदोन्मत्त
**रिअक्करिकेसरि, ५, तुहआणाथंभेइ, भीमदप्पुद्ध**
उत्कृष्टप्रधानदेवोंकों, राक्षस, यक्ष, नागकुमारोंकेवृंदोंकों, चौर, अग्नि फेरमें
**रसुरवर, रक्खस, जक्ख, फणिंदविंद, चोरा, नल, ज**
घकों, जलचरमकरादि, थलचारीसिंहादिक, डरावणेमारणेवालेपशू, जोगणियें, जोगी,
**लहर, जल, थलचारि, रउदखुद्दपसु, जोइणि, जोइय,**
इसहेतू, तीनभुवनमें, आपकीआज्ञाकोईनहींलोपसक्ता, उत्कृष्टपणेवर्त्तोहेपार्श्वअच्छेस्वामी
**इय, तिहुअण, अविलंघिआण, जयपाससुसामिय,**
६, मांगेभयेअर्थदेणेवाले, अनर्थोंकानाशकरणेवाले, भक्तिमेंभरेभये,
**६, पत्थिअअत्थ, अणत्थहित्थ, भत्तिब्भरणिब्भर,**
खडेभयेहैंरूंजिनोंके, मनोहरअंग, भुवनपतीव्यंतरमनुष्यवैमानिकदेव, जिनोंकासे
**रोमंचंचिय, चारुकाय, किन्नरनरसुरवर, जसुसे**
वतेहैं चरणकमलदोनों, केसेकचरणहैं, धोडालाहैकलहरूपपापजिनोंनें, वह,
**वइंकम कमल जुअलु, पक्खालियकलिमलु, सो,**
तीनभुवनकेस्वामी, श्रीपार्श्वमेरेमर्द्दनकरडारो, वैरियोंकावल, ७, जयवंतहो यो
**भुवणत्तयसामि, पासमहमद्दउ, रिउवलु, ७, जयजो**
गीयोंके, मनकमलकेभमरे, जयवंतहोडरसेडरेकोंपिंजरकुंजर, जयवंतहोती
**इय, मणकमलभसल, भयपंजरकुंजर, तिहुअण**
नभुवनकेजनोंकेआनंदचंद्र, जयवंतहोतीनभुवनप्रकाशकसूर्य, जयवंतहोवुद्धिरू
**जणआणंदचंद, भुवणत्तयदिणयर, जयमइमेइ**
पपृथ्वीकों, सींचनेमेघ, जयवंतहो, जगत्जीवोंकेदादा, हेथंभणपुरमेंरहेपार्श्वनाथ,
**णि, वारिवाह, जय जंतुपियामह, थंभणयठियपास**
नाथ पणाकरोमेरे ८ अवयेछ्द्वारदिखातेहैं, वहुतभेदसेंविष्णु, अवर्णमाहेश्वर,
**नाह, नाहत्तणकुणमह, ८, बहुविहवन्नु, अवन्नु, सु**
शून्यमतीबौद्ध, पंडितोनेंवर्णनकियाषट्बुद्धिसें, मोक्षधर्मकेकाम, अर्थोंकेअभिलाषासें, न्यारे२
**न्नु, वन्निउंछप्पन्नहिं, मुक्खधम्मुकाम, त्थकामुनिरु**
अपणे२वनायेशास्त्रोंमें जोध्यानसेंध्यातेहैं, वहुतसेदर्शनोंमेंरहेभये, वहुतसेतु
**नियरसत्थहिं, जंझायइं, बहुदरसणत्थ, बहुना**

मोरेनामप्रसिद्धकररखेहैं, यहजोगियोंकेमनकमलकाभमरा, सुख, हेपार्श्वउत्क
मपसिद्धउ, सोजोइअमणकमलभसल, सुह, पास
र्पपणेवधावो, ९, डरसेंव्याकुल, आपसमेंघसणेसेरणझणकरतेदांत, थरहरकाप
पवद्धउ, ९, भयविब्भल, रणझणिरदसण, थरहरियसरीर
ताशरीर, तरलातीभईआंख, विषादकरकेशून्य, गद्गदअप्रगटवाणी, करुणदीन, उसके
य, तरलिअनयण, विसन्नसुन्न, गग्गिरगिर, करुणय, तइंस
सगशक्तिस्मरणकरणेमेंहोयनहींनासहोणेवालीवडीगुफा, मेराबुझावो, जल्दी
रसरिसरंतिहुंतिनिरुनासियगुरुदर, महविज्झवि, सज्झस
यहनिश्चैहेपार्श्वडर, इसवास्तेभयपिंजरकुंजरहो, १०, आपकोंदेखपुलेनेनपनउसके
रिपास, भयपंजरकुंजर, १० पइंपासवियसियनित्तपत्त
अतसेंफैलाया, हर्षरूपआसुओंकापूरउसमेंडूबे, यहोतदिनोंकादुःखदाहको, यहाया मान
तपवित्तिय, बाहपवाहपवूढरूढ, दुहदाह, सुपुलिय, मनहि
तेहैं, मनमेंसपूर्णपुण्य, अपणीआत्माकोंदेवतथानर, इसवास्ते, हेतीनभुवनकेआनदचंद्र,
मन्नुसउन्नपुन्न, अप्पाणंसुरनर, इयतिहुअणआणंदचंद,
जयवंतपार्श्वजिनेश्वर, ११, तुमारेकल्याणउत्सवकेविषे, सुघोषाघंटाकाटंकार,
जयपासजिणेसर, ११, तुहकल्याण महेसुघंटटंकार, विपि,
संप्रेरित, यत्नरमालगाला, वडीभक्तिसें, इद्रादिकरोमांचितहोके, हलफलजल्दी
ल्लिय, वल्लरमल्ल, महल्लभत्ति सुरवरगंजुल्लिय, हल्लुप्फलि
करतेहैंअपणे, भुवनमेंभी महोत्सव, इसकारणमेंतीनभुवनकेआनदचंद्र,
यपवत्तयंति, भवणेविमहूसव, इयतिहुअणआणंदचंद,
जयवंतहेपार्श्वसुखोंकीखान, १२, निर्मलकेवलज्ञानकेकिरणोंकेसमूहमें, विध्वसकि
जयपाससुहप्पभव, १२, निम्मलकेवलकिरणनियर, विहुरिय,
या, अज्ञानकासमूह, दिखलायासमस्तपदार्थसार्थ, विस्तारदियाकालिकासमूह,
तमपहयर, दंसियसयलपयत्थसत्थ, वित्थरिअपहाभर, क
पापोंमेंमेले, जोमनुष्यहीघूघूलोकउनपापियोंकेनेत्रोंकेअगोचर, अज्ञानअंधेरे
लिकलुसिय, जणघुअलोयलोयणह अगोयर, तिमिरइंनि
कोनिश्चैहरो, हेपार्श्वनाथतीनभुवनकेदिनकर, १३, तुमारेस्मरणरूपजलवृष्टिसें,
रुहर, पासनाह भुवणत्तयदिणयर, १३, तुहसमरणजलवरस,

सींचीभइमनुष्यकीबुद्धिरूपपृथ्वी, नयेरसूक्ष्मअर्थोंकाबोधरूपनयेअंकूरपत्र
**सित्तमाणवमइमेइणि, अवरावरसुहमत्थबोहकंदलदलरेह**
सोभतेहैं, होवैज्ञानकाफलभरपूर, हरीजेदुःखदाह, ओपमारहित, इसवास्तेआप
**णि, जायइफलभरभरिय, हरियदुहदाह, अणोवम, इयमइमे**
मतिमेदनीकोंमेवहो, देओहेपार्श्वबुद्धिमुझें, १४, करीसंपूर्णकल्याणकीवेल, १,
**इणिवारवाह, दिसपासमइमम, १४, कयअविकलकल्लाणव**
काटदियादुःखकावन, २, दिखायास्वर्गऔरमुक्तिकारस्ता, ३ दुर्गतिमेंजाणेकों
**ल्लि,उल्लरियदुहवण, दाविअसग्गपवग्गमग्गदुग्गइगमवा**
रोका, ४, जगत्केजीवोंकेवापकेवरावर, जिसनेंपेदाकिया, हितकारी, रमणीकधर्मः
**रण, जयजंतुहजणगणतुल्ल, जंजणियहियावह, रम्मधम्म,**
वहजयवंतपार्श्वप्रभु, जगतूजीवोंकेदादा, १५ तीनभुवनवनमेंनिवासदरी[गुफामें,]
**सोजयउपास, जयजंतुपियामह, १५ भुवणारन्ननिवासद,**
ऐसेजोपरदर्शनीदेवता, योगनियें, पूतना, क्षेत्रपाल, दुष्टदेवतादिक, प
**रियपरदरसणदेवय, जोइणि, पूयण, खित्ताचाल, खुद्दासुर, प**
शुओंकासमूह, तुमारेकहेअर्थसेंभगेत्राससें, भययुक्त, वर्त्ततेहैं, इतनेकरतीनभु
**सुवय, तुहउत्तटसुनट्ठसुट्ठु, अविसंठुल, चिट्ठइ, इयतिहु**
वनवनमेंसींहजेसे, हेपार्श्व, पापोंकोंउत्कर्षपणेनासकरो, १६, धरणेंद्रकेफणोंकेदेदी
**अणवणसींह, पास, पावाइंपणासइ, १६, फणिफणफारफु**
प्यमान, रत्नमईकिरणोंसें, रंगाहुआआकाश, प्रियंगुकेनयेअंकूर, पत्तेतमालके, नी
**रंत, रयणकर रंजियनहयल, फलिणीकंदल, दलतमाल, नी**
लकमलजेसीश्याम, कमठअसुरकेउपसर्गवर्गके, संसर्गसेअगंजित, जयवंत
**लुप्पलसामल, कमठासुरउवसग्गवग्ग, संसग्गअंगजिय, ज**
प्रत्यक्ष, जिनेश्वरपार्श्व,स्थंभनपुरमेंरहेभये, १७, मेरामनचंचलप्रमादसें,
**यपच्चक्ख, जिणेसपासथंभणयपुरट्ठिय, १७, महमणुतरल,**
प्रमाणनहींहै, वचनभीठिकाणेनहींहै, निजशरीरभीअविनीत, स्वभावीहै,
**पमाणुनेय, वायाविविसंठुलु, नियतणुरविअविणय, स**
आलससेंपरवसहै, तुमारामाहात्मप्रमाणहै, हेदेव, करुणाकर
**हाव,आलसविहिलंघलु, तुहमाहप्पपमाण, देव, कारुणप**

केपवित्र, इसवास्तेमुझेंमतकृपाकरणेसेंअवगिणो हेपार्श्व पालोमिलापकरतेको, १८
वत्तउ, इयमइंमाअवहीर, पास, पालहिविलवंतउ,१८,
क्यास्यानिचारानहींमनसें, दीनपणेसें, क्यास्यानचननहींबोला, क्याक्यानहींचेष्टाकरी,
किंकिंकप्पिउणेय, कलुण, किंकिंवनजंपिउ किवनचिठि
कष्टसेंहेदेव, दीनताकूधारणकरकायामें, कोणसारनहींकियावोसननिर्फलगया,
उ,किट्ठदेव, दीणइमविलंबिओ, कासुनकियनिप्फल्ल,
लुलताइ, मैंनेंदुखकीआर्त्तपीडासें, तोभीनहींपाया, रक्षाकुछभीशरणनहींपाई,
ललु, अम्हेहिदुहत्ताइ, तहविनपत्ताउ, ताणकिंपि, पइंप
आपप्रभुकेछोडदेणेसें, १९, तूस्वामी, तूमातातूबाप, तूमित्रप्यारकाकरणेवाला,
इपरिचत्ताइ, १९ तुसामी, तुमायवप्प, तुमित्तपियकरू,
तूगति, तूमत्ति, तूहिजरक्षाकारक, तूगुरु, क्षेमकाकर्त्ता, मैंदुखकेभारसेंभरा,
तुगइ, तुमइ, तुहिजताण, तुंगुरु, खेमकरू, हुंदुहभरभा
रककगाल, हेराजेंद्र, मैंनिर्भाग्य, लियाहै, तुमारेचरणकमल,
रिय, वराउ, राउल, निभग्गउ, लीणउ, तुहकमकमल,
काहीशरण हेजिनमुझेंपालोअच्छीतरे,२०, तुमनेंकेईकियेनिरोगरोगरहित,
सरण, जिणपालहिचंगउ, २०, पइंकिविकयनीरोय,
लोक, केईपायेसुखसईकडों, केईबुद्धिवानहोगये, केईसर्वोत्तमहोगये
लोय, किविपावियसुहसय, किविमइमंत महंतकेवि,
केयोनेंमापलियेशिवपद, केयोनेंगंजडालावैरियोकावर्ग, केयोनें
किविसाहियसिवपय, किविगंजियरिउवग्ग, केविज
जगकीर्त्तिसुपेदकरीपृथ्वीकों, हेप्रभुमुझेनहींगिणताहै, किसकारण, हेपार्श्व,
सधवलिअभूअल, मइंअवहीरहि, केण, पास,
शरणागतवत्सल, २१, पीछाउपगारकराणेकीतुमेंआछानहीं, हेनाथतेरेनिर्दोषोंगरंग्र
सरणागयवच्छल,२१ पच्चुवयारनिरीह, नाहनिप्पन्नपयोअ
योजन, तूहेजिनपार्श्व, परोपकारकरणेतत्परहीहै, शत्रुपर
ण, तुहंजिणपास, परोवयाररकणिक्कपरायण, सत्तु
ओरमित्रपरसमपरापरहैचित्तकीवृत्ति, नमेपर, निंदकपर, समसनहो, मनअपमानकर
मित्तसमचित्तवित्ति, नय, निंदिअ, सममण, माअव
१

अयोग्यहूंतोभी, मुझेंहेपार्श्वनिरंजनपापरहित, २२, मेंबहुतप्रका
हीरि, अजुग्गओवि, मइंपासनिरंजण, २२, हुंबहुवि

रसें, दुःखसेंतपाभयाअंगहूं, तूंदुःखनासकरणेतत्परहै, मेंसुजनोंकेदयाकरणेका
ह, दुहतत्तगत्तु, तुंदुहनासणपरू, हूंसुयणहकरू

स्थानठिकाणाहूं, तूंनिश्चैदयाकरणेवालाहै, मेंहेजिनपार्श्वअस्वामिशाल
णिक्कठाणु, तुंनिरुककरुणाकरू, हुंजिणपासअसा

निर्नाथहूं, तूंतीनभुवनकानाथहैएसाहोकर, जोनहींधारताहै, मुझेंविलापा
मिसालु, तुंतिहुअणसामिय, जंअवहीरहि, मइंझ

तकरतेकों, येवातहेपार्श्वनहींअच्छीहै, २३, योग्यअयोग्यकाभेदाभेदहेनाथ,
खंत, इयपासनसोहिय, २३, जुग्गाजुग्गविभागनाहु

नहींदेखतेहैं आपजैसे, तीनभुवनकाउपकारकरणेकातेरास्वभावहै, करुणा
नहु जोयहितुहसम, भुवणुवयारसहावभाव, करू

दयारसमेंश्रेष्ठहै.जैसें, समऔरउंचीनीचीजगेक्यामेघदेखताहै, जमीनकादाह,
णारससत्तम, समविसमइ किंघणनएइ, भुविदाहु

समाते, इसवास्तेहेदुःखियोंकेवांधव, पार्श्वनाथ, मेरीपालनाकर, स्तवनाकरतेकी
समंतहु, इयदुहवंधव पासनाह मइपाल, थुणंतओ,

२४, नहींदीनोंकीदीनताकोंछोडके, औरभीकोइयोग्यताहोतीहै,
२४, नयदीणहदीणयमुएवि, अन्नाविकिविजुग्गय,

जिसकोंदेखकेउपकारकियाजाय, उपकारमेंउद्यमवंतमहापुरुषहोतेहैं, मेंदी
जंजोइयउवयारुकरइ, उवयारसमज्जइ, दीणह

नसेंभीदीन फेरहीन, जिसकारण, तैंनाथनेंमुझेंछोडा, इसकारणयोग्यमेंहीहूं,
दीण, नहीण, जेण तुहनाहिणचत्तउ, तउजुग्गउअ

निश्चैही, हेपार्श्वपालोमुझें, कल्याणजैसेहो, २५ अथओरभीयोग्यताका
हमेव, पासपालहिंमइं, चंगओ, २५ अहअन्नुविजुग्ग

विशेषपणाभी, क्यामानतेहोदीनदुःखियोंका, जोदेखकेउपगारकरेगा,
यविसेस,. किविमन्नहिदीणह, जंपासविउवयारुकरइ,

इसतरेतूंहेनाथसवोंका, तोवोहीयोग्यताविशेष, निश्चे, कल्याणजिसकरकै, हेजि
तुहनाहसमग्गह, सुच्चिय, किल, कल्लाणुजेण, जि

नतुमप्रगादकरतेहोतनतो, क्याऔरकरकैवहयोग्यताविशेष, इसवास्तेमतमेरा
णतुम्हपसीयह, किंअन्नुणतचेवदेव, मामइंअवही
अपमानकर, २६, तुमारीप्रार्थनानहींहोयनिरफल, एसाहेजिन,मे जाणताहू, तोक्या
रह, २६, तुम्हपत्थणनहुहोइविहल जिण, जाणउ, किं
फेर, मेंदु खियानिश्चै, सत्वरहित दुखेहोणेवाला, उत्सुकमनफलका
पुण, हुदुरिखउ, निरूसत्तचत्त, दुक्कह, उस्सुयमण,
लालची, एकपलकमेंयहभीजोकभीमिलजाय तोयहवातसचहोय,
तमन्नउ, निमिसेणण्णएउचिजइलम्भइ, सच्चंजं,
भूखलगेजय क्यागूलरफलताहै २७, हेत्रिभुवनस्वामी
भुखियवसेण, किंऊंबरूपचइ, २७, तिहुअणसा
श्रीपार्श्वनाथ, मेनेआत्माप्रकाशीमनकीवातकही, करोजोआपकेनिजरूपके
मिअपासनाह, मइअप्पपयासिउ, किज्जउजंनियरू
परानर, नहींजानताहूवहोतकहणा, दूसराकोई,हेजिन,जगतमेतुमारेपरान
वसरिस, नमुणंवहुजंपिउ, अन्नुण,जिण,जगतुहसमो
र, चतुरओरदयाश्रयनहीं, जोमुझेनहींगिणोगे, तुमहीज, अहहनडाखेद
वि, दक्खिन्नदयासउ, जइअवगिन्नसि, तुहिज, अहह,
क्याहोजाऊगानिरफलमनोरथ, २८, जोतुमारेरूपसेकिमहीप्रेत, पार्श्वयक्षव्यत
किंहोसिहयासउ, २८, जइतुहरूविणकिणविपेअ, पा
रनेंजोमेनेंआजदेखा, एसापार्श्वनाथकेरूपमेंठगा,तोभीजाणताहूहेजिनपार्श्वतुमनेमुझेअगीकार
इणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपासतुम्हहुअंगीकरि
किया, इसवास्तेमेरावाछित, जोनहींहोगा, वहतुमारीहलकाईहोगीइसवास्ते, रक्षो
यउ, इयमहइत्थियं, जंनहोइ, सातुहओहावण, रक्खं
तेमेंनिजकीर्ति, नहींतुमकोचाहिये, मेरेजैसेकीअवगिणना, २९, येमेंगीयाना
तहनियकित्ति, णेयजुज्जइ, अवहीरण, २९, ण्यम
हेदेवाधिदेव, इयस्वामहोत्सव, जोमत्य
हाहिहजक्खदेव, इयन्हवणमहूसव, जंअणलिय, गु
गुणोंकाग्रहण, तुमारामुनिजनोंने, निषेधनहींकिया, इसकारणेमेरपरकृपा
णगहण, तुम्हमुणिजण, अणिसिद्धउ, इयमइंपसीअ

कर,हेपार्श्वनाथ, स्थंभणकपुरमेंरहेभये, इतनेकरमुनियोंमेंप्रधानश्रीअभय
**सुपासनाह, थंभणयपुरट्ठिय, इयमुणिवरसिरिअ**
देवसूरिः,नवांगीवृत्तिकरणकेआनंदमेंवीनतीकरी, ३०, इतनेकरस्थंभनपार्श्वनाथ
**भयदेवविन्नवइआणंदिय, ३०, इतिश्रीथंभणपास**
जिनस्तवनंपूर्ण ॥
**जिनस्तवनं ॥**

जयवंतस्वामी, जयपावोस्वामी, ऋषभदेव, शत्रुंजयपर, गिरनारपरश्र
**जयउसामी, जयउसामी, रिसह, सेत्तुंजी, उज्जंतपहू**
भुनेमजिन, जयपावोमहावीरअभुसाचोरकेमंडन, १, भरुचमेंमुनिसुव्रतप्रभू
**नेमजिण, जयउवीरसच्चउरिमंडण, १, भरुअच्छहिंमु**
स्वामी, मुहरिगांममेंश्रीपार्श्वनाथदुःखपापकाखंडण, और महाविदेह
**णिसुव्वय, मुहरिपासदुहदुरियखंडण, अवरविदेहिं**
मेंतीर्थंकर, चारोंदिशामेंविदिसामेंजोकोईभी, गयेकालअनागतका
**तित्थयरा, चिहुंदिसिविदिसजिंकेवि, तीयाणागय**
ल,वर्त्तमानकालकेवंदूजिनेश्वरसर्वोकों, २,
**संपइअ,वंदूजिणसव्वेवि, २,**
कर्मभूमीमें, कर्म्मभूमीमें, प्रथमसंघयणधारी, उत्कृष्टएकसो,
**कम्मभूमिहिं, कम्मभूमिहिं, पढमसंघयणि, उक्कोसय,**
सत्तर, जिनवर, विचरतेपावै, नवकरोड,
**सत्तरिसय, जिणवराण, विहरंतलब्भइ, नवकोडिहिं, के**
केवली, नवहजारकोडिसाधुओंकीसंपदा, इसवक्तजिनवरवीस
**वलिण, कोडिसहस्सनवसाहूसंपय, संपइजिनवरवी**
मुनीश्वर, दोयकरोडप्रधानज्ञानी, साधूदोहजारकोडी,
**समुणि, विहूंकोडिहिंवरनाण, समणहकोडिसहसदुअ,**
स्तवनाकरणी, हमेसेसूर्यउदयहोते, १, सत्ताणवेहजार, लाख,
**थुणिजिअ, निच्चविहाण, १, सत्ताणवइसहस्सा, लक्खा,**
छप्पन, आठकरोड, चारसेछायासी, तीनलोकमें,
**छप्पन्न, अठकोडीओ, चउसयछायासीआ, तिलुक्के**

चैत्योंकोंवांदू, २, वंदनकरूनवसयक्रोडि, पचवीसकोडि, लाख,
चेइयेवंदे, २, वंदेनवकोडिसयं, पणवीसंकोडि, लख्ख,

तेपन, अठाईसहजार, चारसे, अठ्यासी, प्रतिमा,
तेवन्ना, अठावीससहस्सा, चउसय, अठासिआ, पडिमा,

३, जोकोईनामकेतीर्थहैं स्वर्गमें, पातालमें, मनुष्यलोकमें,
३, जंकिंचिनामतित्थं, सग्गे, पायाले, माणुसेलोग,

जोजोजिनबिंबहै, उनसबोंकोंवंदनकरताहू, ४,
जाईजिणबिंबाइ, ताइंसव्वाइंवंदामि, ४,

नमस्कारहो, अरिहंतोंको, भगवंतोंको, १, आदिद्वादशागीकेकरता,
नमोत्थुण, अरिहंताणं, भगवंताणं, १, आइगराणं,

तीर्थकेकरणेवाले, आपहीतत्वकेजाण, २, पुरुषोंमेंउत्तम, पुरुषोंमें
तित्थगराणं, सयसंबुद्धाणं, २, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस

सिंह, पुरुषोमेप्रधान पुंडरीककमलजैसें, पुरुषोंमेगंधहस्तीजैसेप्रधान,
सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, ३,

लोकोंमेंउत्तम, लोककेनाथ, लोककेहितकारी, लोकमेंदीपक,
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवा

समान, लोकमेंउद्योतकरणेवाले, ४, अभयदानदेणेवाले, तत्वरूपनेत्रो
णं, लोगपज्जोअगराणं, ४, अभयदयाणं, चख्खु

केदेणेवाले, मोक्षमार्गकेदातार, शरणकेदातार, बोधिबीजकेदेनेवाले, ५,
दयाण, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ५,

धर्मकेदेनेवाले, धर्मकेउपदेशकरता, धर्मकेनायक, धर्मरथकेसा
धम्मदयाण, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार

रथी, धर्मकेप्रधानचारगतिकेअंतकर्त्ताचक्रवर्ती, ६, किसीमेंनामनहींहोयएसा
हीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण, ६, अप्पडिहयवर

प्रधानज्ञान, दर्शनकूधारणेवाले, चलीगईछद्मस्थावस्था, ७, आपजीतेदुसरेकों
णाण, दंसणधराणं, वियट्टछउमाण, ७, जिणाणजाव

जीतानेवाले, आपतिरे,दूसरेकेतारक, आपतत्वजाणदूसरेकोबोधदेणेवाले, आप
याणं, तिन्नाणतारयाण, बुद्धाणंबोहयाण, मुत्ताणंमो

छूटे,ओरोंकोंछुडाते, ७, सर्वजाणनेंवाले, सर्वदेखनेंवाले, उपद्रवरहितअचलरोगरहि
**अगाणं, ८, सव्वन्नूणं, सव्वदरसीणं सिवमयलमरू,**
तअनंत, अक्षय, बाधारहित, नहीहैफेरअवतारलैणा, सिद्धगति,
**अमणंत, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ,**
नामजिसका, एसाठिकाणापायेहुये, नमस्कारहोजिनेश्वरोंकों, जीताहैसबडर,
**नामधेयं, ठाणंसंपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं,**
जोअतीतकालमेंसिद्धहोगये, जोहोंयगेंआगामीकालमेंसिद्ध,
**९ जेअअईआसिद्धा, जेअभविस्संतिणागएकाले,**
इसवख्तवर्त्तमानकालमेंहोरहेहैं, उनसवोंकोंत्रिविधवंदनकर्त्ताहूं, १०,
**संपइयवट्टमाणा, सव्वेतिविहेणवंदामि, १०,**
जितनेचैत्यहैं, ऊर्द्धलोकमें, अधोलोकमें, तिर्च्छेलोकमें,
**जावंतिचेइआइं, उड्ढेअ, अहेय, तिरिअलोएअ,**
सर्वउनोंकोंवंदनकरूं, इसजगेरहे उहांरहेजिनोंकों, जितने कोईभीसाधू,
**सव्वाइंताइंवंदे, इहसंतोतत्थसंताइं, १, जावंतिकेविसाहू**
भरतमें एरवतमें, महाविदेहमें, सर्वोंकों प्रणामहो, मनवचनकाया
**भरहे, रवय, महाविदेहेअ, सव्वेसिंतेसिंपणओ, तिविहेण**
सें तीनदंडसेंविशेपरहित, १, नमस्कारअर्हतसिद्धआचार्यउपाध्यायसर्वसाधुओकों,
**तिदंडविरयाणं, १, नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः,**
उपसर्गकूंहरणेवालेपार्श्वयक्षहैजिनोंके, एसेपार्श्वनाथकर्मसमूहसेंमुक्त,
**उवसग्गहरंपासं, पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं,**
सांपकेजहरकूंनासकरणेवाले, मंगलकल्याणकेगृह( मकान ), १, विपधर
**विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं, १, विसहर**
फुलिंगनामकेमंत्रकों, कंठमेंधारणकरैजोसदामनुष्य, उसकैग्रहरोगमरी
**फुलिंगमंतं, कंठेधारेइजोसयामणुओ, तस्सग्गहरोगमारी,**
दुष्टज्वरपाताहैशांतिकों, २, रहोदूरतुमारानाममंत्र, तुमारेकूंप्रणाम
**दुट्ठजराजंतिउवसामं, २, चिठउदूरेमंतो, तुज्झपणामोवि**
करणाभी,वहोतफलहोताहै, मनुष्यतिर्यचभीजीव, पावेनहींदुःखदौर्भाग्य [ दु
**नरतिरिएसुविजीवा, पावंतिनदुक्खदो**

हाग], ३, तुमारासम्यक्तपाणेसे, चिंतामणीरत्नकल्पवृक्षसेंभीअधिक जा
**इग्गं, ३, तुहसम्मत्तेलद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहि**
दा, पाताहैनिर्विघ्नपणेकरके, जीवअजरअमरठिकाणेकू, ४, इमतरे
**ए, पावंतिअविग्घेणं, जीवाअयरामरंठाणं, ४, इय**
कीस्तवनाहेमहायशवत, भक्तिकेसमूहसेपरिपूर्णरिदयकरकै, इसकारण
**संथुओमहायस, भत्तिब्भरनिब्भरेणहियएण, तादेव**
हेदेवदेओबोधिबीज, भवभवमेंहेपार्श्वजिनचंद्र, ५, इतनेकरपार्श्वजिनस्तवनपूर्ण,
**दिज्जबोहिं, भवेभवेपासजिणचंद, ५, इतिपार्श्वजिनस्तवनं,**

जयपाओहेवीतरागजगद्गुरु, होमुझेंतुमारेप्रभावसे,
**जयवीयरायजगगुरु, होउममंतुहप्पभा**

हेभगवान्, भवोमेंउदासपणा, मार्गानुसारीपणा, वंछितफलकीसिद्धि,
**वओ, भयवं, भवनिव्वेओ, मग्गाणुसारिआ, इट्ठफलसिद्धि,**
१, लोगविरुद्धकामोंकात्याग, वडेमहापुरुषोंकीपूजा, परोपकारकाकरणा, फेरशु
**१, लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ, परत्थकरणंच, सुह**
द्धगुरुओंकायोग, उनोंकेवचनकाअंगीकार, समस्तभवोंमेंअखंड, २,
**गुरुजोगो, तव्वयणसेवणा, आभवमखंडा, २,**

अरिहंतकेचैत्यकेवास्ते, करताहूकायोत्सर्ग, पहलीस्तुतिएकजिनकी
**अरिहंतचेइयाणं, करेमिकाउसग्ग,**
सर्वलोकमेंजोअरिहंतोंकेचैत्यउनोंकेवास्तेकरताहूकायाकाउत्सर्गपणा,
**सव्वलोएअरिहंतचेइयाणंकरेमिकाउसग्ग,**
श्रुतज्ञानभगवतकेवास्तेकरताहूकायोत्सर्ग,
**सुयस्सभगवओकरेमिकाउसग्ग,**
वैयावच(टहल)केकरणेवाले, शांतिकेकर्त्ता, सम्यक्दृष्टिसमाधिकेकरणेवाले
**वेयावचगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं,**
करताहूकायोत्सर्ग, वंदनकरणेवास्ते, पूजाकरणेवास्ते,
**करेमिकाउसग्ग, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए,**
सत्कारकरणेवास्ते, सन्मानकरणेवास्ते, बोधिलाभकेवास्ते,
**सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआ**

उपसर्गरहितस्थान(मोक्ष)कैवास्ते, २, श्रद्धासें, निर्मलबुद्धिसें, चित्तथिरसें, धारणा-
ए, निरुवसग्गवत्तिआए, २, सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणा
पूर्वक, वेरवेरविचारके, वधतेपरिणामसें, करताहूंकायोत्सर्ग, ३,
ए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामिकाउस्सग्गं, ३,
संसारदावानल(अग्नि)केदाहकोंपाणीजैसे, मोहरूपधूडकोंदूरकरणेहवाजैसे,
संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणेसमीरं,
कपटरूपपृथ्वीकोंफाडणेतीखेहलजैसे, नमनकरताहूंवीरप्रभूकों, पहाडोंमेंसारमेरूजैसेधीर
मायारसादारणसारसीरं, नमामिवीरं, गिरिसारधीरं, १,
भावसेंनमस्कारकरणैवालेदेवदानवमनुष्योंकेस्वामीयोंके, मुगटमेंचपलकमलोंकीश्रेणियों
भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलाव
सें पूजेभये, अछीतरेपूरदियानमेभयेलोकोंकेमनवंछित,
लिमालितानि, संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामना, मेंनमनकरताहूं, जिनराजपद(चरणोंकों),वह, ज्ञानरूपगहरापण, अछेपदों
कामं, नमामि, जिनराजपदानि, तानि, २, वोधागाधं, सुपद
केरचनारूपजलकेपूरसेंमनोहर, जीवोंकीअहिंसारूपअंतररहितलहरोंमिलणेसें
पदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमा
अगाधस्वरूप, सिद्धांतकीचूलारूपवेल, वडेपाठरूपमणीयोंसेंभरपूर, दूरहैकिनाराजिसका,
गाहदेहं, चूलावेलं, गुरुगममणीसंकुलं, दूरपारं,
प्रधान वीरभगवानकेआगमरूप, समुद्रकूं,आदरयुक्त,अच्छीतरेसेवताहूं, ३, जडसेंहिलतेभये,
सारं वीरागम,जलनिधिं, सादरं,साधुसेवे, ३, आमूलालोल,
खुसवोदाररजकी वहोतसुगंधमें, आसक्त, चपलभमरोंकीपंक्तिओं, झंकारशब्दोंका
धूली, वहुलपरिमला, लीढ, लोलालिमाला, झंकाराराव
श्रेष्ठपणा निर्मलपत्रोंकैकमलरूपघरकीभूमीमेंनिवासहै,एसे कांतिकैसमूहसें,
सारा, मलदलकमलागारभूमिनिवासे, छायासंभार,
सुशोभित, प्रधानकमलहैहाथमें, देदीप्यमानहारसेतीमनोहर, द्वादशांगीरूपवाणीकास
सारे, वरकमलकरे, तारहाराभिरामे, वाणीसंदोह
मूहजिसकाशरीरहै, मोक्षरूपवरदान, देओमुझेंहेदेवीप्रधान, ४,
देहे, भवविरहवरं, देहिमेदेवसारं, ४,

पुष्करवरनामद्वीपअर्धमें, धातकीखंडमे, जंबूद्वीपकेअदर,
**पुख्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडेअ, जबुदीवेअ,**
भरतक्षेत्रएरवतक्षेत्र महाविदेहमें, धर्मकेआदिकर्त्ताकोनमस्कारकरताहू, अज्ञानरूप
**भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरेनमंसामि, १, तमतिमि**
अधेरेकेसमूहकों नासकरणेवाले, देवतोंकागण मनुष्योंकेइद्रोसेंपूजेभये,
**रपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिदमहिअस्स**
मर्यादामेंरखणेवालेकोवदनकरताहू, तोडाहैमोहकाजालजिनोने, २, जन्म, वृद्धपणा
**सीमाधरस्सवंदे, पप्फोडियमोहजालस्स, २, जाई, जरा,**
मोत, सोगकोनासकरणेवाले, कल्याण सपूर्ण विस्तार
**मरण, सोगपणासणस्स, कल्लाणपुख्खल, विसाल,**
मोक्षसुखकेदेणेवाले,
**सुहावहस्स,**
कोण देवता, दानव, मनुष्योंकेइद्रोंकेसमूहोंसेपूजेभये, श्रुतधर्मका
**कोदेव, दाणव, नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स**
सार, पायकरके, जोकरे प्रमाद, ३, एसैसिद्धोंकू, हेज्ञानवतोआदरयुक्त,मेंनमस्कार
**सार, मुवलब्भ, करेपमायं, ३, सिद्धे, भोपयओ, णमो**
करताहूजिनमतको, वृद्धिपाओहमेसचारित्रधर्म, वैमानिकदेव,भुवनपती, ज्योतषी, व्यतरदेव
**जिणमए, नंदीसयासंजमे, देवं, नाग, सुवन्न, किन्न**
तोंकेसमूहसें, सचभावकरके पूजेभये, सर्व्वलोककाज्ञानजिसमें कहाभयाहे
**रगण, सब्भूअभावच्चिए लोगोजत्थपइट्ठिओ**
जगत् ये, तीनलोक, मनुष्य, भवनपति, श्रुतधर्मवृद्धिपाओ शासत
**जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मोवड्ढउ, सासओ,**
विशेषजयवतहुओ, चारित्रधर्मकाप्रधानपणाजेसेहोयतैसेंवधो, ४,
**विजयओ, धम्मुत्तरवड्ढउ, ४,**
सिद्धोंको, बुद्ध(ज्ञाततत्वको), ससारकेपारपहूचेको,गुणस्थानकेक्रमसेचढकेमोक्षपहुचैको,लो
**सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं, परंपरगयाणं, लोग-**
ककेअग्रभागमेंप्राप्तभयोंको, नमस्कारहमेस सर्व्व सिद्धोंकों, जोदेवतोंकेभी
**ग्गमुवगयाण, नमोसयासव्वसिद्धाण, जोदेवा**

देवहैं, जिनोंकोंदेवताभीदोहाथजोडकैनमस्कारकरतेहैं, उसदेवकों,देवेंद्रोंनें
**णविदेवो, जंदेवापंजलीनमंसंति, तंदेवदेवम**
पूजा, मस्तकसेंमेंवंदनकरताहूंमहावीरदेवकों, २, एकभीनमस्कार,
**हियं, सिरसावंदेमहावीरं, २, इक्कोविनमुक्कारो,**
जिनवरमें वृषभ(श्रेष्ठ), वर्द्धमानस्वामीकों, संसारसमुद्रसें,
**जिणवरवसहस्स, वद्धमाणस्स, संसारसागराओ,**
तारतेहैं मनुष्यकों और स्त्रियोंकों, ३, गिरनारपहाडके, शिखरकेऊपर, दीक्षा,
**तारेइनरंवनारिंवा, ३, उज्जिंतसेल, सिहरे, दिक्खा,**
केवलज्ञान, मोक्षकल्याणकजिनोंकाभयाहै, वह धर्म्मकेचक्रवर्त्ति ऐसे, अरिष्टनेमीभ
**नाणं, निसीहियाजस्स, तंधम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठ**
गवानकोंनमस्कारकरताहूं, ४, चार, आठ, दस, दोय, वंदीजेहुयेहैं,
**नेमिंनमंसामी, ४, चत्तारि, अठ, दस, दोअ, वंदिआ**
जिनसामान्यकेवलियोंमेंप्रधानचौवीस, परमार्थसेंकृतार्थहुयेहैं, सिद्धभयेहैं,
**जिणवराचउव्वीसं, परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा**
सिद्धिमुझकोंदेओ, ५,
**सिद्धिंममदिसंतु, ५,**
मेंचाहताहूं हेक्षमाश्रमण, वांदणेकूं, शक्तिकरयुक्त, जीवहिंसारहित
**इच्छामिखमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, नि**
प्रयोजनवालामेरेशरीरसें, मुझकोंहुक्मदेओ, मुझें, प्रमाणयुक्तक्षेत्रमेंप्रवेशकरणे, दुसराकाम
**सीहियाए, १ अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, २ निसी।**
छोडके,नीचेझुकके,कायासें,आपकेपांव कायासें स्पर्शकरणे माफकरणा,हेभगवंतआपकोंकोई,
**हि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणि, ज्जोभे, कि**
खेदउपजायाहो, थोडिग्लानि, बहोतसमाधिभावसें, हेपूज्य, दिन;
**लामो, अप्पकिलंताणं, वहुसुभेण, भे, दिवसो, व**
वीताहै, तपनियमसंजमस्वाध्यायरूपयात्रा, इंद्रियऔरनोइंद्रियसेंखेदरहितआपकाशरीर,
**इकंतो, ३ जत्ताभे, ४ जवणिज्जं, च, भे, ५**
हेभगवन्‌खमाताहूं, हेक्षमाश्रमण, दिनसंबंधी अपराध, आवश्यक
**ग्वामेमि, खमासमणो, देवसियंवइक्कमं, ६, आ**

क्रियाकरते, मैंनिवर्त्तताहू(दूरहोताहू), क्षमाश्रमण(साधुओं)की, दिनमेंहुई,
**वसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआ**
आशातनाकरके, तेतीस आशातनामेसें, जोकुछ, मिथ्याभाव
**ए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मि-**
रूपआशातना, मनसबधीपाप, वचनसबधीपाप, शरीरसबधीपापइत्या
**च्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडा**
दि, क्रोधरूपआशातना, मानआशातना, मायाआशातना, लोभआशातना, सर्वकालसबधी
**ए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालिआ**
सनमिथ्याउपचारआशातनाकरके सबधर्मकरणीउल्लाघनेरूप, आशातनाकरणेसें
**ए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आ**
जो, मेरेजीवने, अतिचार, कीयाहोय, उसका, हेक्षमा
**सायणाए, जो, मे, अइयारो, कओ, तस्स, खमा**
श्रमण, मैंप्रतिक्रमताहू(लाघताहू),आत्मासेंनिंदताहू, गुरुकीसाक्षीनिंदताहू, मेरीपापीआत्मा
**समणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं**
कों वोसराताहू(छुडाताहू), ७,
**वोसिरामि, ७,**
पक्षीचोमासीसवत्सरीअतिचारगाथा, ज्ञानमे, दर्शनमे, चारित्रमे,
**अतीचारकीगाथा, नाणंमि, दंसणमिअ, चरणंमि,**
तपमें, तेसेंहि वीर्य(पराक्रम)मे, आचरण, वोआचारकहाताहै, इसतरेयेआ
**तवंमि, तहय, विरियंमि, आयरणं, आयारो, इअए**
चारपाचप्रकारका, कहाहै, १, जिसकालमेंपढणेकाहुक्महो, विनयबहुमान, सूत्रपढतेतपक
**सोपंचहा, भणिओ, १, काले, विणएबहुमाणे, उवहा**
रणा, तेसेंपढाणेवालेगुरूकोभूलणानहीं, अक्षरशुद्धबोलणा,अर्थशुद्ध,सूत्रअर्थदोनोशुद्धपढणा
**णे, तहअनिण्हवणे, वजणअत्थतदुभए,**
आठ प्रकारकाज्ञानाचारकहाताहै,२, केवलीकेवचनमेशकानहींकरणी, जिनमतविगर
**अट्ठविहोनाणमायारो, २, निस्संकिय, निक्कंखिय,**
औरमतकीइच्छानहींकरणी,
**निव्वित्ति**

२, दोप्रकारका परिग्रह, पापका, बहोतप्रकारका, आरंभवाला,
मि, २, दुविहेपरिग्गहंमि, सावज्जे, बहुविहेअ, आरंभे,
दूसरेसेंकरायाहो, ओरआपकीयाहो, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनकेकियेसबअतिचारोंको, ३,
कारावणे, अकरणे, पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, ३,
जोबांधाहोइंद्रियोंकरकै, चारों, कपायोंकरके, अप्रशस्त(बुरेभावोंकरकै),
जंबद्धमिंदिएहिं, चउहिं, कसाएहिं, अप्पसत्थेहिं,
रागकरकै, दोपकरकै, उसकोंनिंदताहूं, फेरगुरुसन्मुखजादाकरकैनिंदताहूं, ४, जाते
रागेणव, दोसेणव, तंनिंदे, तंचगरिहामि, ४, आग
आते, मिथ्यात्वीकेठिकाणेखडारहते, इधरउधरफिरते, उपयोगविगर, राजाओ
मणे, निग्गमणे, ठाणे, चंकमणे, अणाभोगे, अभि
रवहोतलोकोंकेआग्रहसें, पराधीनपणे, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसबअतिचार, ५,
ओगे, अनियोगे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, ५,
जिनवचनमेंशंका,अन्यमतवांछा,तथाधर्मकेफलमेंसंदेहदुगंछा,मिथ्यात्वीकीप्रशंसा,तेसेंपरिचय
संका, कंख, विगिंच्छा, पसंस, तहसंथवो,
मिथ्यात्वीकुलिंगीसें, समकितकेअतिचारमें, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसब, ६, छकाय
कुलिंगीसु, सम्मत्तस्सअइआरे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, ६, छका
केसमारंभमेंवर्त्तणेसें, आपरांधते, ओरदूसरेकेपासरंधाते, ओर जो, दोपलगाहो, अपणे
यसमारंभे, पयणेअ, पयावणेअ, जे, दोसा, अत्त
अर्थे, परायेकेअर्थे, अपणेपरायेदोनोंकेअर्थ,उसकोंनिंदताहूं, ७, पांचअणुव्रतकेविपे,
ट्ठाय, परट्ठा, उभयट्ठा,चेवतंनिंदे, ७, पंचन्हमणु
गुणव्रतोंकेविषै, फेर, तीनअतीचारलगाहो, शिक्षाव्रतमें,
व्वयाणं, गुणव्वयाणं, च, तिन्हमइयारे, सिक्खाणं,
फेर, चारअतिचार, प्रतिक्रमताहूंमें, दिनसंबंधी सब, ८, पहले, अणुव्रत,
च, चउन्हं, पडिक्कमे, देसियंसव्वं, ८, पढमे, अणुव्व
केविषै, वडेसोस्थूल, प्राणातिपातकी, निवृत्तिकाउल्लांघणेंसें, जोआचरणसेवाहोय
यंमि, थूलग, पाणाइवाय, विरईओ, आयरियम
बुरेपरिणामोंसें, इसलगे, प्रमादकै, प्रसंगसें, ९, मारणा, बांधणा, अवयव,
, इत्थ, पमाय, प्पसंगेणं, ९, वह, बंध, छवि

काच्छेदणा, जादावोझालादणा, खाणेपीणेकाअतरायकरणा, पहलेव्रतका,
छेए, अइभारे, भत्तपाणवुच्छेए, पढमंवयस्स,
अतिचारमे, प्रतिक्रमताहूमें, दिनसबधीसन, १०, दूसरेअणुव्रतमें,
अइयारे, पडिक्कमे, देसिअंसव्वं, १०, बीएअणुव्व
अति वडे, झठेवचनकेत्यागरूप, विरतीकूउल्लघनकरकै,
येम्मि, परिथूलग, अलियवयण, विरईओ,
जोआचरणकियाहोबुरेभावोकरकै, इसजगे, प्रमादके, प्रसगसें, ११, निगरनिचा
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ,पमाय,प्पसंगेणं, ११, सहस्सा,
रेछीपीभईवातकरणेवालेपरराज्यविरुद्धगुनालगाणा, स्त्रीकीकहीवातजाहिरकरी, झठाउपदेश,
रहस्सदारे, मोसुवएसेअ, कूडलेहेअ, बीअवय
झठालिखतकिना, दूसरेव्रतकेअतिचारकों, प्रतिक्रमताहूदिनसबधीसन, १२, तीसरेअणुव्र
स्सअइयारे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, १२, तइएअणु
तमे, वडा, परायेद्रव्यके, हरणेकी, विरतीकूउल्लघनकरकै, जो आचरण
व्वयंमि, थूलग, परदव्व, हरण, विरईओ, आयरिअ,
कीया, बुरेपरिणामोंसे, इस जगे, प्रमादकेप्रसगसे, १३, चोरीकामाललेणा,
मप्पसत्थे, इत्थ, पमायप्पसंगेणं, १३, तेनाहडप्पओ
खोटीचीजकोंअसलीवणानेचणा, राजकामहसूलचोरणा, खोटेतोलरखना, खोटेमापर
गे, तप्पडिरूवे, विरुद्धगमणेअ, कूडतूल, कूडमा-
खणा, प्रतिक्रमताहू[पापोकोंलांघताहू]दिनकेकियेमन, १४, चौथाअणुव्रतमें,
णे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, १४, चउत्थेअणुव्वयंमि,
हमेस, परस्त्रीकेसगगमनकरणेकीविरतीकोलाघकै, जोआचरणकियाहो, अप्रसस्त
निच, परदारगमणविरईओ, आयरिअ, मप्पस-
भावकरकै, इसजगेप्रमादकेप्रसगसें, १५, कवारीअथवाविधवाकेसगरमण, दूसरेकी
त्थे, इत्थपमायप्पसगेणं, १५, अपरिग्गहिया, इत्त
रखीनेसासेरमण, कामक्रीडा, परायेव्याहकराणा, कामभोगमेंजादाअनुराग,
र, अणंग, वीवाह, तिव्वअणुरागे,
चौथेव्रतकेअतिचारमें,
चउत्थवयस्सइयारे

प्रतिक्रमताहूं, दिनसंबंधी सब, १६, इसकेबाद, अणुव्रत, पांचमें में, आच
**पडिक्कमे, देसियंसव्वं, १६, इत्तो, अणुव्वए, पंचमंमि, आ**
राहोय, बुरेभाव वर्त्तते, परिग्रहके प्रमाणकूंउलंघके, इस जगे प्रमादके
**यरिअ, मप्पसत्थंमि, परिमाणपरिच्छेए, इत्थपमाय**
प्रसंगसें, १७, धन, धान्य, क्षेत्र, मकानदुकान, रूपा, सोना, ओर सबत
**प्पसंगेणं, १७, धण, धन्न, खित्त, वत्थू, रूप्प, सुवन्नेअ, कु**
रेकेधातू प्रमाणउपरवधादेखके, दासदासीदोपग्गे, जानवरचोपग्गे, प्रतिक्रमताहूं दिनसंबं
**विअपरिमाणे, दुप्पए, चउप्पयंमि, पडिक्कमेदेसिअं**
धीसबकों, १८, जाणेकेप्रमाणसें जादाजाते, दिशाओंमें ऊर्धदिसि, नीचीदिसि,
**सव्वं, १८, गमणस्सउपरिमाणे, दिसासुउड्ढं, अहेअति,**
तिरच्छीदिसि, फेरप्रमाणवधाते, अंतररस्तेमेंभूलकेजादागयाहो, पहलेगुणव्रतमें मेंनिंदताहूं,
**रिअंच, वुड्ढिस्सइ, अंतरद्धा, पढमंमिगुणव्वएनिंदे,**
१९, मदिरा और मांस और पुष्प और फल और अतरादि पुष्पमाल और
**१९, मज्जंमिअ मंसंमिअ पुप्फेअ फलेअ गंध मल्लेअ**
एकवेरभोगण वेर २ भोगण दूसरे गुणव्रतमें निंदताहूं, २०, सचित्त
**उवभोग, परिभोगे, वीअंम्मि, गुणव्वए, निंदे, २०, स**
वस्तुखाईहो, सचितमिलीवस्तुखाईहो, विगरपकी, आधाकच्चाआधापक्का, आहारकियाहो, तुच्छ
**च्चित्ते, पडिबद्धे, अपोल, दुप्पोलियं, चआहारे, तुच्छो**
फलादिक खायाहोय, मैं प्रतिक्रमताहूं दिनसंबंधी सबको, २१,
**सहिभक्खणया, पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, २१,**
अग्निकर्म्म, वनकर्म्म, पशुवेचणा, भाडाकमाणा, कूआदिखोदाणा
**इंगाली, वण, साडी, भाडी, फोडी,**
येवर्जनाकर्म्म व्यापार और निश्चै दांतका, लाखका, रसोंका, केसका,
**सुवज्जएकम्मं वाणिज्जंचेव, दंत, लक्ख, रस, केस,**
जहरका, शस्त्रोंका इसतरेनिश्चै, यंत्र पीलणेकाकर्म्म खसीकरणा और अग्नि
**विस, विसयं एवंखु, जंत पिल्लणंकम्मं, निल्लंछणंच दव**
दाहदेणा, सरोवरद्रह तलाव सुकाणा,
**दाणं, सरदहतलावसोसं,**

असती व्यभिचारणी हत्यारीस्त्रीका, पोषणवर्जना, २३, शस्त्र,
असइ, पोसंचवज्जिज्जा, २३, सत्थ,
अग्नि, मूसल, यन्त्रमीलादिक, घास, काष्ठ[लकड], मन्त्र, जडी, गोलीचूरणवगेरेवस्तु,
गिग, मुसल, जंतग, तण, कठ्ठे, मंत, मूल, भेसज्जे,
दियाहो, दूसरेसें दिरायाहो, अतिक्रमताहूमेदिनसम्बधीसर्वोको, २४, विगरछाणेजलसेंन्हाया
दिन्ने, दवाविएवा, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, २४, न्हाणु,वट्टण,
उवटणा, रगकरणा, केसरादिसेंपिलेपनशब्द,रूप,रस,गध, कपडा,आसन, गहणा,
वन्नग, विलेवणे,सद्द,रूव,रस,गंधे, वत्था,सण, आभरणे,
प्रतिक्रमताहूमेंदिनसम्बधीसर्वोकों, २५, कामभोगकीवातकरी, लोकोंकोंहसाया, वाचालप-
पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, २५, कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरि,
णेज्यूल्यूलोला, शस्त्रतइयारकिये, भोगउपभोगकीवस्तुजादारखी, अनर्थदंडविरमणनामके,
अहिगरण, भोगअइरित्ते, दंडंमिअणट्ठाए,
तीसरे,गुणव्रतमें, मेंनिंदताहूं, २६, मनवचनकायातीनप्रकारकेदुष्टव्यापारमें, अनिन
तइअंमि,गुणव्वए, निंदे, २६, तिविहेदुप्पणिहाणे, अण-
यपणेअधूरीसामायकपारी, तेसें, सामायकलेभूलजाना, सामायकखोटीरीतसेंकरी, पहले,
वट्ठाणे, तहा, सइविहूणे, सामाइअवितहकए, पढमे
शिक्षाव्रतमें में निंदताहू, २७, प्रमाणक्षेत्रबाहिरसेंचीजमगाई, दूसरेकोंभेजा, शब्दखासी-
सिक्खावएनिंदे, २७, आणवणे, पेसवणे, सद्दे,
करके, रूपदिखाके, कंकरादिनाखकेंजणाना, देशावगासिकनामके, दूसरे, सिक्षाव्रतमें,
रूवेअ, पुग्गलक्खेवे, देसावगासिअंमि, बीए, सिक्खावए,
मेंनिंदताहूं, २८, संथाराअच्छीतरेनपडिलेहालघुनीतिवडनीतिकीभूमीनहींपडिलेही,
निंदे, २८, संथारुच्चारविही,
प्रमादसेंतेसेंनिश्चैभोजनकाफिकरकरै, पोषधकीविधिविपरीतकरणेसें, तीसरेशिक्षाव्रतमे
पमायतहचेवभोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइएसिक्खावए
मेंनिंदताहू, २९, साधूकेदेणेयोग्यवस्तूपरसचित्तवस्तूडालणा,
निंदे, २९, सचित्तेनिक्खिवणे,
सचित्तवस्तूसेंढाकणा, पराईवस्तुअपणीअपणीकोंपराईकहणी, गर्व्वेयाईर्क्षासें
पिहिणे, ववएस, मच्छरेचेव,

वहोतकालसेंसंचाभया पापकूंनासकरणेवाली,
हेणतिदंड विरयाणं ४५, चिरसंचिय पावपणासणीइ,
भवसतसहस्र(लाख)मथनेवाली, चौवीसतीर्थंकरोंकेमुखसें निकली भई,
भवसयसहस्स महणीए, चउवीसजिण, विणिग्गय,
कथाओंकरकैवीतो, मेरे दिन, ४६, मेरे मंगलरूपहोअरिहंत,
कहाइंबोलंतु, मे दिअहा, ४६, मम मंगलमरिहंता,
सिद्धभगवान्साधु श्रुतधर्मफेरचारित्रधर्म, सम्यग्दृष्टीदेवता, देओसमाधि(चित्तकी
सिद्धासाहू, सुअंच धम्मोअ, सम्मद्दिठी देवा, दिंतुसमा हिंच
थिरता), वोधि[भवो भवधर्मप्राप्ति], ४७, निषेधणेयोग्यअशुभकामकरणेसें, करणेयोग्य
बोहिंच, ४७, पडिसिद्धाणंकरणे, किच्चाण
शुभकामनहींकरणेसें, प्रतिक्रमणहै, सूक्ष्मविचारपरश्रद्धानहींकरणेसेंतेसें, विपरीतप्ररूप-
मकरणे, पडिक्कमणं, असद्दहणेय तहा, विवरीय-
णाकरणेसें, ४८, खमाताहूं, सर्व्वजीवोंको, सर्व्वजीवखमणामेराअपराध, मित्रताहैमेरे
परूवणाएअ, ४८, खामेमिसव्वजीवे, सव्वेजीवाखमंतुमे, मित्तीमेस-
सर्व्व(भूतों)जीवोंसें, वैरभाव मेरे नहीं किसीसें, ४९, इसतरेमें, आलोचा(प्रकाशकिया)
व्वभूएसु, वेरंमझंनकेणइ, ४९, एव महं, आलोइअ, निं
निंदाकरी गुरुसन्मुखगर्हणाकरी, दुगंछाकरीअच्छीतरे, त्रिविधप्रतिक्रमताहुआ, वंदना
दिअगरहिअ, दुगंछिअंसम्मं, तिविहेणपडिक्कंतो, वंदा-
करताहूंमें जिनचोवीसोंकों, ५०, एसाश्रावकोंके सम्यक्तयुक्त १२ व्रतातिचारसूत्रसंपूर्ण ॥,
मिजिणेचउव्वीसं, ५०, इतिश्रावकातीचारसूत्रं ॥,
अथगुरूक्षामणा, इच्छापूर्वक, मुझेंहुक्मदीजियै, हेभगवान्,
अथगुरुखामणा, इच्छाकारेण, संदिसह, भगवन्,
उठाहूं,में, अंदर, दिनकेअपराधकूंखमाणे, मेंयहचाहताहूं,
अब्भुठिओ,मि, अभिंतर, देवसियंखामेउं, इच्छं, खा-
खमाताहूंदिनसंवंधी, जोकुछ, अप्रीतिभाव, जादाअप्रीतिभाव, भोजन,
मेमिदेवसियं, जंकिंचि, अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते,
पाणीमें, विनयमें, वेयावच्चमें, एकवेरबोलनेमें, वेर२बोलणेमें, उंचेआसन,
पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे,

बराबरआसन, गुरुबातकरतेबीचमेंबोलाहो, गुरूकीबातपरबातकरीहो, जोकुछ,
**समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिचि-**
मेंविनय, रहितपणाकियाहो, सूक्ष्म अथवा, बादर(स्थूल), आपजाण-
**मझविणय, परिहीणं, सुहुमंवा, बायरंवा, तुब्भेजा-**
तेहो, मेनहींजाणता, वहमिथ्याहुओमेरापाप(दुष्कृत],
**णह, अहंनजाणामि, तस्समिच्छामिदुकडं,**
आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मी, कुलएकआचार्यका,गणनहु-
**आयरिय, उवज्झाए, सीसे, साहम्मिए, कुलगणेअ**
तआचार्यकापरिवार,जोमेनेंकियाकषाय, सर्व्वमनवचनकायासेंत्रिविधखमाताहू, १, सर्व्व
**जेमेकेइकसाया, सव्वेतिविहेणखामेमि, १, सव्व**
श्रमणसघरूप, भगवतोंकू, दोहाथजोडकरमस्तकपर, सर्व्वअ
**स्समणसघस्स, भगवओ, अंजलिकरियसीसे, सव्व**
पराधखमायकरकै, खमताहू, सर्वोकों, मैंभी, २, सर्वजीवोंकासमूह-
**खमावइत्ता, खमामि, सव्वस्स, अहयंपि, २, सव्वस्सजी-**
केसवधर्मेकियेअपराध, भावसें, धर्ममें, स्थापनाकियाहै, अपणाचित्त, सर्व्वोकोंख
**वरासिस्स, भावओ, धम्म, निहिय, नियचित्तो, सव्वंख-**
मायकरकै, खमताहू, सर्वोकों, मैंभी, ३,
**मावइत्ता, खमामि, सव्वस्स, अहयपि, ३,**
मैं चाहताहू, स्तुतिकरणेकू, नमस्कारहुओ क्षमावतसाधुओंकों,
**इच्छामो, अणुसट्ठिं, नमोखमासमणाणं, नमोर्हत्सिद्धा**
नमस्कारहुओ वर्द्धमानस्वामीकों, स्प-
**चार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः, ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय, स्प-**
र्द्धा(इर्षा) करणेवालेकर्मोंकेसाथ, उसकर्मोकेजयसें मोक्षप्राप्तहोणेवाले, परास्तकर
**र्धमानायकर्मणा, तज्जयाव्याप्तमोक्षाय, परोक्षाय**
णेवाले कुतीर्थियोंकों, १, जिनोंकी खुलीहुई, कमलोंकीपक्तिये तारीफकर
**कुतीर्थिनाम्, १, येषांविकचा, रविदराज्या ज्यायः**
णेयोग्यचरण, कमलकीश्रेणीकूधारणकरणे, सदृसइमतरेंसगमिलणातारीफ
**क्रम, कमलावलिंदधत्या, सदृशैरिति संगतमप्रशस्यं**

लायककहाहुआ, हुओ मोक्षकेअर्थवहजिनेंद्र, २, कपायरूपतापसेंपीडित
**कथितं, संतु, शिवायतेजिनेंद्राः, २, कपायतापार्दित**
प्राणीओंकूंशांति, करताहै, जो, जिनराजके मुखरूपीमेघसेंनिकला, वह, जेष्ट
**जंतुनिर्वृत्तिं, करोति, यो, जैनमुखांबुदोद्गतः, स, शुक्र-**
महीनेमेंपैदाभयावर्षातकेजैसा, करो, संतोप, मेरेमें, विस्तारवाणी-
**मासोद्भववृष्टिसंनिभो, दधातु, तुष्टिं, मयि, विस्तरोगि-**
का, ३. निजश्वेत, सुगंधखसबोईसेंमस्त भमरेओरहिरण, मुखरूप
**राम्, ३, स्वसित, सुरभिगंधालीढ, भृंगीकुरंगं, मुखश**
चंद्रकों, हमेस, विभ्रमयुक्त, जो, धारतीहै, खुलेहुये कमल उचपर,
**शिन, मजस्रं, विभ्रती, या, बिभर्त्ति, विकचकमलमुचैः,**
वहफेरअचिंत्यमानप्रभाववाली, समस्तसुखकीकरणेवाली, प्राणोंकीभज-
**सास्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री, प्राणभाजां**
नवालीद्वादशांगीश्रुतअंगहैजिसका,
**श्रुतांगी, ४ इतिस्तुतिः,**
जयवंतहेमहाजसवंत २, जयवंतरहोहेमहाभाग्यवंत, जयवंतवंछितसुभफलके,
**जयमहायस २, जयमहाभाग, जयचिंतिअसुहफ,-**
देणेवाले, जयवंतसमर्थ, परमार्थकेजाणणेवाले, जय२हेजगद्गुरुगुणोसें
**लय, जयसमत्थ, परमत्थजाणय, जय२गुरुगरिम**
भारीहेगुरू, जयवंतदुःखसेंपीडितजीवोंकेरक्षाकरणेवाले, थंभणपुरमेंविराज
**गुरू, जयदुहत्तसत्ताणताणय, थंभणयट्ठिय**
मानहेपार्श्वजिन, भव्यजीवहमेसडरावणेसंसारस्तोमका, डरकोंनहींगिणारते
**पासजिण, भवियहभीमभवत्थु, भयअवणंता**
एसेअनंतगुणी, तुमकोंत्रिकालनमस्कारहुओ,
**णंतगुण, तुज्झतिसंझनमोत्थु,**
अच्छेअक्षररूपशालादेओ, द्वादशांगीजिनराजसेंपैदाभई, वहश्रुत
**सुवर्णशालनीदेया, द्वादशांगीजिनोद्भवा, श्रु**
देवीहमेसमुझकों, समस्तश्रुतज्ञानकीसंपदाकों, १, चारवर्णरूपसंघ
**तदेवीसदामह्य, मशेषश्रुतसंपदं, १, चतुर्वर्णाय**

का, देवीभवनकीवसणेवाली, समस्तपणेहणोपापयह,
**संघाय, देवीभवनवासिनी, निहत्यदुरितानेपा,**
करो सुग्र अखडको, जिसके क्षेत्रमें प्राप्तहुयेथके, साधू
**करोतुसुखमक्षतं, २, यासांक्षेत्रगतासंति, साध-**
तेसें श्रावकादिक, जिनराजकीआज्ञाकोंसाधतेरहेहुये, रक्षाकरो
**वः श्रावकाद्यः, जिनाज्ञांसाधयंतस्ता, रक्षंतुक्षे**
क्षेत्रकेदेवता, ३,
**त्रदेवता, ३, इतिस्तुतिः ॥**
कमलकैपत्रजैसीनिस्तारनेनोंवाली, कमलजैसेमुखवाली, कमलकैगाभ
**कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी, कमलगर्भ-**
जेसीगौरवर्ण, कमलोपरनिराजमानभगवती, देओश्रुतदेवता,
**समगौरी, कमलेस्थिताभगवती, दद्याच्छ्रुतदेवता,**
सुखको, १, ज्ञानदर्शनचारित्रगुणोकरकैयुक्त, पढणापढानाध्यानऔरसजम,
**सौख्यं, १, ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंय-**
मैंरक्त(मग्न), करो, भुवनदेवी, कल्याणहमेससवसाधुओंकै २ जिसके,
**मरतानां, विदधातु भवनदेवी, शिवंसदासर्व्वसाधूनां, २ यस्याः,**
क्षेत्रकों अच्छीतरेआश्रयकरकै, साधुलोकसाधतेहैं क्रियानुष्ठान, वोक्षेत्रदेवताहमेस,
**क्षेत्रंसमाश्रित्य, साधुभिःसाध्यतेक्रिया, साक्षेत्रदेवतानित्यं**
हुओतुमकों, सुखकेदेणेवाली, ३, परायेमतकेशास्त्ररूपअंधेरेकोंसूर्यजैसै,
**भूयान्नः, सुखदायिनी, ३, इतिस्तुतिः, परसमयतिमिरतरणिं,**
भवसमुद्र, जलकों, तिरणेकों, प्रधान, नावजैसै, रागरूपरजकोंहवाजैसै,
**भवसागर, वारि, तरण, वर, तरणिं, रागपरागसमीर,**
वंदनकरताहू देवमहावीरकों, १, रोककै, ससारकू, विहारकेकरणेवाले, दु ससेहैं
**वंदेदेवं महावीर, १, निरुद्ध, संसार, विहारकारि, दुरंत-**
अतजिसकाएसेदुष्टभावरूपशत्रुगणकू नाशकरकै, हमेसकेवलियोंमेंप्रधान, तुमारा, भवोका
**भावारिगणानिकामं, निरंतरकेवलिसत्तमा, वो, भवा-**
वहणेवालामोहकेसमूहकोंहरो, २, संदेहकेकरणेवाले, खोटेनयकेजोआगम, रूढी
**वहंमोहभरंहरतु, २, संदेहकारि, कुनयागम, रूढ-**

सेंगुस,ऐसेमोहरूपकादेकूं, हरणेमेंनिर्मल, पाणीकेपूरजैसै, संसार, समुद्रकों,
**गूढ, संमोहपंक, हरणामल, वारिपूरं, संसार, सागर समुत्त-**
तिरणे, नावसमान, एसावीरप्रभूकाआगम, उत्कृष्टसिद्धिकाकरणेवाला, नमनकर्ताहूं, ३
**रणोरु, नावं, वीरागमं, परमसिद्धिकरं, नमामि, ३,**
जिसकीखसबोईकेसमूहलोभसें, खेंचेभयेचंचल, भ्रमरोंकीश्रेणी, ऐसेप्रधानकमलमेंहैनि-
**परिमलभरलोभा, लीढलोला लिमाला, वरकमलनि-**
वासजिनका, हार, अंधेरामें देदीप्यमान, जादासंसाररूप, कैदगृहकों, विच्छेद
**वासे, हार, नीहार, भासे, अविरलभव, कारागार विछि-**
करनेवाली, करो, कमलहैहाथमैं, मेरे, मंगल, हेदेवी, प्रधान,
**त्तिकारं, कुरु, कमलकरे, मे, मंगलं, देवि, सारं ४ इति**
अढाई संक्षाके, द्वीपसमुद्रकेविषै, पनरे
**अथ मुनिवंदन, ॥ अड्ढाइज्जेसु, दीवसमुद्देसु, पन्न-**
कर्मभूमीकेविषै, जितने, कोईभी, साधूहै, रजोहरण[ओघा], गुच्छ,
**रसकम्मभूमीसु, जावंत, केवि, साहू, रयहरण, गुच्छ,**
पात्रोंकों, धारणेवाले, १, पांचमहाव्रतकेधारणेवाले, अठारेहजार,
**पडिग्गह, धारा, १, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स,**
शीलकेअंगकोंधारणेवाले, संपूर्णआचाररूपचारित्रकेपालक, उनसबोंको, निलाडसें,
**सीलंगधारा, अक्खयायारचरित्ता, तेसव्वे, सिरसा,**
मनसें, मस्तकसें, वंदनकरताहूं, १,
**मनसा, मत्थएण, वंदामि, १,**
प्रधान, सुवर्ण, शंख, मूंगे, लीलम, मेघ, जेसारंगवाला, दूरगया
**वर, कणय, संख, विद्रुम, मरगय, घण, सन्निहं, विगय**
हैमोहजिनोंका, सत्तरऊपरसोतीर्थंकरोकों, सर्वदेवतोंनेपूजा, मैंवंदनकर्त्ताहूं,
**मोहं, सत्तरिसयंजिणाणं, सव्वामरपूइयं, वंदे, १**
श्रीस्तंभनकपुरमेंरहेभये, पार्श्वनाथस्वामीकों, वहइनतीर्थं, पतीकों
**सिरिथंभणयट्ठिअ, पाससामिणो, सेसतित्थ, सामीणं,**
तीर्थकेउन्नती(उदय)केकारण, सुर, असुरोंके, फेर, सबोंके, १,
**तित्थसमुन्नइकारणं, सुरा, सुराणं, च, सव्वेसिं, १,**

इनोंके, मैं, स्मरणार्थ, कायोत्सर्ग, करताहू, सक्तीयुक्त, भक्ती
**एस, महं, सरणत्थं, काउसग्गं, करेमि, सत्तिए, भत्ती-**
करकै, गुणसुस्थित, सघके, अच्छीउन्नतीकेवास्ते, करताहू, कायोत्स-
**ए, गुणसुट्टिअस्स, संघस्स, समुन्नइनिमित्तं, करेमि, का**
र्ग(कायाकृवोसराना), २,
**उसग्गं, २,**
अथजिनप्रतिमावंदन, श्रीसेढी, नदीके, तटपर, नगरप्र-
**अथचैत्यवदन ॥ श्रीसेढी, तटिनी, तटे, पुरव-**
धान, श्रीस्तमनकनाममे, देवताकेवचनसे, श्रीपूज्य, अभयदेवसूरि,
**रे, श्रीस्थंभने, स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या, भयदेवसूरि,**
पडितोंकेस्वामीनें, अच्छीतरेआरोपणकिया, भलेप्रकारसींचनकिया, स्तवना
**विबुधाधीशैः, समारोपितः, संसिक्तः, स्तुतिभि, र्ज**
करकेजलसे, निरुपद्रवमुक्तिफल, देदीप्यमान, फणावलीपत्र, श्रीपार्श्व,
**लैः, शिवफलः, स्फूर्जत्, फणापल्लवः, पार्श्वः**
नाथकल्पवृक्ष, वहमेरे, देओ, हमेस, मनवछित, १, मनसम
**कल्पतरुः, सम, प्रथयतां, नित्यं, मनोवांछितं, १, आ**
धीपीडा, शरीरकीपीडा, हरोहेदेव, जीरानामपल्लीके, मस्तकमेमणीजेसे, श्रीपार्श्व,
**धि, व्याधि, हरोदेवो, जीरापल्लिः, शिरोमणिः, पार्श्व,**
नाथ, जगत्केस्वामी, नमनकरणेसेंहेनाथ, मनुष्योकेकल्याणकारीहुओ,
**नाथो, जगन्नाथो, नतनाथो, नृणांश्रिये, २,**
चारकषायरूप, प्रतिमलकोउखेडनेवाले, दुखसेंजीतीजे, एसाकामदेवकेमां
**चउक्कसाय, पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय, मयणमाण**
नकोमोडनेवाले, रससुक्त, प्रियगुजैमा, रग, हस्तीजेमेचालजिनोकी, जयवत,
**मम्मूरण, सरस, .पियंगु, वण्ण, गयगामी, जयउ, पा**
पार्श्वनाथभुवनतीनके, स्वामी, १, जिनोंकेशरीरकीकांति, सुरतमलजेसा, स्निग्ध
**स, भुवणत्तय, सामी, १, जसुतणुकंति, कडिप्प, स**
[चीकणा] यह, प्रभु, पार्श्वनाथ, देओ, वछित, २,
**णिद्धउ, सो, पहु, पास, पयच्छउ, वंछिय, २,**

अर्हंत, भगवंत, इंद्रोकरकैपूजित, सिद्धभगवान,फेर, मुक्तिमेंरहेभये,
**अर्हंतो, भगवंत, इंद्रमहिता, सिद्धा,श्च, सिद्धिस्थिता**
आचार्यभगवान्, जैनशासनकी, उन्नतीकरणेवाले, पूजनीकउपाध्याय,
**आचार्या, जिनशासनो, न्नतिकरा:, पूज्याउपाध्या**
भगवान्, श्रीसर्वज्ञकासिद्धांतअच्छीतरेपढाणेवाले, मुनिवर(प्रधान)रत्नतीनके
**यका:, श्रीसिद्धांतसुपाठका, मुनिवरारत्नत्रयारा**
आराधक, पांचयह, परमेष्ठी, हमेस, करो तुमकों, मंगल, १,
**धका:, पंचैते, परमेष्ठिन:, प्रतिदिनं, कुर्व्वंतु,वो, मंगलं, १,**
अथपोसहका, प्रत्याख्यान, करताहूं,में,हेपूज्य,पौषधकों, आहार
**अथपोसहपचखाण,॥ करे,मि,भंतेपोसहं, आहा-**
कापौषधकों, देशसें, सर्व्वसें, अथवा, शरीरकासत्कारस्नानादिकका, पौषध,
**रपोसहं, देसओ, सव्वओ, वा, सरीरसक्कार, पोसहं,**
सर्वसें, ब्रह्मचर्यकापोषधकों, सर्व्वसें, अव्यापारकापौषधकों,
**सव्वओ, बंभचेरपोसहं, सव्वओ, अव्वावारपोसहं,**
सर्वसें, चारप्रकारकापौषध, सावद्य(पापकारी)जोगका, प्रत्याख्यान
**सव्वओ, चउव्विहेपोसहे, सावज्जंजोगं, पचखा**
में, जहांतक, दिन, दिन, रात, अथवा, सेवाकरूंगामें, दुविध,
**मि, जाव, दिवसं, अहो, रत्तिं, वा, पज्जुवासामि, दुविहं,**
त्रिविधकरकै, मनसें, वचनसें, कायासें नहींकरूं, नकरा
**तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, नकरेमि, नका**
उं, उसकाहेपूज्य, प्रतिक्रमताहूं, निंदताहूं, गुरूकीसाक्षीनिंदताहूं,
**रवेमि, तस्सभंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,**
आत्माकोंवोसराताहूं,
**अप्पाणंवोसिरामि,**
ठिकाणेसेंचलनाहिलना, फिरना, उपयोगसें, अथवानिरुपयोगसें, हरित
**ठाणेकमणे, चंकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरियका-**
वनस्पतीकासंघट्टकियाहो, बीजकायसंघट्टकियाहो, थावरकायकासंघट्टकियाहो,
**यसंघट्टे, बीयकायसंघट्टे, थावरकायसंघट्टे, छ-**

जूवगेरेकासघट्टकियाहो, सर्वइनोंमेंसें, दिनमें, खोटाविचारकियाहो,
प्पइआसंघट्टे, सव्वस्सवि, देवसिय, दुचिंतिअ, दु
खोटानोलाहो, चेतरेंचैठाहो, इच्छाकरकै, आज्ञादीजियै, चाहताहू,
ब्भासिय, दुचिठ्ठिअ, इच्छाकारेण, संदिसह, इच्छं,
उसका, मिथ्याहुओ, मेरा, पाप,
तस्स, मिच्छा, मि, दुक्कडं,
सथारारातकानिछाना, आघापीछाकिया, एकजगेसेंदूसरीजगेकिया, पेर२पावोकोंसमेटा,
संथारा, उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी,
पेर२पसारा, जूवगेरोकीसघट्टनाकरीहो, विनाआंखोंसेंदेखी
पसारणकी छप्पइआसंघट्टणकी, अचक्खुविस
हुईजमीनपरदस्तपेशाबकियाहो, सबरातसबधी, बुराविचाराहो, बुरावचनबो
यकायकी, सव्वस्सविराइअ, दुचिंतिय, दुब्भासि
लाहो, चेतरेंचैठाहो, इच्छाकरके, हुक्मदेओ, चाहताहुउनका, मिथ्या
य, दुचिठ्ठिय, इच्छाकारेण, संदिसह, इच्छंतस्स, मि
हुओ, मेरा, पाप,
च्छा, मि, दुक्कडं,॥

जगतमें
अथपोसहमेंकहणेउपदेसमालासिझाय ॥ जगचू
चूडामणी जैसे, ऋषभदेव, महावीर, तीनलोककेसिरमें, तिलकसमान,
डामणिभूओ, उसभो, वीरो, तिलोयसिरि, तिलओ,
एकहीलोकमेंआदित्य[सूर्य], एकहीनेत्रसमतीनभुवनके, १, एकवर्षत-
एगोलोगाइचो, एगोचक्खूतिहुयणस्स, १, संवच्छ-
क, ऋषभजिनराज, छमहीनेतकश्रीवर्द्धमानजिनचंद्र, इसतेर
र, मुसभजिणो, छम्मासेवद्धमाणजिणचंदो, इय
विचरे, निराआहारकिये, यत्नकरोतपमे, इनोकेउपमानकरके, २,
विहरिया, निरसणा, जएज्ज, ओवमाणेण, २,
जो, पहले, तीनलोककेनाथ, सहनकिया, बहोतमे, नीचतुच्छलोकों
जइ, ता, तिलोयनाहो, विसहइ, बहुयाइं, असरिस

मनुष्योंका, एसेजीवकोअंतकारकमरणजेसादुख, एसीक्षमा, सर्व्वसाधुओंनेंकरणी
**जणस्स, इयजीयंतकराइं, एसखमा, सव्वसाहु**
३, नहींध्यानसेंचलायसके, वडेमेंवडापाक्रमकियावर्द्धमानजिनचंद्रनें,
**णं, ३, नचइज्जइचालेउं, महइमहावद्धमाणजिण**
उपसर्गेहजारोंकरणेसेंभी, मेरूपहाडजैसेंनहींडिगागूंज
**चंदो, उवसग्गसहस्सेहिंवि, मेरुजहावायगुं-**
हवासें, ४, कल्याणकारीविनयकरकैविनीत, प्रथम, गणधर,
**जाहिं, ४, भद्दोविणीयविणओ, पढम, गण**
समस्तश्रुतज्ञानकेधरणहार, जाणतेहुयेभीउसश्रुतकेअर्थकों,
**हरो, समत्तसुयनाणी, जाणंतोवितमत्थं, वि**
अचरजयुक्तहृदयसें, भगवानसेंपूछकेफेरसुणासब, ५, जोआज्ञाहुक्मदेवे
**म्हियहियओ, सुणइसव्वं, ५, जंआणवेइरा-**
राजा, नगरआदिककेलोकउसकूंमस्तककरकेचाहतेहैं, इसतरेगुरु
**या, पयइओतंसिरेणइच्छंति, इइगुरुजण**
जनोंकेमुखकाकहाहुआ, दोनोंअंजलीपुटसें, सुणनाचाहिये, ६, जेसें
**मुहभणियं, कयंजलिउडेहिं, सोयव्वं, ६, जह**
देवतोंकेगणसमूहमेंइंद्रशक्र, ८८ग्रहगण तेसें तारागणसमूहमेंजैसेंचंद्र,
**सुरगणाणइंदो, गहगणतारागणाणजहचंदो,**
जैसें, प्रजासमूहमें, नरेंद्रराजा, तैसेंसाधूओंकेसंघमेंभीगुरु, आचार्यआनंद-
**जहय, पयाण, नरिंदो, गणस्सविगुरु, तहाणंदो**
कारी, ७, बालकहैएसासमझराजाकों, नहींप्रजा, अनादरकरतीहै, एसीहीओप-
**७, बालुत्तिमहीपालो, नपया, परिहवइ, एसगुरु**
मागुरूकीहै, जिसवास्तेवयपर्यायसेंकमभीआचार्यकोंअग्रेश्वरीकरकेविचरैसाधूतैसें
**उवमा, जंबापुरओकाउं, विहरंतिमुणीतहासो**
वहभी, ८, विशेषरूपवान, तेजवान, वर्त्तमानकालमेंप्रधानश्रुतवंत, मीठेव
**वि, ८, पडिरूवो, तेयस्सी, जुगप्पहाणागमो, महुर**
चनबोलणेवाले, वडेगहरे, धीरजवान, उपदेशदेणेमेंतत्पर, ऐसैआचार्यहोतेहैं,
**वक्को, गंभीरोधिइमंतो, उवएसपरोय, आयरिओ,**

९, एककीकहीवातछिद्रदूसरेकोंनहींकहे, सौम्यमूर्त्ति, गुणकेसंग्रहकास्वभाव, नियमा-
९, अपरिस्सावी, सोमो, संगहसीलो, अविग्गह
दिधारणेवाले, विकथानकरे, स्थिरस्वभाववाले, प्रशांतहृदयऐसेंगुरुगुणधारीआचा
मईय, अविकत्थणो, अचवलो, पसंतहियओगुरुहो
र्येहोतेहें, १०, किसीभीकालमेंजिनवरेंद्र, प्राप्तहुयेअजरअमरस्थानमेंतवमा
ई, १०, कइयाविजिणवरिंदा, पत्ताअयरामरंपहंदा
र्गदेणेकूं, आचार्यतीर्थचारसघरूपकों, धारतेहैंसवज्ञानादिकसंपदासंपूर्ण, ११,
उं, आयरिएहिंपवयणं, धारिज्जइसंपयंसयलं, ११,
जिसकेपिछाडीचलतीहैंएसीभगवती, राजाकीनेटीआर्याचंदनाजी, सहस्रलोकोंसेपूजापाती,
अणुगम्मईभगवई, रायसुअज्जा, सहस्सवंदेहिं,
तोभीनहींकरतीहैमानगर्वको, जाणतीहैंयेगुणकामहात्महैमेरानहींनिश्चै, १२, उसीदि
तहविनकरेइमाणं, परिच्छइतंतहानूणं, १२, दिण
नकादीक्षालियाभयाकगालकेभी, सन्मुखउठतीहै, साधवी, चंदनवाला,
दिक्खियस्सदमगस्स, अभिमुहा, अज्ज, चंदणा,
आर्या, नहींचाहतीहै, आसनकाग्रहनकरना, यहसबविनयसाधुओंका
अज्जा, नेच्छइ, आसणगहणं सोविणओस
साधनियाकरतीहे, १३, वर्षसोकीदीक्षालीभईसाध्वियोंका,
व्वअज्जाणं, १३, वरिससयदिक्खियाए, अज्जा
आजकेदीक्षालियेहुयेसाधुओंके, सन्मुखजाणा, द्वादशावर्त्तवंदना,
ए अज्जदिक्खिओसाहू, अभिगमण, वंदण, न
नमस्कारकरणादिक, आसनदानादिकविनयसेंसाधूपूज्यहै, १४, श्रुतचारित्ररूपधर्मपु
मंसणेण, विणएणसोपुज्जो, १४, धम्मोपुरिसप्पभ
रुषोंसेंपैदाभयाहै, पुरुषोंमेंप्रधानतीर्थंकरोनेंकहाइसवास्तेपुरुषधर्मबडाहै, लोकीकमें
वो, पुरिसवरदेसिओपुरिसजिट्ठो, लोगेविपहुपु
भीसमर्थपुरुषहै, तोफेरक्याकहणालोकोत्तमधर्ममें, १५, सवाहनराजा,
रिसो, किंपुणलोगुत्तमेधम्मे, १५, संवाहणस्सरन्नो,
उसकेकाशीदेशवाणारसीनगरीमें, कन्याहजार, अधिक,
तइयावाणारसीइनयरीए, कन्नासहस्स, महिय,

होतीहुई, निश्चै, रूपवंती, १६, तोभी, वह, राज्यलक्ष्मी,
**आसि, किर, रूववंतीणं, १६, तहविय, सा, रायसिरी,**
पलटतीकूं, नहींरक्षाकरीउनोंसैं, पेटमेंरहाहुआएकनैं, रक्षा
**उल्लट्टंती, नताइयातार्हि, उयरट्ठिएणइक्केण, ता**
करीअंगवीरनामपुत्रनें, १७, स्त्रियां, अच्छी, वहोतरहतेभी,
**इयाअंगवीरेण, १७, महिलाण, सु, वहुयाणवि, म-**
अंदरसे, यह, समस्त, घरकासारधनादिक, राजाकेनोकरपुरुषलेजा
**ज्झाओ, इह, समत्त, घरसारो, रायपुरिसेहिंनिज्ज-**
तेहैं, जिसघरमेंजवपुरसजहांनहींहोयतो, १८, क्यापरमनुष्योंकूंवहो
**इ, जेणेविपुरसोजहंनत्थि, १८, किंपरजणवहु**
तजणाणेसेंवाकवीकराणेसें, अच्छाहैआत्माकीसाक्षीसेंकियासुकृत, इहां
**जाणावणार्हि, वरमप्पसक्खियंसुकयं, इहभर**
भरतचक्रवर्त्ती, प्रसन्नचंद्रराजाकाद्रष्टांतहै, १९, अन्यमतधारी
**हचक्कवट्टी, पसन्नचंदोयदिट्टंता, १९, वेसोवि**
वेषधारतेहैंवोप्रमाणनहीं, क्योंकेअसंजमजीवघातादिपदमेंवर्त्ततेहुयेकों, क्याहु-
**अप्पमाणो, असंजमपएसुवट्टमाणस्स, किंप**
आवदलाणेवेषसें, क्याजहरनहींमारताहैखाणेसेंनिश्चैमारताहै, २०, धर्म
**रियत्तियवेसं, विसन्नमारेइखज्जंतं, २०, धम्मंर**
कीरक्षाकरताहैवेष, संकताहैवेषकरकैमैंदीक्षितजैनकासाधूहूं, जैसेंउन्मा
**क्खइवेसो, संकइवेसेणदिक्खिओमिअहं, उम**
र्गमेंपडतेहुयेचोरजारादिकसें, रक्षाकरताहैराजादेशकों, २१, आत्माका
**ग्गेणपडंतं, रक्खइरायाजणवओय, २१, अप्पा**
कृत्यजाणतीहैआत्मा, जैसारहाहुआहैआत्माकीसाक्षीसेंधर्मादिकअनुष्ठान,
**जाणइअप्पा, जहट्ठिओअप्पसक्खिओधम्मो,**
आत्माकरतूं वहतेसा, जैसेंआत्मासुखकीवहणेवालीहोय, २२,
**अप्पाकरेइतंतह, जहअप्पसुहावहंहोइ, २२,**
जिस२समयमेंजीव, समस्तपणेप्रवेशकरताहैजिन२भावकरके, वहउस२
**जंजंसमयंजीवो, आविस्सइजेण२भावेण, सोतंमि**

समयमे, सुभअथवाअसुभबांधताहैकर्म, २३, धर्मअगरमदकरके
**तंमिसमए, सुहासुहंबंधएकम्मं, २३, धम्मोमण्णहं**
हो, वहनहींहोताजेसेठढगरमीऔरहवामेहणीजताहुआ, एकवर्षतकभोज
**तो, तोनविसीउएहवायविजड्डिओ, सवच्छरम**
नकिनाकिये, बाहुबलीराजरूपीतेसेक्लेशभोगताहुआ, २४, अपणी
**णसीओ, बाहुबलीनइकिलिस्संतो, २४, निअग**
बुद्धिसेंविकल्पित, विचारकरणेसें, स्वछंदबुद्धिसेचलनेकरके, क
**मइविगप्पिय, चिंतिएण, सच्छंदबुद्धिचरिएण, क**
ह्यासेंपरलोककाहितहोय, इसवास्तेकरणागुरूकेउपदेशसें, २५, अहकारी
**त्तोपारत्तहियं, कीरइगुरुअणुवएसेणं, २५, थद्धो**
निरोपकारीकृतघ्न, विनयरहितअविनीत, गर्वितमानी, गुरूकूप्रणामनहीकरता,
**निरोवयारी, अविणीओ, गव्विओ, निरवणामो,**
एसासाधूजनोंके, निंदाकरणेयोग्यहोताहै, मनुष्योंमेंभीदुष्टस्वभावीहैएसीहीलना
**साहुजणस्स, गरहिओ, जणेविवयणिज्जयंलहइ,**
पाताहै, २६, थोडेमेंहीसत्पुरुष, सनत्कुमारचक्रीकीतरेकेईप्रतिबोधपातेहैं,
**२६, थोवेणविसप्पुरिसा, सणंकुमारुव्वकेइबुझंति,**
इससरीरसेंथोडेकालमेंसमस्तहानीहै, जोनिश्चेदेवतानेंउनोकोंकहा, २७, जती
**देहेखणपरिहाणी, जंकिरदेवेहिंसेकहियं, २७, ज**
मुक्तिजाणेवालासातलवकालआयुरहणेसेपचानुत्तरविमानवासीहोताहै,वहभीससारमेंजन्म
**इतालवसत्तमसुर विमाणवासीविपरिवडंतिसुरा**
लेताहै,इसवास्तेविचारणेसें,बाकीसब, इससंसारमेशाश्वत्क्याहैकुछनही, २८, कैसेंउस
**चिंतिज्जंत,सेसं, संसारेसासयंकयरं, २८, कहतंभन्न**
कोंसुखकहणा, जोवहोतकालसेंभीजिसकादु खभोगणाहोताहैदेवसुखसेंफेरगर्भकादुःख,
**इसुक्खं, सुचिरेणविजस्सदुक्खमल्लिइयिए, जचम**
जोमरणकीवस्त, भवनरकादिकपर्यटनकापीछैबंधहोताहै, २९, उपदेशहजारोंदे
**रणावसाणे, भवसंसाराणुबंधंच, २९, उवएससहस्स-**
णैसेंभी, बोधदेतेहुयेभीनहींभीप्रतिबोधपाताहैकोई, जेसेंब्रह्मदत्तराजा
**स्सेहिवि, बोहिज्जंतोनबुझइकोई, जहबंभदत्त**

जैसाउदाईराजाकोंमारणेवालाकोईनहींभीप्रतिवोधपाता, ३०, हाथीकेकानकीतरेचंच-
**राया, उदाइनिवमारओचेव, ३०, गयकन्नचंचला**
ल, नहींछोडणेसें इसराज्यलक्ष्मीकों, जीवस्वकर्मोंसेंयुक्तपापोंसें
**ए, अपरिच्चत्ताइरायलच्छीए, जीवासकम्मकलि-**
भारसेंभराहुआगिरताहैनीचेनरकमें, ३१, कहणेमेंभीजीवोंके,
**मल, भरियभरातोपडंतिअहे, ३१, वोत्तूणविजीवाणं,**
अच्छाओरदुष्करअैसेपापचरित्र, हेभगवान्क्यावहयेहै(उत्तर)हांवहीहै,
**सुदुक्कराइंतिपावचरियाइं, भयवंजासासासा,**
प्रत्यादेशदृष्टांतनिश्चेयेएसाहीहुआतेरे, ३२, अंगीकारकरकैदोष, अपणा
**पच्चाएसोहुयणमोते, ३२, पडिवज्जऊणदोसे, निय**
अच्छीतरेफेरपावोंमेंगिरकै, तदपीछेमृगावतीसाध्वीकों, पैदाभया
**ए सम्मंचपायवडियाए, तोकिरमियावईए, उपन्नंके**
केवलज्ञान, ३३,
**वलंनाणं, ३३, इतिपोसह । सज्झायसंपूर्ण ॥,**
अव रात्रीसंस्तारकगाथा, निषेधकर, निषेधकर, न
**अथराईसंथारागाथा, निस्सिहि, निस्सिहि, न**
मस्कारकरताहूंक्षमाश्रमणोंकों, गौतमादिक, महामुनीराजोकूं, आ
**मोखमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणिणं, अणु**
ज्ञादेओ वैठणेकों, आज्ञादेओहेपरमगुरू, भारीगुण
**जाणहचिठिज्जा, अणुजाणहपरमगुरू, गुरुगुण**
रत्नोंसें, मंडितहैशरीरआपका, वहुतप्रतिपूर्णहै, पोहररात्री, रात्री
**रयणेहिं, मंडियंसरीरा, वहुपडिपुन्ना, पोरिसी, राई**
संस्तारकशय्याकरताहूं, १, आज्ञादेओसंथारेकी, भुजा वांईपर
**संथारएठाएम्मि, १, अणुजाणहसंथारं, वाहुवहा**
मस्तकधर वांईकरवटपसवाडे, कुर्कटकीतरेपांवोंकोंपसार, अभ्यंतर(अंद
**णेणवामपासेण, कुक्कुडपायपसारेणं, अंतरंत**
र)तपमार्जनजमीनमें, संकोचितसंडासामें, इधरउधरपसवा
**पमज्जएभूमिं, २, संकोडअसंडासा, उवट्टंतेय**

टाफेरतेशरीरकृप्रमार्जना, दिव्य[तेजउपयोगकू] उश्वासरोकणा,
कायपडिलेहा, दिव्वाईउवओगं, उसासनिरूह
लोकमें, जोमुझकोहोयजानेंप्रमाद, इस, देहीसे,
णा, लोए, ३ जइमेहुज्जपमाओ, इमस्स, देहस्स, इ
इसरातको, आहार, वस्त्र, शरीर, सब, मनवचनकायामें,
माइरयणीए, आहार, मुवहि, देहि, सव्वं, तिविहेण,
वोसराया, ४, आश्रव(पापकारस्ता), कषायकावंधन, लडाई, क
वोसिरिअं,४, आसव, कसायबंधण, कलहा, अ
लकदैना, परायेकीनिंदा, बेचेनी, खुसवख्ती, चुगली, कपटाईमे
ब्भक्खाण, परपरिवाओ, अरइ, रई, पेसुन्न, मायामो
झूठबोलणा फेर, मिथ्यात्व, ५, वोसराऊगा,इत्यादि, मोक्षमार्ग, अच्छेस्वर्ग
सं, च, मिच्छत्तं, ५, वोसरिसुमाइं, मुक्खमग्ग, समग्ग
केविघ्नभूत, दुर्गतिके, बंधनकेकारण, अठारेपापेंके
विग्घभूआइं, दुग्गइ निबंधणाइ, अठारसपाव
ठिकाणे, ६, एकेलाहूमे नहींहैमेराकोईभी, नहींमेंओरकिसीकाभी
ठाणाइं, ६, एगोऽहं नत्थिमेकोई, नाहमन्नस्सकस्स
हू, इसतरे अदीन मनसें, आत्माकू शिक्षाकरणा, ७, इके
इ, एवंअदीणमणसो, अप्पाणमणुसासए, ७, एगो
लामेराशाश्वतआत्माहै, ज्ञान दर्शनकरकैसयुक्त, बाकीकेमेरे
मेसासओअप्पा, नाणदंसणसंजुओ, सेसामेया
बाहिरकेभावहै, सर्व्वहेसोसयोगलक्षणहै, ८, सजोगकीजडमेंइस
हिराभावा, सव्वेसजोगलक्खणा, ८, सजोगमूलाजी
जीवने, पायादुःख परपरासें, तिसवास्तेसयोगकासबंध, सबकों
वेण, पत्तादुक्खपरपरा, तम्हासजोगसंबंध, सव्वं
मनवचनकायासें वोसराताहू, ९, अरिहंततोमेरेदेवहै, जहांतक
तिविहेणवोसिरियं, ९, अरिहंतोमहदेवो. जावज्जी
जीऊउत्तमसाधूगुरुहै, केवलीकाकहानत्वधर्महै, इयसम्यक्तमेंने
वंसुसाहुणोगुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्त, इयसमत्तमए

ग्रहणकिया, १०, चारमंगलहै, अरिहंतभगवानमंगल, सिद्धभगवा
गहियं, १०, चत्तारिमंगलं, अरिहंतामंगलं, सिद्धामंग
नमंगल, साधूमंगल, केवलीभगवानकाकहा धर्ममंगल, ११, चारलो
लं, साहूमंगलं, केवलिपन्नत्तोधम्मोमंगलं, ११, चत्ता
कोंमेंउत्तमहै, अरिहंतलोकोंमेंउत्तम, सिद्धलोकोंमेंउत्तमहै,
रिलोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा,
साधूलोकोंमेंउत्तमहै, केवलीकाकहा धर्महैसोतीनोंलोकमेंउत्तमहै, चार
साहूलोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तोधम्मोलोगुत्तमो, चत्ता
सरण अंगीकारकरताहूं, अरिहंतोंकाशरणअंगीकारकरताहूं,
रिसरणंपवज्जामि, अरिहंतेसरणंपवज्जामि, सि
सिद्धोंकासरणअंगीकारकरताहूं, साधुओंकासरणअंगीकारकरताहूं, केव
द्धेसरणंपवज्जामि, साहूसरणंपवज्जामि, केवलि
लीकाकहाधर्मअंगीकारकरताहूं, अरिहंतमंगलमेरेहै,
पन्नत्तंधम्मंसरणंपवज्जामि, अरिहंतामंगलंमज्झ,
अरिहंतमेरेदेवहै, अरिहंतोंकीकीर्त्तनाकरताहुआ, वोस
अरिहंतामज्झदेवया, अरिहंताकित्तिअंताणं, वो
राताहूंइसतरेपापोंकों, १, सिद्धपरमेश्वरमंगलमेरेहै, सिद्धभगवानमेरे
सिरामित्तिपावगं, १, सिद्धायमंगलंमज्झ, सिद्धायमज्झ
देवहै, सिद्धभगवानकीकीर्त्तनाकरताहुआ, वोसराताहूंइसतरेपापोंकों
देवया, सिद्धायकित्तिअंताणं बोसिरामित्तिपावगं,
२ आचार्यमंगलमेरेहै, आचार्य, मेरे, देवहै,
२ आयरियामंगलंमज्झ, आयरिया, मज्झ, देवया,
आचार्यमहाराजकी, कीर्त्तनाकरताहुआ, वोसराताहूंइसतरेपापोकों, ३,
आयरिआ, कित्तिअंताणं, बोसिरामित्तिपावगं, ३,
उपाध्याय, मंगल, मेरेहै, उपाध्याय, मेरे, देवहै, उपाध्या
उवज्झाया, मंगलं, मज्झ, उवज्झाया, मज्झ, देवया, उव
योंकी, कीर्त्तनाकरताहुआ, वोसराताहूं, इसतरे, पापोंकों, ४,
ज्झाया,कित्तिअंताणं, बोसिरामि,त्ति, पावगं, ४, सा

साधूमंगल, मेरेहै, साधूमेरेदेवहै, साधुओंकीकीर्त
हूणोमंगलं, मज्झ, साहूणोमज्झदेवया, साहूणोकि
नाकरताहूंआ, वोसरताहू इसतरे पापोंको, ५, पृथ्वी, जल,
त्तिअंताणं, वोसिरामित्तिपावगं, ५, पुढवि, दग, अ
अग्नि, हवा, इनएकेकोका सात जोनी लाखहै, वनस्पती
गनि, मारुअ, इक्किकेसत्तजोणिलक्खाओ, वणप
प्रत्येक, अनतकाय, दस, चौदे, जोनी, लाखहै, १, विकले
त्तेय, अणंते, दस, चउदस, जोणि, लक्खाओ,१, विगलि
द्रियोंकेदोदोलाखहै, चारश्लाख नारकीऔरदेवतोंके, तिर्यंचोंके होतेहैं
दिएसुदोदो, चउरो२थनारयसुरेसु, तिरिएसुहुंति
चारलाख, चउदहलाख, मनुष्योंकीयोनिहै, २, खमाताहू, सर्व्वजीवों
चउरो, चउदसलक्खाउ,मणुएसु, २, खामेमि, सव्वजी
कों, सर्व्वजीवखमो(माफकरो)मुझे, मित्रताहैमेरेसर्व्वभूत(जीवोंमें), वैरविरोध
वे, सव्वेजीवाखमंतुमे, मित्तीमेसव्वभूएसु, वैरमज्झ
मेरेनहींकिसीसें, ३, इसतरेमेंनेआलोचनकिया, निंदाकरी, विशेषनिंदाकरी, दु
नकेणवि, ३, एवमहंआलोइय, निंदिय, गरहिअ, दुगं
गछाकरीअच्छीतरे, मनवचनकायासेंप्रतिक्रमताहू, वंदनकरताहूमेंजिनचोवीसों
छियंसम्मं, तिविहेणपडिक्कंतो, वंदामिजिणेचउव्वी
कों, ४, क्षमणा, खमाणा, मेनेक्षमाया(माफीमागी), सर्व्वजी
सं, ४, खमिअ, खमाविअ, मइखमिअ, सव्वहजी
वोंकीनिकायोंसें, सिद्धभगवानकेसन्मुखप्रकाशकिया, मेरेकिसीमेंने
वनिकाय, सिद्धअसाखआलोयणह, मइअहवैर
रनहींहैभाइयो, ५, सर्व्वजीवकर्मोंकेवस, चौदेराजलोकमेजन्ममरण,
नभाव, ५, सव्वेजीवाकम्मवस, चउदहराजभमंतु
सेभमतेहैं,उनसबोंकोमेंनेखमाया, मुझेभी, वह, क्षमाकरो, ६, पूर्ण,
तेमइंसव्वखमाविआ, मज्झवि, तेह, खमंतु, ६, इनि

मेंणवचनकीशोभाहैपूज्य
अथदेसावगासीकापचक्खाण, अहणमंने

तुमारेपास, देशअवकास१०मात्रत, प्रत्याख्यानकरताहूं, वहइसतरे,
**तुम्माणंसमीवे, देसावगासियं, पच्चक्खामि, तंजहा,**
द्रव्यसें, क्षेत्रसें, कालसें, भावसें, द्रव्यसेंतो
**दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, दव्वओ,**
देशावगासिकव्रत, क्षेत्रसेंइसजगे, कालसें,
**णं, देसावगासियं, खेत्तओणंइत्थ, कालओ**
जहांतकधारणाहे, भावसें, जहांतक, ग्रहोंसे, नहींग्रहीजूं,
**णं, जावधारणा, भावओणं, जाव, गहेणं, नगहेज्जा**
छलशाकनीआदिकसें, नहींठगाउं, जहांतक, और, किसीभी,
**मि, छलेणं, नछलेज्जामि, जाव, अन्नय, केणावि, रो**
रोगआतंकसेपरवशनहीहूं, समतापरिणाम, नहींपलटे, तहांतकसमस्त
**गायंकेणए, समेपरिणामो, नपरिवडइ, तावअभि**
पणेग्रहणहै, अन्यत्रअनाभोगपणे, भूलजाणेसेंआगारहै, चैत्यकेसंघके
**ग्गहो, अन्नत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, महत्तरा**
काममेंजाणामोकलाहै, सवतरेशरीरअच्छाहैउहांतक,बेमारीमेंनहीं, वोसराताहूं, १,
**गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि, १,**

पांचथावरजीवयुक्त, द्रव्य
**अथ१४नियमसंभारणगाथा, सचित्त, १ दव्व**
घृततेलदहीदूधमीठा, असवारी, ४, पानसुपारीवगेरा, पोसाख, सूंघने
**विगई, ३ वाहण, ४, तंबोल, ५ वत्थ, ६ कु**
कीसववस्तु, पहरणेपांवोंकीवस्तु, विछाणेकीवस्तु, वदनपरलेपकीवस्तु
**सुमेसु, ७ वाहण, ८ सयण, ९ विलेवण, १०**
ब्रह्मचर्य, १० दिसिकाप्रमाण, स्नानकेपानीकानियम, रोटीदालचावलसागादि
**बंभ, ११ दिसि, १२ न्हाण, १३ भत्तेसु, १४।१**

सूर्यउदयभयेपीछे२घडीतक
**अथपच्चख्खाणआगार, ॥ उग्गएसूरे,**
नवकारगिणकेपारूंनहीं उहांतकनवकारसीव्रतमुझेंहै,
**नवकारसहियं,**

पच्चक्खाइकहते अंगीकारकरताहूंत्यागरूपव्रत, चारोंहीआहारोंकात्यागहै,
**पचक्खाइ, चउव्विहंपिआहा**
अन्नसवजातका, सागतरकारी, लड्डूवगेरेपकवान, कंदजमीनमेंका,दूध,दही,हींग,सो
**रं, असणं,**
फ, निमक, सवतरेका, अशनकात्यागहै, दहीकापानी, जवकाधोवण, तुषोदक,
**पाणं,**
तंदुलोदक गरमजल शुद्धसबअप्पकायाकात्याग, खादिम, नालेर, खजूर, दा
**खाइमं,**
ख, सेकाअनाज, आंबा, केले, ककडी, अखरोट, बिदाम, सबमेवे, सबतरेकेफल, खा-
दमकात्यागहै, स्वादिम, पानबीडा, सूठ, मिरच, पीपर, हरडे, बहेडा, आवला, तुलछी,
**साइमं,**
कपेला, कत्था, मोलेठी, तज, तमालपत्र, इलायची, लोंग, वायविडंग, अजवाण, अजमोद,
कुलिंजन, कबावचीणी, कचूर, नागरमोथा, काटासेलिया, कृमटिया, पान, सुपारी, पो-
हकरमूल, जवासेकीजड, बावची, बबूलकीछाल, धवकीछाल, खेजडकीछाल, ख-
यरसार, येसबस्वादिमकात्यागहै, ] भूलकरचीजमूंमेंडाललीयादआणेसेंडालदेतोपच्च-
**अन्नत्थणाभोगेणं,**
खाणभंगनहींहोय, खालेवेतोपचखाणभंगहोय,] सूर्यकाबराबरकालनहींमालमदे
**पच्छन्नकालेणं,**
णेसेंखाणेमेंआवेतोपचक्खाणभंगनहीं,] पूरबदिशाकूपश्चिमभूलकरसमझले
**दिसामोहेणं,**
वै, पच्चक्खाणकाकालपूराहुयेपहलीखालेवेतोव्रतभंगनहीं,]
अचानकउछलकरमूमेंकोईवस्तुगिरजायतोव्रतभंगनहीं]
**सहस्सागारेण,**
साधूकेवचनसेंउग्घाडापोरसीआदिकभ्रमयुक्तसुणकरपचखाणकालपूराहुवा
**साहुवयणेणं,**
जाणकेभोजनकरेतोव्रतभंगनहीं]
पच्चक्खाणसेंजादानिर्जराकाकारणजिनमंदिर या श्रीसंघकाकोईवडाकाम
**महत्तरागारेणं,**

आजाणेसेंपच्चक्खाणकाकालपूराहुयेविगरपहलेभोजनकरलैतोव्रतभंगनहीं]
पच्चक्खाणकाकालपूराहुयेपहलीशूलादिककोईवेमारीहोजावैऔरपरि
**सव्वसमाहिवत्तियागारेणं,**
णामथिरनहींरहैआर्त्तध्यानहोजावैतवरोगमिटाणेदवालैतोव्रतभंगनहीं]
गृहस्थकेदेखतेसाधूभोजनकरेनहींगृहस्थकेआणेसेंदूसरीजगेजाकरभो-
**सागारीआगारेणं,**
जनकरेतोएकाशणेकाव्रतभंगनहीं, इसीतरेकिसीकीनजरलगतीहो वो च-
लाआवैतवएकाशणेकापच्चख्खाणवालाश्रावकउठकरदूसरीजगेभोजनकरेतो
व्रतभंगनहीं] पगोकोंएकठाकरणेसेंपसारणेसेंथोडाआसनचलेतोव्रतभंगनहीं,
**आउट्टणपसारेणं,**
गुरुमाहाराजकेआजाणेसेंएकाशनकाभोजनकरताखडाहोजायतोव्रतभंगनहीं]
**गुरुअब्भुट्ठाणेणं,**
येआगारसाधुओंकाहीहै, सरसआहारदुसरेसाधूकेवचगया, परठणे
**पारिठावणियागारेणं,**
में दोषजादासमझ, दुसरासाधूएकाशनेवाले साधूकूं भोजन दुसरी वस्त
करणेका कहे, एकाशनेवालावोआहारकरलेवैतो, एकाशनव्रतभंगनहीं,]
थालीवगेरेपात्रोंकेघृतादिकविगयकाअंसलगाभयाहैउसकोंपोंछभी
**लेवालेवेणं,**
डालालेकिन्वेमालमकुछलगारहगयाहोउसपात्रमें आयंबिलकेपच्चक्खा
णवालाभोजनकरलैतोव्रतभंगनही]
आयंबिलादिपच्चक्खाणमें नहींखाणेयोग्यद्रव्यविगयवगेरेकाखा
**उक्खित्तविवेगेणं,**
णेयोग्यवस्तूकेसंगस्पर्शहोगयाहो, वोद्रव्यखाणेमेंआवैतोव्रतभंगनहीं]
लेकिन्जो विगयआदि पतला द्रव्य हाथसेंउठसकेनहीं एसेद्रव्यसें
स्पर्स हुआ होयतोखाणेसेंव्रतभंगनहीं]
भोजनपुरपणेकीकुडछीआदिकके वेमालम विगयवगेरेद्रव्यसें
**गिहत्थसंसिट्ठेणं,**
लेपहोय उससेंपुरषैतोव्रतभंगनही]

सर्वथालूखीरोटी खाखरा किसीनेवेमालमधीसेंचोपडदियाहैलेकि
**पडुचमुक्खिवएणं,**
नऊपरसेंदिखाईनर्हादैस्वादमीघीकानहींमालभदे नीवीवालाखा
लेवेतोभ्रतभगनही ऊपरसेंधारविगयलैतोन्रतभगहोय १५ ]
प्राणोंकानाशविचारणा, झूठ बोलनेका परिणाम, २ पराइचीजविनाआज्ञालेणा, ३
**प्राणातिपात, १ मृषावाद, २ अदत्तादान, ३ मै**
विषयकीइच्छा, ४, बाह्याभ्यतरधनादिइच्छा, ५, रातकाभोजन, ६, गुस्सा
**थुन, ४, परिग्रह, ५, रात्रिभोजन, ६, क्रोध,७,**
अहकार, ७, कपटाई, ८, धनादिसचयपरिणाम, ९, प्रीतीपुद्गलोंपर, १०, द्वेष, ११
**मान, ७, माया, ८, लोभ, ९, राग, १०, द्वेष,११**
लडाईकरना, १२, झूठा कलकदेणा, १३, निंदाकरणीगुणीनिर्गुणीकी, १४,
**कलह, १२, अभ्याख्यान, १३, परपरिवाद, १४,**
हासीकरणी, १५, हर्षकरना, १६, शोककरना, १७, चुगलीखाणी, १८ कपटसें
**हास्य, १५, रति, १६, अरति, १७, पैशून्य, १८ माया**
झूठमेंठगना, कुगुरुकुदेवकुधर्मकीवांछा,
**मोसमिथ्यात्वशल्य,**

शातिनाथप्रभुशातिकेस्थान,समस्तपणेशाति, रा
**। अथलघुशांति ॥ शांतिशान्तिनिशान्तं, शांतं**
गद्वेषरहितशातभयेउपद्रवजिसकेनमस्कारकरके, स्तवलाहृशातिकेकारण, मत्रो
**शांताशिवंनमस्कृत्य, स्तोतुःशान्तिनिमित्तं, मंत्र**
केपदोंमेंशातिकेवास्तेस्तवनकरताहू, १, ओएसानिश्चयवाचकपदइमनचनसें,
**पदैःशांतयेस्तौमि, १, ओमितिनिश्चितवचसे,**
घेरे२नमस्कारहुओऐश्वर्यवालेयोग्यपूजाके, शातिनाथभगवानमणी, रा
**नमोनमोभगवतेऽर्हतेपूजाम, शांतिजिनाय, ज**
गादिकजीतणेहारे, यशवत,स्वामीइद्रियोंकेदमनकर्त्तामुनियोंके, २, सर्वचोतीश
**यवते, यशस्विनेस्वामिनेदमिनाम, २, सकला**
अतिशयरूपबडी, सपदाकरकैयुक्त, तारीफ(प्रशसा)करणेलायक,
**तिशेषकमहा, सपत्तिसमन्विताय, शस्याय,**

तीनलोककेजीवोंसेंपूजित, फेर, वेर२नमस्कारहोय, शांतिनाथदेवकों, ३, सब
**त्रैलोक्यपूजिताय, च, नमोनमः, शांतिदेवाय, ३, सर्वा**
देवतोंकैसमूहयुक्त, उनोंकेस्वामी६४इंद्रोंसेंपूजेहुये,देवतोंसेंभीनहींजीतेजावे, ती
**मरसुसमुह, स्वामिकसंपूजितायनिजिताय, भुव**
नलोककेलोकोंकोंपालनेमेंउद्यमवंत, जादाकरकैसावधान, हमेसनमस्कारउनोंकों, ४, सब
**नजनपालनोद्यत, तमाय,सततं, नमस्तस्मै, ४, सर्व**
पापोंकेसमूहकोंनाशकरणेवाले, सबउपद्रवोंकोंअतिशयशांतिकरणे, दुष्टजो
**दुरितौघनाशनकराय, सर्वाशिवप्रशमनाय, दुष्टग्र**
ग्रहभूतपिशाच, शाकनीओकोंजादाकरकैमथनेकों, ५, जिसकाशांतिएसा
**हभूतपिशाच, शाकनीनां प्रमथनाय, ५, यस्येतिना**
नामरूपमंत्र, प्रधानसर्वोत्तमवचनकेउपयोगसेंकियाहैसंतोष, एसीविजयानामदे
**ममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा, विजयाकुरु**
वीकरतीहैलोकोंकाहित, फेरइसीतरेनमीहुई,नमस्कारकरोउसशांतिकों, ६, हुओ
**तेजनहित, मितिचनुतानमततंशांतिम्, ६, भवतुन**
नमस्कारतुमकोंहेभगवती, विजयादेवीअच्छेजयवाली,दुसरेदेवोंसेंअजई, कोईभी
**मस्तेभगवति, विजयेसुजयेपरापरैरजिते, अपरा**
जगेअनादरनहींपाईजगत्में, जयवंतीहै, एसीस्तुतिकरणेसेंजयदेतीहै, ७, सबभी
**जितेजगत्यां, जयतीति, जयावहेभवति, ७, सर्वस्या**
फेरसंघकों, सुखउपद्रवरहितमंगलकूंदेणेवाली, साधुओंकोंफेर
**पिचसंघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे, साधूनांचस**
हमेसउपद्रवरहित, चित्तकीशांति, धर्मवृद्धीदेणेवाली, जयपावो, ८, भव्यजीवोंकोंसिद्धिकर्त्ता
**दाशिव, तुष्टि, पुष्टिप्रदे, जीयात्,८, भव्यानांकृतसिद्धे,**
चित्तकीसमाधि, मोक्ष, पैदाकरणेवालीभव्यजीवोंकै, अभयदेणेमें, समस्तपणेरक्त,
**निर्वृत्ति, निर्वाण, जननिसत्वानां, अभयप्रदान, निरते,**
नमस्कारहो, कल्याणदेणेवाली, तुझें, ९, भक्तजीवोंके, कल्या
**नमोस्तु, स्वस्तिप्रदे, तुभ्यम्, ९, भक्तानांजंतूनां, शुभा**
णकारिणी, हमेसतत्परहेदेवी, सम्यग्दृष्टिजीवोंकों, फेर, धीरज, प्रीति, मति,
**वहे, नित्यमुद्यतेदेवि, सम्यग्दृष्टीनां, च, धृति, रति, मति,**

बुद्धि देणेको, १०, जिनशासनमेंतत्पर, शांतिप्रभूको
**बुद्धिप्रदानाय, १०, जिनशासननिरतानां, शांतिनता**
नमनकरतोंको,फेरजगत्केजीवोंकों, लक्ष्मीसंपदाकीर्त्तियशकों, वधाणेवाली
**नांचजगतिजंतूना, श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनिज**
हेजयादेवीतुमनिजयपाओ, ११, जल, अग्नि, जहर, साप, दुष्टग्रह
**यदेविविजयस्व, ११, सलिला, नल, विष, विषधर, दुष्टग्र**
वडेराजरोग, लडाईकेडरसें, राक्षस वैरियोंकासमूह,मरी, चोरएवमात
**ह,राजरोग, रणभयतः, राक्षसरिपुगणमारी, चौरेति**
ईति,प्राणघातीजीवादिकोसे, १२, अवरक्षाकरो२निरुपद्रवपणा, करो२शांति
**श्वापदादिभ्यः, १२, अथरक्ष२सुशिवं, कुरु२शांतिंच**
फेरकरो२हमेसहमीतरे, संतोषकरो, २ पुष्टिकरो करो, २ कल्याणकोफेर,
**कुरु२सदेति, तुष्टिंकुरु,२ पुष्टिंकुरु, २ स्वस्तिंचकु**
करो२आप, १३, हेभगवति, हेगुणवती, हेशिवशांतिरूप, तुष्टिपुष्टि
**रु२त्वं, १३, भगवति, गुणवति, शिवशांति, तुष्टिपु**
कल्याण, इसलोकमें,करो,२ मनुष्योंके, ओंज्योतिस्वरूपिणीएसा
**ष्टि,स्वस्ती, ह, कुरु, २ जनानाम्, ओमितिनमोन**
नमस्कार२हुओ, सातशांतिमंत्रकावीजहै, ३ विघ्ननिनाशकमंत्रवीजहै, १४,
**मो, ह्रां ह्रीं हुं ह्रः यः क्षः ह्रीं, फुट्फुट्स्वाहा, १४,**
इसतरेजिनोंकानामाक्षर, मंत्रपूर्वक, अच्छीतरेस्तुतिकरीहुईजयादेवी,
**एवंयन्नामाक्षर, पुरस्सरं, संस्तुताजयादेवी, कु**
करतीहै शांतिकेकारणकों, नमस्कारहुवो,२ शांतिभगवानतिनोंको, १५,
**रुतेशांतिनिमित्त, नमोनमः, शांतयेतस्मै, १५,**
इसतरे पूर्वाचार्योंकादिखायाहुआ, मंत्रोंकेपदोंसे गर्भित, स्तवना,
**इतिपूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः, स्तवः,**
शांतिनाथकी, जलवगेरेकाडरोंकोंनासकरणेवाला, शांतिवगेरेकोकरणेवाले,
**शांतेः, सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च**
भक्तिवानमनुष्योंके, १६, जो इसस्तोत्रको पढे हमेंस, सुणे, मनमें स्मरण
**भक्तिमतां १६, यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भाव**

करै, अथवा, सावधानयोगरखकर, वहनिश्चै शांतिकेपदकों पावै
यति, वा, यथायोग्यम्, सहि शांतिपदं या
सूरिः श्रीमानदेवभी, फेर, १७,
यात्, सूरिश्रीमान देवश्च, १७, इति शांतिस्तोत्रं, ॥
पृथ्वीमें अलंकारभूत पूर्ण, सुवर्णजैसी
अथ दूज थुई ॥ मही मंडणं पुन्न, सोवण्ण
देहजिनोंकी, सामान्यकेवलियोंकूं आनंदकारीकेवलज्ञानकेघर, महाआ-
देहं, जिणाणंदणंकेवलं नाणगेहं, महाणं
नंदलक्ष्मी, वहोतबुद्धिसेंविराजमान, अच्छीतरेसेवाकरूं, एसेसीमंधर
दलच्छी, वहुबुद्धिरायं, सुसेवामि, सीमंधरं,
तीर्थाधिपतीराजकों, १, पहलीतारदिये, जो, जीव, पैदाभयेजिनोंकों,
तित्थरायं १, पुरातारका, जेह, जीवाण, जाया,
होंयगेजो, सवभव्यजीवोंकेंरक्षाकरताजिनराज, तैसेंइससमय
भविस्संतिजे, सव्वभव्वाणताया, तहासंपयंजे
जोजिनवर्त्तमानहै, सुखकोंदेओवहमुझें, तीनलोकमेंप्रधानभगवान,
जिणावट्टमाणा, सुहंदिंतुतेमे, तिलोयप्पहाणा,
२, दुःखसेंउतरनाहै जिसकाएसासंसारसमुद्रमेंजिहाजसमान, पापोंकीश्रेणी
२, दुरुत्तारसंसारकूवारपोयं, कलंकावलि
रूप, कीचड, उसकों धोणेको जलसमान, मनवांछितअर्थदेणेकूंश्रेष्ठकल्पवृक्ष
पंकपख्खालतोयं, मणोवंछिअत्थेसुमंदा
समानकल्पजिनोंका, एसेजिनेंद्रदेवका आगमकोंवंदन कर्त्ताहूं अच्छाहैमहात्मजिनोंका, ३
रकप्पं, जिणंदागमंवंदिमोसुमहप्पं, ३, विको
जिनराजकेमुखकमलमेंलीन, कला, रूप, और मनोहरता,
सेजिणंदाणणंभोजलीणा, कला, रूव, लावण्ण,
और सौभाग्यतासेंपुष्ट, करताहूंउसकाचित्तमेंभी, हमेसनिश्चयध्यांन,
सोहग्गपीणा, वहंतस्सचित्तंपि, निच्चंपिझाणं,
देवीभारती, देओ मुझें शुद्धज्ञानकों, ४,
सुरीभारही, देहिमेशुद्धनाणं, ४, इति,

पांचज्ञानदर्शनचारित्रसुखादिअनतकअच्छेप्रपचरूपपर

**अथपंचमीस्तुति ॥** **पंचानंतकसुप्रपंचपर**

मआनदउत्कृष्टपणेदेणेसमर्थ, पाचअनुत्तर सीमातक देवसनवीजोपद

**मानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्यपद**

वीजिमकोवसकरणेमंत्रकीओपमा, जिसनेजादाकरकेसुदिपचमीकाप्रधानत

**वीवस्यायमंत्रोपमं, येनप्रोज्वलपंचमीवर**

पकोकहा, औरउसतपकेकरणेवालोंके, श्रीसिंहमृगराजकालछनहैजि

**तपोव्याहारितत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः**

नोंकेनहनिस्तारनकरोश्रीवर्द्धमानप्रभुकल्याणको, १, जोपाचआश्रवकूंरोकणे

**शतनुतांश्रीवर्द्धमानश्रियं, १, येपंचाश्रवरोध**

केसाधनमेतत्पर, पांचप्रमादकूहरणेवाले, पाचअणुव्रतऔरपाचमहाव्रत

**साधनपरा, पंचप्रमादेहरा, पंचाणुव्रतपंचसुव्रत**

कीविधिउत्कृष्टपणेवताणेवालेआदरयुक्त, करकेकामदेवकासमस्तपणेज

**विधिप्रज्ञापनासादरा, कृत्वापंचकपीकनिर्जे**

यउसकेनाद प्राप्तहुयेगतिपचमी(मुक्ति)को, वहयहहुओपचमीकेनतकेधार

**यमथोप्रासागतिंपंचमी, तेमीशंतसुपंचमीव्रत**

कोंकेसर्वतीर्थकरसुखकेकरणेवाले, २, पाचआचारमेंप्रवीणएमेपाचमेंग

**भृतांतीर्थंकराशंकरा, २, पंचाचारधुरीणपंचमग**

णकेअधिपतीनेंअच्छीतरेसूत्रमें, वहपांचज्ञानकाविचारकासारकरकेयुक्त

**णाधीशैनसंसुत्रतं, पंचज्ञानविचारसारकलितं**

पाचोंमें पाचफेरयह, दीपककीकाति जैसे, मारी कामदेवके अधेरेमें, इग्या

**पचेपुपचस्विदं, दीपाभगुस्पंचमारत्तिमिरे, स्वेका**

रसका, रोहणीका, ओरपचमीआदिकाफलको प्रकाशकरणेमें चतुर ध्याताहू

**दशी, रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुंध्यायामि**

जैनआगमको, ३, पाच परमेष्टीका, थिरपणे, श्री

**जैनागमं, ३, पचानां परमेष्ठिनां, स्थिरतया, श्री**

पाचमेरूजैसीलक्ष्मी, भक्तके ओर भव्यजीवोंके घरमें, बहुतसे,

**पंचमेरुश्रियां, भक्तानांभविनांगृहेपु, पहुशो**

जो पांचदिव्यकों करतीहुई, नामधारी मनुष्योंके मनमें, अमृतकारी,
यापंचदिव्यंव्यधात्, प्रह्वपंचजनेमने, मृतकृतौ,
आप रत्नोंकी पूतलीकीतरे, पंचमीआदि, तपस्यावानोंके, हुओ
स्वारत्नपंचालिका, पंचम्यादि, तपोवतां, भवतु
वह, सिद्धायिकादेवीरक्षाकी करणेवाली, ४,
सा, सिद्धायिकात्रायिका, ४, इति पंचमीस्तुतिः
अरनाथभगवानकीदीक्षा, नमिना
अथ एकादशीस्तुतिः ॥ अरस्यप्रव्रज्या, नमि
थजिनपतीकों ज्ञानकेवलहुआ, तेसें मल्लिनाथकाजन्म, दीक्षा, दूरकिया कर्ममल,
जिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथामल्लेर्जन्म, व्रत, मपमलं,
केवलज्ञान, असहाई, शुक्ल इग्यारसकों तत्काल, उल्लसित मनोहर,
केवल, मलं, वलक्ष्यैकादश्यां, सहसि, लसदुद्दाम
क्रांतिवाली, पृथ्वीमें, कल्याणकोंका, खपाताहै, आपदाकूं, कल्याणकोंकापंचक
महसि, क्षितौ, कल्याणानां, क्षिपति, विपदः, पंचकम
अदोंकों, १, देवतोंके इंद्रोकीश्रेणी,आणे, जाणेसें, पृथ्वीकावलय[गोल], हमेस,
दः, १, सुपर्वेंद्रश्रेण्या, गमन, गमनै, र्भूमिवलयं, सदा
स्वर्गकेरस्तेकीतरेहुआ, मेंकरूं, मेंकरूं अैसैगरूरसें, जिसवख्त, मोक्षसहितसुख,
स्वर्गत्येवा, हम्, हम्, कया, यत्रसलयं
जिनराजोंकाभीप्राप्तहुआ क्षणभरजादासुखकोंनारकीकेदुखीभी, जिनेश्वरो
जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखंनारकसद, क्षितौक० २, जिना
नेंइसतरेजो, वचनकहे, अपणे,सिद्धान्तमें, फल, जोइन्द्रारस
एवंयालि, प्राणिजगद्, रात्मीय,समये, फलं, यत्क
केव्रतकरणेवालोंकों, एसाफेर, जाणा, शुद्धसिद्धान्तमें, अवांछनीककष्टवाले,
र्तॄणा, स्मिति, च, विदितं, शुद्धसमये, अनिष्टारिष्टानां
पृथ्वीमें, भोगे, वहोतहर्ष, देवताइंद्रोंसें
क्षिति, रनुभवेयु, र्वहुमुदः, क्षितौक० ३, सुराःसें
युक्त, सव, समस्त, जिनचंद्रोंसें, हर्षितहोकर, तैसें, फेर, जोत
द्राः, सर्वे, सकल, जिनचंद्र, प्रमुदिता, तथा, च, ज्यो

पीदेव, समस्त, भुवनपतीदेव, सयुक्तहर्षसें, तप, जो, करणे
तिष्का, खिल, भुवननाथाः, समुदिताः, तपो, य, त्क
वालेउनोंकै, करै, सुखकों, अचरजयुक्तदिलसें,
र्तृणां, विदधति, सुखं, विस्मितहृदः, क्षितौक० ४,
इति मौनेकादशीथुई ॥,

अथ श्रीजिनकुशलसूरिःरचितचतुर्दशीथुई ॥

द्रवनहुवा,अधर्म, दूरहुवा, अघेरा, इद्रकीधुनिसे, धसगया पृथ्वीमे
द्रंद्रे, किधप, मप, धुधु, मिधोंधौं, धसकि धर
धर्मकेपतीका, जय२शब्दसुणके, दमनदयास्याफेरदानओरदर्शन, भक्तजनोंको
धप, धोरवं, दाँदाँकि दोंदो द्राग्डिदि
देतेहुये, देतेहुये क्याकिसकूकर्मोंसे, कगालोकू, कर्मोंकायुद्धातियुद्ध, हटादि
द्राग्डिदिकि, द्रमक द्रण रण, द्रेन
या, कैसायुद्ध, जिमसेंझीकते, झीकते, झनझनाट, एसायुद्धातियुद्धप्रात,
धं, झझि, झेकि, झेंझें, झणण, रणरण,
निजभक्तजनोंकोहर्षदायक, मेरुशिखरपरहूआसुखदाता पार्श्वजिनपतीकास्नान, १,
निजकिनिजजनरंजनं,सुरशैलशिखरेभवतुसुखदंपार्श्वजिनपतिमज्जनं,१,
निगोदशरीर, थावरशरीर, कटताहै, चारोगतीकाअघेराक्यावाग्णाजन्मनटकीतरैकुशलता,
कटरेंगिन, थोंगिन, कटति, गिगडदांधुधुकिधुटनटपाटवं,
गुणीयोंकीगुणता, गुणोकागण, रमनकरता, नरकनही, गुणसनधी
गुणगुणण, गुणगण, रणकि, णों णे, गुणणगुण
गुणसमूहका भारीपना, कैसाकर्मयुद्ध झीकते२ एसायुद्धातियुद्धप्रात
गणगोरवं, झझि झेकि झें झें झणणरणरणनिज
जो प्रभूकों निजकिया एसे निजभक्तजनोंकों सत्जनकिया, रचना करताहे मोक्षलक्ष्मी
कि निजजनसज्जना, कलयतिकमलाकलित,
मुक्तजो, पापोंसे, रहित, एसे ईश्वरमहिमावंतपुजितजिनराज २
कलिमल, मुकुल, मीशमर्हेजिना २, टकि
टेंकि टें टें ठहि ठहिकिठहिपद्दाताडयनें
तलिलोंकि लों लों त्रे त्रि त्रेंगिनि टेंत्रि डेंत्रि
निवायते ओंओंकि ओं ओं थुंगि थोंगिनि

जिनमत अनंत महिमा
**धोंगि धोंगिनिकलरवे जिनमतमनंतं महि**
कों विस्तारता जिनोंकों नमताहे देवता और मनुष्यउछवमें,
**मतनुता नमतसुरनर मुच्छवे, ३, खुंदांकि**
**खुंदां खुखुडिदि खुंदां खुं खुडिदि दों दों**
**अंबरे चाचपट चटपट रणकिणेंणें डण**
**ण डें डें डंबरे तिहासर गमपधुनि निध**
वहवहवह देव सेवाकरते जिनराजकेसन्मुखनाटा
**पमगरस ससस सुरसेवता जिननाट्यरं**
रंभरंगसें कुशलहमेस देओ शाशनदेवता ४,
**गै, कुशलमनिशं दिशतु शासनदेवता ४,**
**इति चतुर्दशीस्तुतिः**
किसीसमयसंघमेंव्यंतरोंकाउपसर्गहुवाउसकूंदूरकरणेयेस्तोत्रवणाया,
**॥ अथ मानदेवसूरिकृततिजयपहुत्तस्तोत्रं ॥**
तीनजगत्में, प्रभुताकुं प्रकाशणेवाले, आठ, महाप्रातिहार्यरूप, अति
**तिजय, पहुत्तपयासं, अठ्ठ, महापाडिहेर,**
शयकरकैयुक्त, मनुष्यक्षेत्रअढाइद्वीपमेरहेभये, स्मरणकरताहूंच
**जुत्ताणं, समयखित्तट्ठिआणं, सरेमिचक्कं**
क्रजिनेंद्रोंका, १, प्रथमकोठेमे २५, दूसरेमें ८०, तीसरेमें १५,
**जिणंदाणं, १, पणवीसाय, असिआ, पनर,**
चोथेमे ५०, अैसेंएकसोसित्तरजिनोंमेंप्रधानोंकासमूह, नासकरतेहेंसमस्तपा
**स,पन्नास, जिणवरसमूहो, नासेउसयलदु**
पोंकों, भव्यजीवभक्तिकरकैयुक्तजिनोंका, २, वीस, पैताली
**रियं, भवियाणंभत्तिजुत्ताणं, २, वीसा, पण**
स, निश्चै, तीस, पिचहत्तर, जिनवरेंद्र, ग्रह,
**याला, विय, तीसा, पन्नत्तरी, जिणवरिंदा, गह**
भूत, राक्षस, शाकनीआदिक, डरावणेउपसर्गोंकों, अतिशयपणेनाशकरै, ३,
**भूअ, रक्ख, साइणि, घोरुवसग्गं, पणासेइ, ३,**

मित्तर, पैंतीस, अपिनिश्चै, साठ, पाच, निश्चै, १७० जिनवरकास
**सत्तरि, पणतीसा, विय, सट्ठी, पंचे, व, जिणगणो**
मुदाययह, रोग, पाणी, अग्नि, सिंह, हत्थी, चोर, शत्रु, वडे,
**एसो, वाहि, जल, जलण, हर, करि, चौरा, रि, महा,**
डरोंकोंहरणेवालेंहैं, ४, पचपन, फेर, दश फेर, पैंसठ,
**भयंहरओ, ४, पणपन्ना, य, दसेवय, पन्नट्ठी,**
तेंसेही, फेरनिश्चै, चालीस, रक्षाकरो, मेरे, अगकी, देव, असुरो,
**तहय, चेव, चालीसा, रक्खंतु, मे, शरीरं, देवा, सुर,**
सें नमेहुयेसिद्धनिष्टितार्थ, ५, प्रणवबीज, हसूर्यबीज, रअग्निबीज, हूंक्रोध,
**पणमियासिद्धा, ५, ओं, ह, र, हूं,हः,**
सचद्र, रअग्नि, सूशमन, बीजयेसन तेंसें ओरनिश्चै ह्रींमाया, श्रीशोभा,
**स, र, स्रं, स, हरहंहः तहय चेव सरस्रंस,**
समस्तपणेलिखेनामयुक्त, चक्र निश्चै सर्वतोभद्र, ६, रोहिणी,
**आलिहियनामगब्भं चक्कं किर सव्वओभद्द,६, ओंरोहिणी**
प्रज्ञसी, वज्रशृखला, तेंसे, वज्रअंकुसा,
**पन्नत्ती, वज्जसंखला तहय, वजअंकुसिआ,**
चक्रेश्वरी, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, तेंसे गौरी,
**चक्केसरि, नरदत्ता, कालि महाकालि, तहय गौरी,**
७, गधारी, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, तेंसे,
**७, गंधारि, महाज्वाला माणवि, वइरुट्ट, तहय,**
अछुप्ता, मानसी, महामानसी, सोलेविद्या
**अच्छुत्ता माणसि, महमाणसिआ, विज्जा**
देवियोंरक्षाकरो, ८, ५भरत५एरवत५महाविदेह१५कर्मभूमीमे,
**देवीउरक्खतु, ८, पंचदसकम्मभूमीसु, उप्प**
पैदाभयेसत्तरजिनराज१सो १७०, तरेरकेरलोंकेपाचरगोंकरके, उप
**न्नंसत्तरिजिणाणसयं, विविहरयणाणवन्नो,**
शोभितएसे१७०जिनराजहरोपापोंको, ९, चौतीस, अतीशय
**वसोहिअंहरउदुरिआइं, ९, चउतीस, अइ**

जुक्त, आठ महाप्रातिहार्योंकरकेकरीहै, शोभा,
**सय जुआ, अट्ठमहापाडिहेरकय, सोहा,**
तीर्थकर, विगत, मोह, ध्यांनकरणा,प्रयत्नकरके, १०,
**तित्थयरा, गय, मोहा, झाणअव्वापयत्तेण, १०,**
प्रधान, स्वर्ण, संख, मूंगे, लीलम, जैसीकांतिवाले, विग
**ओंवर, कणय, संख, विद्रुम, मरगय, सन्निहं, विग**
तमोह, सत्तर, सो, जिनवर, सर्वदेवतोंसेंपूजितवंदित,
**यमोहं, सत्तरि, सयं जिणाणं सव्वामरपूइयंवंदे,**
क्षि,पृथ्वीवीज, प, जलवीज,उस, तेजवीज,स्वा, वायुवीज,हा आकाशवीज, भुवनपती,
**स्वाहा, ११, ओंभुवणवइ, वाणवंतर, जोइसवासी,**
वाणव्यंतरजोतषीवैमानिकवासी, जोकोईभीदुष्टदेवहैसो, वहसर्वउप
**विमाणवासीअ, जे केविदुट्ठदेवा, तेसव्वेउव**
शमभावकोंप्रासहुओमेरे, १२, चंदनकपूरकरके, पट्टेपरलिख
**समंतुमेस्वाहा, १२, चंदणकप्पूरेणं, फलहेलि**
करकै, धोकरकै, पीणेसें, एकांतरज्वर, ग्रह, मुद्र(मोगा, साकनी
**हिऊण, खालियं, पीयं, एगंतर, गह, मुग्गय, साइणि**
भूतादिकजादाकरकैनाशकरे, १३, इयएकसोसित्तरकाजंत्र, अच्छा
**भूयंपणासेइ, १३, इयसत्तरिसयंजंतं, सम्मं**
मंत्र, दरवज्जेपरलिखकर, पापोंकावैरी विजयतंत्र,
**मंतं, दुवारपडिलिहियं, दुरिआरि, विजयतंतं,**
निःसंदेह, हमेसपूजनकरो, १४,
**निब्भंतं, निच्चमच्चेह, १४, इतिसप्ततिजिनस्तोत्रं ॥,**
दोषादिककूंदूरकरणेमेंसमर्थ, नहींहैझूठवचनमेंआदरप्रकाशकप्रसारजि
**दोसावहारदक्खो, नालियायरवियासगोपस**
नोंका, ज्ञानादिक३रत्नकेपैदाकर्त्ता,ऐसे, पार्श्वजिनेश्वर, जयवंतहोतीन
**रो, रयणत्तयस्सजणओ, पासजिणो, जयउज**
जगत्केनेत्रसमान, १, कियाहैपृथ्वीमंडलकूंप्रतिवोधजिनोंनें, सापका
**यचक्खु, १, कयकुवलयपडिबोहो, हरिणं,**

अंकितलाछनधारीपणा, कलाकेस्थान कियाहै, वैरियोंकेवृंदो-
कियविग्गहो, कलानिलओ विल्यिा, रविंद
कामथन, खडडालहैरागकोंऐसैजयवतहोपार्श्वजिनराज, २, क्राती
महणो, दीयराओजयउपासजिणो, २, कंती
करकैसमस्तपणेजीततेहुये, झरता अत्यर्थपणेपृथ्वीकोआनद अकूर,
इनिज्जिणंतो, सिदूरं पुहविनंदणोकूरो
जगत्जीवोंकोंअमृतवचनजिनोंका, शोभनकल्याणकारीजयवतहो
जयजंतुअमयवक्को, सुमंगलोजयउपहुपासो
पार्श्वजिन, ३, नीलकमलपत्रकीतरेहरीकाति, इद्रमडलमेकरीहैस्तवना
३, उप्पलदलनीलरुई, हरिमंडलसथुओ
पृथ्वीमेआनदकारी, पापरूपीरजकोंदलणेवालेमहाबुध(सर्वज्ञ], कृपाक
इलानंदो, रयणियरदारओमहं, बुहो, पसी
रोपार्श्वजिनराज, ४, नहींअहितनादकाविदग्धपणा, न्याय
इज्ञपासजिणो, ४, नात्थिवायवियड्ढो, ना
पणेमेंस्थित, नागराजधरणेद्रनेकरीहैपूजा, श्रीपार्श्वनाथदेव,
यत्थो, नागरायकयपूओ, सिरिपासनाह
देवतोंसेआदरितपूजितसुखदेओ, ५, राजावर्त्तनील
देवो, देवायरिओसुहंदिसउ, ५, रायावट्ट
कमलकीतरेउज्वल, शरीरकीकातिकामडल महाभूति(किरण], भुवनप
समुज्जल, तणुप्पहामंडलो महाभूई, असुरे
तिदेवोंसेंनमीजतेहुये, पार्श्वजिनेंद्रज्ञानकेवेत्तासोजयवतहो, ६, अ
हिंनमिज्जंतो, पासजिणंदोकवीजयउ, ६, ति
ज्ञानअधेरोंकोंक्षपाते, समुखमुक्तिआरूढ, अठारेदोपप्रमाणेमैशांत, दु.खकोंदूरकर्त्ता,
मिरासि, समारूढो, संतो, दुक्खावहो,
जगतमेथिर, अतिशयपणेकरनिरुपम श्रीज्ञानादिलक्ष्मी, जगतमेनेत्रसमानजिनोंका,
जयंमिथिरो, बहुलतमा सरिससिरी, जयचक्खु,
श्रुतसिद्धातजयवतपार्श्वजिनराज, ७, कवलग्रासकियाहै दोपोकाआगर, मात्रउरकों
सुओजयउपासो, ७, कवलीकय दोसायर, मायंडर

नाशकर्त्ता, अहो[आश्चर्य,भगवानपांचोंशरीरोंसेंरहित, चौदेलोककेआभरणजैसे,
**हं, अहोतणुविमुक्कं, लोआभरणीभूअं,**
वहश्रीपार्श्वजिनसर्वजिनोंमेंउत्तमस्मरणकरो, ८, पापोंकोंपार्श्वनाथहरो,
**पासजिणंसत्तमंसरह, ८, दुरिआइंपासनाहो,**
किरणोंसेंजैसेंसूर्य, आकाशभुवनमेंध्वजजैसे, दूरकियाहैअंधेरे
**सिहावमाली, नहोभवणकेउ, दूरंतमरासी**
कासमूह, [मोक्षालयमेंविराजमानहरोपापोकों, ९, इयनवग्रह
**ओ, सत्तमट्ठाणट्ठिओहरओ, ९, इयनवग्गह**
स्तुतिकरकैगर्भित, जिनप्रभसूरिःनें, रचा, स्तवन,
**थुइगब्भं, जिणप्पहसूरीहिं, गुंफियं, थवणं,**
तुमारापढैहेपार्श्वजोइसकों, अशुभभीनवग्रहनहींपीडाकरे,
**तुहपासपढइजोतं, असुहाविगहानपीडंति,**
**१० इति जिनप्रभसूरिकृतनवग्रहशांतिपार्श्वजिनदोषापहारस्तोत्रं, ॥**
रात्रिकूं दूरकरणेसमर्थ, कमलकेआगरकोंप्रकाशकरणेकिर
**दोसावहारदख्खो, नालियायरवियासगोप**
णोंकापसार, रत्नादेवीकापुत्रजमउसकापिता, पार्श्वजिन जयवंतहो
**सरो, रयणत्तयस्सजणओ, पासजिणोजयउ**
जगत्चक्षु(सूर्य], कियाहैकमलनियोंकोंप्रतिवोध, हिरण
**जयचख्खु, १, कयकुवलयपडिवोहो, हरणं**
केचिन्हसेंविग्रह, सोलेकलाकाधारक, रचाहैअरविंदकमलकाव
**कियविग्गहो, कलानिलओ, विहियारविंदमह**
डापणा, द्विजराजचंद्र, जयवंतहो, पार्श्वजिन अपणीक्रांतिसेंजीत
**णो, दियराओ, जयइ, पासजिणो, २, कंतीइनिज्जि**
ताहुआ, सिंदूरकीरक्तताकों, पृथ्वीकानंदन, क्रूरग्रह, जगत्केजीवोकोंमदरहितकर्त्ता,
**णंतो, सिंदूरं, पुहविनंदणो, कूरो, जयजंतुअमयव**
वक्रगतिवाला, अच्छामंगलग्रहजयवंतहो,प्रभुपार्श्व ३, कमलदल(पत्र)समान
**क्को, सुमंगलोजयउपहुपासो, ३, उप्पलदलनी**
हरामनोहररंग, सूर्यमंडलकेसाथपरिचयजिसका, इलानामस्त्रीकूंआनंदकारी,
**लरुई, हरिमंडलसंथुओ, इलानंदो, रयणिय**

चद्रमाकापुत्र, मेरेकू, बुधग्रह, प्रशादकरो, पार्श्वजिन नास्ति
**रदारओ, मह, बुहोपसीहज्ज, पासजिणो, ४, नाहि**
कमतसत्रधीवादमेंनिचक्षणस्वर्गमेंरहा, स्वर्गकाराजाइद्रनेकरीहेपूजा,
**यवायवियड्डो, नायत्थोनागरायकयपूओ**
श्रीपार्श्वनाथदेव देवाचार्यवृहस्पतिग्रहसुखकोदेओ, ५,
**सिरिपासनाहदेवो, देवायरिओसुहंदिसउ, ५,**
रूपेकेआवर्त्तजैसाउजला, शरीरकीप्रभाकांतिमडल, मघासूभूतिसेजन्मजिसका,
**रायावट्टमुज्जल, तणुप्पहामंडलो, महाभूई,**
असुरदैत्योसेंनमीजताहुआ, पार्श्वजिनेद्र कवी(शुक)ग्रहजयवतहो, ६,
**असुरेहिनमिज्जंतो, पासजिणंदोकवीजयउ, ६,**
मनुष्यकीरासीपरआणेसे, दुखोंकादेणेवालाजगत्मेंस्थिर, कृ
**तिमिरासिसमारूढो, संतोदुरावहोजयंम्मिथिरो, ण्ह**
ष्णपक्षकीरातजैसीशोभाशरीरकी, जगत्चक्षुसूर्यकापुत्रशनि जयवतहोपार्श्व, ७,
**ह्लुलतमासरिसम्मिरी, जयचखुसुओजयउपासो, ७,**
ग्रासकियाहै, दोपाकर(चद्र), मार्तंड(सूर्यका)रथ, नीचेकेशरी
**कवलीकय, दोसायर, मायंडरहं, अहोतणु**
रसेंविमुक्त(रहित), होलोका, भरणीनक्षत्रसेंपैदाभया, पार्श्वजिन शोभनीकराहूग्रह
**विमुक्क, लोआ, भरणीभूअं, पासजिणसत्तमंसर**
कोस्मरणकरो, ८, निश्रोंको, पार्श्वनाथ चोटी व्यापितआकाश, ननमाग्रहभुवन
**ह, ८, दूरिआइं,पासनाहो सिहावमालीनहोभवण**
केतू, दूररहाराहूकीरासीसें, सातमेंठिकाणेरहाहुआ, हरो, ९,
**केउ, दूरंतमरासीओ, सत्तमठ्ठाणठ्ठिओ, हरओ, ९,**
भक्तिनत, देवता, जादाकरकेनमेहुये, मस्तकमुगुट, उसमेंरहीमणियोकीकाति,
**भत्ता, मर प्रणत, मौलि, मणिप्रभाणा,**
उसकुप्रकाशकरणेवाला, खडनकियाहैपापरूप, अधकारकासमूहजिमनें
**मुद्योतकं दलितपाप, तमोवितानं,**
अच्छीतरेप्रणामकरके, जिनराजकेचरणदोनों, युगकीआदिमें,
**सम्यक्प्रणम्य, जिनपादयुग, युगादा,**

आधारभूत, भवरूपजलमें पडेहुये, भव्यजीवोंको, १,
**वालंबनं, भवजले पततां, जनानाम्, १,**

जोभगवानस्तुतिकरेंगये, समस्तवचनमयीशास्त्रकारहस्यउसकातत्वविज्ञान,
**यः संस्तुतः, सकलवाङ्मयतत्वबोधा,**

उससेंपैदाहुईबुद्धिकीनिपुणताकरकै, देवलोककानाथजोइन्द्र,
**दुद्भूतबुद्धिपटुभिः, सुरलोकनाथैः,**

स्तोत्रोंकरकै, जगत्तीनलोककेप्राणीयोंके, चित्तकूंहरणेवालेउदार,
**स्तोत्रै, र्जगत्रितय, चित्तहरैरुदारैः,**

स्तवनाकरूंगा, निश्चै, मेंभी, उन प्रथमसामान्यकेवलियोंकेइंद्रकूं,
**स्तोष्ये, किला, हमपि तं प्रथमंजिनेंद्रं,युग्मं, २,**

वुद्धिविगरभी, हेदेवतोंसेंपूजेभये, पगरखणेकावाजोट(पट्टा)तुमारा,
**वुद्ध्याविनापि, विवुधार्चित, पादपीठ,**

स्तवनाकरणे, अच्छीतरेउद्यमवंतभईहैवुद्धिमेरी, विशेषपणेगईलाजएसामेंहूं,
**स्तोतुं, समुद्यतमति, र्विगतत्रपोहं,**

वालकविगर, जलमेंरहाहुआ, चंद्रमाकीपडिछाया,
**बालंविहाय, जलसंस्थित, मिंदुविंब,**

और, कोन, इच्छाकरताहै, मनुष्य, एकाएक(तत्काल)पकडनेकूं, ३,
**मन्यः, क, इच्छति, जनः, सहसाग्रहीतुं, ३,**

कहनेकोंगुणोंकों, हेगुणोंकेदरियाव, चंद्रमाजैसेमनोहर,
**वक्तुंगुणान्, गुणसमुद्र, शशांककांतान्,**

कौनतुमारेसमर्थः, वृहस्पति, जैसैभी, वुद्धिकरकै,
**कस्तेक्षमः, सुरगुरु, प्रतिमोपि, वुद्ध्या,**

प्रलयकालकी, हवासें, उछलता, मगरमच्छ, ऐसेसमुद्रकों,
**कल्पांतकाल, पवनो, द्धत, नक्रचक्रं,**

कौनतिरणे, समर्थ, समुद्रकों, दोनोंहाथोंसें, ४,
**कोवातरीतु, मल, मंवुनिधिं, भुजाभ्यां, ४,**

वह, में, तोभी, तेरी, भक्तीके, वशसें, हेमुनियोंकेस्वामी,
**सो, हं, तथापि, तव, भक्ति, वशा, न्मुनीश,**

करणेको, स्तवना, शक्तिरहितभी, प्रवर्त्ताहू[चलाहू],
**कर्तुं, स्तवं, विगतशक्तिरपि, प्रवृत्तः,**
प्रीतिकरकै, आत्मशक्तिकों, निगरविचारे, हिरण, सिंहके,
**प्रीत्या, स्ववीर्य, मविचार्य, मृगो, मृगेंद्रं,**
सन्मुखनहींजाताहैक्या, अपणेबालककी, प्रतिपालना(रक्षा)केवास्ते, ५,
**नाभ्येतिकिं, निजशिशोः, परिपालनार्थं, ५,**
मैंथोडाज्ञानवाला, श्रुतज्ञानवतोंके, समस्तपणे, हसनेका, ठिकाणा,
**अल्पश्रुतं, श्रुतवतां, परि, हास, धाम,**
तुमारीभक्तीही, मुखर(वाचाल), करतीहै, जबरन्, मुझें,
**त्वद्भक्तिरेव, मुखरी, कुरुते, बला, न्मां,**
जो, कोयल, निश्चै, चैतमहीनेमें, मीठी, बोलतीहै,
**य, त्कोकिलः किल, मधौ, मधुरं, विरौति,**
वह, मनोहर, आमकी, माजर(कलि)का, समूह, एककारणहै,
**त, च्चारु, चाम्र, कलिका, निकरै, कहेतुः, ६,**
तुमारीअच्छीस्तवनाकरकै, भवोंकीपरपरासैं, बंधाभया,
**त्वत्संस्तवेन, भवसंतति, सन्निबद्धं,**
पाप, घडीकेछठेभागमें, क्षयपाताहै, शरीरधारियोंका
**पापं, क्षणात्, क्षयमुपैति, शरीरभाजां,**
व्यापक[फैलाभया]लोकमें, भमरेजैसाकाला, समस्तपणेजल्दी,
**आक्रांतलोक, मलिनील, मशेपमाशु,**
सूर्यके किरणोंमेंभेदनेकीतरे, रातका, अंधेराजैसैं, ७,
**सूर्यांशुभिन्नमिव, शार्वर, मधकारं, ७,**
ऐसामानकरकेहेनाथ, तुमारीअच्छीस्तवना, मैं, यह,
**मत्वेतिनाथ, तवसंस्तवनं, मये, द,**
सरूकरताहू, मंदबुद्धिभी तुमारे, प्रभावसेती,
**मारभ्यते, तनुधियापि तव, प्रभावात्,**
चित्तको, हरणकरेगा, सतपुरुषोंका, कमलपत्रमें,
**चेतो, हरिष्यति, सतां, नलिनीदलेषु,**

मोतियोंकी, क्रांति(छवि)कोंपाताहै, निश्चैजलकीबूंद, ८,
**मुक्ताफल, द्युतिमुपैति, ननूदबिंदु, ८,**
दूररहो तेरी स्तवना नासपायाहै सब दोष
**आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं**
तेरीअच्छीकथाभी, जगत्केलोकोंकापापोंकोंहरताहै,
**त्वत्संकथापि, जगतांदुरितानिहंति,**
दूररहोसूर्य, परंतुउसकी करतीहैप्रभा,
**दूरेसहस्र, किरणः, कुरुतेप्रभैव,**
पद्मसरोवरमें, कमलोंकों, विकश्वरताकेभजणेवाले, ९,
**पद्माकरेषु, जलजानि, विकाशभांजि, ९,**
नहींहैजादाआश्चर्य, हेतीनभुवनकेभूषण, हेसवजीवोंकेनाथ,
**नात्यद्भुतं, भुवनभूषणभूतनाथ,**
सच्च, गुणोंकरकैपृथ्वीमें, आपकूं, स्तुतिकरणेवाला,
**भूतै,र्गुणै,र्भुवि, भवंत, मभिष्टुवंतः,**
वरावर, होताहै, आपके, प्रश्नकर्त्ताहै उसमेंक्याआश्चर्य, अथवाजैसैं,
**तुल्या, भवंति, भवतो, ननु, नेन, किंवा,**
संपदावालेकेआश्रित, जोइसजगेहोतोक्यानहीं, अपणेवरावरकरताहै, १०,
**भूत्याश्रितं यइहना, त्मसमंकरोति, १०,**
देखकै, आपकों, एकनजरसें, देखनेयोग्य,
**दृष्ट्वा, भवंत, मनिमेष, विलोकनीयं,**
नहींओरजगे, संतोष, प्राप्तहोताहै, मनुष्योंकेनेत्र,
**नान्यत्र, तोष, मुपयाति, जनस्यचक्षुः,**
पीकरकै, जल, चंद्रमाजैसी, क्रांतिवाला, क्षीरसमुद्रका,
**पीत्वा, पयः, शशिकर, द्युति, दुग्धसिंधो,**
खारा, जल, समुद्रका, पीणेकों, कौनचाहताहै, ११
**क्षारं, जलं, जलनिधे, रसितुं, कइच्छेत, ११,**
जो, शांत, रंगरूपीमनोहरछाया, परमाणुओंकरकैतेराशरीर,
**यैः, शांत, रागरुचिभिः, परमाणुभिस्त्वं,**

रचाहुआहै, हेतीनभुवनमेंएक, तिलकसमान,
**निर्मापित, त्रिभुवनैक, ललामभूतः,**
उतनेही, खलुनिश्चै, वहपरमाणूथे, पृथ्वीमें,
**तावंतएव, खलु, तेप्यणवः, पृथिव्यां**
जोतेरेबरानर, दूसरा, नहींरूप, क्रिमीमेहै, १२,
**यत्तेसमान, मपर, नहिरूप, मस्ति, १२,**
मुख, कहा, तुमारा, देवता, मनुष्य, औरनागकुमारोंके, नेत्रोंकोहरणेवाला,
**वक्रं, क्व, ते, सुर, नरो, रग, नेत्रहारि,**
समस्त, जीताहै, जगत, तीनलोककों, जिसकीओपमादीजाय,
**निःशेष, निर्जित, जग, त्रितयो, पमानं,**
विंनहैसो, कलंककरकैमैला, कहाचद्रमाका
**विंबं, कलंकमलिनं, कनिशाकरस्य,**
जोंदिनमें, होजाताहै, पीला, पलास(खाखरा]कापत्रजैसा,ओपमारहितमुखतुमाराहै,
**यद्वासरे, भवति, पांडु, पलाशकल्पम्,**
अछीतरेपूरामडल, पूनमकेचद्रकेकलाओंका, समूह,
**संपूर्णमंडल, शशांककला, कलाप,**
उजलेजोगुण, तीनभुवनकों, तेरे, उलघनकरतेहैं,
**शुभ्रागुणा, त्रिभुवनं, तव, लंघयंति,**
वहगुणतुमकोआश्रयकररहेहैं, हेतीनजगत्केईश्वर, स्वामीआपएकहीहो,
**येसंश्रिता, त्रिजगदीश्वर, नाथमेकं,**
कोनउनगुणोंको, मनाकरसकताहै, फिरतेहुयोंको, यथाजैसैमनमाफक,
**कस्ता, न्निवारयति, सचरतो, यथेष्ट, १४,**
आश्चर्य, क्या इसजगे, जो, तेरा, देवतोंकीस्त्रियोंकरके,
**चित्रं, कि, मत्र, यदि, ते, त्रिदशागनाभि,**
पहुचा, थोडाभी, मन, नहीं, विकारके रस्ते,
**नींतं, मनागपि, मनो, न, विकारमार्गं,**

प्रलयक[illegible]  चलायमानकियाऔरपहाडोंकों,

**कल्पांतकाल, मरुता, चलिताचलेन,**

लेकिन्क्या,मेरूपहाडकाशिखर, चलायमानहुआकभी,अैसैंतुमारामनकभीनहींचला, १५,

**किं, मंदराद्रिशिखरं, चलितंकदाचित्, १५,**

रहितधूंआ औंर वत्ती, रहित, तेलकापूरना,

**निर्धूमवर्त्ति, रपवर्जित, तैलपूर,**

लेकिन्समस्त, जगत्तीनोंकों, इसतरे, प्रगटकरतेहो,

**कृत्स्नं, जगत्रय, मिदं, प्रकटीकरोषि,**

बुझणेकोंनहींप्रासहुवा हवासें, जिसनेंपहाडोंकोंभीचलादिया,

**गम्योनजातु मरुता, चलताचलानां,**

इसवास्तेतुमअलौकीकदीपकहो, हेस्वामीजगतकोंप्रकाशकरणेवाले, १६,

**दीपोपरस्त्वमसि, नाथजगत्प्रकाशः, १६,**

नहींअस्तकभीभी, प्रासहोतेहो नहींकभीराहुग्रसताहै,

**नास्तंकदाचि, दुपयासि, नराहुगम्यः,**

स्पष्ट करतेहो, एकदम, एकवख्त, तीनलोककों,

**स्पष्टीकरोषि, सहसा, युगप, ज्जगंति,**

नहीं, मेघ, मध्यभाग, रोका, इसवास्तेवडेप्रभाववालेहो,

**नां, भोधरो, दर, निरुद्ध, महाप्रभावः,**

इसकारणसूर्यसैंभीअतिशयमहिमातुमारीहै, हेमुनियोंकेइंद्र, लोकमें, १७,

**सूर्यातिशायिमहिमासि, मुनींद्रलोके, १७,**

हमेसउदयवाला, दलडालाहैंमोहरूपवडाअंधेरा,

**नित्योदयं, दलितमोहमहांधकारं,**

काबूमेंनहींआयाराहुके, मुखकोंनहींमेघढकसकताहै,

**गम्यंनराहु, वदनस्यनवारिदानां,**

शोभरहाहै, तेरा, मुखकमल, फेर नहींक्रांतिवाला,

**विभ्राजते, तव, मुखाब्ज, मनल्पकांति,**

विशेषपणेप्रकाशकरताहैतीनलोककूं, इसवास्तेअपूर्वचंद्रविंबतुमारामुखहै, १८,

**विद्योतयज्जगद, पूर्वशशांकबिंबम्, १८,**

क्यारातमें, चद्रसेंकामहै, औरदिनमेंसूर्यसें, अथवा,
**किंशर्वरीपु, शशिनाह्नि, विवस्वतावा,**
तुमारासुखरूपचद्र, खडनकिया, अंधेरेकोंहेनाथ,
**युष्मन्मुखेंदु, दलितेपु, तमस्सुनाथ,**
पकेभयेचावल, वनमे, शोभायमान, मृत्युलोकमें,
**निष्पन्नशालि, वन, शालिनि, जीवलोके,**
प्रयोजन(मतलब)क्या, मेघका, कैसामेघजलकेभारसेंझुकाभया, १९,
**कार्यंकिय, ज्जलधरै, जैलभारनम्रैः १९,**
ज्ञानजैसें, तुमारेमें, शोभादेताहै, कियाहैअनतपदार्थोंपरप्रकाश,
**ज्ञानंयथा, त्वयि, विभाति, कृतावकाशं,**
नहींइसतेरैतैसें, विष्णुरुद्रादिकदेवोंमें, अपणे२शासनकेस्वामियोंमें,
**नैवं, तथाहरिहरादिपु, नायकेषु,**
तेज, देदीप्यमान, मणियोंमें, पाताहै, जैसी, वडाईउनोंकीहै,
**तेजस्फुर, न्मणिषु, याति, यथा, महत्त्वं,**
लेकिन्‌नहींइसतरैफेर, काचकेटुकडेमें, किरणोंकरकैसयुक्तहैतोभी, २०,
**नैवंतु, काचसकले, किरणाकुलेपि, २०,**
मानताहू, प्रधानता, विष्णुशिवादिकोंकोही, देखकरकै,
**मन्ये, वरं, हरि,हरादयएव, दृष्टा,**
देखकरकैउनोकों, मेरादिल, तुमारेमैं, सतोपपाया,
**दृष्टेपुयेपु, हृदयं, त्वयि, तोपमेति,**
क्यादेखणेसें, आपकों, पृथ्वीमें, जिसकरकैनहींदूसरा,
**किंवीक्षितेन, भवता भुवि, येननान्यः,**
कोई, मनमेरा, हरणकरताहै, हेनाथ दूसरेभवमेंभी, २१,
**कश्चि, न्मनो, हरति, नाथ, भवांतरेपि, २१,**
स्त्रियें, सइकडोंही, सइकडों, जनतीहै, पुत्रोंकों,
**स्त्रीणां, शतानि, शतशो, जनयंति, पुत्रान्,**
नहींदूसरीस्त्रीनेंपुत्र, तुमारीओपमाका, मातानेंजणा,
**नान्यासुतं, त्वदुपम, जननीप्रसूता,**

सर्वदिशाओं, धारणकरतीहै, नक्षत्रोंको, सहस्रकिरणवालेकूं,
**सर्वादिशो, दधति, भानि, सहस्ररश्मिं,**
पूर्व दिशाही, उत्पन्नकरतीहै, देदीप्यमानहै, किरणोंकासमूहजिसका, २२,
**प्राच्येव, दिग्, जनयति, स्फुरदं, शुजालम्, २२,**
तुमकों, कहतेहैं, मुनीलोक, बडे, पुरुष,
**त्वा, मामनंति, मुनयः, परमं, पुमांस,**
सूर्यजैसाक्रांतिवर्णवाला, मलरहित, अंधेरेकोंदूरकरणेसें,
**मादित्यवर्ण, ममलं, तमसःपुरस्तात्,**
तुमकोंही, अच्छीतरे, पायकरके, मुनिजनमृत्युकोंजीततेहैं,
**त्वामेव, सम्यगु, पलभ्य, जयंतिमृत्युं,**
नहींदुसराकोईउपद्रवरहित, मुक्तिपदका, हेमुनियोंकेइंद्ररस्ताहे, २३,
**नान्यःशिवः, शिवपदस्य, मुनींद्रपंथाः, २३,**
तुमकोंअक्षयकहतेहैं, परमेश्वरअचिंतकहतेहैं, गुणोंकीसंक्षारहितआदीश्वरकहतेहैं
**त्वामव्ययं, विभुमचिंत्य, मसंख्यमाद्यं,**
ब्रह्मानिवृत्तिरूपसवकेईश्वरकहतेहैं, अंतरहित, कामदेवकोंनासकर्त्ताकेतूसमहो,
**ब्रह्माणमीश्वर, मनंत मनंगकेतुम्,**
हेयोगियोंकेईश्वर, जाणाहैयोगमार्गतुमनें, ज्ञानकेपर्यायसेंअनेकहो, उत्तमपुरुषएकहो,
**योगीश्वरं, विदितयोग, मनेक, मेकं,**
ज्ञानकास्वरूप, निर्मलअठारेदोपरहित, जादाकरकेकहतेहैंसंतपुरुष, २४,
**ज्ञानस्वरूप, ममलं, प्रवदंतिसंतः, २४,**
बुद्धआपहीहो, देवतोंसेपूजापाणेसें, फेरअपणीबुद्धिसेंज्ञानपानेसेती,
**बुद्धस्त्वमेव, विबुधार्चित, बुद्धिबोधात्,**
तूंहीशंकरहै, भुवनतीनकोंसुखकरणेसेती
**त्वंशंकरोसि, भुवनत्रयसंकरत्वात्,**
तूंहीविधाताहै, हेधीर्यधर, मुक्तिकेरस्तेकीविधिकाविधानवताणेसें(ब्रह्मा)हो,
**धातासि, धीर, शिवमार्गविधेर्विधानात्,**
प्रगटपणे, तूंही, हेभगवान, पुरुषोत्तमविष्णुनारायणहो, २५,
**व्यक्तं, त्वमेव, भगवन्, पुरुषोत्तमोसि, २५,**

तुमकोंनमस्कारहो, तीनभुवनकीपीडाके, हरणेवालेहेनाथ,
**तुभ्यंनम, स्त्रिभुवनार्त्ति, हरायनाथ,**
तुमकोनमस्कारहो, पृथ्वीतलमे, निर्मळ, अलकारसमानकों,
**तुभ्यनमः, क्षितितला, मल, भूषणाय,**
तुमकोंनमस्कारहो, तीनजगत्के, परमऐश्वर्य(ठकुराई)वतको,
**तुभ्यंनम, स्त्रिजगतः, परमेश्वराय,**
तुमकोंनमस्कारहो, हेजिनराज, भवरूपसमुद्र सुकाणेवालेकों, २६,
**तुभ्यंनमो, जिन, भवोदधि, शोषणाय, २६,**
क्याआश्चर्य, इहा, जो, नाम गुण, समस्तोंसे,
**कोविस्मयो, त्र, यदि, नाम, गुणै रशेषै,**
तू, आश्रयकराहुआहै, रहितअवकाशपणे हेमुनियोंकेस्वामी,
**स्त्वं, संश्रितो, निरवकाशतया, मुनीश,**
दोष, अगीकारकराहुआ, जुदे२तरेकेआश्रयोंसें, पैदाहुआगर्वजैसैदोषीजन,
**दोषै, रुपात्त, विविधाश्रय, जातगर्व्वैः,**
स्वप्नेमैंभीउनोंसें, नहींकभीआप देखेगये, २७,
**स्वप्नातरेपि, नकदाचिद, पीक्षितोसि, २७,**
उचाअशोक, वृक्षकेआश्रयबैठेहुये, उचेकिरणोंसें,
**उच्चैरशोक, तरुसंश्रित, मुन्मयूख,**
शोभताहै, रूप, निर्मल, आपका, अत्यत[जादा],
**माभाति, रूप, ममलं, भवतो, नितांतम्,**
प्रगट, उल्लसायमान, किरणोंसें, अस्तकरदिया, अंधेरेकासमूह,
**स्पष्टो, ल्लस, त्किरण, मस्त, तमोवितानं,**
विंव, सूर्यकीतरै, मेघके, पासरहाहुआ, २८,
**विंबं, रवेरिव, पयोधर, पार्श्ववर्त्ति २८,**
सिंहासनकेविषै, मणियोंकेकिरणोकी, शिखा(पक्ति)सेंविचित्र,
**सिंहासने, मणिमयूख, शिखाविचित्रे,**
जादाकरकैशोभताहै, तेराशरीर, सोनेकीकातिजेसामनोहर
**विभ्राजते, तववपुः, कनकावदातं,**

विंवहैसो, आकाशमें, प्रकाशकरता, किरणोंकीशाखाओंकासमूह,
**विंवं, विय, द्विलस, दंशुलनावितानं,**
उंचा, उदयाचलपहाडकेशिरपर, सूर्यजैसाशोभताहैतंसैं, २९,
**तुंगो, दयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मैः, २९,**
मोगरेकेफूलजैसै, उजले,चंचल, ऐसेचमरोंकी, मनोहरशोभासें,
**कुंदावदात, चल, चामर, चारुशोभं,**
विराजताहै, तेरा, शरीर, सोनेकीकांतिवाला,
**विभ्राजते, तव, वपुः कलधौतकांतं,**
उदयभया, चंद्रमाजैसा, निर्मल, झरणेकेपाणीकीधारावहरहीहैऐसा
**उद्य, च्छशांक, शुचि, निर्झरवारिधार,**
उंचे, शिखर, मेरूपहाडकीतरे, सोनेका, ३०,
**मुच्चै, स्तटं, सुरगिरेरिव, शातकौंभम्, ३०,**
छत्र, तीन, तेरेपर, विशेषशोभताहै, चंद्रमाकीकांतिजैसा,
**छत्र, त्रयं, तव, विभाति, शशांककांत,**
तुमारेउपररहा, ढकदियाहै, सूर्यकी, किरणोंकाप्रतापजिसनें,
**मुच्चैःस्थितं, स्थगित, भानु, करप्रतापम्,**
मोतियोंके, समूहकी, रचनाकरकै, विशेषपणेवधगईहैशोभा,
**मुक्ताफल, प्रकर, जाल, विवृद्धशोभं,**
विक्षातकरताहुआ, तीनजगतका, परमेश्वरपणा, ३१,
**प्रख्यापय, त्रिजगतः, परमेश्वरत्वं, ३१,**
विकशित, सोना, नयाअथवानवकमलोंके, ढिगारकीकांति,
**उन्निद्र, हेम, नवपंकज, पुंजकाति,**
चारोंतरफउछलती, नखकेकिरणोंकी, प्रकाशपंक्तिमनोहर,
**पर्युल्लसन्न, खमयूख, शिखाभिरामौ,**
चरण, पांव, तुमारे, जहां, हेजिनइंद्र, धरेजातेहैं,
**पादौ, पदानि, तव, यत्र, जिनेंद्र, धत्तः,**
कमल, उहां देवता, समस्तपणे, रचनाकरतेहैं, ३२,
**पद्मानिः, तत्र, विबुधाः, परि, कल्पयंति, ३२,**

इसतरै, जैसें, तेरी, अतिशयसपदाहोतीहुई, हेजिनेंद्र,
**इत्थं, यथा, तव, विभूतिरभू, जिनेंद्र,**
श्रुतचारित्ररूपधर्मोपदेशकाजोनिधान, जोतुमाराहैऐसानहींदूसरेदेवोंका,
**धर्मोपदेशनविधौ, नतथापरस्य,**
जैसीकांति, सूर्यकीहै, जादाकरकैहणाहैअंधेराजिसनें,
**यादृक्प्रभा, दिनकृतः, प्रहतांधकारा,**
तैसीकहांहै, ग्रह(तारा)गणकी, प्रकाशकरणेवालेहैंतोभी, ३३,
**तादृक्कुतो, ग्रहगणस्य, विकाशिनोपि, ३३,**
झरतेहुयेमदकरके, मैला, औरचचल, गंडस्थलसें,
**श्च्योतन्मदा, विल, विलोल, कपोलमूल,**
मतवाला, फेरफिरतेहुये, भमरोंकैशब्दसें, जादावधगयाहैक्रोधजिसका,
**मत्त, भ्रमद्, भ्रमरनाद, विवृद्धकोपम्,**
अैसाएरापतजैसीकांतिवाला, इभ(हस्ती)उद्धत, अंकुससेंभीवसनहींसन्मुखआता,
**अैरावताभ, मिभ, मुद्धत, मापतंतं,**
देखकरकैडर, होताहै, नहीं, आपकेआश्रयरहे(भक्त)जीवोंकों, ३४,
**दृष्ट्वाभयं भवति, नो भवदा, श्रितानाम्, ३४,**
फाटडालाहस्तीकाकुंभस्थल, नीचेगिराउजलेखूनसेंलिपटेहुये,
**भिन्नेभकुंभ, गलदुज्वलशोणिताक्त,**
मोतियोंका, समूहसें, शोभायमान, जमीनकाभाग,
**मुक्ताफल, प्रकर, भूषित, भूमिभागः**
बांधीहैफाल, शत्रोंकीगति, हिरणोंकामालकभी, सिंह
**बद्धक्रमः, क्रमगतं, हरिणाधिपोपि,**
नहींदबासकताहै, चरणदोनोंअचल, अच्छीतरेआश्रयकियाजिसनेंतेरा, ३५,
**नाक्रामति, क्रमयुगाचल, संश्रितते, ३५,**
प्रलयकालकीहवासेंउत्कट, अग्निकैजैसा,
**कल्पांतकालपवनोद्धत, वन्हिकल्पं,**
दावानलकी, मिलगीहुई, उजली, ऊंचीशिखाजिसकी,
**दावानलं, ज्वलित, मुज्वल, मुत्स्फुलिंगं,**

तीनलोककोखाणैंकीइच्छावाला, सामनें, आकरपडता,
**विश्वंजिघत्सुमिव, संमुख, मापतंतं,**
आपकेनामकाकीर्त्तिरूपजल, शांतकरताहै, सबकों, ३६,
**त्वन्नामकीर्तनजलं, शमयत्य, शेषम्, ३६,**
लालआंखवाला, मदोन्मत्त, कोयलकेगलेजैसास्याह,
**रक्तेक्षणं, समद, कोकिलकंठनीलं,**
क्रोधकरकैउद्धत, सांप, उंचाकियाहैफणजिसनें, सामनेंआताहुआ,
**क्रोधोद्धतं, फणिन, मुत्फण, मापतंतं,**
उलंघनकरताहैचरणदोनोंसें, समस्तशंकारहित,
**आक्रामतिक्रमयुगेन, निरस्तशंक,**
तुमारेनामकी, नागदमनी, हृदयमें, जिसपुरुपके, ३७,
**स्त्वन्नाम, नागदमनी, हृदि, यस्यपुंसः, ३७,**
युद्धकरतेहुयेघोडेहस्तीगाजनेसें, डरावणेशब्दहोरहाहै,
**वल्गत्तुरंगगजगर्जित, भीमनाद,**
संग्राममेंसेन्या, वलवानभी, राजाओंकी,
**माजौवलं, वलवतामपि, भूपतीनां,**
उगतेहुयेसूर्यकी, किरणोंकी, पंक्तिसेंअपविद्ध(भेदनकियाहुवा),
**उद्यद्दिवाकर, मयूख, शिखापविद्धम्,**
तुमारीकीर्तनसेती, अंधेरेकीतरै, जल्दी, भेदनकोप्राप्तहोताहै[भागजातेहैं], ३८,
**त्वत्कीर्तिना, त्तमइवा, शु, भिदामुपैति, ३८,**
वरछीकेअग्रभागसेंभेदेहुये, हस्तिकेरुधिररूपपाणीकेपूरमें,
**कुंताग्रभिन्न, गजशोणितवारिवाह,**
जलदीसें, तिरणेकोंआतुर, ऐसासुभटडरावणे,
**वेगवतार, तरणातुर, योधभीमे,**
संग्राममेंजय, जीताहै, दुःखेंजीतीजै, शत्रुओंकावर्ग,
**युद्धे जयं, विजित, दुर्जय, जेयपक्षा,**
तुमारेचरणकमल, वनउसकेआश्रयसेंपाताहै, ३९,
**स्त्वत्पादपंकज, वनाश्रयिणोलभंते, ३९,**

समुद्रमे, क्षोभप्राप्तकियाहैडरानणे, मच्छोंकाचक्र,
**अंभोनिधौ, क्षुभितभीषण, नक्रचक्र,**
जलचरजीवविशेष, डरकरणेवाला, वडाभारीवडवानल(अग्नि)
**पाठीनपीठ, भयदोल्वण, वाडवाग्नौ,**
उछलतेतरगोंकेशिखरपर, रहेहुये, जिहाज,
**रंगत्तरंगशिखर, स्थित, यानपात्रा,**
त्रासकों, छोडके, तुमारे, स्मरणसेती, जाताहैसमुद्रकेपार, ४०,
**त्रासं, विहाय, भवतः, स्मरणा, द्व्रजंति, ४०,**
उपजा, डरावणा, जलोदरकेबोझसें, टेढाभया,
**उद्भूत, भीषण, जलोदरभार, भुग्नाः,**
शोककरणेकीदशाकोंप्राप्तहुवा, छोडीहैंजीणेकीआशा,
**शोच्यांदशामुपगता, श्च्युतजीविताशाः,**
तुमारेचरणकमलकीरजरूपअमृतसें, लपटा[खरडा]शरीरऐसा,
**त्वत्पादपंकजरजोमृत, दिग्धदेहा,**
मनुष्यहोताहै, कामदेवके, समानरूपवाला, ४१,
**मर्त्याभवंति, मकरध्वज, तुल्यरूपा, ४१,**
पावोंसेंगलेतक, वडीसाकलसें, वींटाहुआअंग,
**आपादकंठ, मुरुश्रृंखल, वेष्टितांगा,**
मजबूतनडी, वेडीकीमहींनअणीसें, घसगईहैजाघजिसकी,
**गाढंबृह, न्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः,**
तुमारेनाममनंक्र, हमेस, मनुष्य, स्मरण[याद]करता,
**स्वन्नाम, मंत्र, मनिशं, मनुजाः,स्मरंतः,**
जल्दी, आपहीसें, निशेषपणेगयाहैबंधनकाडर, ऐसाहोताहै, ४२,
**सद्यः स्वयं, विगतबंधभया, भवंति, ४२,**
मदवालाहत्थी, सिंघ, दावानल[वनकीआग], अहि(साप]
**मत्ताद्विपेंद्र, मृगराज, दवानला, हि,**
युद्ध, दरियाव, जलोदर, कैदखाना, इनोंसेउठाभय,
**संग्राम, वारिधि, महोदर, बंधनो, त्थं,**

उनोंका, जल्दी, नाश, पाताहै, डर, डरावणेवालानिश्चै
**तस्या, शु, नाश, मुपयाति, भयं, भियेव,**
जो, तुमारा, स्तवन, यह, बुद्धिवान, पढताहै, ४२,
**य, स्तावकं, स्तव, मिमं, मतिधान, धीते, ४३,**
स्तोत्ररूपमाला, तुमारी, हेजिनेंद्र, गुणोंकरकैगूंथीभई,
**स्तोत्रस्रजं, तव, जिनेंद्र, गुणैर्निबद्धां,**
भक्तीकरकैमैनें, मनोहर५२अक्षररूपरंगविरंगेपुष्पोंसें,
**भक्त्यामया, रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां,**
धारणकरेमनुष्य, जोइसलोकमें, गलेमेंप्रासहुईहमेस,
**धत्तेजनो, यइह, कंठगतामजस्रं,**
वहमानतुंगकों(उंचेमानकों), हमेसपाताहै, लक्ष्मीः, मोक्षकी, ४४,
**तंमानतुंग, मवशासमुपैति, लक्ष्मीः, ४४, इति०,**
**अथकल्याणमंदिर,**
कल्याणके, गृह, वडाउदार, पापकूं, भेदणेवाले,
**कल्याण, मंदिर, मुदार, मवद्य, भेदि,**
डरतेकूं, अभयदानदेनेवाले, निंदारहित, चरणकमल,
**भीता, भयप्रद, मनिंदित, मंघ्रिपद्मं,**
संसार, समुद्रमें, डूबतेहुये, समस्त, जीवोंकों,
**संसार, सागर, निमज्ज, दशेष, जंतु,**
जिहाजसमान, नमस्कारकरकै, जिनेश्वरका, १,
**पोतायमान, मभिनम्य, जिनेश्वरस्य, १,**
जिसकाआप, देवतोंकागुरुबृहस्पति, महिमासमुद्रका,
**यस्यस्वयं, सुरगुरु, र्गरिमांबुराशेः,**
स्तवनाकूं, अच्छीविस्तारबुद्धिवालाभी, नहींसमर्थ, करणेकूं,
**स्तोत्रं, सुविस्तृतमति, र्नविभुर्विधातुं,**
तीर्थंकेईश्वरका, कमठकेगर्व्वकूं, पूंछडियेतारेजैसैहरणेकों,
**तीर्थेश्वरस्य, कमठस्मय, धूमकेतो.**
उनोंका, में, यह, निश्चै, अच्छीस्तवना, करूंगा, २,
**स्तस्या, ह, मेष, किल, संस्तवनं करिष्ये, २, युग्मम्,**

सामान्यपणेसेंभी, तेरा, वर्णनकरणेकू, अहवाल[स्वरूप],
**सामान्यतोपि, तव, वर्णयितुं, स्वरूप,**
मेरेजैसे, कैसें, हेस्वामी, होताहे, समर्थ,
**मम्मादृशाः, कथं, मधीश, भवं, त्यधीशाः,**
धीठ[वेसरम]भी, घूघूकाबालक, जोअथवा, दिनमेंअधा,
**धृष्टोपि, कौशिकशिशु, र्यदिवा दिवांधो,**
रूपकों प्ररूप नकरसके, क्या, निश्चै, सूर्यका, ३,
**रूपंप्ररूपयति, किं, किल, घर्मरश्मेः, ३,**
मोहकेक्षयसेती, अनुभववालाभी, हेनाथ, मनुष्य,
**मोहक्षया, दनुभवन्नपि, नाथ, मर्त्यो,**
निश्चे, गुणोंकों, गिणणेकों, नहीं, तेरे, समर्थहोय,
**नूनं, गुणान्, गणयितुं, न, तव, क्षमेत,**
प्रलयकालका, वमनकियाहुआजल, प्रगटभीजिसमेंमें
**कल्पांत, वांतपयसः, प्रकटोपियस्मा,**
मापहोसकेकिससें, समुद्रके, शकाहे, रत्नोंका, ४,
**न्मीयेतकेन, जलधे, र्ननु, रत्नराशिः, ४,**
उद्यमवालासावधानहुआहू, तेराहेनाथ, मूर्खअंतकरणवालाभी,
**अभ्युद्यतोस्मि, तवनाथ, जडाशयोपि,**
करणेकोंस्तवना, देदीप्यमान, असंख्यगुणोंकेआकर[खानका],
**कर्त्तुं स्तवं, लस, दसंख्यगुणाकरस्य,**
बालकभी, क्या, नहीं, अपणी, भुजा, दोनो, पसारकर,
**बालोपि, किं, न, निज, बाहु, युगं, वितत्य,**
विस्तार[चोडानलबानकों], कहताहै, अपणीबुद्धिमें, दरियावका, ५,
**विस्तीर्णतां, कथयति, स्वधिया, म्बुराशेः, ५,**
जोयोगियोंसेंभी, नहींजाताहैकहा, गुणतेरे, हेईश्वर,
**येयोगिनामपि, नयांति, गुणास्तवेश,**
कहणेकोंकेमें, होय, उनोंकेविषे, मेरा, अवकाश[शक्ति],
**वक्तुंकथं, भवति, तेषु, ममा, वकाशः,**

हुआ, वहनिश्चै, विगरविचारा, काम, जो,
**जाता, तदेव, मसमीक्षित, कारिते, यं,**
बोलताहै, अथवा, अपणीवाणीसें, शंकावचन, पंखीभी, ६,
**जल्पंति, वा, निजगिरा, ननु, पक्षिणोपि, ६,**
रहो, नहींचिंतनयोग्य, महिमा, हेजिन, अच्छीस्तवनातुमारी,
**आस्ता, मचिंत्य, महिमा, जिन, संस्तवस्ते,**
लेकिन्नामभीरक्षाकरताहैसंसारसैं, आपका, तीनजगत्कों,
**नामापिपाति, भवतो, भवतोजगंति,**
तेज, धूपसें, हणीजगयंअैसै, पंथीजन[रस्तागीर]कों, ग्रीष्मकालमें,
**तीव्रा, तपो, पहत, पांथजना, न्निदाघे,**
खुसकरताहै, पद्म, सरोवरका, ठंढेपाणीकी, अनिल[हवाभी,] ७,
**प्रीणाति, पद्म, सरसः, सरिसो, निलोपि, ७,**
हृदय[दिलमें]वर्त्ततेथके, तुमहेप्रभु, ढीलेहोजातेहैं,
**हृद्वर्त्तिनि, त्वयिविभो, शिथिलीभवंति,**
जीवोंकेक्षणमात्रमें, मजबूतभी, कर्मबंध,
**जंतोक्षणेन, निवडा अपि, कर्मबंधाः,**
तत्काल, सांप, मईबंधन, अैसैहैंमध्यभाग, छूटगिरतेहैं,
**सद्यो, भुजंग,ममयाइव, मध्यभागः,**
आणेसें, वनमें, मोर, चंदनके, ८,
**मभ्यागते, वन, शिखंडिनि, चंदनस्य, ८,**
छूटहीजाताहै, मनुष्य, जल्दी, हेजिनेंद्र,
**मुच्यंतएव, मनुजाः, सहसा, जिनेंद्र,**
डरावणे, उपद्रव, सइकडोंसैं, तुमकों, देखतेही,
**रौद्रै, रुपद्रव, शतै, स्त्वयि, वीक्षितेपि,**
गोकिरण, गोपृथ्वी, गोगउ, इनतीनोंकेस्वामी,देदीप्यमानतेजवालेकूं, देखणेसें,
**गोस्वामिनि, स्फुरिततेजसि, दृष्टमात्रे,**
चोरकीतरे, जल्दीतव, पशूछूटतेहैं, जादाकरकैभागतेहैं,तैसैंउपद्रवछूटजातेहैं, ९,
**चोरैरिवाशु, पशवः, प्रपलायमानैः, ९,**

तू, तारणेवाला, हेजिन, कैसैंहै, भव्यजीव, वेभी,
**त्वंतारको, जिन, कथं, भविनांत, एव,**
तुमकौंवहते[ध्याते]हैं, हृदय[दिल]में, जोससारसेंपारउतरतेहुये,
**त्वामुद्वहंति, हृदये, नयदुत्तरंतः,**
जोअथवामसकचमडेकीतिरतीहै, जोजलमेंयहनिश्चै,
**यद्वादृतिस्तरति, यज्जलमेषनून,**
अदरमेप्राप्त, हवाका, वह, निश्चै, प्रभावहै, १०,
**मंतर्गतस्य, मरुतः, स, किला, नुभावः, १०,**
जिससें, रुद्रकृआदिलेकरब्रह्माविष्णुभी, नासहोगयाप्रभावजिनोंका,
**यस्मिन्, हरप्रभृतयोपि, हतप्रभावाः,**
वहभी, तैनें, कामदेवकों, खपादिया, क्षणभरमे,
**सोपि, त्वया, रतिपतिः, क्षपितः, क्षणेन,**
बुझादिया, अग्नि, पाणीकरकैअथजिसनें,
**विध्यापिता, हुतभुजः, पयसाथयेन,**
पीयानहीं, क्या, उसकूभी, दुःखसेवारणकरणेमेआवैंऐसेवडवानल[दरियावकीआगनें,]
**पीतंन, किं, तदपि, दुर्द्धरवाडवेन, ११,**
हेस्वामी, जादा, वडप्पणकूभी, प्राप्त[अंगीकारकरेहुये,
**स्वामि, न्नतुल्य, गरिमाणमपि, प्रपन्ना,**
तुमकों, प्राणीगण, कैसैं, वडाअचरजहै, सोहृदयमेंधारणकर,
**स्त्वां, जंतवः, कथ, महो, हृदयेदधानाः,**
भवसमुद्र, जल्दी, तिरतेहैं, जादाहलकापणेसें,
**जन्मोदधिं, लघु, तरंत्य, तिलाघवेन,**
विचारणेकीवातनहीं, वडोंका, जो, अथवा, प्रभावहै, १२,
**चिंत्योनहत, महतां, यदि, वा, प्रभावः १२,**
क्रोधकू तैनें, जब, हेप्रभु, पहलेही, दूरकिया,
**क्रोधस्त्वया, यदि, विभो, प्रथमं, निरस्तो,**
विध्वंसकिया, तब, अचरज, कैसैं, निश्चै, कर्मरूपचोरोंकू,
**ध्वस्ता, स्तदा, बत, कथं, किल, कर्मचौराः,**

जलाताहै, इसलोकमें, जब, अथवा, शिशर ऋतुभी, लोकमें,
**प्लोषत्य, मुत्र, यदि, वा, शिशिरापि, लोके,**
हरेकाले,दरखतवाले, वनोकूं, नहीं, क्या, शीतकासमूह, १३,
**नीलद्रुमाणि, विपिनानि, न, किं, हिमानी, १३,**
तुमकोंयोगीलोक, हेजिन, हमेस, सिद्धस्वरूप,
**त्वांयोगिनो, जिन, सदा, परमात्मरूप,**
गवेषणकरतेहैं, हृदय, कमलके, कलीकेमध्यभागमें,
**मन्वेषयंति, हृदयां, बुज, कोशदेशे,**
पवित्र, मलरहित, कांतिवालेकी, जब, अथवा क्याओरभी,
**पूतस्य, निर्मल, रुचे, यंदि, वा, किमन्य,**
कमलबीजकी, संभवे, पद, वितर्के, कर्णिकासैं, १४,
**दक्षस्य, संभवि, पदं, ननु, कर्णिकायाः, १४,**
तुमारेध्यानसें, हेजिनेश्वर, आपके, भव्यप्राणी, क्षणमात्रमें,
**ध्याना, ज्जिनेश, भवतो, भविनः, क्षणेन,**
शरीरकोंत्यागके, सिद्धावस्थाकों, जातेहैं,
**देहंविहाय, परमात्मदशां, व्रजंति,**
तेजअग्निसें, पत्थर, भावकों, दूरकरके, लोकमें,
**तीव्रानला, दुपल, भाव, मपास्य, लोके,**
सोनेपणेकों, थोडेसमयमेंही, भेलवालीधातूकीतरे, १५,
**चामीकरत्व, मचिरादिव, धातुभेदाः, १५,**
हृदयमें, हमेस, हेजिन, जिनोंके, विचारेजातेहोआप,
**अंतः, सदैव, जिन, यस्य, विभाव्यसेत्वं,**
भव्यजीवोंका, कैसें, वहभी, नाशकरतेहो, शरीरका,
**भव्यैः, कथं, तदपि, नाशयसे, शरीरं,**
येस्वरूप[स्वभावही]है, अर्थात्, मध्यस्थपुरुषोंका, निश्चै,
**एतत्स्वरूप, मथ, मध्यविवर्त्तिनो, हि,**
जोआपसकीलडाईकोंशमादेतेहैं, वडेप्रभाववालेपुरुष, १६,
**यद्विग्रहंप्रशमयंति, महानुभावाः, १६,**

आत्मा, पडितलोकोंने, यह, तुमारेकू, अभेद[एकता]बुद्धीसें,
**आत्मा, मनीषिभि, रयं, त्वद, भेदबुद्ध्या,**
ध्याणेसें, हेजिनेंद्र, होतेहैं, इसलोकमें, आपकेप्रभावसें,
**ध्यातो, जिनेंद्र, भवती, ह, भवत्प्रभावः,**
पाणीभी, अमृत, ऐसापीछेसेंविचारकरणेसें, मत्रमणीसें,
**पानीयम,प्यमृत, मित्यनुचिंत्यमानं,**
क्या, नामकहतेअहोमित्रो, जहरकों, दूरनहींकरे,करेही, १७,
**किं, नामनो, विषविकार, मपाकरोति, १७,**
तुमकोंही, हेरहितअज्ञान, अन्यदर्शनीशैवादिकभी,
**त्वामेव, वीततमसं, परवादिनोपि,**
निश्चैहेप्रभू, विष्णुमहामहेश्वरादिककी, बुद्धिकरकै, तुमकोंहीअंगीकारकरतेहैं,
**नूनंविभो, हरिहरादि, धिया, प्रपन्नाः,**
क्या, पीलियेका[पाडु]रोगी, हेईश्वर, श्वेतभीशखकू,
**किं, काचकामलभि, रीश, सितोपिशङ्खो,**
नहींग्रहणकरता[देखता]है, तरे२केरगकेपरावर्त्तन[पलटे]सें, १८,
**नोगृह्यते, विविधवर्णविपर्ययेण, १८,**
धर्मोपदेशकी, वख्त, पासके(नजीकके)प्रभावसें,
**धर्मोपदेश, समये, सविधानुभावा,**
दूररहो, मनुष्यतो, होताहे, तेरे, वृक्षभीशोकरहित[अशोक]नामसेंप्रथमातिशय, १
**दास्तां, जनो, भवति, ते, तरुरप्यशोकः,**
उदयहोणेसें, दिनपती[सूर्य]के, वोपृथ्वीओरवृक्षभी,
**अभ्युद्गते, दिनपतौ, समहीरुहोपि,**
क्या अथवा जाग्रतअवस्थाकोंपातेहैं, नहींजीवलोक[मनुष्यहीडकेले], १९,
**किं वा विबोधमुपयाति, नजीवलोकः, १९,**
अचरजहै, हेप्रभु, कैसें, नीचेमुखजिसका, गुडी[वीट],
**चित्रं, विभो, कथ, मवाङ्मुख, वृंतमेव,**
चारोंतरफ, गिरतेहैं, निरतर[एकमेकमिले], देवताफूलोंकीवरसात,
**विष्वक्, पतत्य, विरला, सुरपुष्पवृष्टिः,**

तुमारे, सामनें, फूलोंकाअथवाअछेमनकेमनुष्योंका,जोहेमुनियोंकेईश्वर,
**त्वद्, गोचरे, सुमनसां, यदिवामुनीश,**
जाताहै, निश्चै, नीचेही, वाह्यऔरअभ्यंतरवंधन[पाप],२०,सुरपुष्पवृष्टि२अतिशय
**गच्छंति, नून, मधएवहि, बंधनानि, २०,**
युक्तठिकाणेगहरी, हृदयरूप, समुद्रसें, उपजी[पैदाहुई],
**स्थानेगंभीर, हृदयो, दधि, संभवायाः,**
अमृतपणेकों, तेरी, वाणीका, कहतेहैं,
**पीयूषतां, तव, गिरः, समुदीरयंति,**
पीकरकै, जिसकारण, उत्कृष्ट हर्ष, संयोगकेभजनेवाले,
**पीत्वा, यतः, परमसंमद, संगभाजो,**
भव्य, पातेहैं, जल्दीही, अजरअमरताकों, २१, दिव्यध्वनी२अतिशय,
**भव्या, व्रजंति, तरसा, प्यजरामरत्वं, २१,**
हेस्वामी, जादाकरकै, नीचेझुकके, ऊंचेउछलते,
**स्वामिन्, सुदूर, मवनम्य, समुत्पतंतो,**
मानताहूं, कहतेहैं, पवित्र, देवतोंकेचमरोंकासमूह,
**मन्ये, वदंति, शुचयः, सुरचामरौघाः,**
जोइनप्रभूकों, नमस्कारकरताहै, मुनियोंमेंप्रधानपार्श्वनाथकों,
**येस्मै, नतिंविदधते, मुनिपुंगवाय,**
वहनिश्चैउच्चगतीकों, निश्चै, शुद्धभाववालेहोतेहैं, २२,।४ चमरातिशय,
**तेनूनमूर्द्धगतयः, खलु, शुद्धभावाः, २२,**
श्याम, गहरीवाणीवाला, उजले, सोनेरत्नमई,
**श्यामं गंभीरगिर, मुज्वल, हेमरत्न,**
सिंहासनपररहेहुये, इससमवसरणमें, भव्यरूपमोर, तुमकों,
**सिंहासनस्थ, मिह, भव्यशिखंडिन, स्त्वां,**
देखतेहैं, उत्सुकपणेकरकै, गर्जनाकरताउंचा,
**आलोकयंति, रभसेन, नदंतमुच्चै,**
मेरूपहाडके, शिखरपरकीतरेमोर, नयामेघ[वर्षातकूंदेखे,तेसें,२३।५सिंहासनातिशय
**श्चामीकराद्रि, शिरसीव, नवांबुवाहम्, २३,**

ऊंचाजाताहुआ, तेरी, श्याम, कांति, मंडलकरकै,
**उच्छलता, तव, शिति, द्युति, मंडलेन,**
छिपगई, पत्तोंकी, कांतिवैसा, अशोकवृक्षहोताभया,
**लुप्त, च्छद, च्छवि, रशोकतरुर्बभूव,**
सानिध्यसेभी, जो, अथवा, तेरे, हेरागरहित,
**सान्निध्यतोपि, यदि, वा, तव, वीतराग,**
तोफेरवैराग्यताकोप्राप्तहोय, कोननहींसचेतनपुरुषनिश्चैहोय, २४।६ भामंडलातिशय
**नीरागतांव्रजति, कोनसचेतनोपि, २४,**
अहोरलोको, प्रमादकोंछोडके, भजोइसपार्श्वप्रभूको,
**भोभो, प्रमादमवधूय, भजध्वमेन,**
आयकरकै, मोक्षनगरीजाते, प्रतिसार्थवाहको,
**मागत्य, निर्वृतिपुरे, प्रतिसार्थवाहं,**
ऐसाकहताहै, हेदेव, जगत्तीनोंको,
**एतन्निवेदयति, देव, जगत्त्रयाय,**
जाणताहूकेनादकरताहुवाआकाशमेंफैलकरके, देवदुंदुभितुमारा, २५,
**मन्येनदन्नभिनभः, सुरदुंदुभिस्ते, २५,**
प्रकाशकरणेमें, आपका, तीनभुवनमेंहेनाथ,
**उद्योतितेषु, भवता, भुवनेषुनाथ,**
तारामंडलकरकैयुक्तचंद्रमानें, धारणकियाहैअधिकार,
**तारान्वितोविधुरयं, विहताधिकारः,**
मोतियोंकेगुच्छोंमे[समूहोंसें]युक्त, उलसित तीनछत्रपरछत्रके,
**मुक्ताकलापकलितो, रुच्छ्रसितातपत्र,**
मिषकरकेसात्चंद्रनेंतीनधारगहैशरीर, निश्चैनजीकआयाहै, २६,
**व्याजात्त्रिधाधृततनु, र्ध्रुवमभ्युपेतः, २६,**
आपप्रभूनेंजादाकरकैभरदियाहै, जगतीनएकठाहोगया,
**स्वेनप्रपूरित, जगत्त्रयपिंडितेन,**
कांति, प्रताप, ओग्यशकीतरेंही, संचयकरकै,
**कांति, प्रताप, यशसामिव, मंचयेन,**

रत्न, सोना, चांदीसें, प्रकर्षपणे रचाहुवा,

**माणिक्य, हेम, रजत, प्रविनिर्मितेन,**

अैसेतीनगढोंसे, हेभगवानचारोंतरफ, सोभतेहो, २७,

**सालत्रयेण, भगवन्नभितो, विभासि, २७,**

मनोहरमालायेंफूलोंकी, हेजिन, नमेहुये, देवेंद्रोंकी,

**दिव्यस्रजो, जिन, नम, त्रिदशाधिपाना,**

छोडके, रत्नोंसें रचितभी, मुगटोंकों,

**मुत्सृज्य, रत्नरचितानपि, मौलिबंधान्,**

चरणोंकाआसरालेतेहैं, तुमारे, जो, अथवा, दूसरीजगे,

**पादौश्रयंति, भवतो, यदि, वा, परत्र,**

तुमारासंगमहुयेवाद, पुष्प, पंडित, वादेवता, नहींरमतेहैंनिश्चै, २८,

**त्वत्संगमे, सुमनसो, नरमंतएव, २८,**

तुमहेस्वामी, भवसमुद्रसें, उलटेमुखवाला[विरक्त]हैजिनोकों,

**त्वंनाथ, जन्मजलधे, विंपराङ्मुखोपि,**

जोतारतेहो, प्राणियोंकों, अपणे, पिछाडी लगेकों,

**यत्तारयस्य, सुमतो, निज, पृष्ठलग्नान्,**

युक्तहैयेवातनिश्चै, पृथ्वीकीमट्टीसें, वनाघडाजोहै, संततुमाराहीवैसास्वभावहै,

**युक्तंहि, पार्थिव, निपस्य, सतस्तवैव,**

अचरजहेहेप्रभु, जोहोआप, कर्मविपाकसैंशून्य,औरघडातोकुंभारकेकर्मयुक्तहै,२९,

**चित्रं विभो, यदसि, कर्मविपाकशून्यः, २९,**

तीनलोककेईश्वरहो, हेजनपालक, तोभीदलद्रीहोतुम,वा,दीक्षावादअल्प[वालरहितहोहेजनप

**विश्वेश्वरोपि, जनपालक, दुर्गतस्त्वं,**

क्या, अथवा, जन्मरहितस्वभाव, निश्चैकर्मलेपरहित, तुमहेईश्वर

**किं, वा, क्षरप्रकृति, रप्यलिपि, स्त्वमीश,**

ज्ञानरहितकोभी, अच्छाबोधकराणेका, हमेस, कैसैंभी, निश्चै,

**अज्ञान, वत्य, पि, सदैव, कथंचि, देव,**

ज्ञान, तुमारा, देदीप्यमानहै, तीनलोककों, प्रकाशकरणेकाहेतुरूप, ३०,

**ज्ञानं, त्वयि, स्फुरति, विश्व, विकाशहेतुः, ३०,**

अधिकबोझसेभरा, आकाशमें, धूलिरूपपाप, क्रोधसेती,
**प्राग्भारसंभृत, नभांसि, रजांसि, रोषा,**
उडाई, कमठनें, वोकमठमूर्ख, जो,
**दुत्थापितानि, कमठेन, शठेन, यानि,**
कांतिभी, उससे, तेरी, नहीं, हेस्वामी, हणेगई, हणीजगईआसाउसकी,
**छायापि, तै, स्तव, न, नाथ, हता, हताशो,**
भरगया, फेर, इसपापरजसे, वोही, उलटा, दुष्टआत्माकमठ, ३१,
**ग्रस्त, स्त्व, मीभि, रयमेव, परं, दुरात्मा, ३१,**
जोगाजता, बहोतजोरका, मेघकासमूह, बहोत, डरावणा,
**यद्गर्ज्ज, दुर्जित, घनौघ, मदभ्र, भीमं,**
गिरती, बिजली, मूसलजैसाजाडा, डरानणी, धाराका,
**भ्रश्य, त्तडि, न्मुसलमांसल, घोर, धारम्,**
उसदैत्यनें, छोडा, अबजो, दुखसेतरणेमें,आवेजैसेपाणीकुं, धारण किया,
**दैत्येन, मुक्त, मथ, दुस्तरवारि, दध्रे,**
उससें, उसका, हेजिन, दुखेतिरणेवालाभवजल, कृत्यहुआ, ३२,
**तेनैव, तस्य, जिन, दुस्तरवारि, कृत्यम्, ३२,**
लटकतेहैं, ऊपरकेबाल, विदरूपहै, शिकल, मनुष्योंकेमस्तकका,
**ध्वस्तो, र्ध्वकेश, विकृता, कृति, मर्त्यमुंड,**
लटकताहुंसका, धारणकियाहै, डरावणा, मुखसे, निकलतीअग्नि,
**प्रालंब, भृद्, भयद, वक्त्र, विनिर्यदग्निः,**
ऐसेदैत्योंकासमूहप्रतें, आपकेसाम्हे, प्रेरणाकरी, जिसनें,
**प्रेतव्रजःप्रति, भवंत, मपीरितो, यः,**
वह, उसकेहीहुआ, भवोभवमें, भवरूपदुखकाकारण, ३३,
**सो, स्याभव, त्प्रतिभवं, भवदुःखहेतुः, ३३,**
धन्यवहीहैं, हेतीनभुवनकेस्वामी, जो, त्रिकाल,
**धन्यास्तएव, भुवनाधिप, ये, त्रिसंध्य-**
आपकाआराधतेहैं, विधिसे, दूरकियाहै, दूसरेकामजिसनें,
**माराधयंति, विधिव, द्विधुता, न्यकृत्याः,**

भक्तिसेंउल्लशित, रूं, व्याप्त, शरीरभागजिनोंका,
**भक्त्योल्लस, त्पुलक, पक्ष्मल, देहदेशाः**
चरणदोनों, तेरे, हेप्रभू, पृथ्वीमें, भव्यजीव, ३४,
**पादद्वयं, तव, विभो, भुवि, जन्मभाजः, ३४,**
इस, पाररहित, भवजल, समुद्रमें, हेमुनियोंकेईश्वर,
**अस्मि, न्नपार, भववारि, निधौ, मुनीश,**
जाणताहूंनहींमेंनें, कानोंसेंसुणा, तुमकोंकभी,
**मन्ये, नमे, श्रवणगोचरतां, गतोस्मि,**
सुणणेसें, फेर, तेरा, नामगोत्र, पवित्रमंत्रकरकें,
**आकर्णिते, तु, तव; गोत्र, पवित्रमंत्रे,**
क्या, अथवा, आपदारूप, सांपणी, वहविक्षुंसप्राप्तहोय ३५
**किं, वा, विप, द्विपधरी, सविधंसमेति, ३५,**
जन्मांतरमेंभी, तेरेचरण, दोनों, नहीं, हेदेव,
**जन्मांतरेपि; तवपाद, युगं, न, देव,**
जाणताहूं, मेंनें, पूजा, कैसैंहैंदोनोंचरणवांछितदानदेणेंमेंचतुर,
**मन्ये, मया, महित, मीहितदानदक्षं,**
तिसकारण, इसजन्ममें, हेमुनिपति, अनादरका,
**तेने, हजन्मनि, मुनीश, पराभवानां,**
हुआ, स्थानक[घर],में, मथनहोगयाचित्तकाअभिप्राय, इसजन्ममें,
**जातो, निकेतन,महं, मथिताशयानां, ३६,**
निश्चै, नहीं, मोहअंधकारसें, ढके, नेत्रोंकरकै,
**नूनं, न, मोहतिमिरा, वृत, लोचनेन,**
पहले, हेप्रभू, एकवेरभी, देखेहुयेहो,
**पूर्वं, विभो, सकृदपि, प्रविलोकितोसि,**
मर्मस्थानकूं, भेदणेवाले, पीडादेतेहैं, निश्चै, मुझकों, अनर्थ[दुःख],
**मर्मा, विधो, विधुरयंति, हि, मा, मनर्थाः**
जादाकरकैउद्यत, कर्मसंतति, कीप्राप्ति, कैसैंयहहोती, आपकादर्शनहोजातातो,
**प्रोद्य, त्प्रबंध, गतयः, कथ, मन्यथै, ते ३७,**

अथवाआपकोंपहलेसुणाभी, पूजाभी, देखाभी,
**आकर्णितोपि, महितोपि, निरीक्षितोपि,**
निश्चै, नहींचित्तमें, मेने, धारणक्रिया, भक्तिसे,
**नूनं, नचेतसि मयाविधृतोसिभक्त्या**
हुआहु, उसकरकै, हेमनुष्योंकेनधू, दु खकापात्र,
**जातोस्मि, तेन, जनबांधव, दुःखपात्रं,**
जिसकारण, क्रिया, जादाफलदेणेवाली, नहीहोयभावशून्यतासे, ३८,
**यस्मा, क्रियाः प्रतिफलंति, नभावशून्या, ३८,**
तूंहेनाथ, दु:खीजनका, वत्सल, हेशरणागतप्रतिपाल,
**त्वंनाथ, दुःखिजन, वत्सल, हेशरण्य,**
दयाके, पुण्य[पवित्र]स्थानक, जितेंद्रियोंमे, श्रेष्ठ,
**कारुण्य, पुण्यवसते, वशिनां, वरेण्य,**
भक्तिसेंनमनकियाहै, मेरेपर, हेमहेश्वर, दयाकरकै,
**भक्त्यानते, मयि, महेश, दयांविधाय,**
दु खकेउत्पत्ति[अकुरको, खडनकरने, जल्दीपणा, कर, ३९,
**दुःखांकुरो, द्दलन, तत्परतां, विधेहि ३९,**
सख्यारहित[अनत], बलीके, शरणकाशरण, वोसरण,
**निःसंख्य, सार, शरणंशरणं, शरण्य,**
पायकरकै, नाशकरेहुये, वैरी, प्रसिद्ध, चरित्रआपका,
**मासाद्य, सादित, रिपु, प्रथिता, वदातम्,**
तुमारेचरणकमलका, भी, ध्यान, वाझडाहै,
**त्वत्पादपंकज, मपि, प्रणिधान, वंध्यो,**
मारणेयोगहु, जो, हेतीनभुवनमेंपवित्र, हा,वडाखेदहै, मेमारागया, रागद्वेषसें,
**वध्योस्मि, चे भुवनपावन, हाहतोस्मि ४०,**
हेदेवइंद्रोसेंवादणेयोग्य, जाणाहै, सर्व, वस्तुकासारआपनें,
**देवेंद्रवंद्य, विदिता, खिल, वस्तुसार**
हेससारसेंतारणेवालेप्रभू, हेत्रिभुवननाथ,
**संसारतारकविभो भुवनाधिनाथ**

रक्षाकरो, हेदेव करुणाकेद्रह, मुझेपवित्रकरो,
त्रायस्व, देव, करुणाह्लद, मांपुनीहि,
सीदाताहुआ, आज, डरदेणेवाला, संकटसमुद्रसें, ४१,
सीदंत, मद्य, भयद, व्यसनांबुराशेः ४१,
जोहै, हेनाथ, आपकेचरण, कमलकी,
यद्यस्ति, नाथ भवदंघ्रि, सरोरुहाणां,
भक्तीका, फल, कुछभी, संतानपरंपरासें, संची[एकठीकरी]हुई,
भक्तेः फलं, किमपि, संतति, संचितायाः
वहमुझें, तुमाराएक, शरणकी, शरणवत्सलताहुओ,
तन्मे, त्वदेक, शरणस्य, शरण्यभूयाः,
हेस्वामी, आपही, तीनभुवनमें, इसलोकमें, दूसरेजन्ममेंभी, ४२,
स्वामी, त्वमेव, भुवने, त्र भवांतरेपि, ४२,
इसतरेसें, समाधीयुक्तबुद्धिहै, विधिपूर्वक, हेसामान्यकेवलियोंकेइंद्र,
इत्थं, समाहितधियो, विधिव, जिनेंद्र
तेज[आकरा]उल्लासपाता, रोमांचरूप, कंचुकीयुक्तशरीरभागजिनोंका,
सांद्रोल्लस, त्पुलक, कंचुकितांगभागाः
तुमारीमूर्तिका, मलरहित, मुखकमलसें, चांधाहध्यानजिनोंनें,
त्वद्बिंब, निर्मल, मुखांबुज, बद्धलक्षा,
जोसम्यक्स्तवना, तुमारीहेप्रभू, रचै, भव्यजीव, ४३,
येसंस्तवं, तवविभो, रचयंति, भव्याः, ४३,
मनुष्यकेनेत्ररूप, कमलकों, प्रकाशनेचंद्रजैसै, अत्यंतदेदीप्यमान, स्वर्गकीसंपदा,
जननयन, कुमुद, चंद्र प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो,
भोगके, वहगलगयाहै, कर्ममलकासंचयऐसा, थोडेकालमेंमोक्षकूं, अंगीका,
भुक्त्वा, तेविगलित, मलनिचया, अचिरान्मोक्षं, प्रपद्यं
रकरताहै, ४४, ऐसासिद्धसेनकुमुदचंद्राचार्यनेंमहेश्वरकेलिंगमेंप्रच्छन्नअयवंती
ते, ४४, इतिकुमुदचंद्रकृतपार्श्वस्तवनं ॥
पार्श्वप्रभूकीस्तवनाकरअयवंतीमेंविक्रमादित्यनृपसमक्षलिंगस्वतःफटकेप्रगटकरी

अथबृहच्छांति ॥
अहो२भव्यजीवो, सुणो, वचन, योजअवसरके, सब, यह,
भोभोभव्याः, शृणुत, वचनं, प्रस्तुतं, सर्व, मेतत्,
जो, जात्रामे, तीनभुवनके, गुरु, वीतरागके, भक्तीकेभजनेवाले,
ये, यात्रायां, त्रिभुवन, गुरो, रर्हतां, भक्तिभाजः
उनोंकी, शांतिहुओ, आपलोकोंके, अरिहतादिककेप्रभावसें,
तेषां, शांतिर्भवंतु, भवतां, मर्हदादिप्रभावा-,
रोगरहितपणा, लक्ष्मी, धैर्य, बुद्धि, करणेवाली, लडाईके, नासकाकारण,
दारोग्य, श्री, धृति, मति, करी, क्लेश, विध्वंसहेतुः,
काव्य, अहो२, भव्यलोको, इस, निश्चै, भरतऐरवत,
१ गद्यं, भोभो, भव्यलोका, इह, हि, भरतै,रा
महाविदेहमें, पैदाहुये, सब, तीर्थंकरोंके, जन्म,
वत, विदेह, संभवानां, समस्त, तीर्थंकृतां, ज
कीवख्त, आशन, कांपणेके, बाद, अवधीज्ञानसें, जाणके,
न्म, न्यासन, प्रकंपा, नंतर, मवधिना, विज्ञाय,
सौधर्मपहलेदेवलोककास्वामी, सुघोषानाम, घंटा, हिलायाके, बाद,
सौधर्माधिपतिः, सुघोषा, घंटा, चालना, नंतरं,
समस्त, सुर, ओरअसुरोंकेइंद्र, संग, आयकरकै, विनययुक्त,
सकल, सुरा, सुरेंद्रैः, सह, समागत्य, सविन
अरिहतपूज्यकों, लेकरकै, जायकरकै, मेरूपहाडके,
य,मर्हद्भट्टारकं, गृहीत्वा, गत्वा, कनकाद्रिशृं
शिखरपर, किया, जन्मअभिषेक[स्नात्र], शांतिकाशब्दपुकारतेहें,
गे, विहित, जन्माभिषेकः, शांतिमुद्घोषयति,
जैसें, तैसें,मैं, कियेमुजनकीनकल, ऐसाकरकै, देवतोंका,
यथा, ततो,हं, कृतानुकार, मितिकृत्वा, महाज,
समूह, जिसमार्गगये, वहमार्गहै, ऐसें, भव्यजीवोंके, संग, आय
नो, येनगतः, स,पंथाः, इति, भव्यजनैः, सह,समा,
करकै, स्नानकरणेकेपाटेपर, स्नानकराकर, शांतिशब्दउचेसरमें,

**गत्य, स्नात्रपीठे, स्नात्रंविधाय, शांतिमुद्घोष,**
जाहिरकरताहूं, वहपूजा, यात्रा, स्नानादिक, महोत्सवके, वाद,
**यामि, तत्पूजा, यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवा, नंतर,**
ऐसैंकरकै, कानदेकरकै, सुणो, तेजोअग्निबीज,
**मितिकृत्वा, कर्णंदत्वा, निशम्यतां, स्वाहा, ओं**
पवित्रदिन, पवित्रमैं, खुसहुओ, खुसहुओ, ज्ञानऐश्वर्यवान,
**पुण्याहं, पुण्याहं, प्रीयंतां, प्रीयंतां, भगवंतो,**
अरिहंत, सवजाणणेवाले, सवदेखणेवाले, तीनलोककेस्वामी,
**र्हंतः, सर्वज्ञा, सर्वदर्शिन, स्त्रिलोकनाथा,स्त्रि**
तीनलोकसेंपूजित, तीनलोककेपूज्य, तीनलोककेईश्वर,
**लोकमहिता, स्त्रिलोकपूज्या, स्त्रिलोकेश्वरा,**
तीनलोकमेंउजालेकेकरणेवाले, गईउत्सर्प्पणीके२४तीर्थंकरोंकेनाम,
**स्त्रिलोकोद्योतकराः, ओं श्री केवलज्ञानी १ निर्वाणी २ सागर ३ महायश ४ विमल ५ सर्वानुभूति ६ श्रीधर ७ दत्त ८ दामोदर ९ सुतेजा १० स्वामी ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति १४ अस्ताग १५ नमीश्वर १६ अनिल १७ यशोधर १८ कृतार्थ १९ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४**
यह गई चोवीसीके तीर्थंकर
**एते अतीत चतुर्विंशति तीर्थंकराः**
**ओं ऋषभ १ अजित २ संभव ३ अभिनन्दन ४ सुमति ५ पद्मप्रभ ६ सुपार्श्व ७ चंद्रप्रभ ८ सुविधि ९ शीतल १० श्रेयांस ११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धर्म १५ शांति १६ कुंथु १७ अर १८ मल्लि १९ मुनिसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ वर्धमान २४**
यह वर्त्तमान चोवीसीके तीर्थंकर
**एते वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकराः**
**ओं श्रीपद्मनाभ १ सूरदेव २ सुपार्श्व ३ स्वयंप्रभ ४ सर्वानु-**

भूति ५ देवश्रुत ६ उदय ७ पेढाल ८ पोट्टिल ९ शतकीर्ति १० सुव्रत ११ अमम १२ निष्कषाय १३ निष्पुलाक १४ निर्मम १५ चित्रगुप्ति १६ समाधि १७ संवर १८ यशोधर १९ विजय २० मल्लि २१ देव २२ अनंतवीर्य २३ भद्रंकर २४
यह, होणेवाले, तीर्थंकर, २४, जिन, शांतहुये, शांतिकेकरणे
एते, भावि, तीर्थंकराः, जिनाः, शांताः, शांतिकरा
वालेहुवो, साधूलोक, मुनियोंमेंप्रधान, वैरियोंके,
भवंतु, स्वाहा, ओं मुनयो, मुनिप्रवरा, रिपु,
विजयमें, दुकाल, कांतारअटवीमें, निकट, रस्तेमें, रक्षाकरो, तुमारी,
विजय, दुर्भिक्ष, कांतारेषु, दुर्ग, मार्गेषु, रक्षंतु, वो,
हमेस
नित्यं, ॐश्रीनाभि १ जितशत्रु २ जितारि ३ संवर ४ मेघ ५ धर ६ प्रतिष्ट ७ महसेन ८ नरेश्वर सुग्रीव ९ दृढरथ १० विष्णु ११ वसुपुज्य १२ कृतवर्म १३ सिंहसेन १४ भानु १५ विश्वशेन १६ सूर १७ सुदर्शन १८ कुंभ १९ सुमित्र २० विजय २१ समुद्रविजय २२ अश्वशेन २३ सिद्धार्थ २४
यह, वर्तमान, २४ तीर्थंकरोंकेपिताकानाम,
एते, वर्तमान, चतुर्विंशति, जिनजनकाः,
ओंश्रीमरुदेवा १ विजया २ सेना ३ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७ लक्ष्मणा ८ रामा ९ नंदा १० विष्णु ११ जया १२ श्यामा १३ सुयशा १४ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्री १७ देवी १८ प्रभावती १९ पद्मा २० वप्रा २१ शिवा २२ वामा २३ त्रिसला २४
यह, वर्त्तमान, २४, तीर्थंकरोंकेमाताकेनाम,
एते, वर्त्तमान, जिनजनन्यः,
ओंगोमुख १ महायक्ष २ त्रिमुख ३ यक्षनायक ४ तुंबरु ५ कुसुम ६ मातंग ७ विजय ८ अजित ९ ब्रह्मा १० यक्षराज ११ कुमार १२ षण्मुख १३ पाताल १४ किन्नर १५ गरुड

१६ गंधर्व १७ यक्षराज १८ कुवेर १९ वरुण २० भृकुटि २१ गोमेध २२ पार्श्व २३ ब्रह्मशांति २४

यह, वर्त्तमान, तीर्थंकरोंके, २४, यक्षोंकेनाम,
एते, वर्त्तमान, जिनयक्षा,

ओं चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ कालीमहाकाली ४ श्यामा, ५ शांता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चंडा १२ विदिता १३ अंकुशा १४ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया १९ नरदत्ता २० गांधारी २१ अंबिका २२ पद्मावती २३ सिद्धायिका २४

यहवर्त्तमान २४ तीर्थंकरोंकीआज्ञाकारिणी२४देव्योंकेनाम
एतेवर्त्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्यः

ओंह्रीं श्रींधृति कीर्त्तिकांति बुद्धिलक्ष्मी मेधा विद्यासाधन
प्रवेशमें, रहणेमें, अच्छीतरेगृहणकरणेसेंनाम, जयवंतहोवह,
प्रवेश, निवदानेषु, सुगृहीतनामानो, जयंतिते,जि
जिनेन्द्र,
नेंद्राः,

ओं रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रशृंखला ३ वज्रांकुशा ४ चक्रेश्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ९ गांधारी १० सर्वास्त्र महाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६

यह,१६विद्यादेवी, रक्षाकरो, मेरी, हमेस,
१६एतेषोडशविद्यादेव्यो, रक्षंतु, मे, नित्यं,स्वाहा,
प्रणववीज, आचार्य, उपाध्याय, आदले, चारोंहीवर्णकों, श्रीशोभा,
ओं, आचार्यो, पाध्याय, प्रभृति, चातुर्वर्ण्यस्य, श्रीश्र,
साधुओंकेसंघकों, शांतिहो, तुष्टि, हो, पुष्टिहो,
मणसंघस्य, शांतिर्भवतु, ओंतुष्टि, र्भवतु, पुष्टिर्भ,
ग्रह, चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध, गुरु,
वतु, ओंग्रहा, श्चंद्र, सूर्यां, गारक, बुध, बृहस्पति,

शुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहित लोकपालसयुक्त,
**शुक्रशनैश्चरराहुकेतुसंहिताः सलोकपालाः**
सोम, यम, वरुण, कुबेर, इन्द्र, सूर्य, कार्तिक, गणे
**सोम, यम, वरुण, कुबेर, वासवा, दित्य, स्कन्द, विना,**
श, जो, फेर, ओरभी, गाम, सहरके, क्षेत्र, देवतादिक, जोहे,
**यका, ये, चा, न्येपि, ग्राम, नगर, क्षेत्र, देवतादय, यस्ते,**
सोसब, सुसहुओ,२, अखुट, भडार, कोठार, राजाका
**सर्वे, प्रीयतां,२, अक्षीण, कोश, कोष्टागारा, नरपत,**
फेर, हुओ, लडका, दोस्त, भाई, स्त्री,
**य,श्च, भवंतुस्वाहा, ओंपुत्र, मित्र, भ्रातृ, कलत्र,सु**
गोत्रिये,निजगोत्री, सगे, न्यातीवर्ग, युक्त, हमेस, फेर, ह
**हृत्,स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः, नित्यं, चा, मो,**
र्ष, प्रशन्नता, करणेवाले, हुओ, इस, फेर, पृथ्वीमडलमें,
**द, प्रमोद, कारिणो, भवंतु, अस्मिं, श्च, भूमंडले,**
ठिकाणा, वसणेवालोका, महाव्रतीसाधुसाध्वी, अनुव्रतीश्रावक, श्राविका,
**आयतन, निवासिनां, साधुसाध्वी, श्रावक श्राविका,**
ओंका, रोग, उपसर्ग, महारोग, दुःख, खोटेमनकेपरिणाम, मिटानेकू
**ना, रोगो, पसर्ग, व्याधि, दुःख, दौर्मनस्यो, पशमना,**
शांतिहुओ, सतोष, पुष्टता, धनादिककीवधोती, मग,
**य, शांतिर्भवंतु, ओंतुष्टि, पुष्टि, ऋद्धिवृद्धि, मांग,**
लीक, उत्सव, हुओ, हमेस, उत्पन्न, खोटे,
**ल्यो, त्सवाः, भवंतु, सदा, प्रादुर्भूतानि, दुरितानि,**
पाप, समनहुओ, वैरी, उलटे,मुखवाले, हुओ,
**पापानि, शाम्यंतु, शत्रवः, पराङ्मुखा, भवंतु, स्वाहा,**
लक्ष्मीशोभानतशांतिनाथकू, नमस्कारशांतिके,करणेवालोंकों ती,
**श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने, त्रै,**
नलोकके,पती इद्रोंके, मुकुटसेंपूजितहैचरणजिनोंका, १, शा
**लोक्ये, शामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितां। घ्रिये, १, शा,**

तिनाथ शांतिकेकरता, समवसरणलक्ष्मीयुक्त, शांतिदेओ, मुझेहेजगद्गुरु,
**न्तिः, शांतिकरः, श्रीमान्, शान्तिर्दिशतु, मेगुरुः,शां**
शांतिनिश्चै, हमेशउनोंके, जिनोंकेशांतिप्रभूकीमूर्त्तिपूजावरमेंहोय, मर्दन,
**तिरेव, सदातेषां, येषांशांतिर्गृहे, २। २। ओं उन्मृ,**
करडालाहैकष्ट, दुष्टग्रहोंकीचाल, खोटेस्वप्ने, दुःखोंकेकारणकूंआदिले,
**ष्टरिष्ट, दुष्ट,ग्रहगति, दुःस्वप्न; दुर्निमित्तादि,सं,**
संपादन[पैदाकरीहेहितकीसंपदा, नामकालेणाभी, उत्कृष्टवर्त्तहैशांतिप्रभूका,
**पादितहितसंपत्, नामग्रहणं, जयतिशांतेः, ३,**
चारप्रकारकासंघ, नगरदेश, राजाअधिपती, राजाओंकेरहणेका
**श्रीसंघ, पौरजनपद, राजाधिप, राजसन्निवेशा,**
स्थान, कंपनी, नगरकेआगेवानोंका उंचेस्वरसें, उद्घोषणाशांति,
**नाम्; गोष्ठी, पुरमुख्यानां, व्याहरणै, र्व्याहरेच्छां,**
कीकरे,४, श्रीसाधुजैनसंघकी, शांतिहोय, श्रीनगर,
**तिम्,४, श्रीश्रमणसंघस्य, शांतिर्भवतु, श्रीपौ,**
केलोकोंकीशांतिहोय, राजाऔरदिवानादिकअधिपतियोंकीशांतिहोय,
**रलोकस्यशांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानांशांतिर्भवतु,**
राजाकेघरसुकामोंकीशांतिहोय, साझेदारव्यापारियोंकीशांतिहोय,
**श्रीराजसंनिवेशानांचशांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानांशांतिर्भवतु**
न्यायसभापंचनगरकेमुखियोंकीशांतिहो, ब्रह्मलोकोंकीशांतिहो,
**गोष्ठिपुरमुख्यानांशांतिर्भवतु, ब्रह्मलोकस्यशांतिर्भ०,**
मंगलीकहो, श्रीपार्श्वनाथअच्छेदेवकोंधूपदीपादिकयह
**ओंस्वा हाः, ओंह्रींश्रींश्रीपार्श्वनाथायस्वाहाः, एषा,**
शांति प्रतिष्ठामें, यात्रा, स्नात्रादिककेअंतमें, शांतिकलश,
**शांतिः, प्रतिष्ठा, यात्रा, स्नात्रावसानेषु, शांतिकल,**
कोंग्रहणकरके, केशरचंदन, कपूर, अगर, धूप, वासचूर्ण, कु
**शंगृहीत्वा, कुंकुमचंदन, कर्पूरा, गरु, धूप, वास, कु,**
शमांजलिसंयुक्त, स्नात्रचोकीपर, श्रीसंघसंयुक्त, पवित्र,
**सुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे, श्रीसंघसमेतः, शुचिः,**

पवित्र, शरीर, फूल, कपडा, चदन, गहणोंसें, सोभायमान, चं
शुचिः, वपु, पुष्प वस्त्र, श्चंदना, भरणा, लंकृतः, चंद
दनका, तिलक, करके, पुष्पोंकीमालागलेमेकरकै, शातिशब्द
न, तिलकं, विधाय, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमु
उचेस्वरसेंपुकारके, शान्तिकापाणी, शिरपरदेणा, ऐसा
द्घोपयित्वा, शान्तिपानीयं, मस्तकेदातव्य, मिनि
जिनराजकेअभिपेकमेंनाचेरत्नमोतीपुष्पवर्षाकरै, गावे, फेर,
नृत्यंतिनृत्यंमणिपुष्पवर्षंसृजंनि, गायति च, म
मगलगीतोंकों, स्तोत्रोंको, नामगोत्रोंकों, पढे, मत्रोको, कल्याण
गलानि, स्तोत्राणि, गोत्राणि पठंति, मंत्रान्, कल्या
केभजणेवालेनिश्चै, जिनराजकेअभिपेकमे, १, मेतीर्थंकरकीमाता,
णभाजोहि, जिनाभिपेके,१, अहंतित्थयरमाया
शिवादेवी, तुमारेनगरकीवसणेवालीहू, हमाराकल्याणहो,
शिवादेवी तुह्मनयरनिवासिनी, अह्मशिवं,तु
तुमाराकल्याणहो, अशुभउपशमहुआ, कल्याणहो, कल्याण
ह्मशिवं, असुहोवसमं, शिवंभवतुस्वाहा,१ शिव
हुओसर्वजगत्का, परायाहितकरणेसावधानहुओप्राणीगण,
मस्तुसर्वजगतः, परहितनिरताभवंतुभूतगणाः,
दोप, पाओ, नाम, सनजगेसुखी, हुओ, लोकसन,
दोषाः, प्रयान्तु नाशं, सर्वत्रसुखी, भवतु, लोकाः,२,
उपसर्ग[कष्ट], क्षयहोजाताहै, कटतीहै, विघ्नकीवेल, मनहै
उपसर्गाः, क्षयंयान्ति, छिद्यंते, विघ्नवल्लयः, मनः
सोप्रसन्नतापतीकोप्राप्तहोताहै, पूजतेहुयेजिनेश्वरकों,३, इसतरेवडी
प्रसन्नतामेति, पूज्यमानेजिनेश्वरे,३ इतिबृहच्छा
शांतिसपूर्ण, ॥
न्तिः समाप्ता, ॥

अथजिनपंजर॥अरिहंतकूंनमोमेंनमताहूं, सिद्धकूं
**ओं ह्रींश्रींअर्हंअर्हद्भ्योनमोनमः, ओं ह्रींश्रींश्रीसिद्धे**
नमोमेंनमताहूं, आचार्यकूंनमोमेंनमताहूं
**भ्योनमोनमः ओं ह्रींश्रींश्रीआचार्येभ्योनमोनमः, ओं ह्रीं**
उपाध्यायकोंनमोमेंनमताहूं,
**श्रींश्रीउपाध्यायेभ्योनमोनमः, ओं ह्रींश्रींश्री**
गौतमस्वामीकूंआदिलेकरसबसाधूकोंनमोमेंनमताहूं, १, यह
**गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्योनमोनमः १, एष**
पांचपदोंकानमस्कार, सबपापोंकानाशकरणेवालाहै, मंगलीक, फेर,
**पंचनमस्कारः सर्वपापक्षयंकरः मंगलानां, च,**
सबोंका, पहला, होय, मंगल,२ स्वदेशमेंजयपर
**सर्वेषां, प्रथमं, भवति मंगलं,२, ओं ह्रींश्रींजयवि**
देशमेंविजयकारी, ऐसेपूज्ञायोज्ञउत्कृष्टआत्माकोंनमस्कार, कमलप्रभाचार्य
**जये, अर्हंपरमात्मनेनमः, कमलप्रभसूरींद्रो, भा**
कहताहैजिनपंजरकों३ एकाशनउपवासकरके, तीनोंकाल, जो,
**षतेजिनपंजरं,३, एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं, यः**
पढे, यह, मनवंछितसब, फलोंकोंवहपावै, निश्चल
**पठे, दिदं, मनोभिलषितंसर्वं, फलंसलभते, ध्रुवं,**
जमीनपरसोवैशीलपालै, गुस्सा, लालचरहित, देवा
**४, भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोध, लोभविवर्जितः, दे**
धिदेवकेआगेपवित्रआत्मासें, छमहीनेसेंपावेफलनिश्चल,५, अर्हंत
**वताग्रेपवित्रात्मा, षण्मासैर्लभतेध्रुवं,५, अर्हंतं**
कोंस्थापनकरोशिरपर, सिद्धकोंनेत्रओरनिलाडपर, आचार्यकान
**स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धंचक्षुर्ललाटके, आचार्यंश्रो**
केबीचमें, उपाध्यायफेरनाकपर, साधुओंकासमूहमुख,
**त्रयोर्मध्ये, उपाध्यायंतुघ्राणके,६ साधुवृन्दंमुख,**
केआगे, मनकों, शुद्ध, करकै, फेर, दहिणासूर्यवायाचंद्रस्वरकोंरोकके,
**स्याग्रे, मनः, शुद्धं, विधाय, च, सूर्यचंद्रनिरोधेन, सु**

पडितजनसनकामसिद्धकरणे,७, दक्षिणदिशामेंकामदेवकेवैरी, वाये
**धीःसर्वार्थसिद्धये,७, दक्षिणेमदनद्वेषी वामपा**
पसवाडेरहैजिनराज, अगकेसाधोमेसर्वज्ञ, परमेष्टीनिरुपद्र
**र्श्वेस्थितोजिनः, अंगसंधिपुसर्वज्ञः, परमेष्टीशि**
चकरता,८, पूर्वमे, श्रीजिनरक्षाकरे, अग्निकोणमेंजितेंद्रिय
**वंकरः,८, पूर्वाशां, श्रीजिनोरक्षे, दाग्नेयींविजिते**
भगवान्, दक्षिणदिशामेंपरमब्रह्म, नैऋतकूणमेंतीनकालकोंजा
**द्रियः, दक्षिणाशांपरंब्रह्म, नैऋतिंचत्रिकालवि**
णनेवाले९, पश्चिमदिशामेजगत्केस्वामी, वायवकूणमेंपरमेश्वर,
**त,९, पश्चिमाशांजगन्नाथो, वायवीपरमेश्वरः,**
उत्तरदिशामेंतीर्थंकरसव, ईशानकोणमेंफेरनिरजन,१०, पाता
**उत्तरांतीर्थकृत्सर्वो, मीशानींचनिरंजनः१० पाता**
लमेभगवान्अर्हत, आकाशमेपुरुषोत्तम, रोहिणीकोआदि
**लंभगवानर्हं, त्राकाशंपुरुषोत्तमः, रोहिणीप्रमु**
लेकर१६विद्यादेवियो, रक्षाकरोसवकुलकी,११, ऋषभ, मस्तककीर
**खादेव्यो, रक्षंतुसकलं,कुलं११, ऋषभो, मस्तकं**
क्षाकरो, अजितनाथनेत्रोकीरक्षाकरो, सभवकानदोनोंकी,
**रक्षे, दजितोपिविलोचने, संभवःकर्णयुगलं,**
नाककी, फेर, अभिनदन, होठ, श्रीसुमतीरक्षाकरो
**नासिकां, चा, भिनंदनः,१२, ओष्ठौ, श्रीसुमतींरक्षे**
दातोंकोंपद्मप्रभप्रभू, जीभ, सुपार्श्वनाथदेवयह,
**त, दंतान्पद्मप्रभोविभुः, जिव्हां, सुपार्श्वदेवोयं,**
तालूकीचद्रप्रभ, प्रभू, गलेकी, श्रीसुविधिनाथरक्षाकरो
**तालुचंद्र, प्रभोविभुः,१३, कंठं, श्रीसुविधीरक्षेत्,**
हृदयकीअछेशीतलरक्षाकरो, श्रेयाशभुजादोनोंकी, वासु
**हृदयंश्रीसुशीतलः, श्रेयांसोबाहुयुगलं, वासु**
पूज्य, हाथदोनोंकी,१४, अगुलियोंकीनिमलरक्षाकरो, अनत
**पूज्य, करद्वयं, १४, अंगुलीर्विमलोरक्षे, दनंतोसौ**

यहस्तनदोनोंकीभी, अच्छेधर्मनाथपेटओरहड्डीकी, शांतिनाभिमंड

**स्तनावपि, सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभि**

लकी, १५, कुंथुगुदाकीरक्षाकरो, अररूओरकम्म

**मंडलं, १, श्रीकुंथुर्गुह्यकंरक्षे, दरोरोमकटीत**

रकी, मल्लिउरूओरपीठकी, जांघकीफेरमुनिसुव्रत, १६

**टं, मल्लिरुरूपृष्टिवंशं, जंघेचमुनिसुव्रतः, १६**

पावोंकेअंगुलियोंकीनमिरक्षाकरो, नेमिचरणदोनोंकी, पार्श्व

**पादांगुलीर्नमिरक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं, श्रीपा**

नाथसबवदनकी, वर्द्धमानज्ञानानंदआत्माकी, १७ जमीन

**र्श्वनाथःसर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकः १७, पृथिवी**

पाणी, आग, हवा, आकाश, मयीसंसार, रक्षाकरोसब

**जल, तेजस्क, वाय्वा, काश, मयंजगत्, रक्षेदशेष**

पापोसें, वीतराग, निरंजन, १८, राजद्वारपर, श्मशान

**पापेभ्यो, वीतरागो, निरंजनः, १८, राजद्वारे, स्मशा**

में, अथवा, युद्धमें, वैरियोंकेसंकटमें, वाघ, चोर, आगसांपादिक, भू

**ने, वा, संग्रामे, शत्रुसंकटे, व्याघ्र, चौराग्नि, सर्पादि, भू**

तप्रेतभयकेआश्रितपुरुषकूं, १९, अकालमरणप्राप्तहोणेसें, दरिद्ररूप

**तप्रेतभयाश्रिते, १९, अकालमरणेप्राप्ते, दारिद्र्या**

आपदासेंआश्रितकों, विगरपुत्रके, महादोषमें, मूर्खपणेमें, रोगपीडित,

**पत्समाश्रिते, अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे, रोगपीडि**

में, २०, डाकण, शाकणके, ग्रसितमें, महाग्रह समूहकेपीडामें,

**ते, २०, डाकिनी शाकिनी, ग्रस्ते, महाग्रह, गणार्दिते,**

नदीकेउतरते, रस्तेकीविषमतामें, व्यसनरूपआपदामेंस्मरणकरो, २१, प्र,

**नद्युत्तारे, ध्ववैषम्यै, व्यसनेचापदिस्मरेत्, २१, प्रा,**

भातहीअच्छीतरेउठके, जोस्मरणकरे, जिनपंजरकों, उसकूं, कुछभी,

**तरेवसमुत्थाय, यःस्मरे, ज्जिनपंजरं, तस्य, किंचि,**

डरनहीं, पावे, सुखसंपदाकों, २२, जिनपंजर,

**द्भयंनास्ति, लभते, सुखसंपदं, २२, जिनपंजर,**

नाम, यह, जो, स्मरणकरे, हमेसनितप्रति, कमलकीप्रभाजैसीराज,
नामे, दं, य, स्मरेत्य, नुवासरं, कमलप्रभराजे,
इद्रता, लक्ष्मी, यह, पावे, मनुष्य, प्रभात, उठके, पढे,
द्र, श्रियं, स, लभते नरः, २३, प्रातः, समुत्थाय, प,
जोक्रियाकाजाणकार, जो, स्तोत्रयह, जिनपजरनामका,
ठेत्,कृतज्ञो, यः, स्तोत्रमेत, जिनपंजराख्यं, आ,
चाखे, यह, कमलप्रभा[नामकी, लक्ष्मीको, मनवछित,
सादये, त्सकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मी, मनोवांछि,
पूरणकों, २४, श्रीरुद्रपल्लीनामका, प्रधानखरतरगच्छमें,
त,पूरणाय, २४, श्रीरुद्रपल्लीय, वरेण्यगच्छे,
देवप्रभनामकेआचार्य, पदकमलमेहसजेसे, वादीयोकेइद्रचूडामणि,
देवप्रभाचार्य, पदाब्जहंसः, वादींद्रचूडामणि,
यहजैनधर्ममें, जीओगुरु, श्रीकमलप्रभनामके,
रेपजैनो, जीयादुगुरुः, श्रीकमलप्रभाख्यः
२५ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

अथ ऋषिमण्डलस्तोत्र ॥

आदिअक्षर[अ], अतअक्षर[ह], इनोकोंजाणकर, अक्षर[निश्चल]व्यापकेजोरहा,
आद्यं, ताक्षर, संलक्ष, मक्षरव्याप्ययत्स्थितं,
आगकी, झालाकेसमान, अर्धचद्राकार, बिंदीऔररेफकीरेखाकरके, युक्त १,
अग्नि, ज्वालासमं, नाद, बिंदुरेखा,समन्वितम् १,
आगकीझाला, समान, क्रांतिवाला, मनकेमलको, आदाकरशुद्धकरता,
अग्निज्वाला, समा, क्रांतं, मनोमल, विशोधकं,
तेजवत, हृदयकमलमे उसपदकोंनमताहूवहनिर्मलहै, २, अर्हं,
देदीप्यमानं,हृत्पद्मे, तत्पदंनौमिनिर्मलं, २, अर्हं,
ऐसाअक्षरब्रह्मरूपका, वाचककहणेवालापरमेष्टहै, सिद्धचक्रयत्रका,
मित्यक्षरंब्रह्म, वाचकंपरमेष्ठिनः, सिद्धचक्र,
अच्छाबहबीजहै, सबतरेसे, अंगीकारकर्ताहू, ३, ओंतेजवीअर्हत,
स्यसद्बीजं, सर्वत, प्रणिदध्महे, ३, ओंनमोर्हद्भ्यईशे,

ईश्वरकों, तेजबीजसिद्धोंकोंवेर२नमस्कार, तेजबीजनमस्कारसबआचार्योंकों,
**भ्य, ओंसिद्धेभ्योनमोनमः, ओंनमःसर्वसूरिभ्यः**
उपाध्यायकूं, तेजबीजनमस्कार, ४, तेजबीजनमस्कार, सबसाधुओंकों,
**उपाध्यायेभ्य, ओंनमः, ४, ओंनमः, सर्वसाधुभ्यः,**
तेजबीजज्ञानकोंवेर२नमस्कार, तेजबीजनमस्कारतत्वकीनिजरवालेकों,
**ओंज्ञानेभ्योनमोनमः, ओंनमस्तत्वदृष्टिभ्यः,**
कर्मसंचयकोंखालीकरताकोंवेर२नम०, ५, कल्याणकेवास्तेफेरकल्याणहो, यहअर्हं
**चारित्रेभ्योनमोनमः, ५, श्रेयसेस्तुश्रियेस्त्वेत, दर्हंदा,**
तादिपूर्वोक्तआठशुभ, ठिकाणेमेंआठअच्छीतरेस्थापितकियेहुये, न्यारे२ॐह्रींबी
**घ्टकंशुभं, स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं, पृथग्बीजस,**
जादिकोंसेंयुक्त, ६, आदिपदशिखाकीरक्षाकरो, दूसरापदरक्षाकरोफेरमस्तककी,
**मन्वितं, ६, आद्यंपदंशिखांरक्षे, त्परंरक्षेत्तुमस्तकं,**
तीसरापदरक्षाकरोनेत्रदोनों, चोथापदरक्षाकरोफेरनाककी,, ७, पांच,
**तृतीयंरक्षेन्नेत्रे्द्वे, तुर्यंरक्षेच्चनासिकां, ७, पं**
मापदफेरमुखकीरक्षाकरो, छठापदरक्षाकरोगलेकी, नाभिकेअंदर,
**चमंतुमुखंरक्षेत्, षष्ठंरक्षेच्चघंटिकां, नाभ्यंतं,**
सातमापदरक्षाकरो, रक्षाकरोपावोंकाअंतआठमा, ८, पहलेप्रणवबीजओं, अंतस
**सप्तमंरक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं, ८, पूर्वंप्रणवतः शां**
हित, संयुक्तरेफ, समुद्र, पांचोंकों, सात, आठ, दश, चार,अंकों,
**तः, सरेफो, ष्यब्धि, पंचषान्, सप्ता, ष्ट, दश, तुर्यांका,**
कूं, आश्रित, बिंदी, स्वर, अलग, पूज्यनामकाअक्षर
**न्, श्रितो, बिंदु, स्वरान्, पृथक्,९, पूज्यनामाक्षरा**
आदिक, पांचों, ज्ञान, दर्शन चारित्रकों, नमस्कार, अंदर
**आद्याः, पंचातो, ज्ञान, दर्शन, चारित्रेभ्यो, नमो, म**
ह्रीं, संयुक्तअंतमें, [ह]अच्छीतरेसेंशोभित,१०,
**ध्ये, ह्रीं, सांत, हसमलंकृतः,१० ओं, ह्रां, ह्रीं, ह्रूं,**

हं,हें,हैं,हौं,हः, अ,सि,आ,उ,सा,ज्ञान,दर्शन,चारि
जम्बुवृक्षकाधारणेवालाद्वीप, क्षार[लवण]समुद्रसे,
त्रेभ्यो,नमः, जंबुवृक्षधरोद्वीपः, क्षारोदधिसमा,
घेराहुआ, अर्हदादिकअष्टकसेंआठ, काष्ठाधिष्टमैंशोभित,
वृतः, अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्टाधिष्टैरलंकृतः,
उसकेअदरप्राप्तहुआमेरू, शिखरलाखोंसैंशोभायमान,
११तन्मध्यसंगतोमेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः,
उचेमेंऊचे,तर२योगसेंतारे, ताराओंकेमडलसे,मडित, १२,
उच्चैरुच्चै,स्तरस्तार, स्तारामंडल,मंडितः, १२,
उसकेऊपर,सकारअत, बीजअदरइसकेसब प्राप्त नमन,
तस्योपरि,सकारान्तं, बीजंमध्यास्यसर्वगं, नमा,
करताहूमूर्तिंअर्हतकी, निलाडमेंरहे,निरजन, वहअक्ष,
मिथियमार्हंत्यं, ललाटस्थंनिरंजनं, १३, अक्ष,
य,मलरहित,शातिरूप, वहुतकरकेजडताकोंदूरकिया, निरेच्छा,निर,
यं,निर्मलं,शांतं, वहुलंजाड्यतोज्झितं, निरीहं,नि,
हकारी, मारमेंसारअतिशयपणेरढ, १४, नहींउद्धट, शुभ,साफ,
रहकारं, सारंसारतरंघनं, १४, अनुद्धतं, शुभंस्फी,
सतोगुणी, रजोगुणीकहा, तमोगुणीप्राचीनज्ञानवत, तेजवत,
तं,सात्विक, राजसंमतं, तामसंचिरसंवुद्धं, तैजसं,
रातकेसमान, आकारवत,फेर,आकाररहित,रसयुक्त,रहितरस,
शर्वरीसमं, १४, साकारं,च,निराकारं,मरस,विरसं,
उत्कृष्ट, उत्कृष्टसेउत्कृष्टदूसरेसेंऊपर, परपरासैंसर्वोपरि, एकअक्षरह्री,
परं, परापरपरातीतं, परंपरपरापरं, १६, एकवर्णं,
सिद्धदोअक्षरफेर, तीनअक्षरआचारी,चारउपाध्याय,पचाक्षरसर्वसाधू, महाअक्षर(ओं)
द्विवर्णं,च, त्रिवर्णं,तुर्यवर्णकं, पंचवर्णं,महावर्णं,
वहदूसराओरसर्वोपरि, १७, सपूर्ण, कलकरहित,तुष्ट, सबकामसेंरहित,
सपरंचपरापरं, १७, सकलं, निष्कलं,तुष्ट, निर्वृतंभ्रां,
भ्रातिसेंरहित, निरजन, आकाररहित, लेपरहित, वीतरागहैआश्रय,

**तिवर्जितं, निरंजनं, निराकारं, निर्लेपं, वीतसंश्रयं,**

१८, ऐश्वर्ययुक्तब्रह्मअच्छेज्ञानवंत, तत्ववेत्तासिद्धमहागुरु, ज्योतीस्व,

**१८, ईश्वरंब्रह्मसंवुद्धं, वुद्धंसिद्धंमतंगुरु, ज्योती,**

रूप, वडादेव, लोकअलोकके प्रकाशक, १९, अर्हतना,

**रूपं, महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं, १९, अर्हदा,**

म,फेर,अक्षरअंतका[ह], वहरेफयुक्त,अनुस्वारशोभित, चोथास्वर[ई]

**ख्य,स्तु,वर्णांत:, सरेफो,विंदुमंडित:, तुर्यस्वरसमा,**

करकेसंयुक्त, वहुतप्रकार[अर्धचंद्राकारयुक्त, ह्रींइसवीजमेंरहे,

**युक्तो, वहुधानादमालित:, २०, अस्मिन्वीजेस्थिता,**

सव, ऋषभादिक, जिनोत्तम, रंग, अपणेअपणेकरके, युक्त,

**सर्वे, वृषभाद्या, जिनोत्तमा:, वर्णै, र्निजैर्निजैर्युक्ता:,**

ध्यानकरणाउहांअच्छीतरेसेंप्राप्तहोकर, नादहैसोचंद्राकार,

**ध्यातव्या, स्तत्रसंगता:, २१, नादश्चंद्रसमाकारो,विं,**

विंदीहैसोनीलकेसमक्रांति, कलाहैसोसूर्यकेसमानअंतयुक्त, सोनेकीकां,

**दुनीलसमप्रभ:, कलारुणसमासांत, स्वर्णाभ:,**

तिसवचोतरफ, मस्तकपरसंलीनईकारहै, विशेषपणेनी,

**सर्वतोमुख:, २२, शिरसंलीनईकारो, विनीलो,**

लरंगसेंकहा, रंगकेअनुसारसंलीन, तीर्थंकरकेमंड,

**वर्णत:स्मृत:, वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंड,**

लकूंस्तवताहूं, २३, चंद्राप्रभुसुविधिनाथ, अर्धचंद्राकारस्थिति,

**लंस्तुम:, २३, चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमा,**

केआश्रित, विंदीमेंअंदरप्राप्तहुयेनेमि, मुनिसुव्रतकेवलियोंमेप्रधान,

**श्रितौ, विंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौजिनसत्तमौ,**

२४, पद्मप्रभऔरवासुपूज्य, कलापदमेंरहेहुये,

**२४, पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ,**

मस्तकपरजो,ई,उसमेंरहेसंलीन, पार्श्वमल्लिनाथजिनेश्वर, २५,

**सिरिईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ, २५,**

वाकीतीर्थंकर सव, ह,ओरर,केठिकाणेसमस्तपणेजुडेहुये,

शेषातीर्थकृतःसर्वे, हरस्थानेनियोजिताः,मा,
मायाबीजअक्षरमेंप्राप्त, चोवीसोंहीअर्हंत, २६, गयाहै,
याबीजाक्षरंप्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हताम्, २६, गत,
रागद्वेषमोह, सर्वपापसेनिःशेषपणेरहित, हमेससर्व,
रागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः, सर्वदासर्वे,
कालमें, वहहुओकेवलियोंमेंउत्तम, २७, देवओरदेवतोंकाजो,
कालेषु, तेभवंतुजिनोत्तमाः, २७, देवदेवस्ययच्च,
चक्र, उसचक्रकी, जोकांति[तेजी] उसकरकेढकाहुआसबअंग,नहीं,
क्रं, तस्यचक्रस्य,याविभा, तयाच्छादितसर्वाङ्ग,मा,
मुझेंमारेगीफेरडाकनी, २८, देवओरदेवतोंकाचक्र०, नहींमुझेंमारे,
माहिनस्तुडाकनी, २८, देवदेवस्यच०, मामाहि,
नस्तुराकिनी, २९, देवदे०, मामाहिनस्तुलाकिनी, ३०, देवदे०,
मामाहिनस्तुकाकिनी, ३१, देवदे०, मामा हिनस्तु शाकिनी, ३२,
देवदे०, मामाहिनस्तुहाकिनी, ३३, देवदे०, मामाहिनस्तु याकिनी,
३४, देवदे०, मामाहि संतुपन्नगा, ३५, देवदे०, मामाहिनस्तु हस्तिनः,
३६, देवदे०, मामाहि संतुराक्षसा, ३७, देवदे०, मामाहि संतुवह्नयः,
३८, देवदे०, मामाहिसंतु सिंहका, ३९, देवदे०, मामाहिसंतु दुर्जनाः,
४०, देवदे०, मामाहिसंतुभूमिपाः, ४१,
श्रीगौतमगुरूकाजोमेंपहै, उसकीजोपृथ्वीमेंऋद्धि[चमत्कार]है,
श्रीगोतमस्ययामुद्रा, तस्यायाभुविलब्धयः,ता,
उसकरकेप्रगटहुईजोजोति, मैंसबनिधानोकाईश्वरहोगया, ४२, पाता,
भिरभ्युद्यतःज्योति, रहंसर्वनिधीश्वरः, ४२, पाता,
लकेवसणेवालेदेव, देवसबजमीनपरवसणेवाले, स्वर्गकेवसणेवाले,
लवासिनोदेवा, देवाभूपीठवासिनः, स्वर्वासिनो,
भीजोदेवसब, सबरक्षाकरोफेरमुझेंइसजगे, ४३, जोअवधिलब्धिधारी,
पियेदेवा, सर्वेरक्षंतुमामितः, ४३, येवधिलब्धयो
जोफेर,परमावधिलब्धिधारी, वहसर्वेमुनीराजदेव, मुझे,
येतु,परमावधिलब्धयः, तेसर्वेमुनयोदेवाः, मांसं,

अच्छीतररेक्षाकरोहमेस, ४४, दुष्टमनुष्यभूतवेताल, पिशाच,
**रक्षंतुसर्वदा, ४४, दुर्जनाभूतवेताला, पिशाचा,**
मुगलतैसैं, वहसवशांतिपाओ, देवाधिदेवकेप्रभाव,
**मुद्गलास्तथा, तेसर्वेप्युपशाम्यंतु, देवदेवप्रभाव,**
सें, ४५, प्रणवमायाशोभाफेर,धैर्य,लक्ष्मी, गौरी,चंडिका,सरस्व,
**तः, ४५, ओंह्रींश्रींश्च,धृतिर्लक्ष्मी, गौरी,चंडी,सरस्व,**
१ सांप २ अंगार ३ राजा,
ती, जया,अंवा,विजया, निल्या, क्लिन्ना, अजिता,मदद्रवा,
**ती, जयांवा,विजया, निल्या, क्लिन्ना, जिता,मदद्र,**
४६, कामांगा, कामवाणा, फेर, सानंदा, आनंदमालिनी,
**वा, ४६, कामांगा, कामवाणा, च, सानंदा, नंदमालिनी,**
माया, मायाविनी,रौद्री, कला,काली, कलिप्रिया,
**माया, मायाविनी,रौद्री, कला,काली, कलिप्रि,**
४७, यह, सव,महादेवियों, है,जो,जगत्,तीनमें,
**या, ४७, एता, सर्वा,महादेव्यो, वर्त्तंते,या,जगत्त्रये,**
मुझें,सव, देओ, तेजी, यश, धीरज,वुद्धि, ४८, तेज,
**मह्यंसर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं, कीर्त्तिं, धृतिं,मतिं, ४८, दि,**
वंत, छिपाणेयोग्यअच्छादुःखसेमिलनेवाला, श्रीऋषिमंडलनामकास्तोत्र,
**व्यो, गोप्यःसुदुःप्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तवः,भा,**
कहातीर्थोंकेस्वामीनें, जगत्रक्षाकेवास्तेनिष्पाप, ४९, युद्धमें,
**षितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेनघः, ४९, रणे,**
राजद्वारमेंअग्निमें, जलमेंदुष्टरस्तेमेंहाथीसिंहमें, मसाणोंमें,वन,
**राजकुलेवह्नौ, जलेदुर्गेगजेहरौ, श्मशानेविपि,**
डरावणेमें, स्मरणकरणेसेंरक्षाकरताहैमनुष्योंकी, ५०, राज्यभ्रष्टकूंनिजरा,
**नेघोरे, स्मृतौरक्षतिमानवं, ५०, राज्यभ्रष्टानिजं,**
ज्य, पदभ्रष्टकूंनिजपद, लक्ष्मीभ्रष्टकोंनिजलक्ष्मी,
**राज्यं, पदभ्रष्टानिजंपदं, लक्ष्मीभ्रष्टानिजांलक्ष्मीं,**
पाताहैइसमेंनहींसंकाहै, ५१, स्त्रीकाअर्थीपाताहैस्त्री,

प्राप्नुवंतिनसंशयः, ५१, भार्यार्थीलभतेभार्यां,
पुत्रकाअर्थीपाताहैपुत्र, धनकाअर्थीपाताहैधन, मनुष्यस,
पुत्रार्थीलभतेसुतं, वित्तार्थीलभतेवित्तं, नरःस्म,
रणमानसें, ५२, सोना,रूपा,कपडा,कासेपर, लिखकर,
रणमात्रतः, ५२, स्वर्णे,रूप्ये,पटे,कांस्ये, लिखित्वा,
जोफेरपूजे, तिनोंकेआठमहासिद्धि, घरमेंरहै,
यस्तुपूजयेत्, तस्यैवाष्टमहासिद्धि, गृहेवसति,
हमेस, ५३, भोजपत्रपरलिखकरयह, गलेके, मस्तकके,
शाश्वती, ५३, भूर्जपत्रेलिखित्वेदं, गलके, मूर्ध्नि,
वा भुजाके, धारणकियाहुआहमेसतेजवत, सवडरकानासकरणेना,
वाभुजे, धारितंसर्वदादिव्यं, सर्वभीतिविनाश,
ला, ५४, भूतप्रेतग्रहयक्ष, पिशाच, मुगल, मलकरके,
कं, ५४, भूतैःप्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचै, र्मुद्गलै, र्मलैः,
वायुपित्तकफकेउत्पातसें, छूटताहैनहींइह्यामका, ५५,
वातपित्तकफोद्रेकैः, मुच्यतेनात्रसंशयः, ५५,
पृथ्वीपातालस्वर्गतीनोंपीठके, नियमानजोशाश्वततीर्थंकर,
भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठ, वर्त्तिनःशाश्वताजिनाः,
उनोंकू,स्तवनेसें,वांदनेसें,देखणेसे, जोफलवहफलसिद्धांतमें, ५६,
तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलंतत्फलंश्रुतौ, ५६,
यहछिपानेयोग्यवडास्तोत्र, नहींदेणाजिसकिसीकों,
एतत्गोप्यंमहास्तोत्र, नदेयंयस्यकस्यचित्,
मिथ्यात्ववासीकों देणेसें, वालहत्या पागपगमें, ५७,
मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, वालहत्यापदेपदे, ५७,
आयनिलादिकतपकरके, पूजकरके जिनराजकीश्रेणी,
आचाम्लादितपःकृत्वा, पूजयित्वाजिनावलीं,
आठ, हजारएक जाप, करणायह सिद्धिकेवास्ते,
अष्टसाहस्रिकोजापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे,
५८, एकसोआठ,पागेप्रातसमय, जोपढेदिनप्रति, उनोंकेनहीं,

**५८, शतमष्टोत्तरंप्रात, येंपठंतिदिनेदिने, तेषांन,**
होयव्याधिशरीरमें, आवेनहींफेरआपदा, ५९; आठमहीने,
**व्याधयोदेहे, प्रभवंतिनचापदः, ५९, अष्टमासा,**
कीअवधितक, प्रभातप्रभातफेरजोपढे, स्तोत्रयह,
**वधिंयावत्, प्रातःप्रातस्तुयःपठेत्, स्तोत्रमेतत्,**
वडातेजवंत, जिनराजकीमूर्त्तिवहदेखे, ६०, देखनेसेंसत्त्व,
**महातेजो, जिनबिंबंसपश्यति, ६०, दृष्टेसत्या,**
अर्हत्‌काबिंब, होय,सप्तमस्थानमें,निश्चल, पदकोंपावै, शुद्धआ,
**र्हतेबिंबे, भवेत्सप्तमकेध्रुवं, पदंप्राप्नोति, शुद्धा,**
त्मा, परमआनंदसेंहर्षित, ६१, तीनलोककावंदनीकहोयध्या,
**त्मा, परमानंदनंदितः ६१, विश्ववंद्योभवेध्या,**
णेवाला, मुक्तिपदकोंफेरभोगे, जायकरकेठिकाणेसर्वोपरि,
**ता, कल्याणानिचसोश्नुते, गत्वास्थानंपरंसो,**
वहभी, पीछाफेरनहींपलटे, ६२, यहस्तोत्र, वडास्तोत्र,
**पि, भूयस्तुननिवर्त्तते, ६२, इदंस्तोत्रं, महास्तो,**
स्तुतियोंमेंउत्तम उत्कृष्ट, पढणेसें, स्मरणकरणेसें, जापसें,
**त्रं, स्तुतीनामुत्तमंपरं, पठना, त्स्मरणा, ज्जापात्,**
पावेपद, उत्तम, ६३,
**लभतेपद, मुत्तमं, ६३, इतिऋषिमंडलस्तोत्रं,**

तीनजगत्‌केगुरूकूं,
**अथनवग्रहशांतिस्तोत्रं ॥ जगद्गुरुंनम,**
नमस्कारकर, सुणकरसत्‌गुरूकाकहा, ग्रहोंकीशांतिकहूंगा,
**स्कृत्य, श्रुत्वासद्गुरुभाषितम्, ग्रहशांतिंप्रव,**
लोकोंकेसुखकेवास्ते, १, जिनेंद्रोंके, खेचर[ग्रह],
**क्ष्यामि, लोकानांसुखहेतवे, १, जिनेंद्राः, खेचरा,**
जाणना पूजणा निमित्तयगें ग्रह चंदन

ज्ञेयाः, पूजनीया, विधिक्रमात्, पुष्पै, र्विलेपनै,
धूपसे, मिठाइसें, प्रशन्नताकेवास्ते, २, पद्मप्रभूकासेवक, सूर्यहै,
र्धूपै, र्नैवेद्यै, स्तुष्टिहेतवे, २, पद्मप्रभस्य, मार्त्त,
चद्रचद्रप्रभूकासेवकहै, वासुपूज्यप्रभूकासेवकमगलहै,
ड,श्चंद्रश्चंद्रप्रभस्यच, वासुपूज्योभूमिपुत्रो,
बुध, आठजिनेश्वरोकासेवकहै, ३, विमल, अनत, धर्म,अर,
बुधो, ष्यष्टजिनेश्वराः, ३, विमला, नंत, धर्मारा,
शाति, कुथु, नमि, तैसे, वर्द्धमान, जिनेद्रोंके,
शांतिः, कुंथु, नमि, स्तथा, वर्द्धमानो, जिनेद्राणां,
चरणकमलमे, बुधकोंस्थापना, ४, ऋषभ, अजित, सुपार्श्व,
पादपद्मे, बुधंन्यसेत्, ४, ऋषभा, जित, सुपा,
फेर, अभिनदन, शीतल, सुमति, शभव, नाथ,
र्श्वं, श्चाभिनंदन, शीतलौ, सुमति, शंभव, स्वा,
श्रेयासका, फेर, बृहस्पतिसेनकहै, ४, सुविधनाथका, कहा,
मी, श्रेयांस, श्च, बृहस्पतिः, ४, सुविधेः, कथितः,
शुक्रसेवक, मुनिसुमतकासेवकशनिश्चरहै, नेमिनाथकासेवकहोताहै,
शुक्रः, सुव्रतस्यशनैश्चरः, नेमिनाथेभवे,
राहु, केतुश्रीमल्लिपार्श्वनाथकासेवकहै, ६, जन्मलग्न, फेर,
द्राहुः, केतुःश्रीमल्लिपार्श्वयोः, ६, जन्मलग्ने, च,
रासीपरफेर, पीडाकरेजवग्रह, तव, अच्छीतरेपूजना,
राशौच, पीडयंतियदाग्रहाः, तदा, संपूजयेद्धी,
बुद्धिमानोंनें, ग्रहोंसयुक्तजिनराजोंका, ७, पुष्पचदनधूपादिक,
मान्, ग्वेचरैःसहितान्जिनान्, ७, पुष्पगधादि,
सें, फल, मिठाई, सयुक्त, जेमारगहैसा, दानकरके,
भिर्धूपैः, फल, नैवद्य, संयुतैः, वर्णसदृश, दानैश्च,
पस्रोंकरके, नगदीदक्षणायुक्त, ८, सूर्य, चद्र, मंगल,

वासोभिर्दक्षिणान्वितैः, ८, आदित्य, सोम, मंगल,
बुध, बृहस्पत, शुक्र, शनैश्वर, राहु, केतु, आदिक,य,
बुध, गुरु, शुक्राः, शनैश्वरो,राहुः, केतु, प्रमुखा,खे,
ह, जिनपतीके, सन्मुख, रहो, ९, जिनराजकानामक,
टा, जिनपति, पुरतो, वतिष्ठंतु, ९, जिननामकृतो,
रकेउच्चार, देशनक्षत्र, रंगसें, स्तवना,फेर,पूजनेसैं,भक्ती,
च्चारा, देशनक्षत्र, वर्णकैः, स्तुता,श्च,पूजिता,भ-
सें, ग्रह, होय, सुखवहणेवाले, १०, जिनेश्वरोंके, आगे,
क्त्या, ग्रहाः, संतु, सुखावहाः, १०, जिनाना, मग्रतः,
खडारहके, ग्रहोंके, सुखके, कारण, नमस्कार, सो,वख्त भक्ती,
स्थित्वा, ग्रहाणां, सुख, हेतवे, नमस्कार, शतं, भ,
सें, जपनाआठआगेमनुष्योंनें, ११, भद्रबाहुस्वामीकहतेहुयेयह,
क्त्या, जपेदष्टोत्तरंनरः, ११, भद्रबाहुरुवाचेदं,
पांचमें, श्रुतकेवली, विद्याप्रवाद, पूर्वसें, ग्रह,
पंचम, श्रुतकेवली, विद्याप्रवादतः, पूर्वाद्, ग्र,
शांतिकीविधि, कही, १२,
हशांतिविधि, मंतः, १२, इतिनवग्रहशांतिस्तोत्रं,

# अथ दशपच्चक्खाण ॥

उग्गएसूरे, नमुक्कारसहिय, पचक्खाइ, चउव्विहपि, आहार, असणं, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहस्सागारेण, वोसिरामि, १, आगार, २,

पोरसिं, मुठमी, पचक्खामि, उग्गएसूरे, चउव्विहपि, आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहस्सागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्व-समाहिवत्तियागारेण, वोसिरामि, विगयपचक्खामि०, आगार, ६, इसीतरे साढपोरसिंक पचखाणहोताहै, २,

सूरेउग्गए, पुरिमड्ढ, अवड्ढवा, पच्चक्खाइ, चउव्विहपि, आहार, असणं, पाण, खाइम साइम, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, मह०, सव्व०, निगइओ इत्यादि, आगार ७, ३,

पोरसिं, साढपोरसिंवा, पचक्खाइ, उग्गएसूरे, चउव्विहपि, आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, एकासण, बिआसण, वा पचक्खाइ, दुविह, तिविह, पिआहार, असण, खाइम, साइम, अण्ण०, सह०, सागा-रिआगारेण, आउट्टणपसारेण, गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, मह०, सव्व०, देसा-वगासिय, इत्यादि, आगार ८, ४,

पोरसि, साढपोरसिं, वापचक्खाइ, उग्गएसूरे चउव्विहपिआहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, एकासण, एकलठाण, पचखाइ, दुविह, तिविह, चउव्विहपिआहार, अस०, खा०, सा०, अण्ण०, सह०, सागारि आगा-रेण, गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, मह०, सव्व०, देसावगासिय०, आगार ७,

पोरसिं, साढपोरसिं, वा पचक्खाइ, उग्गएसूरे, चउव्विहपि आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, आय बिल पचक्खाइ, अण्ण०, सह०, लेवालेवेण, गिहत्थ ससिट्ठेण, उक्खित्तविवेगेण, पारि०, मह०, सव्व०, एकासण, पचक्खाइ, तिविहपिआहार, असण, खाइम,साइम अण्ण०, सह०, सागा०, आउट्टणपसारेण, गुरुअ०, पारिट्ठा०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, आगार, ८।

पोरसिं, साढपोरसिंवा, पचक्खाइ, उग्गएसूरे, चउव्विहपिआहार, असण, पाण, खा-इम, साइम, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, निव्विगइयपचक्खामि, अण्ण० सह०। लेवा०, गिह०, उक्खि०, पडुच्चमक्खिएण, पारि०, मह०, सव्व०, एकासण, पच्च-क्खाइ, तिविहपि आहार, असण, खाइम, साइम, अण्ण०, सह०, सागारि०, आउट्ट०,

गुरु०, पारि०, मह०, सब्ब०, देसावगासियंभोगंपरिभोगंवा, पच्चक्खामि, अण्ण०, सह०, मह०, सब्ब०, वोसिरामि, इति नीवीपच्चक्खाण, आगार, ९,

सूरेउग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्विहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, मह०, सब्ब०, वोसिरामि, इति चउव्विहार उपवासपच्चक्खाण, ९,

सूरेउग्गए, अब्भत्तट्ठं, पच्चक्खामि, तिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पाणहार पोरसिं, साढपोरसिं, पुरमड्ढं, अवड्ढंवा, पच्चक्खाइ, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसामोहेणं०, साहु०, सब्ब०, वोसरामि, इतितिविहारउपवास पच्चक्खाण,

पोरसिं साढपोरसिं, पुरमड्ढं, अवड्ढंवा, पच्चक्खामि, उग्गएसूरे चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सब्ब०, एकासणं, एगठाणं, दत्तियं, पच्चक्खामि, तिविहं, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, सागा०, गुरु०, मह०, सव्व०, विगइयोपच्चखामि०, देसावगासियं इत्यादि, इतिदत्तिपच्चक्खाण, आगार ९,

दिवसचरिमं, पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, महत्त०, सव्व०, वोसिरइ, इतिरात्रिचोविहारपच्चक्खाण, ॥

दिवसचरिमं, पच्चक्खामि, दुविहंपि, आहारं, असणं, खाइमं, अण्ण०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, इतिरात्रिदुविहारपच्चक्खाण,

पाणहारदिवसचरिमं, पच्चक्खामि, अन्न०, सह०, मह०, सव्व, वोसिरामि, इतिपाणहार पच्चक्खाण, ॥

भवचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहंपि, चउविहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरइ, इति अंतसमय पच्चक्खाण, ॥

तेसें, गंठिसहि, मुट्ठिसहि, अंगुट्ठसहि, प्रमुख, अभिग्रह, पच्चक्खाणकेभी, यहचार आगार, अन्न० सह०, मह०, सव्व०, वोसिरइ,

पांचमाचोलपट्टागारेणं, साधूकेहोताहै, इतिअभिग्रहपच्चक्खाण,

साधुपच्चक्खाणकरे, तब देसावगासीनहींपच्चखे, ओरतिविहार, उपवासमें, आंबिलमें, नीवीमें, एकासणप्रमुखमें, पाणस्सका, छआगारपच्चक्खे, सोदिखातेहैं, पाणस्सलेवाडेणवा, अलेवाडेणवा, अच्छेणवा, बहुलेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा, वोसिरइ,

## अथ आगारसंख्या ।

दो, निश्चै, नावकारसीमें, आगार, छव, होतेहैं, पोरसीमें,
दो, चेव, नमोक्कारो, आगारा, छच, हुंति, पोरसि,
सात, पुरमार्द्धमें, एकासणेमें, आठ,
ए, सत्तेवय, पुरमड्ढे, एगासणंमि, अट्ठेव, १,
सात, एकठाणेमें, आठ, आयनिलमे,
सत्ते, गट्ठाणस्सउ, अट्ठेवय, आयविलंम्मि,
आगार, पाच, उपवासमें, छपाणाहारमैं, दिवसचरमभ-
आगारा, पंचेव, अब्भत्तट्ठे, छपाणे, चरमचत्ता
यचरमचार, २, पाचचार, अभिग्रहमें, निवीमें, आठनव
रि, २, पंचचउरो, अभिग्गहे, निव्वीए, अट्ठन
आगार, अल्पावरणमें, पाच, होय, बाकी
वय, आगारा, अप्पावरणे, पंचउ, हवंति, से
कोंमें, चार, ४,
सेसु, चत्तारि, ४,

---

## अथ सोगनदिलाणेका पच्चक्खाण ।

धारणा प्रमाण, पचक्खाईं अरिहंत सक्खियं, सिद्धसक्खियं, साहुसक्खियं, देवसक्खियं, अप्पसक्खियं, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि,

---

## अथ पच्चक्खाण पारण ।

नवकारसी, पोरसी, प्रमुख, पचक्खाण, फासियं, पालियं, पूरियं, तीरियं कीट्टियं, आराहियं, जचनआराहियं, तस्समिच्छामि दुक्कड, इति,

---

## अथ नवग्रहमंत्रेण जिनेंद्र पूजा ।

पद्मप्रभुजिनेंद्रका, नामउचारणमें सूर्य, शांति
पद्मप्रभजिनेंद्रस्य, नामोचारेण भास्करः, शांतिं

तुष्टि, फेर, पुष्टि, फेर, रक्षा कर, २, कल्याणकों,
**तुष्टिं, च, पुष्टिं, च, रक्षां, कुरु, २, श्रियम्, १, इतिसूर्य**
चंद्राप्रभु, जिनइंद्रका, नामसें, तारागणाधिप [ चंद्रमा ],
**पूजा, चन्द्रप्रभ, जिनेन्द्रस्य, नाम्ना, तारागणाधिप,**
प्रशन्न हुओ, शांति, फेर, रक्षा, करो, २, जय, निश्चल,
**प्रसन्नोभव, शांतिं, च, रक्षां, कुरु, जयं, ध्रुवम्, २,**
हमेस, वासु, पूज्यका, नाम
**इति श्रीचन्द्रपूजा, सर्वदा, वासु, पूज्यस्य, ना**
सें, शांति, जय, कल्याण, रक्षा, करो, पृथ्वीपुत्र[मंगल] अ
**म्ना, शांतिं, जय, श्रियं, रक्षां, कुरु, धरासूनो, अ**
शुभभी, शुभहुओ, ३, विमल,
**शुभोपि, शुभोभव, ३, इति भौमपूजा, विमला,**
अनंत, धर्म, अर, शांति, कुंथु, नमि, तेसैं, महावीर,
**नंत, धर्मा, राः शांतिं, कुंथु, नेमि, स्तथा, महावीर,**
फेर, उनोंकेनामसें, शुभ, हुओ, हमेस, बुध,
**श्च, तन्नाम्ना, शुभो, भूयाः, सदा, बुधः, ४, इति**
ऋषभ, अजित, सुपार्श्व, फेर, अभि
**श्रीबुधपूजा, ऋषभा, जित, सुपार्श्वा, श्चा, भि**
नंदन, शीतल, सुमति, संभव, नाथ, श्रेयांस,
**नंदन, शीतलौ, सुमतिः, संभवः, स्वामी, श्रेयांस,**
फेर, जिनोत्तम, इन, तीर्थकरोंके, नामसें, पूजनीक,
**श्च, जिनोत्तमः ५, एतत्तीर्थकृतां, नाम्ना, पूज्यो,**
शुभ[गुरु], शुभ हुओ, शांति, तुष्टि, फेर, पुष्टि, फेर, करो, देव
**शुभः, शुभोभव, शांतिं, तुष्टिं, च, पुष्टिं, च, कुरु, दे**
तोंकासमूह पूजेभये, सुविधि
**वगणार्चित, ६, इति श्रीगुरुपूजा, पुष्प**
नाथ, जिनइंद्रका, नामसें, दैत्यगणसें पूजित, प्रशन्न
**दंत, जिनेन्द्रस्य, नाम्ना, दैत्यगणार्चित, प्रस**

हुओ, शांति, फेर, रक्षा, करो, २, कल्याणकों,
श्चोभव, शांति, च, रक्षा, कुरु कुरु, श्रियम्, ७,
श्रीमुनिसुव्रत जिनङद्रका,
इति श्रीशुक्रपूजा, श्रीसुव्रतजिनेन्द्रस्य,
नामसे, सूर्यपुत्र[शनैश्चर], प्रशन्न हुओ, शांति, फेर,
नाम्ना, सूर्यांगसंभव, प्रसन्नोभव, शांति, च,
रक्षा करो, २, कल्याणकों, ८,
रक्षां कुरु कुरु, २, श्रियम्, ८, इति श्रीशनैश्च
श्रीनेमिनाथ तीर्थपतीका, नामसें,
रपूजा, श्रीनेमिनाथतीर्थेशस्य नामतः, सिं
राहु, प्रशन्न हुओ, शांति, फेर, रक्षाकरो,
हिकासुतः, प्रसन्नोभव, शांतिं, च, रक्षाकुरु,
करो, कल्याणको, ९, राहुके
कुरु, श्रियम्, ९, इति श्रीराहुपूजा, राहोः
सातमे राशीपर रहा, आकारसें, दश्यमवर[धजा] श्रीमल्लि
सप्तमराशिस्था, कारेण, द्वयसंवरे, श्रीमल्लि
पार्श्वका नामसें, केतु, शांति, जयलक्ष्मीकों, १०,
पार्श्वयोनाम्ना, केतो, शांतिं, जयश्रियम्, १०,
एसा कहकर, अपणे २ रंग,
इति श्रीकेतुपूजा, इतिभणित्वा, स्वस्व, वर्ण,
कुशुमांजलि, डालणी, जिन ग्रहकी पूजा करणी, उससें, स
कुसुमांजलि, क्षेपः, जिनग्रह पूजाकार्या, तेन स
ष पीडाकी, शांति होय, अथ, सबका, फेर,
र्व पीडायाः, शांतिर्भवति, ॥ अथ, सर्वेषां, वा
ग्रहोंका, अेकदिन,फेर, पीडाकी, यहविधिहे, नवको
ग्रहाणा, मेकदा, पीडाया, मयविधिः, नवको
ठे, लिखना, गोल, चोरस, ग्रह, उमजगेस्था
ष्टक, मालेख्य, मंडलं, चतुरस्रकम्, ग्रहा, स्तत्रम

पनकरना, अवकहाजाताहै, क्रमकरके फेर, ११, वीचमें, निश्चे,सू
तिष्ठाप्या, वक्ष्यमाण, क्रमेणतु, ११, मध्ये, हि,भा,
र्य, स्थापनकरणा, पूर्व, दक्षणसें, चंद्रमा, दक्षणमें,
स्करः,स्थाप्यः, पूर्वे, दक्षिणतः, शशी, दक्षिणस्यां,
मंगल, वुध, पूर्व,उत्तरमें, फेर, १२, उत्तरमें,
धरासूनु, वुधः, पूर्वो,त्तरेण, च, १२, उत्तरस्यां,
वृहस्पति, पूर्वदिशामें, शुक्र, पश्चिममें,
सुराचार्यः, पूर्वस्यां, भृगुनंदनः, पश्चिमायां,
शनैश्चरकों, स्थापना, राहुदक्षणपश्चिमकेवीचमें, १३,
शनिः, स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे, १३,
पश्चिमउत्तरके,वीच, केतु, अैसें, स्थापनकरना, क्रमसें, ग्रहो
पश्चिमोत्तरतः, केतु, रितिस्थाप्याः, क्रमाद्, ग्र
कूं, पट्टेपरवाथालीमें, अग्निकोणमें, ईशानकोणमें,फेर, हमेस,
हाः, पट्टेस्थाले,श्च वा,श्चेय्यां, ईशान्यां, तु, सदा,
वुधकों,
वुधैः, २ ॐआदित्यसोमसंगल, वुध गुरु शुक्राः
शनैश्चरो राहु, केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपु
अेसा पढकर, पांचरंगकी, कुशमांजली,
रतोवतिष्ठंतु, १५, इतिभणित्वा, पंचवर्ण, कुसुमां
डालना,फेर, जिनराजकीपूजाफेरकरणी, १६, इसतरेसेंजै
जलिक्षेप,श्च, जिनपूजाचकार्या, १६, एवंयथा
सैं,नामलेकियाअभिषेकसें, विलेपनसें, धूप, पूजनसें, फेर, फ
नामकृताभिषेकै, रालेपनै,धूपन, पूजनै, श्च, फ
लसें,फेर, नैवद्य, अच्छेजिनराजोंके, नामसें, ग्रहोंकेइंद्र, वरकेदे
लै, श्च, नैवेद्य, वरैर्जिनानां, नाम्ना, ग्रहेन्द्रा, वरदा
णेवालेहुओ, १७, श्वेतांवरसाधूकोंवस्त्रकाभोजनकादानदेणा, महोच्छव
भवंतु, १७, साधुभ्योदीयतेदानं, महोत्साहो

जिनमंदिरमेंकराणा, चतुर्विधसंघका, आदरसेंपूजनकर
**जिनालये, चतुर्विधस्यसंघस्य, बहुमानेनपू**
णा, १८,
**जनम्, १८, इतिपूजाविधिः,**
किस, अरिष्ट ग्रहमें, कोनसे जिनराजकी, किम, तरे, पूजा
**कस्मिन्, रिष्ट ग्रहे, कस्य जिनस्य, कया, रीत्या, पूजा**
करणी, वह, कहतेहैं, सूर्यकीपीडामे, लालपुष्पोंमे,
**कार्यः, तदा, ख्याति, रविपीडायां, रक्तपुष्पैः,**
श्रीपद्मप्रभकी पूजा करणी,
**श्रीपद्मप्रभपूजाकार्या, ओंह्रीं नमोसिद्धाणं,**
तिसका, आठऊपर सो, जाप करणा, चद्रमाकीपीडामे,
**तस्य, अष्टोत्तरशत, जपःकार्यः, चंद्रपीडायां,**
चदनमिलाकर, सेवतीपुष्पसें, श्रीचदाप्रभुकी, पूजाकरणी,
**चंदन, सेवंतपुष्पैः, श्रीचंद्रप्रभ, पूजाकार्या,**
तिसका, आठऊपर सो, जा
**ॐह्रीं नमो आयरिआणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, ज**
प करणा, मगलकीपीडामें, केसरसें, फेर, लालपुष्पों
**पःकार्यः, भौमपीडायां, कुंकुमेन च, रक्तपु**
सें, श्रीवासुपूज्यस्वामीकी, पूजा करणी,
**ष्पैः, श्रीवासुपूज्य, पूजाविधेया, ओंह्रीं नमो**
तिसका, आठऊपर सो, जाप करणा, बुध
**सिद्धाणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपःकार्यः, बुध**
कीपीडामें, दूधसे, स्नान, मिठाइ, फलआदिसें, श्रीशानि
**पीडायां दुग्ध, स्नान, नैवेद्य, फलादितः, श्रीशां**
नाथकी, पूजा, करणी,
**तिनाथ, पूजा, कर्त्तव्या, ओंह्रीं नमो आयरि**
तिसका, आठऊपर सो, जाप, करणा, बृहस

**याणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, गुरु**
तिकीपीडामें, दही, भोजन, जंबीरादिक, फलकरके फेर,
**पीडायां, दधि, भोजन, जंबीरादि, फलेन, च,**
चंदनादिक, विलेपनकरके, श्रीऋषभदेवजीकी पूजा,
**चंदनादि, विलेपनेन, श्रीआदिनाथपूजा,**
करणी, तिसका
**करणीया, ओंह्रीं नमो आयरिआणं, तस्य,**
आठऊपर सो, जाप, करणा, शुक्रकीपीडामें,
**अष्टोत्तरशत, जपः, कर्त्तव्यः, शुक्रपीडायां, श्री**
सपेतपुष्प, चंदनादिकरके, श्रीसुविधनाथकी, पूजाकर
**श्वेतपुष्पै, श्चंदनादिना, श्रीसुविधिनाथ, पूजाका**
णी, मंदिरमेंघीकादानजैनपंडितकोंचांदीकादान,
**र्या, चैत्येघृतदानंकार्यं, ओंह्रीं नमोअरिहंता**
तिनोंका आठऊपर सौ, जाप, करना, शनेश्चरकी
**णं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, शनैश्चर**
पीडामें, नीलपुष्पसें, श्रीसुनिसुव्रतस्वामीकीपूजा क
**पीडायां, नीलपुष्पैः, श्रीमुनिसुव्रतपूजा का**
रणी, तेलसेंस्नान, ओर दान, करना,
**र्या, तैलस्नान, दाने, कर्त्तव्ये, ओंह्रीं नमोलोए**
तिनोंका, आठऊपर सौ, जाप, करणा,
**सव्वसाहूणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः,**
राहुकीपीडामें, नीलपुष्पोंसें, नेमिनाथजीकी पूजाक
**राहुपीडायां, नीलपुष्पैः, श्रीनेमिनाथ पूजाकर**
रणी, तिनोंका
**णीया, ओंह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं, तस्य**
आठऊपर सौ, जाप, करना, केतुकीपीडामें, अनार
**अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, केतु पीडायां, दाडिमा**

आदिकेपुष्पोंसें, श्रीपार्श्वनाथजीकीपूजाकरणी,

**दिपुष्पैः, श्रीपार्श्वनाथपूजा, कार्या, ओंह्रींनमो लोएसव्वसाहूण,**

इसपदकाआठऊपरसौ, जापकरणा,

**तस्यअष्टोत्तरशतं, जपःकार्यः, इतिनवग्रहपूजाविधिः,**

सर्वग्रहोंकीपीडामें,

**सर्वग्रहपीडायां श्रीसूर्य, सोमा, गार, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु, केतवः, सर्वग्रहा, ममसानुग्रहाः, भवंतु, स्वाहा, ओंह्री असिआउसायनमः स्वाहा, अस्यमं-**

इसमनका, आठऊपर, सौ, जाप, करना, उसकरके,नवग्र-

**त्रस्य, अष्टोत्तर, शत, जपः, कार्यः, तेन, नवग्रह,**

होकी, तकलीपकीशांतिहोय,

**पीडोपशांतिः स्यात्, इतिनवग्रहपूजाप्रकारः,**

---

## अथ दूजचैत्यवंदन

अभिनंदन अर जिनवरू, जनमदूजदिनलीधो, सुमतिजिनचवियावली, शीतलकार-जसीधो, १ वासुपूज्यकेवल लह्यो, दूजदिवस सुखकार, इम अनत चोवीसिये, अनत कल्याणकसार २ दुविध ध्यान तज दो भजोए, धर्मशुक्ल उरधार, धर्मशीलपद कुशल निधि, प्रगटे गुण ऋद्धिसार, ३ इति दूज चैत्यवंदन, अथ पंचमीचैत्यवंदन, वीरजिनंद महिमा करें, सुदि पचम केरी, ज्ञानआराहोइनदिने, लहो शिवपद सेरी, १ प्रथम ज्ञान पीछे क्रिया, ज्ञान विना पशु जान, देशे आराधक क्रिया, सर्वाराधक ज्ञान, २ ज्ञानतणी महिमा घणीए, भगवती अग प्रमाण, व्रतनिधि धारो गुरुथकी, ऋद्धि सार निर्वाण, ३ इति पचमी चैत्यवदन, अथ अष्टमीचैत्यवंदन, सुपाश शभन अष्टमी, चविया सुखरासे, ऋषभ अजित सुमतिनमि, मुनि सुव्रत भासे, १ आ-ठम दिन ये जनमिया, दीक्षा ऋषभजिनंद, अभिनंदन श्रीपार्श्वनमि, अक्षय गति सुखकंद, २ अष्टमि आराधो भविए, अष्टकर्म हुय नास, धर्मशील कुशलातमा, ऋद्धि सार पद-वास, ३ इति अष्टमी चैत्यवदन,

अथ इग्यारस चैत्यवदन, तीन कल्याण मल्लीतणा, जन्म दीक्षावर ज्ञान, अरजिन पार्श्व जिनेश्वरू, सजम धार्योवान, १ ऋषभ अजित सुमतिनमि, पद्मप्रभु वलिपास, भव-भय तोडी आपना, इग्यारस शिववास, २ कर्मभूमि दश क्षेत्रनाए, सार्धे शत कल्याण, इग्यारमव्रतनिधि करे, ऋद्धिसार सुखधान, ३ इति इग्यारस चैत्यवदन,

अथ रोहिणी चैत्यवंदन, रोहिणी तप आराधिये, वासुपूज्य जिनराज, वास चूर्ण चाढो प्रथम, अष्ट द्रव्य सुखसाज, १ त्रिहुंकाले पूजा करो, गुरुगमसें आराध, धूप दीप अंगीरचो, राखो चित्त समाधि २ अशोकतरु आरोपि येए, अशोकनी हुय वृद्धि, रोहिणी तपथी रोहणी, ऋद्धि सार सुखसिद्धि ३ इति रोहणी चैत्यवंदन,

---

## अथ श्रीसीमंधर जिन चैत्यवंदन ॥

जय २ त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गतिगामी, जय २ करुणा संत बंधु, भविजन हितकामी, १ जय २ इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी, जय २ अतिशय नंतवंत, अंतर गतिजामी, २ पूर्व विदेह विराजताए, श्रीसीमंधर स्वामि, त्रिकरण शुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम, ३, इति,

---

## अथ दूसरा.

वंदूं जिनवर विहरमान, सीमंधर स्वामी, केवल कमलाकांत दांत, करुणा रसधामी, १ कांचनगिरि समदेह, कांति वृषलांछन पाय, चौरासी लख पूर्व आय, सेवै सुरराय, २, पूर्वविदेह विराजताए, पुंडरीकनी भांण, प्रभु द्यो दरशन संपदा, कारण पद कल्याण, ३ इति स्तुति,

---

## अथ शत्रुंजय चैत्यवंदन ॥

जय २ शत्रुंजय गिरी, अनंत सिद्धनो थांन, विद्याधर चक्री मुनि, नमिविनमी निर्वाण, १ पुंडरीक प्रद्युम्न संब, नवनारद सीधा, वालीरामादिक भरत, सिवसुख पद लीधा, २ सेलगपंथग पंडुपुत्र, पंचद्रविड नरराज, मुक्त अनंता विमल गिरि, ऋद्धिसार शिव पाज, ३ इति शत्रुंजय स्तुति.

---

## अथ सामायकलेणेकी विधि ॥

पहली उंचे पट्टेपर, पुस्तक, या माला वगेरे की, थापना करणी, श्रावक, अथवा, श्रावकणी, मुखपत्ती, तथा आसण लेकर, शुद्धपवित्र वस्त्र पहरकर, जमीनकूं प्रमार्जकर, आसन सन्मुख विछाकर, वांये हाथमें, मुखपत्ति, मूंके सामनें रख, दहणा हाथ, थापनाचार्यजीके, सामने करके, ३ नवकार गिणे, पीछै खमासमण देके, इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक, मुंहपत्ति पडिलेहूं, इच्छं मुंहपत्तीका, २५ बोल २५ अंगकी कहकै, मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे खमासण देके, इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक संदिस्साउं, इच्छं, फेर खमासण देके, इच्छा कारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक ठाउं,

इच्छ, असाकहे, दोनों हाथ जोट, १, नवकार गुणके, इच्छाकारी, भगवन्, सामायक दडक, उच्चरावोजी, ३ वेर करेमि भंते कहे, पीछे खमासमण देके, इरियावही कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करे, पारके, प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देके, इच्छाकारेण स०, वेसणो सदिस्साउ, इच्छ, खमासमण देवे, इच्छाका०, वेसणोठाउ, इच्छ, खमासमण देवै, इच्छाका०, सज्झाय सदिस्साउ, खमासमण देके, इच्छाका०, सझाय करू, इच्छ, ८ नवकार गिणना, दो घडी ४८ मिन्टतक धर्मध्यान करणा, ॥ इति सामायक लेणेकी विधि ॥

---

## अथ सामायक पारणविधि प्रारंभ ॥

खमासमण देकर, इरियावही, ४ नवकारका, काउसग्ग, प्रगट लोगस्स कहकै, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, सामायक पारणे, मुहपत्ती पडिलेहु, फेर मुहपत्ती पडिलेहके, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, सामायक पारू, यथाशक्ति, फेर खमासण देकर, इच्छाका० सामायक पारिओ, तहत्ति कहकै, दहणा हाथ, पूजणीपर रखकै, अथवा, आसनपर रखकै, १ नवकार गिणकै, भयवदसण्ण भद्दोकहे, पीछे दहणा हाथ, थापनाके, सामने करकै, १ नवकार गिणे, इसि सामायक पारण विधी, ॥

---

## अथ देवसी प्रतिक्रमणविधि प्रारंभ ॥

पहली सामायक लेकर, पाणी पीया होय तो, मुहपत्ती पडिलेहे, और आहार किया होय तो, २ वांदणा देवै, दूसरे वादणेमें, आवसि आए, पाठ, नहीं कहै, पीछे यथा शक्ति पचक्खाण करे, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, चैत्यवदन करू, जयतिहुअणक है, अथवा ५ गाथा पहलेकी, २ गाथा पीछेकी कहके, जंकिंचिनामतित्थ, नमोत्थुण, सव्वाइ ताइ वदेतक कहके, खडा होकर, अरिहत चेइयाण, वदणव०, एक नवकारका काउसग्गकर, पारके, नमोर्हत्सिद्धा कहके, थुईकी १ गाथा कहे, फेर लोगस्स कहे, सव्वलोए अरिहत चेइयाण, वदणव०, कहके, १ नवकारका काउसग्ग, पारके, थुईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्खरवरदीवड्ढे कहे, सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्ग, वदणवत्ति०, एक नवकारका काउसग्ग करके, पारके, तीसरी गाथा थुईकी कहे, फेर सिद्धाण बुद्धाण, वेया वचगराण,० करेमि काउसग्ग, अन्नत्थ १ नवकारका काउसग्ग, पारके, नमोर्हत्सिद्धाकहके, चोथी गाथा थुईकी कहे, फेर बैठके नमोत्थुण कहे, सव्वाइ ताई वदेतक, फेर खमासमण देके, आचार्यजीने वदन, खमासमण देके, उपाध्यायजीने वदणा, फेर खमासमण देके, सर्व साधूजीने वदना, खमासमण देके, वर्त्तमान

भट्टारकनें त्रिकाल २ वंदना, इच्छाकारेण संदि०, देवसि पडिक्कमण ठाउं, असा कह, दहणा हाथ, पूंजणी अथवा आसणपर धरके, इच्छं, सव्वस्सवि देवसिय, दुचिं तिय० कहे, खडा होकर करेमि भंते कहे, फेर इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसियो, तस्सुत्तरी कहके, आठ नवकारका काउसग्ग करै, पारकै, प्रगट लोगस्स कहणा, वैठके तीसरे, आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, दो वांदणा देवे, फेर खडा होके, इच्छाकारेण संदिस्स०, देवसिअं आलोउं, इच्छं आलोएमि, जो मे देवसिओ, कहे, पीछे सात लाख वगेरे ३ पाठ कहणा, पीछे सव्वस्सवि कहके, दहणा गोडा ऊंचा करके, ३ नवकार ३ करेमि भंते कहके, वंदित्तू सूत्र कहे, पीछे, दो वांदणा देणा, पीछे आयरिय उवज्झाए, कहे, पीछे करमि भंते०, इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसिओ कहे, तस्स उत्तरी कहके, २ लोगस्सका, अथवा आठ नवकारका, काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके, सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं०, वंदणवत्ति आए०, कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करके, पुक्खर वरदी० कहे, सुयस्स भगवओ, करेमि०, वंदणव०, कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करे, सिद्धाणं बुद्धाणं०, कहके, सुयदेवयाए, करेमि काउसग्गं, अन्नत्थु कहके, एक नवकारका, काउसग्ग करकै, नमोर्हत् सिद्धा कहके, सुवर्णशालनी देयाद्, थुई कहे, पीछे खेत्र देवयाए, करेमि काउसग्गं, कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, पीछे नमोर्हत्सिद्धा कहके, यस्याक्षेत्रं समाश्रित्य०, थुईकी १ गाथा कहके, प्रगट १ नवकार कहके, छठे आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, दो वांदणा देवे, पीछे, सामायक, चउवीसत्थो, वंदण, पडिक्कमणं, काउसग्ग, ओर पच्चक्खाण, ये कहणा, पीछे इच्छामो, अणुसट्ठिं कहके, नमोखमासमणाणं, नमोर्हत्सिद्धाचा०, कहके, पुरुषतो नमोस्तु वर्द्धमानायकी, स्तुति ३ गाथा कहै, ओर, स्त्री, संसारदावाकी ३ गाथा कहै, पीछै नमोत्थुणं, नमोर्हत्सिद्धातक कहके इग्यारे गाथासें, उपरांतका वडा स्तवन कहै पीछे ओंवरकणयकी १ गाथा कहै, पीछै आचार्यजीमिश्र, उपाध्यायजीमिश्र, सर्व्वसाधुजीनें त्रिकाल २ वंदणा, पीछे दहणा हाथ, पूंजणी, अथवा, आसनपर रखके, अढाइजेसु दोसु समुद्देसु. रयहरण गुछ, पडिग्गहधारा, अठार सहस्स सीलांगधारा, अक्खिया यार चरित्ता, तेसव्वे, सिरसा, मणसा, मत्थेण वन्दामि, कहे, पीछे देवसी पाय च्छित्तविसोधवा निमित्तं, करेमि काउसग्गं, अन्नत्थु०, चार लोगस्सकाकाउसग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कहै, पीछै क्षुद्रोपद्रव उड्डाहण निमित्तं करेमिकाउसग्गं; ४ लोगस्सकाकाउसग्ग करे, पीछे लोगस्स कहके, सिझायसंदिस्साउं, सझाय करूं, कहके, ३ नवकार गिणे, पीछे श्रीसेढीका चैत्यवंदन करै, नमोत्थुणं, नमोर्हत्सिद्धातक कहके, पार्श्वनाथ स्वामीका, छोटा स्तवन कहै, फेर थंभण यठ्ठियपास सामिणो, २ गाथा कहके, श्रीस्थंभणा पार्श्वनाथस्वामी, आ-

राधनार्थं करेमिका उसग्ग, अन्नत्थ उ०, १६ नवकार, वा ४ लोगस्सका, काउसग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कहे, ८४ गच्छसिणगारहार, जगम युगप्रधान, भट्टारक, दादा सद्गुरु श्रीजिनदत्तसूरि.जी, आराधनार्थ, करेमिकाउसग्ग, १६, अथवा, ४ नवकारकाकाउसग्ग करके, प्रगट लोगस्स कहे, ८४ गच्छसिणगारहार, जगम युगप्रधान, भट्टारक दादा सद्गुरु श्रीजिन कुशल सूरि जी, आराधनार्थ, करेमिकाउसग्ग, पूर्व रीतिसेंकाउसग्ग करे, लोगस्स कहे, फेर चउक्कसायका चैत्यवदन करे, नमोत्थुण, उवसग्गहर पास पृगतक कहे, जयवीराय कहै, पीछे छोटी शाति कहे खमासमणदेमुहपत्ती पडिलेहे इच्छाकारेण सदिस्सह, भगवन्, सामायक पारु, यथाशक्ति, इच्छामि०, इच्छाकारेणस०, सामायक पारिओ, तहत्ति कहके, दहणा हाथ, पूजणी, आसनपर, रखके, १ नवकार गुणके, भयव दसन्न भद्दो कहे, १ नवकार गिणके उठे, इति देवसी प्रतिक्रमण विधि,

---

## अथ राइप्रतिक्रमण विधि ॥

पहले लिखी विधिसें, सामायक लेने, पीछे जयमहायस०, कम्मभूमिका चैत्यवदन, नमोत्थुण, जयवीयराय, आभम खडा तक कहे, पीछे खमासमण देकर, इच्छाकारेणस०, कुसमिण दुसमिणराई पायच्छित्तविसो हणत्थ, करेमिकाउसग्ग, ९ लोगस्स, १६ नवकारका, काउसग्ग कर, प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देकर, आचार्यजी मिश्र, खमासमण०, उपाध्यायजी मिश्र, खमासमण०, सर्व्व साधुजीनें वदणा, खमासमण०, वर्त्तमान भट्टारकक्, त्रिकाल, २ वदणा, सव्वस्सविराइय० कहे, इच्छाकारेण सदिसह, नहीं कहे, फेरनमोत्थुण, सव्वाइताइवदेतक कहके, खडा होके, करेमि भते कहके, पीछे इच्छामि ठामि काउसग्गो, जोमेराइयो०, येपाठ पूरा कहके, तस्स उत्त०, अन्नत्थु०, ४ नवकार, या, १ लोगस्सकाकाउसग्ग कर, प्रगट लोगस्स कहे, फेर सव्वलोए अरिहतचे०, वदणव०, अन्नत्थ०, चार नवकारका, काउसग्ग, फेर पुक्खरवरदीवड्ढे, कहे, ज्ञानाचार शुद्धिनिमित्त, करेमि काउसग्ग, २ लोगस्स, वा ८ नवकारका काउसग्गकर, सिद्धाण बुद्धाणका पाठ कहे, पीछे तीसरे आवश्यककी, ऊकडू, बैठके, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछे २ वादणा देवे, फेर राइय आलोएमि, इच्छ आलोएमि, जोमेराइयो०, पूरा कहे, पीछे आजूणा चोपहुरा रात्रिमें जिकेमे जीव विराध्या होय, सात लाख०, ३ पाठ कहे, पीछे सव्वस्सविराइय, दुचिंतिय, पाठ कहे, पीछे, दहणा गोडा, ऊचा करके, भगवन्, सूत्रभणू, तीन नवकार, ३ करेमिभते, कहके, इच्छामिठामि पडिक्कमिउ, जोमेराइओ, कहे, पीछे वदितु सूत्रकहे, २ वादणा देकर, अब्भुट्ठिओमिका पाठ कहे, पीछे २ वादणा देवे, पीछे आयरिय उवज्झाए कहे, पीछे करेमिभते कहे, इच्छामि ठामि०, तस्सुत्तरी०, अन्नत्थ०, श्रीमहावीरस्वामी छमासी तप चिंतवणा निमित्त,

करेमि काउसग्गं; अन्नत्थ०, छलोगस्स, वा २४ नवकारका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पीछे छठे आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, २ वांदणा देकर, पीछे सकल तीर्थकों नमस्कार करे, सो लिखते हैं,

अच्छी भक्तिसें, देवलोकमें, सूर्य, चंद्रके, विमानमें, व्यंतरोंके,
**सद्भक्त्या, देवलोके, रवि,शशि, भवने, व्यंतरा,**
निकायमें, ताराओंके, भुवनमें, ग्रहोंकेसमूह, पट-
**णां, निकाये, नक्षत्राणां, निवासे, ग्रहगण, पट,**
लमें, नक्षत्रोंके, विमानोंमें, पातालमें, नागकुमारइंद्रोंकी, प्रगट,
**ले, तारकाणां, विमाने, पाताले, पन्नगेंद्रे, स्फुटम,**
मणियोंकी किरणोंसें, विध्वंसभयासघनअंधेरा, श्रीमान्तीर्थंकेकर.
**णिकिरणे, ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकरा,**
ताओंके, हमेस, में, उहांके, चैत्योकोंवांदताहूं, १, विजयार्द्ध,
**णां, प्रतिदिवस, महं, तत्र, चैत्यानिवंदे, १, वैताढ्ये,**
मेरूकेशिखर, रुचक, पहाडप्रधानपर, कुंडल, गजदंतोंपर,
**मेरुश्रृंगे, रुचक, गिरिवरे, कुंडले, हस्तिदंते,**
वक्खारेपर, शिखरनंदीश्वर, कनकपहाडपर, नैपध, नील,
**वस्कारे, कूटनंदीश्वर, कनकगिरौ, नैपधे, नील,**
वंत, पहाडपर, चित्र, विचित्र, यमक, पहाडप्रधानपर, चक्र,
**वंते, शैले, चैत्रे, विचित्रे, यमक, गिरिवरे, चक्र,**
वाल, हिमवंतपहाडपर, श्रीपहाडपर, विंध्याचलकेशिखर,
**वाले, हिमाद्रौ, श्रीम० २, श्रीशैले, विंध्यश्रृंगे,**
विमलाचलपहाडप्रधानपर, आबू, पावामें, समेतशिखर,
**विमलगिरिवरे, ह्यर्बुदे, पावके वा, सम्मेते,**
पर, तारंगेपर, कुलगिरि, शिखरपर, अष्टापद, स्वर्ण,
**तारकेवा, कुलगिरि, शिखरे, ष्टापदे, स्व,**
पहाडपर, सह्यपहाडपर, वैजयंत, विमल, पहाडप्रधान,
**र्णशैले, सह्याद्रौ, वैजयंते, विमल, गिरिव,**

पर, गुजरातमें, रोहणाचलपर्वतपर, आघाटमें, मेवाड,
रे, गुर्जरे, रोहणाद्रौ, श्रीम० ३, आघाटे, मेद,
मे, पृथ्वीकेतटमुकटमें, चितोड, तीनकूटमें, ला,
पाटे, क्षितितटमुकुटे, चित्रकूटे, त्रिकूटे, ला,
ट, नाट, फेर, घाट, मे, दरख्तोंकेसघनतटमें, हेमकूटपर, विराट,
टे, नाटे, च, घाटे, विटपि, घनतटे, हेमकूटे, वि,
[वराड], कर्णाटकके, हेमकूटपर, विकटतरकटमें, चक्र,
राटे, कर्णाटे, हेमकूटे, विकटतरकटे, चक्र,
कूटपरफेरभोटियादेशमें, श्रीमालनग्रमें, मालवेमें, अथवा,
कूटेचभोटे, श्रीम० ४, श्रीमाले, मालवे, वा,
मलयवारमें, निपधमे, मेखलामें, पिच्छलमे, फेर, नेपाल,
मलयिनि, निषधे, मेखले, पिच्छले, वा, नेपा,
देशमें, नाहलमे, फेर, कुवलय, तिलकमें, सिंहल[लंका]में, केरल,
लेनाहले, वा, कुवलय, तिलके, सिंहले, केरले,
फेर, डाहालमें, कोशल [अयोध्या]में, मारवाडमें, जगल
वा, डाहाले, कोशलेवा विगलतसलिले, जंग
देसमें, ढमालमें, अग, चपाकादेशमें, वगालेमे, कलिंगदेशमें,
लेवा, ढमाले, श्रीम० ५, अंगे, वंगे, कलिंगे, सु
गयावाचीनजापानतातरमें, प्रयागमें, तिलगदेशमें, गौडदेशमें, चौडदेशमें,
गतजनपदे, सत्प्रयागे,तिलंगे, गौडे, चौडे, मु-
मुरडमें, प्रधान, द्रविडमें, उडियादेशमें, फेर, पौंडमें, आर्द्रकदेसमे
रंडे, वरतर, द्रविडे, उद्रियाणे, च, पौंड्रे, आर्द्रे,
माद्रदेशमें, पुलिंद्रमे, द्रविड, कुवलयमें, कनोजमें,
माद्रे, पुलिंद्रे द्रविड, कुवलये, कान्यकुब्जे,
सोरठमें, चद्रावती, चद्रमुखीमें, हथनापुर,
सुराष्ट्रे, श्रीम० ६, चंद्राया, चंद्रमुख्यां, गजपुर,
मथुरा, पत्तनमें, फेर, उज्जेनमें, कोशाबीमें, कौशलामें
मथुरा, पत्तने, चो, ज्जयिन्या, कौशांब्यां, कौशला

कनकपुर प्रधानमें, देवगिरीमें, फेर, काशीमें, रासक
यां, कनकपुरवरे, देवगिर्यां, च, काश्यां, रास-
में, राजगृहीमें, दशपुरनगरमें, भद्दिलपुरीमें, तामलिप्तीमें
क्ये, राजगेहे, दशपुरनगरे, भद्दिले, ताम्रलि
स्वर्गमें, मृत्युलोकमें, पातालमें, पहाडके शिखर,
प्त्यां, श्रीम०७, स्वर्गे मर्त्ये, तरिक्षे, गिरिशिखर
हृद्रमें, स्वर्णदीके पाणीके तीर, पहाडकेअग्र, नागलोकमें, दरि-
हृदे, स्वर्णदी नीर तीरे, शैलाग्रे, नागलोके, जल
यावकेतट, दरख्तोंके, निकुंजमें, ग्राममें, अटवीमें, वनमें,
निधिपुलिने. भूरुहाणां, निकुंजे, ग्रामे, रण्ये, वने,
फेर, थलमें, जलमें, विषम, गढके अंदर, त्रिकाल.
वा, स्थल, जल, विषमे, दुर्गमध्ये, त्रिसंध्यं, श्रीम०,
श्रीमान्मेरूपर, कुलगिरीपर, रुचकपहाडप्रधानपर, शाल्मली
८ श्रीमन्मेरौ, कुलाद्रौ, रुचकनगवरे, शाल्म
और, जंबूवृक्षपर, फेर, उज्जयनीमें, चैत्यनंदमें, रतिकर, रुचक,
लौ, जंबुवृक्षे, चौ, ज्जन्ये, चैत्यनंदे, रतिकर, रुचके
कौंडल, मानुषोत्तरपर, इक्षुकार, जिनपहाडपर, दधि
कौंडले, मानुषांगे, इक्षुकारे, जिनाद्रौ, दधि
सुखपहाडपर, व्यंतरोंमें स्वर्गलोकमें, जोतिषीतारालोकमें, होय,
सुखचगिरौ, व्यंतरेस्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके, भवंति,
तीनभुवनके, गोलमे, जो, चैत्यालय, इसतरेश्री
त्रिभुवन वलये, यानि, चैत्यालयानि, ९, इत्थंश्री
जैन, मंदिरोंका, स्तवन, हमेस, जो पढे, प्रवीणपुरुष,
जैन, चैत्य, स्तवन, मनुदिनं, ये पठंति, प्रवीणाः
विशेषपणेउदयकल्याणहेतु, पापोंकों हरणकर्त्ता, भक्तिकापात्र,
प्रोद्यत्कल्याणहेतुं, कलिमलहरणं, भक्तिभाज,
तीनोंकाल, तिनोंकेशोभाकारीतीर्थयात्राकाफल, ओपमारहितसर्चो
स्त्रिसंध्यं, तेषां श्रीतीर्थयात्राफल, मतुलमलं

परिहोय, मनुष्योंकूं, कामोंकी सिद्धि, ऊचे, विशेपहर्पि
**जायते, मानवानां, कार्याणांसिद्धि, रुचैः प्रमुदि**
तमनसें, चित्तकोंआनदकारक
**तमनसां, चित्तमानंदकारी, १०, इति चैत्यवंदनं**

पीछे नमो खमासमण णाण, नमोर्हत्सिद्धा कहके, परसमय तिमर तरणिंकी ३ गाथा कहे, खीससार दावाकी ३ गाथा कहे, पीछे नमोत्थुण, सव्वाइताइवदेतक कहके, सव्वलोए, अरिहतचेइयाण०, वदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्गकर, नमोर्हत्सिद्धा कहके, थुईकी, १ गाथा पहली कहे, पीछे लोगस्स कहे, सव्वलोए अरि०, वदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्ग, पीछे थुईकी गाथा दूसरी कहे, पीछे पुक्खरवरदी०, सुयस्स भगवओक०, वदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्ग करके, तीजी गाथा थुईकी कहे, पीछे सिद्धाण बुद्धाण० कहके, वेयावच्चगराणं, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्गकर, चोथी गाथा थुईकी कहे, नीचे बैठके, नमोत्थुण सव्वाइता इवदेतक कहे, पीछे, तीन खमासमण देके, आचार्य, उपाध्याय, सर्व्वसाधू वादे, कोई अढाइजेसु, दीवसमुद्देसुभी कहते हैं, ऐसीभी सम्प्रदाय है, इतनी विधि क्रिया पीछे, थिरता होय तो खमासमण देकर, इच्छाका०, चैत्यवदन करू, सीमधर स्वामीका चैत्यवदन, नमोत्थुण, नमोर्हत्सिद्धा० तक कहके, सीमधरजीका, स्तवन कहे, थुई कहे महीमडण० १ गाथा, इसीतरे दक्षणमें मुखकरके, सिद्धाचलजीका चैत्यवदन, स्तवन कहे, पीछे थुई कहे, सो थुई लिखते हैं, सेत्रुजगिरि नमिये ऋषभ देव पुडरीक, सुमतपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक, शुद्ध मन उपवासे विविधसु चैत्यवदनीक, करिये जिन आगल टालीनचन अलीक, १, पीछे आगे मुजब सामायक पारे, इति राई प्रतिक्रमणविधि, ॥

---

## अथ पख्खी प्रतिक्रमणविधि लिख्यते, ॥

तहा पहले वदित्तु सूत्रतक, देवसी पडिक्कमके, खमासमण देकर, देवसी आलोइयं पडिक्कता, इच्छाका०, पक्खिय मुहपत्ती, पडिलेहू, पडिलेहे, दो वादणादेवे, पत्तेयखामणेणं, पक्खियवइक्कम, इत्यादिपाठकहे, पीछे, पुण्यवतो, छींकजयणाकरजो, खासेसो, विवरे शुद्धखासजो, माटलमाहे सावधान सावचेतरहीजो, देवसीके ठिकाणे, पक्खीभणजो, तहत्ति कहके, खडाहोके, इच्छाका०, सबुद्धाखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि, अब्भितर, पक्खिय खामेउ, इच्छ खामेमि पक्खिय, पन्नरसण्ह दिवसाण, पन्नरसण्हराईण, जकिंचिअप्पत्तियं०, तस्समिच्छामि दुक्कडतक, पूरापाठकहे, इच्छाकारेण०, पक्खिय आलोएमि, जोमे-

पक्खियो, अइयारोकओ०, इय पूरापाठकहै, पीछे नाणंमि दंसणम्मिय, वडाअतीचारकहे, उसमें पक्खीदिवसमांहे, जो कोई अतीचार लागोहोय, तस्समि०, ऐसाकहे, पीछेसव्व-स्सवि पक्खिय, इच्छाकारेणसंदिस्सहकहे, तस्समिच्छामिनहींकहे, पीछेचउत्थेणपडिकमह, वांदणादेवे, इच्छाकारे०, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, पत्तेयं खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर, पक्खियं खामेउं, इच्छंखामेमिपक्खियं, पन्नरसण्हंदिवसाणं, यहपूराकहे, फेर सर्वोसें खमावै, पीछे २ वांदणादेवे, पीछे देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, पक्खियं पडिक्क-मामि ३ नवकार ३ करेमिभंते, इच्छामिठामिकाउसग्गं, जोमेपक्खियो, अइयारोकओ, काइयोवाइयो, पूराकहके, साधूतो पक्खीसूत्रकहे, श्रावककहेसूत्रभणूं ३ नवकार गुणके, तीनकरेमिभं० दोय वेर वंदित्तुसूत्रकहे, दूसरेकायोसग्गकरके सुणे, पीछे ३ नवकार ३ करेमिभंते कहकेदूसरीवेर वंदित्तुसूत्रकहे, पडिक्कमेदेसियं सव्वंकेठिकाणे, पडिक्कमेपक्खि-यंसव्वंकहे, फेर खमासमणदेकर, इच्छाका०, मूलगुण, उत्तरगुण, अतीचार, विशुद्धिनि-मित्तं, करेमिकाउसग्गं, करेमिभंते, इच्छामिठामिकाउसग्गो, जोमे पक्खियो, पूराकहे, तस्सुत्तरी, अन्नत्थ०, १२ लोगस्स, अथवा ४८ नवकारका काउसग्ग १ नवकार जादा-गिणे, लोगस्स प्रगटकहे, २ वांदणादेवे, इच्छाकारेण०, समाप्ति खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर, पक्खियंखामेउं, इच्छं०, पन्नरसण्हंदिवसाणं, इत्यादिपूराकहे, पीछे इच्छाका०, पक्खीसमाप्त खामणाखामूं, खमासमणदेकर, ३ नवकारगिणके, पक्खीसमाप्त खामणा-खामूं, इसतरे ४ वखत करे, नित्थारगपारगाहोह, इच्छामो अणुसट्ठिं, पुन्यवंतो, पक्खीके लेखे १ उपवास, २ आंबिल, ३ निवी, ४ एकासणे, अथवा २ हजार सिज्झायकर, १ उप-वासकी, पैठपूरणा, पक्खीकीजगे देवसीकहणा, उपवासकियाहोय तो, पयट्ठिअंकहे, नहीं कराहोयसो, तहत्तिकहे, इहांसेंआगे, वंदित्तुवाद, वांदणादेणा,सोसवविधि, देवसी मुजबकरे, आगे श्रुतदेवताकीस्तुतिसुवर्णशालिनीदे० कहे, फेरखेत्र० वादभवनदेवयाएकरेमिकाउ०, १ नवकारका काउसग्गकर, भुवणदेवताकीस्तुतिकहे, चतुर्वर्णायसंघाय, देवीभवनवासिनी, निहत्यदुरितान्येषा, करोतुसुखमक्षतम् १ ऐसाकहे, वडेस्तवनकीजगे, अजियशंताकहै, छोटे स्तवनकीजगे, उवसग्गहरंकहै, छोटीशांतिकीजगे, वडीशांतिकहे, चोपहरीदिनका-पोसेवाला, पोसापारकेपीछेशांतिसुणे, रातपोसेवाला पोसारहतेसुणे, इतिपक्खीप्रतिक्रमण,॥

---

## अथ चोमासी प्रतिक्रमणविधि ॥

विधितोसव पक्खी मुजब, इतना जादाहै, १२ लोगस्सके, काउसग्गकीजगे, २० लो-गस्सकाकाउसग्ग, पक्खीकी जगे, चोमासीका नांमलेणा, तपकेठिकाणे, २ उपवास, ४ आंबिल, ६ निवी, ८ एकासणा, ४ हजारसिज्झाय, इसमुजबकहणा, इतिचोमासीप्र-तिक्रमणविधि, ॥

---

## अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि ॥

चाऊसवविधितो पक्खीमुजब, १२ लोगस्सके काउसग्गकीजगे, ४० लोगस्स, अथवा १६० नवकारकाकाउसग्गकरे, तपकीजगे, सवत्सरीके लेखे ३ उपवास, ६ आनिल, ९ निवी, १२ एकासणा. ६ हजारसिज्झायकर, ३ उपवासकीपैठपूरणा, पक्खीकी जगे, आगारोमें, सवत्सरीका नामलेणा, इतिसवत्सरी प्रतिक्रमणविधि, ॥

---

## अथ सीमंधरस्वामीका स्तवन ॥

पूर्वविदेह पुखलावती, जयोजगपतीरे, श्रीसीमधरस्वाम, अहसमनितनमूरे, १ जगत्रयभावप्रकाशता, भविप्रतिबोधतारे, उपगारीअरिहत, २ प्र०, धननयरी धनतेनरा, धनतेधरारे, जिहाविचरेजिनराज, प्र० ३, धन्यदिवस धनतेघडी, देखसूआंखडीरे, भक्तिवत्सल भगवत, प्र० ४, महरनिजरअवधारजो, पतितउद्धारजोरे, जिनहर्षघणेससनेह, प्र० ५, इतिपद, ॥

---

## अथ सिद्धाचलस्तवन ॥

भागधर धन्यदिनआजसफलोगिण्यो, आजमेंसजनआनदपायो, हर्षधरनिजरभरनिमलगिरिनिरखकर, रजतमणिकनकमोतियनवधायो, भा० १, पग२उमगधर पथनितपूछता, धन्यदोयचरणजिहाचलतआयो, आजधनदीहजागीसुकृतकीदशा, आजधनदीहमेंसुजसगायो, भा० २, दूरदुरगतिटरी, जात्रनिधिसेंकरी, पुन्यभडारपोतेभरायो, वदतजिनराजमनरग सुरगिरि शिखर, ऋषभजिनचद्रसुरतरूहायो, भा० ३, इतिपद, ॥

---

## अथ देवसीपडिक्कमणेमेंकहणेका वडास्तवन लिख्यते,

भविका श्रीजिनबिंबजुहारो, आतमपरमआधारो रे, भवि०, श्रीजिन०, जिनप्रतिमा जिनसरखीजाणो, नकरोसकाकाई, आगमवाणीनेअनुसारे, राखोप्रीतमनाईरे, भ० १, जेजिनबिंनस्वरूपनजाणे, तेकहियेकिमजाणे, भूलातेहअज्ञानेभरिया, नहींतिहातत्वपिछाणेरे, भ० २, अयड श्रावक श्रेणिकराजा, रावणप्रमुखअनेक, विविधपरे जिनभक्तिकरतापाम्या धर्मविवेकरे, भ० ३, जिनप्रतिमाबहुभक्तेजोता, होयनिश्चेउपगार, परमारथगुण, प्रगटेपूरण, जोजोआर्द्रकुमाररे, भ० श्री० ४, जिनप्रतिमाआकारेजलचर, छैबहुजलधिमझार, तेदेखीबहुलामच्छादिक, पामेविरतिप्रकाररे, भ० श्री० ५, पचमअगेजिनप्रतिमानो, प्रगटपणेअधिकार, सूरियाभसूरेजिनपूज्या, रायपसेणीमझाररे, भ० श्री० ६, दशमेंअगे अहिंसादाखी, जिनपूजाजिनराज, एहवाआगमअरथमरोडी, करियेकेमअकाजरे, भ० श्री० ७, समकितधारीसतियद्रोपदी, जिनपूज्यामनरगे, जोजोएहनोअर्थविचारी, छठेज्ञाताअगेरे,

भ० श्री० ८, विजयसुरेजिमजिनवरपूजा, कीधीचितथिरराखी, द्रव्यभावविहुंभेदेकीनी, जीवाभिगमछेसाखीरे, भ० श्री० ९, इत्यादिकबहुआगमसाखे, कोइसंकामतकरजो, जिनप्रतिमादेखीनितनवलो, प्रेमघणोचितधरजो रे, भ० श्री० १०, चिंतामणिप्रभुपासपसाये, सरधाहोयजोसवाई, श्रीजिनलाभसुगुरुउपदेशे, श्रीजिनचंद्रसवाईरे, भ० श्री० ११, इतिपदं, ॥

## अथ पडिक्कमणेमेंकहणेकाछोटापार्श्वप्रभूका स्तवन ॥

तूंमेरेमनमें प्रभु तूंमेरेदिलमें, ध्यांनधरूंपल२में, पाशजिनेसरअंतरजामी, सेवाकरूंछिन२में, तूं० १, काहूकोमनतरुणीसेंराच्यो, काहूकोचितधनमें, मेरोमन प्रभु तुमहीसेंराच्यो, क्यूंचात्रकचितघनमें, तूं० २, योगीश्वरतेरीगतजाणे, अलखनिरंजनछिनमें, कनककीरतसुखसायरतुमही, साहिवतीनभुवनमें, तूं० ३, इतिपदं, ॥

## श्रीसिद्धचक्राय नमः । अथ सप्तस्मरणानि ॥

श्रीअजितप्रभूजीतेहैंसर्वडर, शांतिप्रभूफेरजादाकरकेशांतस-
**अजियंजियसव्वभयं, संतिंचपसंतसव्वग**
वेगयेहैंपाप, जगत्केगुरु शांतिगुणकेकरणेवाले, दोनों जिनवरोंकों,
**यपावं, जयगुरुसंतिगुणकरे, दोविजिणवरे,**
प्रणामकरूं, १, गाथाछंद, दूरगयाहै बुरेपरिणाम,
**पणिवयामि, १, गाहा, ववगयमंगुलभावे,**
वेदोंनों विस्तार तपसें मलरहित स्वभाववालेहैं, ओपमारहितवडाहै
**तेहिं विउलतवनिम्मलसहावे, निरुवममह**
प्रभावजिनोंका, स्तवनाकरूंगा, अच्छीतरेदेखनेवाले, विद्यमानपदार्थोंकूं, २,
**प्पभावे, थोसामि, सुदिठ, सब्भावे, २, गाहा,**
सर्वदुःखप्रशांतकर्त्ता, सर्वपापप्रशांतकर्त्ता,
**सव्वदुक्खपसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं,**
हमेसअजितशांतिदोनोंप्रभू, नमस्कार अजित शांतिप्रभूकों,
**सया अजियसंतिणं, नमोअजियसंतिणं,**
३ श्लोक छंद, अजितजिनसुखांकोंप्रवर्त्तणेवाले, तुमारापु-
**३ सिलोगो, अजियजिणसुहप्पवत्तणं, तवपु-**

रुपोत्तम, नामकीकीर्त्ती है, तैसें, धीरज, और मतीकेप्रवर्त्तक,
**रिसुत्तम, नामकित्तणं, तहय, धिइ, मइप्पवत्तणं,**
तुमारा, केवलियोंमेउत्तम, शांतिपणेकीकीर्त्ती है ४, मागधिकाछंद,
**तवय, जिणुत्तम, संतिकित्तणं, ४, मागहिया,**
२५तरेकीक्रियाओंकेकरणेसैंसचेहुये, कर्मोंकाक्लेश, उससेंमोक्षकरणेवाले,
**किरियाविहिसंचिय, कम्मकिलेस, विमुक्खयरं,**
अजितजिन, भरेहुये, फेर, गुणोंसें, महामुनियोंकों, सिद्धिगतीकेदेणेवाले
**अजियं, निचियं, च, गुणेहि, महामुणि, सिद्धिगयं,**
अजितप्रभूऔरशांति, महामुनियोंकेभी, शांतिकेकरणेवाले,
**अजियस्सयसंति, महामुणिणोविय, संतियरं,**
हमेस, मेरेकों, मोक्षके कारणभूत, फेर, वंदनकरणेवालेकों, ५,
**सययं, मम, निव्वुइकारणयं, च, नमंसणयं, ५, आ**
आलिंगनछंद, हेपुरुषो, जो, दुःखकामिटाणा, जोतुममाग-
**लिंगणयं, पुरिसा,जइ,दुक्खवारणं, जइविम-**
तेहो, सुखकाकारणतोतुम, अजित, शांतिका, ओर, भावकरके,
**ग्गह, सुक्खकारणं, अजियं, संतिं, च, भावओ**
अभयकेकरणेवालेका, शरणअंगीकारकरो, ६, मागधिकाछंद, अर-
**अभयकरे, सरणंपवज्जह, ६, मागहिया, अर-**
ति, रतिरूप, अंधेरेसें, रहित, दूरहुआहै, जरामरणजिनोंसें,
**इ, रइ, तिमर, विरहिय, मुवरइ, जरमरणं,**
देवता, दानव, गरुड, भुजगपती(नागेंद्र], पावउनदोनोंकेनमनकराहै,
**सुर, असुर, गरुल, भुयगवइ, पयओपणवइयं,**
ऐसेअजितजिनकोंमेंभी,जो अच्छान्यायरूपनयोंमेंनिपुण, अभयदान
**अजियमहमविय, सुनयनयनिऊण, मभयक**
करणेवाले, शरणागतरक्षक, पृथ्वीकेऔरस्वर्गमेंपेदाहुयोंसेपूजित, हमे-
**रं, सरणमुवसरिय, भुविदिविजमहिय, सय,**
स, मैंभीनमनकरूं, ७, सगतछंद, वहफेरकेवलियोंमेउत्तमउत्तमइच्छा
**य, मुवणमे, ७, संगययं, तंचजिणुत्तम मुत्तमनि**

रहित, सत्वधारी, शरलपणा, नरमाईपणा, क्षमा, निर्लोभता, समाधीके,
**त्तम, सत्तधरं, अज्जव, मद्दव, खंति, विमुत्ति, समाहि,**
निधान, शांतिकर्त्ताकों, नमनकरूं, इंद्रीदमणेमेंउत्तम, तीर्थंकेकरणेवाले,
**निहिं, संतियरं, पणमामि, दमुत्तम, तित्थयरं,**
वहशांतिमुनिः, मुझें, शांति, समाधि, प्रधान, देओ, ८,
**संतिमुणी, मम, संति, समाहि, वरं, दिसओ, ८,**
सोपानछंद, सावत्थीनग्रीमेंपहलेराजापणे, फेर, प्रधान, हस्तीके, मस्तककीतरे,
**सोवाणयं, सावत्थिपुव्वपत्थिवं, च, वर, हत्थि, मत्थय,**
तारीफलायक, विस्तारवाला, संस्थान[शरीर], मजबूतकपाटकीतरेछाती, मद,
**पसत्थि, वित्थिण, संथियं, थिर, सिरत्थवत्थं, मय,**
झरता, लीलाकरताहुआ, अच्छेगंधहस्तीकीतरे, चलनेकीचालहैजिनोंकी,
**गल, लीलायमाण, वरगंधहत्थि, पत्थाणुपत्थियं,**
स्तवनाकरणेलायक, हाथीकीसूंडकीतरेभुजा, तपाये, सोनेकीतरे, मनोहर, नहीं
**संथवारिहं, हत्थिहत्थबाहु, धंत, कणग, रुयग, नि**
कहांसेंभीखंडित, शरीर, प्रधान, लक्षणोंसें, रचाभया, शीतल,
**रुवहय, पिंजरं, पवर, लक्खणो, वचिय, सोम,**
मनोहररूप, कानोंकोंसुखकारी, मनकोंरुचणेवाला, उत्कृष्ट, रमणीक,
**चारुरूवं, सुइसुह, मणाभिराम, परम, रमणिज्ज,**
अच्छा, देवदुंदुभीका, शब्द[अवाज]सेंभी,मीठीअधिक,सुखकारीवाणीजिनोंकी,
**वर, देवदुंदुहि, निनाय, महुरय, सुहगिरं, ९**
वेष्टकछंद, अजितप्रभू, जीताहैवैरियोंकागण, जीताहैसबडर, भवसमूह
**वेढो, अजियं, जियारिगणं, जियसव्वभयं, भवो**
केवैरी, नमनकरताहूं, मेंपांवउनदोनोंका, पापोकों, प्रशमाओमेरे,
**हरिउं, पणमामि, अहंपयओ, पावं, पसमेउमे,**
हेभगवान्, १०, रासालुब्धकछंद, कुरुजनपददेशमें, हस्तना
**भयवं, १०, रासालुद्धओ, कुरुजणवय, हत्थि**
पुरके, नरेश्वर[राजा]पहलीहोके, तिसकेवाद, वडेचक्रवर्तिपणेकेभोग
**णाउर, नरीसरोपढमं, तओ, महाचक्कवट्टिभो**

भोगते, वडेप्रभावकारीपणेसें, जोनहत्तर, नग्र, प्रधान, हजार,
**ए, मह्प्पभावओ, जोवावत्तरिं, पुर, वर, सहस्स,**
प्रधाननगर, निर्गम, देशोंके, पती[मालक], ३२ राजा, प्रधान,
**वरणगर, निगम, जणवय, वई, वत्तीसाराय, वर,**
हजारों पीछे, चलतेहैं रस्तेमें, चवदे, प्रधान, रत्न, नव,
**सहस्साणु, जायमग्गे, चउदस, वर, रयण, नव,**
महानिधान, ३२ऋतुपद३२जनपदकल्याणका६४हजार, प्रधान, जोननवती,
**महानिहि, चउसट्ठिसहस्स, पवर, जुवईण,**
सुदरियोंकेपती, चौरासी, घोडे, हस्ती, रथ, सोहजार[लाख,]के, स्वा-
**सुंदरवई, चुलसी, हय, गय, रह, सय सहस्स, सा**
मी, छयानवे, गामोंकी, कोटीकेमालक, होतेहुये, जो, भरतक्षे-
**मी, छन्नवइ, गाम, कोडिसामी, आसी, जो, भार**
त्रकेषखंडमें, भगवान्, ११, वेष्टकछद, शांतिप्रभूकोस्तवताहु, वहजिनशां-
**हम्मि, भयवं, ११, वेढो, संतिथुणामि, जिणंसंति**
तिकरो, मेरे, १२, रासानिंदितछद, इक्ष्वाकुवशी, विदेहदेशके, न-
**विहेउ, मे, १२, रासानिंदियं, इक्खाग, विदेह, न**
रेश्वर, मनुष्योंमेंवृषभ, मुनियोंमेवृषभसमान, नयेशरदऋतूकेचद्र,
**रीसर, नरवसभा, मुणिवसभा, नवसारयससि,**
समानसपूर्णमुखजिनोंका, अधेरारहित, निर्मल, हेअजितउत्तम
**सकलाणण, विगयतमा, विहुयरया, अजिउत्तम,**
तेजगुणकरके, हेमहामुनि, हेअप्रमाणबलवत, हेनिस्तारकुलधत
**तेअगुणेहि, महामुणि, अमियवला, विउलकुला,**
नमस्कारकरताहूंतुमकों, भवभयकेचूरणेवाले, हेजगतशरण, मुझकों,
**पणमामिते, भवभयचूरण, जगसरणा, मम,**
तुमारासरणहे, १३, चित्रलेखाछद, देवता, ओरदानवेंद्र, चद्रमा, सूर्यसे, वंदि
**सरणं, १३, चित्तलेहा, देव, दाणविंद, चंद, सूर, वं**
त, हर्षित, प्रीतिमंत, बडे, उत्कृष्ट, मनोहररूप, तपायेहुयेरूपेकेपाटेजैसे,
**द, हट्ठ, तुट्ठ, जिट्ठ, परम, लट्ठरूव, धंतरुप्पपट्ट,**

सुपेद शुद्ध, चिकणे, स्वेत, दांतोंकीपंक्ति, हेशांति, शक्ति, कीर्त्ति,
**सेय, शुद्ध, निद्ध, धवल, दंतिपंति, संति, सत्ति, कित्ति,**
मुक्ति, युक्ति, गुप्तिहै, प्रधानजिनोंके, देदीप्यतेज, वंदनायोग्नाम, सर्व,
**मुत्ति, जुत्ति, गुत्ति, पयर, दित्ततेय, वंदधेय, सव्व**
लोक, भावितात्मा, प्रभावनाकरणेयोग्य, प्रशादकरोमुझें, समाधि, १४
**लोय, भावियप्पभावणेय, पइसमे, समाहिं, १४,**
नाराचछंद, विगतमलचंद्रकी, कलासेंभीजादे, शीतल, रहि,
**नारायओ, विमलससि, कलाइरेय, सोमं, वि**
तअंधकार, सूर्यकी, किरणोंसेंभीजादे,तेज, देवतोंकेपतियोंके, गणसेंभीजादा,
**तिमिर, सूर, कराइरेय, तेयं, तियसवइ, गणाइरेय,**
रूप, पहाडोंमें, प्रधान, मेरूसेंभीजादे, मजबूतबल, १५,
**रूवं, धरणिधर, पवरा, यरेय, सारं, १५,**
कुसुमलताछंद, सत्वसें, सदा, अजितकों,
**कुसुमलया, सत्तेय, सया, अजियं,**
शरीरकेवलमेंहमेसअजितकों, तपऔरसंजममें अजितकों,
**सारीरेयवलेअजियं, तवसंजमे अजियं,**
इस्तरेस्तवताहूंजिनराजअजितकों, १६, भुजंगपरिरिंगितछंद,
**एसथुणामिजिणमजियं, १६, भुयंगपरिरिंगियं,**
सौम्यगुणकरकै, पातानहींउनोंकों, नयासरदऋतूकाचंद्र, तेजगुण
**सोमगुणेहिं, पावइनतं, नवसरयससी, तेजगुणे**
करकैपातानहींउनोंकों, नयासरदऋतूकासूर्यभी, रूपगुणकों, पातानहीं
**हिंपावइनतं, नवसरयरवी, रूपगुणेहिं पावइ**
देवतोंकागणपती,[इंद्रभी], स्थिरतागुणकों, पातानहीं पहा
**नतं, तियसगणवई सारगुणेहिं, पावइनतं धर**
डोंकापती,[मेरू], खिज्जितछंद, १७, तीर्थप्रधानप्रवर्त्तक
**णीधरवई, खिज्जययं, १७, तित्थवरपवत्तयं,**
अंधेरेरूपरजसेंरहित, धीरपुरुषोंनेस्तवनापूजाकरी, गिरगयापाप
**तमरयरहियं, धीरजणथुयच्चियं, चुयकलि**
मैलजिनोंसे, शांतिसुखकेप्रवर्त्तावणेवाले, तीनकरणसेंदोनोंपदका, शां
**कलुसं, संतिसुहपवत्तयं, तिगरणपयओ, संति**

तिप्रभुकामें, घडेमुनिका, सरण, अगीकारकरताहू, ललितछद, १८,
महं, महामुणि, सरण, मुचणमे, ललिययं, १८,
विनयसें, नमेहुये, मस्तकऊपर, रचित, अजलि, ऋषियोंके,
विणओ, णय, सिरि, रइ, अंजलि, रिसिगण,
समूहनेंस्तवनकरा, अचलपणे, इद्र, धनपती, चक्रवर्त्ति,
संथुयं, थिमियं, विबुहाहिव, धणवइ, नरवई,
स्तवना, घडीपुष्पादिकसेंपूजा, बहोतप्रकार, विशेषपणेउदयहु
थुय, महिअच्चियं, बहुसो, अइरूग्गय
आ,शरदऋतूकासूर्य, अच्छीअधिक सत्यप्रभा, तपस्यासे,
सरयदिवायर, समहियसप्पभ, तवसा,
आकाशमें, विचरणेवाले, अच्छीतरेंसुसहोवामोहीजतेहुये, चारण
गयणं गण, वियरण, समुहिय, चारणवंदि
मुनियोंनें,वदनाकरीशिरसें, किसलयमालाछद, १९, असुर और गरु
य, सिरसा, किसलयमाला, १९, असुर गरु
डोंसेसमस्तपणेवदीजते, किन्नरऔरनागकुमारोंसेंनमनकरेहुये,
लपरिवंदियं, किन्नरोरगनमंसियं,
देवतोंकीकोटीसईकडोंसेस्तवीजतेहुये, साधुब्राह्मनोकेसघसेंसमस्तपणेवदित्त
देवकोडिसयसथुयं, समणसंघपरिवंदियं,
२०, सुमुखछद, भयरहित, पापरहित, मलरहित, रोगरहित,
२०, समुह, अभयं, अणहं, अरयं, अरूयं,
अजितकर्मोंसे, ऐसेअजितप्रभू, दोनोपावनमनकरू, विद्युत्विलसित
अजियं, अजियं, पयउपणमामि, विज्जुविल
छद, २१, आयेनजराणे प्रधान विमान, तेजवत, सोना,
सियं, २१, आगया वर विमाण, दिव्व, कणग,
रथ, घोडे, प्यादे, सइकडोसें, सोरमचगया, भ्रमयुक्त,
रह, तुरय, पहकर, सएहि, हुलियं, ससंभमो,
आणेसें, क्षोभायमान, मनोहर, हिलते कुडल, अगद,
यरण, खुभिय, ललिय, चलकुंडलं, गय,

मुकटसें, शोभायमान, मस्तककीमाला, वेष्टकछंद, २२, जोदेवतोंका
**तिरीड, सोहंत, मउलिमाला, वेढो, २२, जंसुरसं**
संघ, संयुक्तअसुरसंघ, वयरविरोधरहित, भक्ति अछीसेंयुक्त,
**घा, सासुरसंघा, वेरविउत्ता, भत्तिसुजुत्ता,**
आदरसें, सोभायमान, जल्दी, एकजगेमिले, अच्छीतरे, अचर
**आयर, भूसिय, संभव, पिंडिय, सुहुसु, विम्हि**
जवंत, सवअनीकोंकेबलकासमूह, उत्तमसोना, रत्नोंसें, जादारूप
**य, सव्व वलौघा, उत्तमकंचण, रयण, परू**
वंत, देदीप्यमान गहणोंसें, तेजवंतअंगजिनोंका, शरीरसेंअ
**विय, भासुर भूसण, भासुरियंगा, गायस**
च्छीतरेसेंनमेहुये, भक्तिकेवससेंआये, अंजलियोंकरकैप्रेषित, मस्त
**मोणय, भत्तिवसागय, पंजलिपेसिय, सीस**
कसेंकियाहैप्रनाम, २३, रत्नमाला,छंद, वंदनकरकै, स्तवनाकर
**पणामा, २३, रयणमाला, वंदिऊण, थोऊण**
केदोनोंजिनकूं, तीनगुण, ज्ञान१दर्शन२चारित्र३हीफेरप्रदक्षणाकरकै,
**तोजिणं, तिगुणमेवय पुणो पया हिणं,**
विशेषपणेनमस्कारकरतेहुयेजिनोंकोंसुरासुर, हर्षितहोकर, अपने
**पणमिउणय जिणं सुरा, २, पमुइयास भव**
भवनमेंवहगये, २४, क्षेत्रछंद, उनमहामुनियोंकों, मैंभीहाथजो
**णाइ,तोगया, २४, खित्तयं, तंमहामुणि महंपि**
डवंदनकर्त्ताहूं, राग, द्वेष, डर, मोहकरके,रहित, देवता, दान
**पंजलि, राग, दोस, भय, मोह, वज्जियं, देव, दा**
व, राजाओंसेंवंदनीक, शांतिपणाउत्तमहैजिनोंका, वडाहैतपजिनोंका, २५,
**णव, नरिंदवंदियं, संतिमुत्तम, महातवनमे, २५,**
क्षेत्रछंद, आकाशके अंदर, विचरणेवालियां, मनोहर
**खित्तयं, अंवर अंतर, वियारणियाहिं, ललिय,**
हंसणीकीतरे, गमनकरणेवालियां, पुष्ट कमरकरके,
**हंसवहु, गामणि याहिं, पीणसोणित्थण,**

आवाशकेनिधानवालिया, समस्तकमलपत्रजैसै, आंखोंवालियां,
**सालणियाहिं, सकलकमलदल, लोयणिआहिं,**
२६, दीपकछद, पुष्ट, अंतररहित, स्तनोंकेगोझसे, विशेषपणेझु
**२६, दीवयं, पीण, निरंतर, थणभर, विणमियगा**
कणयागात्रलतावालिया, मणिओरसोनेकी, ढीली, लटकतीकणदोरेसें,
**यलयाहिं, मणिकंचन, पसिढल, मेहल,**
शोभित, कम्मरवालिया, प्रधान, खिण२शब्दकेनेउर, सहिततिलक,
**सोहिय, सोणितडाहिं, वर, खिखिणिनेउर, सतिलय**
कडेनाजूबध, शोभायमानगहणेवालिया, आनदकारीचतुर, मनहरणेवालिया,
**वलय, विभूसणयाहिं, रइकरचउर, मणोहर,**
सुदरीयादेखणेयोग्य, २७, चित्रक्षरछद, ऐसीदेवसुदरियोंसें,
**सुदरदंसणियाहिं, २७, चित्तक्खरा, देवसुंदरीहिं,**
पावहैं वदनाकरके, वदितजिनोंके, तुमाराअच्छापराक्रमकाचरण,
**पायवंदियाहिं, वंदिया, जस्सतेसुविक्कमाकमा,**
अपणे निलाडकरकै, मडण[अलकार]कैप्रकारकरकै,
**अप्पणो निलाडएहिं, मंडणोडणप्पगारएहिं,**
किस२प्रकारकरकै, नीचेकैअगसे३लय, पावोंकेतलेसें, नमने
**केहिं केहिवी, अवंगतिलय, पत्तलेहि, नामए**
करके, घूघरोंसें, अच्छीसगतगतासे, भक्तीकरकेस्थापनकिया,
**हिं, चिल्लएहिं, संगयंगयाहिं, भत्तिसन्निविट्ठ,**
वदनाकोंप्राप्तहोकरकै, हुओतुझेवदना, वेर २, नाराचछद,
**वंदणागयाहिं, हुंतुतेवंदिया, पुणो २, नारायओ,**
२८, वहमे, जिनचद्र, अजितकों, जितमोहकों, झटकाहै
**२८, तमहं, जिणचंदं, अजियं, जियमोहं, धुअस**
सबक्लेशकों, दोनोंपाव, विशेषपणेनमनकरू, निंदकछद, २९,
**व्वकिलेसं, पयओ, पणमामि, निंदियय, २९,**
स्तवना वदित, ऋषिगण, ओर देवगणसें, यहदोनो,
**थुअवंदिअस्स, रिसिगण, देवगणेहिं, तो,**

देवतोंकीवहुओंसें, दोनोंकेपांवनमनकिये, जिनोंकीजगतमेंउत्त
**देववहूहिं, पयओपणमियस्सा, जस्सजगुत्तम**
मआज्ञा, भक्तीकेवससेंआयकर,एकठीमिलीऐसी,
**सासणिअस्सा, भत्तिवसागयपिंडियआहिं,**
देवअपछर, वह, देवस्त्रियोंकैवहुलतासें, सुरप्रधानोंकीखुसव
**देववरच्छर, सा, वहुयाहिं, सुरवररइगुणपिंडि**
स्तीकागुणएकठाभया, ३०, भाश्वरछंद, वंसरीकाशव्द, वीणाकेतालकामेल,
**य आहिं, ३०, भासुरयं, वंससद्द, तंतितालमेलए,**
त्रिपुष्कर[मृदंग]का, मनोहरशव्द, मिलाकरकिया, कानमेंमानयुक्त,
**तिउक्खरा, भिरामसद्द, मीसएकए, सुयसमाणणेय,**
शुद्ध, खड्ज, गीत, पांवोंमेंजालघंट[घूघरोंसे], घेरदार
**सुद्ध, सज्ज, गीय, पायजालघंटियाहिं, वलय**
कणदोलेका, समूह, नेऊरके, मनोहरशव्द, मिलाकरकिया,
**मेहला, कलाव, नेउरा, भिरामसद्द, मीसएकए,**
देवसंवंधीनाटकसैं, हावभाव, विभ्रम, प्रकारकरकै, नाचक
**देवनट्टियाहिं, हावभाव, विब्भम, प्पगारएहिं, नच्चि**
र कै, अंगकोघुमाकरकै, वंदनाकरती, उनोंकूंतुमारेअछेपराक्र
**ऊण, अंगहारएहिं, वंदियाय, जस्सतेसुविक्कमा**
मरूपचरण, तिसकरकै, तीनलोकके, सर्वसत्वोंकों, शांतिकारक, उपशांतसर्व,
**कमा, तयं, तिलोय, सव्वसत्त, संतिकारयं, पसंतसव्व**
पाप, दोष, मेरे, निश्चै, नमस्कारकर्त्ताहूं, शांतिउत्तमजिनकों, ३१,
**पाव, दोस, मे, सहिं, नमामि, संतिमुत्तमंजिणं, ३१,**
नाराचछंद, छत्र, चमर, पताका, स्थंभ, जवसेंमंडित,
**नारायओ, छत्त, चामर, पडाग, जूय, जवमंडिया,**
धजाप्रधान, मगरमच्छ, घोडा, श्रीवत्सादिक, अच्छेलक्षण, द्वीप,
**झयवर, मगर, तुरग, सिरिवच्छ, सुलंछणा, दीव,**
समुद्र, मकानवामेरू, दिग्गजसें शोभित, स्वस्तिक,
**समुद्द, मंदिर, दिसागयसोहिया, सत्थिद्द,**

बैल, सिंह, श्रीवत्सादिक, सुलक्षणहैजिनोंके, ३२, ललितछंद,
वसह, सीह, सिरिवच्छ, सुलंछणा, ३२, ललिययं,
स्वभावसें मनोहर, समभावकीहैप्रतिष्ठा, नहींहैदोषकीदुष्टता, गुणोंमें
सहावलट्ठा, समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा, गुणेहिं
वडे, कृपाकरणेमेंश्रेष्ठता, तपस्यामेंहैपुष्टता, लक्ष्मीऐश्वर्यादिकइष्टहै,
जिट्ठा, पसायसिट्ठा, तवेणपुट्ठा, सिरिहिंइट्ठा,
ऋषियोंसे, घेरेहुये, ३३, वाणवासितछंद, तेरेतपकरकेझडकाये,
रिसिहिं, जुट्ठा, ३३, वाणवासिया, तेतवेणधुय,
सर्वपापोंको, सर्वलोकोंकेहितकामूल प्राप्तकराणेवाले, स्तवना,
सव्वपावया, सव्वलोगहियमूलपावया, सथुया,
अजित शांतिकेप्राप्तकराणेवाले, होमुझें शिवसुखके देणेवाले, ३४,
अजियसंतिपावया, हुतुमेसिवसुहाणदायया, ३४,
अपरांतिकाछंद, इसतरे तपनल निस्तारजत, स्तवनाकरीमैंनें,
अपरंतिका, एवंतववलविउलं, थुयंमए,
अजितशांति, जिनकेजोडेको, दूरगयाहै, कर्मरजमलकों, गती,
अजयसंति, जिनजुयल, ववगय, कम्मरयमलं, गइ,
प्राप्तहुये, साश्वत, निर्मलकू, गाथाछंद, ३५, उनकोंबहोतगुणका,
गयं, सासयं, विमल, गाहा, ३५, तंबहुगुण,
प्रशाद, मोक्षकासुख, उत्कृष्टसें, रहितविपाद, नाशकरो
प्पसायं, मुक्खसुहेण, परमेण, अविसाय, नासेउ
मेराविषाद, करो, सुणनेवाली परषदापर, प्रशाद, ३६,
मेविसाय, कुणउय, परिसाविय, प्पसायं, ३६,
गाथा, उनोकोंमुझें इनोंकों समृद्धि, पाओनंदिषेण समस्तपणे समृद्धि
गाहा, तंमोएओयनंदि, पावेउनंदिसेणमभिन
श्रेणिकपुत्रनंदिषेण, पर्षदाकोंभी सुखसमृद्धि, मुझको, देओ,
दिं, परिसावियसुहनंदिं, ममय, दिसउ,
सजमकीसमृद्धि, ३७, गाथा, पक्खीमें, चौमासीमें,
संजमेनंदिं, ३७, गाहा, पक्खिय, चाउम्मासे,

संवत्सरीमें रात्रीमें, दिवसमें, सुणना, सर्वोनें, उपसर्गका,
**संवच्छर,राइएय, दिग्रणय, सोयव्वो, सव्वेहिं, उवसग्ग,**
दूरकरणेवालायहइसकों, ३८, जोपढे, जोसुणे,
**निवारणो एसो, ३८, जोपढइ, जोनिसुणइ,**
दोनोंकाल[वख्त], अजित, शांति, स्तवन, नहींहोय, उसके,
**उभओकालंपि, अजिय, संति, थुयं, नहुहुंति, तस्स,**
रोग, पहलेकेउत्पन्नभी, नाशहोजावे, ३९,
**रोगा, पुव्वुप्पन्नावि, नासंति, ३९, इति श्रीअजितशांतिस्तवनं**
उल्लसायमान, पांवोंके, नखमेंसें, निकलीजो, क्रांतिकादंड, उससिपसें प्राणी,
**उल्लासि, क्कम, नक्ख, निग्गय, पहादंड, च्छलेणं, गिणं,**
वंदनकरणेवालेकों,दिखाणेकीतरे, प्रकट, निर्वाण, मार्गकी
**वंदारूण दिसंत इव्व, पयडं, निव्वाण, मग्गा**
श्रेणी, कुंदपुष्प, ओरचंद्रकीतरेउजली, दांतोंकीक्रांतिकेमिससें, निकलेज्ञान,
**वलिं, कुंदिं, दुज्जल, दंतकंतिमिसओ, नीहंतनाणं,**
केअंकूर, कैसेंहैंदोनोंभी, दुसरेओर, सोलम, जिनकों, स्तवूंगा,
**कुरु, केरेदोवि, दुविज्ज, सोलस, जिणे, थोसामि,**
क्षेम[मुक्ति]केकरणेवाले, १, श्वयंभूरमण[अंतकेसमुद्रके], पाणीकोंजोमा
**खेमंकरे, १, चरमजलहि, नीरं जोमिणु**
पेचाहताअंजलियोंसें, क्षयसमयकीहवाकों, जोउसकेसंगचलेचाहता
**ज्जंजलीहिं, खयसमयसमीरं, जोजिणज्झाग**
चालसें, समस्त आकाशके लंबानकों, लंघेचाहताहैंजोपांवोंसें, अजित,
**ईए, सयलनहयलंवा, लंघएजोपएहिं, अजिय,**
अथवा, शांतिको, वह, समर्थहोय, स्तवनाकरणे, २, तोभीनिश्चै,
**महव, संतिं, सो, समत्थो, थुणेउं, २, तहविहु,**
बहुमानउल्लसित, भक्तीकेसमूहसें, गुणोंकालेशमात्रकीर्त्ति,
**बहुमाणुल्लासि, भत्तिब्भरेण, गुणकणमिवकित्ती,**
इच्छापूरणेचिंतामणीरत्नकीतरेहै, सरा, अथवा, अचिंत्यओरअनं
**हामचिंतामणिव्व, अल, महव, अचिंत्ताणं**

त सामर्थ सेंप्रभूदोनोंकी, फलेगा, जल्दीसव, वंछित,
**तसामत्थ ओसि, फलहइ, लहुसव्वं, वंछियं,**
निश्चयकरकेमेरे, ३, समस्त, जगत्कोंहितकारी, नाममात्रकर,
**निच्छियंमे, ३, सयल, जयहियाणं, नामम्मिसेण,**
ध्यानसें, दूरकरडालतेहैं, जल्दीदुष्ट, अनर्थ, दुर्घटपणेकाथाट,
**झाणं, विहडइ, लहुदुट्ठ, थट्ट, दोघट्ठथट्ठं,**
नमेजो देव, उनोंकेमुगटमें, घसीजते, चरण कमल, इमेस,
**नमिरसुर, किरीट्ठ, घिट्ठ, पायारविंदे, सयय,**
अजितशांति, उनदोनोंजिनकोंवंदनकर्त्ताहूं, ४, फैलतीहैप्रधान
**मजियसंती, तेजिणंदेभिवंदे, ४, पसरइवर**
कीर्त्ति, बढतीहै शरीरकीतेजी, भोगे, पृथ्वीपर मित्रता,
**कित्ती, वड्डएदेहदित्ती, विलसइ, भुविमित्ती,**
होवै अच्छीचालचलण, देदीप्यमानहोयउत्कृष्टसतोस, होयससारका,
**जायएसुप्पवित्ती, फुरइपरमतित्ती, होयसंसार,**
कटणा, जिनेश्वरकेदोनोंपावोंकीभक्ती, हृदेमेंविचारणेसेंसक्तीहोय, ५,
**छित्ती, जिणजुयपयभत्ती, हीयचिंतोरसत्ती, ५,**
मनोहरहैपावोंकाप्रचार, घहोत, देवसबधीअगोकाघूमाणा, प्रगटस
**ललियपयपयारं, भूरि, दिव्वंगहारं, फुडघणर**
घनरसभाव, ऊमदाशृंगारसारभूत, अनमिष[देवतों]कीरमणिया,
**सभावो, दारसिंगारसारं, अणमिसरमणिज्ज**
प्रभूदर्शनसुस्कलसेंपाया,ऐसेंडरी, इसतरेनमस्कारकरतीअमदपणेकरती
**दंसणच्छेयभीया, इयपणमनमंदाकासिन**
हुईनाटकउपहार, ६, हेभव्यजीवोस्तवनाकरोअजितशांतिकी, उनोंनेंकिया
**होयहारं, ६, थुणहअजियसंती, तेकयासेस**
सवोंकीशांति, सोनेकेरजजैसीपीली, विराजमानजाणोमूर्त्तिउनोंकी, उत्सा
**संती, कणयरयपिसंगा, छज्जणजाणमुत्ती, सर**
हकरकेआलिंगन, सरूकियानिर्वाणलक्ष्मीका, सघनस्तन, चदनकेशर
**भसपरिरंभा, रंभनिव्वाणलच्छी, घणथण, घुस**

सें अंकित, कादेसें, पीलामानूंकरणेकीतरे, ७, बहुतविधनयोंकाभंगजाल,
**णिंकु, पंक, पिंगीकयच्च, ७, बहुविहनयभंगं,**
वस्तुनित्य, औरअनित्य, सद, असत्, अनिर्वचनीय, वचनीय,एक,
**वत्थुनिच्चं, अनिच्चं, सद, सद, णभिलप्पा, लप्पमेगं,**
ओरअनेक, ऐसेखोटेनयोंसेंविरुद्ध, अच्छाप्रसिद्ध, और, जिनोंका,
**अणेगं, इयकुनयविरुद्धं, सुप्पसिद्धं, च, जेसिं,**
वचन अवद्य[पापरहित]निर्जराकाहेतु, उनदोनोंजिनकास्मरणकर्त्ताहूंमें, ८,
**वयण मवय निज्जं, तेजिणेसंभरामि, ८,**
फैलताहै तीनलोकमें, उहांतक, मोहकाअंधेरा, फिरतेहैंजगमें,
**पसरइतियलोए, ताव, मोहंधयारं, भमइजय**
संज्ञाहीन उहांतक मिथ्यात्वसेंछिपेहुये, उदयमानप्रगटफलंत अनंत
**मसन्नं तावमिच्छित्तछन्नं, फुरइफुडफलंतणंत**
ज्ञानकेकिरणोकापूर, प्रगटअजितशांतिके ध्यानरूपसूर्यनहींजहांतक, ९,
**नाणंसुपूरो, पयडमजियसंतीझाणसूरोनजाव, ९,**
शत्रु हस्ती सिंह तृष्णा अग्नि चौरवैरी रोग
**अरि करि हरि तण्हं ण्हंबु चोरारि वाही**
युद्ध, राजाकाकोपवादुकाल, मरी, डरावणेदुष्टउपसर्ग, नासहोय,
**समर, डमर, मारी, रुद्दखुद्दोवसग्ग, पलय,**
अजितशांतिकी, कीर्त्तनासें, जल्दी, जावै, करडावहोत,
**मजियसंती, कित्तणे, झत्ति, जंती, निवडनर,**
अंधेरेकासमूह, भास्कर[सूर्य]काटणेवालेकीतरे, १०, एकठेहुयेपापरूप काष्ट
**तमोहा, भक्खरालुंखियव्व, १०, निचियदुरियदा**
जिसकों दीप्त ध्यानरूपअग्निकी झाल प्राप्तकीतरेही गोरवर्ण
**रू दित्तझाणग्गि जाला परिगय मिवगोरं**
विचारणेकों ध्यानरूप सोनेके वसणेसेंजेसीरेखा उसकांतीकी
**चिंतियंजाणरूवं कणय नियसरेहा कंतिचो**
मानूंचोरीकरली फिरती ओर स्थिर जो लक्ष्मी अत्यंतपणे थांभ कररख
**रंकरिज्झा चरथिरमिहलच्छि गाढसंथं भिय**

एकीतरे ११, अटवीमें निवसित[रस्ताभूलेको], राजासेंत्रासितको
व्व ११, **अडविनिवडियाणं, पत्थवुत्तासिआण**
दरियावकेलहरोंसेंजिहाजफूटेकों, कैदमेंरहेको, जलतीहु
**जलहिलहिरहीरं ताणगुत्तिट्टियाणं जलिय**
ईअग्निकीझालसें आलिंगतको तुमाराध्यान करदेतेंहैंजल
**जलणजाला लिंगियाणंच झाणं जणयहल**
दीशाति शातिनाथ अजितनाथका १२, सिंहहस्तीइनोसेंव्यास
**हुसंति संतिनाह जियाणं १२, हरिकरिपरि**
युक्त, पक्के, प्यादोंसें, प्रतिपूर्ण, ऐसासमस्तभरतपृथ्वीकाराजछोडकै
**किन्नं, पक्क, पायक, पुन्नं, सयलपुहविरज्जंछड्डि,**
कैसाकराज्य, आज्ञामाननेवाला, तृणकीतरे, प्रतिलग्न[समस्तपणेलगेजो
**उ, आणसज्जं तणमिव, पडिलग्गंजेजिणामुत्ति**
जिनमुक्तिमार्गकों, चारित्रअंगीकारकिया, हुओवेदोनोंमेरेपरप्रशन्न, १३,
**मग्गं, चरणमणुपवन्ना, हुंतुतेमेपसन्ना, १३,**
पूनमकेचांदजैसेंमुखवाली, खुलेनेत्रकमलकेओपमावाली, स्तनोंके
**छणससिवयणाहिं, फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणभ**
भारसेंनमींहुई, मुट्ठीमेंग्रहणकरणेयोग्यपेटवाली, मनोहरभुजारूपल
**रनिमरीहं, मुट्ठिगिज्झोदरीहिं, ललियभुयल**
तावाली, पुष्टकम्मरकेस्थलवाली, ऐसीसइकडोंदेवतोंकीस्त्रियोंसे,
**याहिं, पीणसोणित्थलीहिं, सयसुररमणीहिं**
वादीजतेहुयेजिनोंकेचरण, १४, अर्श[मस्मा], किटिभ, कोढ,-
**वंदियाजेसिपाया, १४, अरिस, किडिभ, कुढ,**
गठिया, वागाठे, कास, अतीसार, क्षय, ज्वर, व्रण, जिनावरोकानिप,
**गंठि, कासा, इसार, खय, जर, वण, लूआ, —**
श्वास, शोष, पेटकेरोग, नसोंमें, मूंमें, दातोंमे, आखमे, कूखमे,
**सास, सोसो, दराणि, नह, मुह, दसण, च्छी, कुच्छि,**
कानआदिरोग, नडेजिनवरदोनोंकेचरणोंका, सुप्रशाद, हरणकरो, १५,
**कन्नाइरोगे, महजिणजुयपाया, सुप्पसाया, हरंतु, १५,**

इत्यादि, भारी, दुःखितत्रासर्से, पक्खीमें, चोमासीमें,
**इइ, गुरु, दुहितासे, पक्खिए, चाउमासे,**
जिनवरकाजोडास्तवनकरणेसैं, अथवा संवत्सरीमें, पवित्र, पढो, सुणो,
**जिणवरदुगथुत्तं, वच्छरेवा, पवित्तं, पढह, सुणह,**
स्वाध्यायकरो, इसकोंध्याओचित्तमें, करो, जाणो, विघ्न,
**सज्झा, एहझाएहचित्ते, कुणह, मुणह, विग्घं,**
जिसकरकै, नाशकरोजल्दी, १६, इयविजयाराणीजितशत्रुराजा
**जेण, घाएहसिग्घं, १६, इइविजयाजियसत्तु**
केपुत्र, श्री, अजितनाथजिनेश्वर, तैसैं, अचिराराणी विश्वसे
**पुत्त, सिरि, अजियजिनेसर, तह, अइरा, विससे**
नराजाकेपुत्र, पांचमेंचक्रवर्त्तिईश्वर, तीर्थंकर, सोलमें, शांतिनाथ,
**णतणय, पंचमचक्कीसर, तित्थंकर, सोलसम, संति,**
जिनमुझेंवल्लभ, अथवाश्रीजिनवल्लभसूरिः स्तवताहै, करोमंगलमेराहरो, पाप
**जिणवल्लह, संतह, कुरुमंगलममहरउ दुरिय**
समस्तनिश्चै, स्तवनाकरतेकूं, १७,
**मखिलंपि, थुणंतह, १७, इतिद्वितीयस्मरणं ॥**
नमस्कारकरकै, नमे, देवतोंकासमूह, मुगटोंकेमणियोंकेकिरणसें, रंगे
**नमिऊण, पणय, सुरगण, चूडामणिकिरण, रंजि**
हुये, मुनिःयोंके, चरणोंकाजुगल[जोडा], वडेडर, विशेषपणेनास करणे,
**यं मुणिणो, चलणजुयलं, महाभय, पणासणं,**
अच्छीस्तवनाकहताहूं, १, सडगयेहाथपांव, नख, मुख, दूरगई
**संथवं, वुच्छं, १, सडियकरचरण, नह, मुह, निव्वु**
वैठगईनासिका, विदरंगहुईलावण्यता, कोढवडेरोगरूपअग्निकी, झा
**ड्डनासा, विवन्नलावन्ना, कुट्ठमहारोगानल, फु**
लासें, समस्तपणेजलगयासबअंग, २, वहतुमारेचरणोंकीआराधना, रूप,
**लिंगनिदड्ढसव्वंगा, २, तेतुहचलणाराहण, सलिलं,**
जलकीअंजलीउससें, वढाजोउमंग, वनकीदावानलसेजला, पहाडकेवृ
**जलिसेय, वड्ढिउच्छाहा, वणदवदड्ढा, गिरिपा**

क्षकीतरे, पायाफेरलक्ष्मीकों, ३, खोटीहवासे, उछलता, जलनिधि,
**पवव्व, पत्तापुणोलच्छि, ३, दुव्वाय, खुभिय, जल,**
समुद्र, ऊपराऊपरीकल्लोलोंका, डरावणाशब्द, सभ्रांतिडरसेंढीला
**निहि, उब्भडकल्लोल, भीसणारावे, संभंतभयवि**
गिरगयाअंग, नडयेलेकोनेंछोडाचलाणेकाव्यापार, ४, फटगईजिहाज
**संठुल, निज्जामयमुक्कवावारे, ४, अविदलियजा**
ऐसेपुरुष, क्षणभरमेंपातेहैं, वछितकिनारोंकों, पार्श्वजिनराज
**णवुत्ता, खणेणपावंति, इच्छियंकूलं, पासजिण**
केचरणोंकाजोडा, नित्यअर्चेपूजै, जो, नमें, मनुष्य, ५, करडी
**चलणजुअलं, निच्चंचिय, जे, नमंति, नरा, ५, खर**
हवासेसिलगीहुईवनदावानल, झालोकीश्रेणी, मिलीमईसमस्त,
**पवणुद्धयवणदव, जालावलि, मिलियसयल,**
वृक्षोंकीसघनताकू, जलाते मोलीमृगवधू[हिरणी], डरावणाशब्दकरती,
**दुमगहणे, डज्झंतमुद्धमयवहू, भीसणरव,**
डरावणेवनमे, ६, जगगुरूके, चरणदोनों, बुझादिया,
**भीसणंमिवणे, ६, जगगुरुणो, कमजुयलं, निव्वाविय,**
समस्ततीनभुवनकों राखणेवाली, जोस्मरणकरे, मनुष्य
**सयलतिहुयणाभोयं, जेसंभरंति, मणुया,**
नहींकरे, ज्वलन[अग्नि], डरउनोंकों, ७, निलमताहुआफण
**नकुणइ, जलणो, भयंतेसिं ७, विलसंतभोग**
डरावणा, देदीप्यमानलाल, नेत्र, तर२करतीदोजिह्वा,
**भीसण, फुरियारुण, नयन, तरलजीहालं,**
वडासाप, नयेमेवकीघटाजेसा, शस्त्रजेसाघातक, भयानकआकार, ८,
**उग्गभुयंगं, नवजलय, सत्थहं, भीसणायार, ८,**
मानतांहै, कीडे, जैसा, दूरसमस्तपणेहोय, विषम, जहर
**मन्नंति, कीड, सरिसं, दूरपरिच्छूढ, विसम, वि**
कावेग, तुमारा, नामकाअक्षर, प्रगटसिद्ध, मत्र, मारी, मनु
**सवेगा, तुह, नामक्खर, फुडसिद्ध, मंत, गुरुया, न**

ष्यलोकमें, ९, जंगलमें, भील, चोर, पुलिंद[मैणा], सार्दूल,
**रालोए, ९, अडवीसु, भिल्ल, तक्कर, पुलिंद, सद्दूल,**
सिंहोकाशब्द, डरावणेमें, डरसें, कांपता, कायर, लूंटते
**सद्द, भीमासु, भय, विहुर, वुन्नकायर, उल्लूरिय**
रस्तागीरके, सथवारेमें, १०, नहींछिपाया, विभवसार[धनमाल],
**पहिय, सत्थासु १०, अविलुत्त, विहवसारा,**
तुमाराहेनाथ, प्रणामसेंवहचोर, छोडदियाव्यापार, दूरगयेविघ्नजल्दी
**तुहनाह, पणाम, मुत्तवावारा ववगयविग्घासिग्घं**
पायेहितकारी, वंछितठिकाणेकूं, ११, जलती, अग्निजैसे
**पत्ताहिय, इच्छियंठाणं, ११, पज्जलिया, नल**
नेत्रजिसके, दूरतकफाडाहैमूंजिसनें, वडीकाया, नखवज्र
**नयणं, दूरवियारियमुहं, महाकायं, नहकु**
जैसेंसें, घातकिया, फाडाहै, हस्तीका, कुंभस्थल, खाणेकों, १२,
**लिस, घाय, वियलिय, गयंद, कुंभत्थला, भोयं, १२,**
जादाकरकेप्रनमेहुयेभ्रमयुक्तराजा, नख, मणि, माणक,
**पणयससंभवपत्थिव, नह, मणि, माणिक्क,**
प्रतिम, प्रतिबिंबके, तुमारे वचन, शस्त्रोंकेधारणेवाले, सिंह
**पडिय, पडिमस्स, तुह, वयण, पहरणधरा, सीहं**
कोपेहुयेकोंभी, नहींगिणताहै, १३, चंद्रजैसाश्वेत, दंतमूसलजिसके,
**कुद्धंपि, नगिणंति, १३, ससिधवल, दंतमुसलं,**
लंबीसूंडउठाकै, वधायाहैउमंगजिसनें, कावरेहै, नेत्र, दोनों,
**दीहकरुल्लाल, वड्ढिउच्छाहं, महुपिंग, नयण, जुयलं,**
पाणीसेभरी, नयेमेघकीघटाकेआकारवाला, १४, डरावणावडा,
**ससिलिल, नवजलहरायारं, १४, भीमंमहा,**
हस्ती, बहोतनजीकआयाभी, वहनहींगिणतेहैं, जोतुमारेचर
**गयंदं, अच्चासन्नंपि, तेनविगिणंति, जेतुम्मच**
णदोनों, मुनिःपतिरूपऊंचाई परजोचढाहै, १५, युद्धमें,
**लणजुयलं, मुणिवइतुंगसमुल्लीणा, १५, समरंम्मि,**

तीक्ष्ण, तलवारके, चोट, विशेषपणेघाबाहैउद्धतजध, जिसने,
**तिक्ख, खग्गा, भिघाय, पवद्धउद्धुयकबंधे,**
वरछीयोंकेजखममें, कटे, हस्तियोंकेबचे, छोडाहैसिसकारा, जादा
**कुंतविणि, भिन्न, करिकलह, मुक्कसिकार, पउ**
जिसनें, १६, जीताहै, अहकारवाले, वैरी, राजा, राजाओंके,
**रम्मि, १६, निज्जिय, दप्पुद्धर, रिउ, नरिंद, निवहा,**
सुभट, यश, उज्वल, पातेहैं, हेपापोंकेशमाणेवाले, पार्श्वजिन,
**भडा, जसं, धवलं, पावंति, पावपसमण, पासजिण,**
तुमारेप्रभावसें, १७, रोग, पाणी, अग्नि, साप,
**तुहप्पभावेण, १७, रोग, जल, जलण, विसहर,**
चोर, वैरी, सिंह, हस्ती, संग्रामादिडरोंकों, पार्श्वजिनकेनामकी
**चोरा, रि, मयंद, गय, रणभयाइं, पासजिणनाम**
अच्छीकीर्त्तनाकरणेसे, विशेषपणेशमनहोतेहैंसब, १८, इसतेरमहाभयहर,
**संकित्तणेण, पसमंतिसव्वाइं, १८, एवंमहाभयहरं,**
पार्श्वजिनेंद्रका, अच्छास्तवन, उदार, भव्यजनोंकुआन
**पासजिणंदस्स, संथव, मुयारं, भवियजणान**
दकर्त्ता, कल्याण, परंपरासे, निधानरूप, राजकाडर, यक्ष,
**दयरं, कल्लाण, परंपर, निहाण, रायभय, जक्ख,**
राक्षस, खोटेस्वप्न, दुष्टस्वप्न, ग्रहोंकीपीडामें,
**रक्खस्स, कुसमिण, दुस्सऊण, रिक्खपीडासु,**
सध्यासुवेसाइदोनोंमें रस्तेमें, कष्टआनेसें, तैंमेंरातमें, २०,
**सझासुदोसु, पंथे, उवसग्गे, तहयरयणीसु,२०,**
जोपढे, जोममस्तपणेसुणे, रक्षाकरणेवाला, मानतुगका,
**जोपढइ, जोयनिसुणइ, ताणकयणोय, मानतुंगस्स**
हेपार्श्वपापोंकोंप्रशमाबो, हेसमस्ततीनभुवनसेपूजेभयेचरणोवाले
**पासोपावपसमेओ, सयलभुवणचियचलणो,**
**२१ इतितृतीयंस्मरणंसमाप्तं**
वहजयवतहो, जयवत, तीर्थ, जोइहा, तीर्थकेमालकवीरप्र

**तंजयओ, जयइ, तित्थं, जमित्थ, तित्थाहिवेणवी**
भूनें, अच्छाप्रवर्त्ताया, भव्यसत्वोंके, संतान[परंपरा]तकसुखपै
**रेण, सम्मंपवत्तियं भव्वसत्त, संताणसुहजणयं**
दाकर्त्ता, १, नासकियासमस्त, क्लेश, समस्तपणेहणदियेखोटेपरिणा
**१, नासियसयल, किलेसा, निहयकुलेसापस**
म, तारीफलायकशुभलेश्या, श्रीवर्द्धमानतीर्थंकों, मंगलदेओ,
**त्थसुहलेसा, सिरिबद्धमाणतित्थस्स, मंगलंदिं**
वह, अरिहंत, २, समस्तजलायाकर्म्मबीज, दूसरी, परमेष्ठी
**तु, ते अरिहा, २, निदड्ढकम्मबीया, बीया, परमेट्ठि**
गुणकीसमृद्धि, सिद्धादेवीत्रिजगत्प्रसिद्ध, नासकरो,
**गुणसमिद्धा, सिद्धातिजयपसिद्धा, हणंतु, दु**
दोषोंकों, तीर्थका, ३, आचारकों, आचरते, पांचप्रकारकों,
**त्थाणि, तित्थस्स,३, आयार, मायरंता, पंचपयारं,**
हमेसप्रकाशकरते, आचार्यमहाराजका, तैसैंतीर्थका, समस्तहणोकु
**सयापयासंता, आयरिया, तहतित्थं, निहयकु**
तीर्थकों, प्रकाशकर्त्तोंकों, ४, सम्यक्श्रुतके, वचाणेवाले, उपाध्यायका,
**तित्थं, पयासंतु, ४, सम्मसुय, वायगा, वायगाय,**
स्यादवादके, वचाणेवालेवाचकका, प्रवचनके, निंदक, निंदाकरणेवाले,
**सियवाय, वायगावाए, पवयण, पडणीय, कये**
दूरकरो, सर्व, संघका, ५, मुक्तिसाधनेकों, उद्यमवंत,
**वणंतु सव्वस्स, संघस्स, ५, निव्वाणसाहणु, ज्जय,**
साधुओंके, पैदाकिया, सर्व, साहाय, तीर्थकेप्रभावक,
**साहूणं, जणिय, सव्व, साहज्जा, तित्थप्पभावगा,**
वह, हुओ, परमेष्ठी, यत्नकर्त्ता, ६, जिनोंकेपिछाडी,
**ते, हवंतु, परमेट्ठिणो, जइणो, ६, जेणाणुगयं,**
ज्ञान, मुक्तिकाफल, और, चारित्रभी, होय, तीर्थसंबंधीजो
**नाणं, निव्वाणफलं, च, चरणमवि, हवइ, तित्थस्सदं**

दर्शन, उसका, अमगलदूरकरो, सिद्धिकरो, ७, छद्मस्थ, जो,
**सणं, तं, मंगुलमवणेउ, सिद्धियरं, ७, निच्चम्मो**
श्रुतधर्म्म, समस्त, भव्यशरीरी, वर्गकू, किया, सुख, गुणों
**सुयधम्मो, सम्मग्ग, भव्वंगि, वग्ग, कय, सम्मो, गुण**
मैंअच्छीतरेरहे, सघकों, मगल, सुख, इहा, देओ, ८,
**सुट्ठियस्स, संघस्स, मंगलं, सम्म, मिह, दिसओ, ८,**
रमणीकचारित्रधर्म्म अच्छीतरेपायेभव्यजीव, ओरमुक्तिसुख,
**रम्मोचरित्तधम्मो, संपावियभव्वसत्त, सिवसम्मो,**
समस्त, क्लेसकाहरणा, हुओ, हमेस, सकल, सघका, ९,
**नीसेस, किलेसहरो, हवउ, सया सयल, सघस्स, ९,**
गुणोंकेसमूहसेंभारी, ऐसेगुरुओंके, शिवसुखकीबुद्धिवाले, करो
**गुणगणगुरुणो, गुरुणो, सिवसुहमइणो, कुणंतु,**
तीर्थका, श्रीवर्धमान, प्रभु, प्रकटकियेका, कुशल,
**तित्थस्स, सिरिवद्धमाण, पहु, पयडिअस्स, कुसलं,**
समस्तका, १०, जीताहैप्रतिपक्षियोंकों यक्ष, गोमुख,
**समग्गस्स, १०, जियपडिवक्खा, जक्खा, गोमुह,**
मातग, गज मुख, प्रमुख, श्रीब्रह्मशाति, सयुक्त,
**मायग, गय मुह, पमुक्खा, सिरियंभसंति, सहिया,**
करो, नयकी, रक्षा, मुक्ति, देओ, ११, अबा, नासकरा, उपसर्ग,
**कय, नय. रिक्खा, सिवं, दितु, ११, अंबा, पडिहय, डिंबा,**
सिद्धिदाता, सिद्धाइका, प्रवचनकू, चक्रेश्वरी, वैरोट्या,
**सिद्धा, सिद्धाइया, पवयणस्स, चक्केसरि, वइरुट्टा,**
शातिदेवता, देओ, मुक्खोंकों, १२, शोले, विद्या,
**संतिसुरा, दिसउ, मुक्खाणि १२, सोलस, विज्जा,**
देविया, देओ, सघकों, मगल, निस्तारवाला, अच्छुप्ता,
**देवीओ, दितु, सघस्स, मंगलं, विउलं, अच्छुत्ता**
देवी,सहित, निश्चात, श्रुतदेवताके, मग, १३,
**सहियाओ, विस्सुय, सुयदेवयाइ, समं, १३,**

जिनशासनकी, कर, रक्षा, जक्ष, चौवीस, शासन,
**जिणसासण, कय, रक्खा, जक्खा, चउवीस, सासण,**
देवताभी, शुभभावहोकर, संताप, तीर्थका, हमेस,
**सुरावि, सुहभावा, संतावं, तित्थस्स, सया,**
प्रनाशकरो, १४, जिनप्रवचनमें, समस्तपणेरक्त, विसेपरहित,
**पणासंतु, १४, जिणपवयणंमि, निरया, विरया,**
कुपंथसें, सर्वथा, येसर्व, टहलवंदगीकीकरणेवालियां, जोतीर्थकी,
**कुपहाउ, सव्वहा, सव्वे, वेयावच्चकराविय, तित्थस्स,**
हुओ, शांतिकरणेवाली, १५, जिनसिद्धांत, सिद्ध, अच्छारस्ता,
**हवंतु, संतिकरा, १५, जिणसमय, सिद्ध, सुमग्ग,**
कीयाहै, भव्यजीवोंके, पैदा, साहाय, गायाहैचैन,
**विहिय, भव्वाण, जणिय, साहिज्जो, गीयरई,**
गायाहैजस, सपरिवारकों, सुखदेओ, १६, घरकी, गोत्रकी,
**गीयजसो, सपरिवारो, सुहंदिसओ, १६, गिह गुत्त**
क्षेत्रकी, जलकी, थलकी, वनकी, पहाडोंकी, वसणेवाली, देव,
**खित्त, जल, थल, वण, पव्वय, वास, देव**
और, देवियां जिन, आज्ञामें, रहेहुयोंका, दुःख सर्व्व, समस्त,
**देवी, ओ, जिण, सासण, ठ्ठियाणं, दुहाणि, सव्वाणि,**
नाशकरो, १७, दश, दिग्पाल, संयुक्त, क्षेत्रपाल, न
**निहणंतु, १७, दस, दिसिवाला, स, खित्तवालया, न**
वोंग्रह, संयुक्तनक्षत्रोंके, जोगणियां, राहू, ग्रह, काल,
**वग्गहा, सनक्खत्ता, जोइणि, राहू, ग्गहं, काल,**
फास, कुलक, अर्धपहरके, १८, साथकालके, कंटकके,
**पास, कुलि, अद्धपहरेहिं, १८, सहकाल, कंटएहिं,**
संयुक्तविष्टि, वस्स, कालवख्त, येसव, सवजगे
**सविठ्ठि, वत्थेहिं, कालवेलाहिं, सव्वे, सव्वत्थ**
सुखकों, देओ, सर्व्व, संघकों, १९, भवनपती,
**सुहं, दिसंतु, सव्वस्स, संघस्स, १९, भवणवइ,**

वाणव्यंतर, ज्योतषी, वैमानिकादिक, जोदेव,
**वाणविंतर, जोइस, वेमाणियाय, जेदेवा, ध**
धरणेंद्र, शक्रेंद्र, सयुक्त, खंडनकरो पापोंकों, तीर्थका,
**रणिंद, सक्क, सहिया, दलंतु, दुरियाइं, तित्थस्स,**
२०, चक्र, जिनोंका, जाज्वल्यामान, चलताहै, आगे, जादाकरनाश
**२०, चक्कं, जस्स, जलंतं, गच्छइ, पुरओ, पणासि**
किया, अंधेरेकासमूह, वहतीर्थके, भगवानकु, नमोस्वर्द्धमानप्रभूको,
**य, तमोह, तंतित्थस्स, भगवओ, नमोस्वद्धमाणस्स,**
२१, वह, जयवतहो, जिनवीर, जिनोंकाअभीभी, सासन,
**२१, सो, जयउ, जिणोवीरो, जस्सज्ञवि, सासणं,**
जगत्में, जयवतहै, मुक्तिपथ, साधनेको, कुपथ, नासकरणेको,
**जए, जयइ, सिद्धिपह, साहणं, कुपह, नासणं,**
सर्व्वडर, मथनेकों, २२, श्री, ऋषभ, सेन, प्रमुख, इणा,
**सव्वभय, महणं, २२, सिरि, उसभसेण, पमुहा, हय,**
भय, नियध, देओ, तिर्थकों, सर्व्वे, जिनवरोंके,
**भय, निवहा, दिसंतु, तित्थस्स, सव्व, जिणाणं,**
गणधारी, १४५२, पापरहित, वंछित, सर्व, २३, श्रीवर्द्धमानस्वामी,
**गणहारिणो, णहं वंच्छियं, सव्वं, २३, सिरिवद्धमाण,**
तीर्थकेमालकनें, तीर्थ, सुपुर्दकिया, जिनोंको, अच्छा,
**तित्थाहिवेण, तित्थं, समप्पियं, जस्स, सम्म,**
सुधर्मास्वामी, देओ, सुख, समस्त, संघको, २४,
**सुहम्मसामी, दिसउ, सुहं, सयल, संघस्स, २४,**
प्रकृती[स्वभाव]के, भद्रकजो, कल्याण, देओ, सकल, संघकों,
**पयइय, भद्दियाजे, भद्दाणि, दिसंतु, सयल, संघस्स,**
ओर, देवतामी, निश्चै, अच्छीतरे, तीर्थंकर, गणधरोका, कथन,
**इयर, सुरावि, हु, सम्मं, जिण, गणहर, कहिय,**
करणेवालोंकों, २५, इसकों, जोपढे, तीनोंकाल, दु साध्यकाम उसके,
**कारिस्स, २५, इय, जोपढइ, तिसंझं, दुस्सझ, तस्स,**

नहींकुछभी, जगत्में, जिनेश्वरकी[वा जिनदत्तकी]दी, आज्ञामेंरहा,
**नत्थिकिंपि, जए, जिणदत्ताणाइट्ठिओ, सु**
अच्छीसिद्धकामनावाला, सुखीहोय, २६,
**निट्ठियट्ठो, सुहीहोइ, २६, इतिचतुर्थस्मरणं ॥**
मदरहित, गुणसमूहरूपरत्नोंकेसागर, आदरसंयुक्त,
**मयरहियं, गुणगणरयणसायरं, सायरं,**
प्रणामकरकै, सुगुरु, जिनपारतंत्रकों, समुद्रकीतरे, स्तव
**पणमिऊणं, सुगुरु, जिणपारतंतं, उयहिव्व, थु**
ताहूं, उनोंकोंनिश्चै, १, समस्तपणेमथडालामोहजोद्धारकों, समस्तहण
**णामि, तंचेव, १, निम्महियमोहजोहा, निहयवि**
दिया, विरोध, विशेषपणेनासकियासंदेह, नमेहुयेशरीरधारियोंकेवर्गकूंदिया,
**रोहा, पणट्ठसंदेहा, पणयंगिवग्गदाविय,**
सुखकानिधान, अच्छेगुणोंकाघर, २, पायाअच्छेजतीपणेकीशोभा,
**सुहसंदोहा, सुगुणगेहा, २, पत्तसुजइत्तसोहा,**
समर्थ, परतीर्थकूं, पैदाकिया, संक्षोभ, तोडदिया, लोभ,
**समत्थ, परतित्थ, जणिय, संखोहा, पडिभग्ग, लोह,**
जोद्धारोंकों, दिखाया, अच्छावडेअर्थका, शास्त्रसमूह, ३, समस्तपणेहरडाला,
**जोहा, दंसिय, सुमहत्थ, सत्थोहा, ३, परिहरिय,**
शास्त्रबाधा, हणदियादुःखकादाघ, मुक्तिरूपअंबवृक्षकीसाखा,
**सत्थवाहा, हयदुहदाहा, सिवंबतरुसाहा,**
अच्छापायासुखकालाभ, क्षीरोदधिसमुद्रकीतरे, अगाध, ४,
**संपावियसुहलाहा, खीरोदहिणिव्व, अग्गहा, ४,**
अच्छेगुणीजनोंनें, करीहै, पूजा, जल्दी, रहितपाप, ग्रहण
**सुगुणजण, जनिय, पुज्जा, सज्जो, निरवज्ज, गहि**
करीहै, दीक्षा, शिवसुख, साधनकरणेतइयारभये, भवरूपपहाडकों,
**य, पव्वज्जा, सिवसुह, साहणसज्जा, भवगुरुगिर,**
चूर्णकरणेवज्रजैसै, ५, आर्य, सुधर्म्मास्वामीप्रमुख, गुणोंकेसमूहके
**चूरणेवज्जा, ५, अज्ज, सुहम्मपमुहा, गुणगणनि**

वहणेवाले, सुरेंद्रोंनेंक्रियावडीपूजा, उनोंका, तीनोंकालमे, नाम, नाम
**वहा, सुरिंदविहियमहा, ताण, तिसंझं, नामं, ना,**
क्या, नहींनासकरे, जीवोंकेपापोका, ६, अगीकारकिया, जिनदेवकों,
**मं, नपणासइ, जियाण, ६, पडिवज्जिय, जिणदेवो,**
देवाचार्य, दु खसेंअतवालेभवोंकेहर्त्ता, श्रीनेमिचद्रसूरि,
**देवायरिओ, दुरंतभवहारी, सिरिनेमचंदसूरी,**
उद्योतन, सूरि, अच्छेगुरु, ७, श्रीवर्द्धमानसूरि
**उज्जोयणसूरिणो, सुगुरु, ७, सिरिवद्धमाणसूरी,**
प्रकटकियाहै, सूरिमत्रका, माहात्म, समस्तपणेह,
**पयडीकय, सूरिमंत, माहप्पो, पडिहय,**
णदियाकपायकापसार, शरदऋतुकेचद्रजैसे, सुखपैदाकरणेवाले, ८,
**कसायपसरो, सरयससंकुव्व, सुहजणओ, ८,**
सुखशीलिये, जोचोर, उनोंकोपकडणेवाले, निशेपचलेहुओंको, निश्चलकर्त्ता
**सुहसील, चोर, चप्परण, पचलो, निचलो जिण**
जिनमतमें, युगप्रधानोंके, सिद्धांतके, जाननेवाले, नमनक-
**मयंम्मि, जुगपवर, सुद्धसिद्धंत, जाणओ, पण**
राहै, अच्छेगुणीजनजिनोंको, ९, सन्मुख, दुर्लभ, पृथ्वीवलभ[राजा]के,
**य, सुगुणजणो, ९, पुरओ, दुल्लह, महिवल्लहस्स,**
अणहिल, पाटणमे, प्रगट, कहा[निरुत्तरकिया]विचारकै,
**अणहिल्ल, वाडए, पयड, मुकावियारिऊणं,**
सिंहकीतरे, द्रव्यलिंगीगजोंको, चैत्यनासएकजगेरहणानिषेधा, १०, दशमेंआ-
**सीहेणिव, दव्वलिंगिगया, १०, दसमच्छे**
श्चर्यरूप, रात्रीमें, चमकतेहुयेफैलेहुये, मनोमतीआचार्यमई, अधकारको,
**रय, निसि, विप्फुरत, सच्छंदसूरिमय, तिमिर,**
नये सूर्यकीतरे, सूरि[आचार्य]जिनेश्वरनें, हणामथनकिया, दोषोंसें,
**सूरेणव, सूरिजिणेसरेण, हयमहिय, दोसेण,**
११, अच्छीकनितापणेसेंपाई, कीर्त्ति, प्रगटकरीतीनोंगुप्ती, निशेपशा
**११, सुकइत्तपत्त, कित्ती, पयडियगुत्ती, पसंत**

तिसुभमुर्ति, विशेषकरनासकरा, परवादियोंकातेज, ऐसेजिनचंद्रसूरिः,
**सुहमुत्ती, पहय, पर वायदित्ती, जिणचंद,**
जतीश्वरमंत्रीजिनोंके, १२, प्रगटकियानवअंगसूत्रका अर्थ, रत्नोंकेभंडार,
**जईसरोमंती, १२, पयडियनवंगसुतत्थ, रयणकोसो,**
विशेषनाशकराउत्कृष्टद्वेषकों, भवोंसेंडरे, ऐसेभविकजनोंकेमनकों,
**पणासियपओसो, भवभीय, भवियजणमण,**
कियाहैसंतोष, विशेषपणेगयादोषजिनोंसें, १३, युगप्रधानकालिकसूरिः
**कयसंतोसो, विगयदोसो, १३, जुगपवरागम**
केआगमकेतत्वकीप्ररूपणा, करणेमेंवद्धकच्छ[कटिवद्ध], श्रीअभयदेव
**सारपरूवणा, करणबंधुरोधणियं, सिरिअभय**
सूरिः, मुनियोंमेंप्रधान, उत्कृष्टसमताकेधरणेवाले, १४, कियाहै
**देवसूरी, मुणिपवरो, परमपसमधरो, १४, कय**
श्वापदोंकोंसंत्रास, सिंहकीतरेहिरणोंका, तोडा, संदेह, गत
**सावइसंतासो, हरिव्वसारंग, भग्ग, संदेहो, गय**
सिद्धांत[मिथ्यात्वि]योंका, अहंकारदलकै, चाखाहै, प्रधानकाव्योंकारस,
**समय, दप्पदलणो, आसाइय, पवरकव्वरसो,**
१५, डरावणाभवरूपगहनवनमें, दिखाया, गुरुवचनरूपरत्नोंका,
**१५, भीवभवकाणणंमिय, दंसिय, गुरुवयणरयण,**
निधान, समस्त, जीवोंके, गुरु, सूरिःजिनवल्लभजय
**संदोहो, नीसेस, सत्त, गुरुओ, सूरीजिणवल्लहो**
वंतहै, १६, सर्वोपरिरहाहै, सच्चरणपांववाचारित्र, चारअनुयोगोंसेंयुगप्र
**जयइ, १६, उवरिठ्ठिय, सच्चरणो, चउरणओगप्प**
धान, इसीसेंसच्चरण[चारित्र], असमतारूपरागकोंमथनकर, उंचेमुख,
**हाण, सच्चरणो, असममयरायमहणो, उड्ढमुहो,**
दिखातेहुये, जिनोंकेहाथ, १७, दिखलायारहितमलनिश्चल, इंद्रियों
**सहइ, जस्सकरो, १७, दंसियनिम्मलनिच्चल, दंत**
कासमूह, नहींगिणाप्रतिपक्षी८४श्वापदोंकाडर, भारीहैवा
**गणो, गणियसावओत्थभओ, गुरुगिरिगुरुओ**

णीवडेपहाडजैसीउची, सूरि·श्रीजिनवल्लभहोतेभये, १८, युगप्रधानआ
सरहुव्व, सूरीजिणवल्लहोहुत्था, १८, जुगपवराग
गमअमृतहैहाथमें, सतोपितमनकियाहैभव्योंका, जिसकरकै
मपीयूसपाण, पीणियमणाकयाभव्वा, जेणजि
जिनवल्लभ, गुणोंसेभारीउनोकोसवतरेवदनकर्त्ताहू, १९, देदीप्यमान
णवल्लहेणं गुरुणातंसव्वहावंदे, १९, विप्फुरिय,
प्रधान, प्रवचन, शिरमेमणिजैसै, वडी, दुर्धरक्षमाजिनोंकी, जोवाकी
पवर, पवयण, सिरोमणी वुड्ढ, दुव्वहखमोय, जोसे
केसूरि योंमेसेपकीतरे, सोभतेहैं, जीवोंकेरक्षाकरता, २०, सत्चारित्र
साणसेसुव्व, सहइ, सत्ताणताणकरो, २०, सचरिया
करकेपूर्ण, सद्गुरु, पारपायाहैतन्त्रोंके, वहणेवाले, जयवतरहोश्री
णमहीणं, सुगुरूणं, पारतंत, मुव्वहइ, जयउजिन
जिनदत्तसूरि· श्रीनिधान, विशेषपणेनमताहै, मुनि·तिलक, २१,
दत्तसूरि, सिरिनिलओ, पणय, मुणितिलओ, २१,
इतिगुरुपारतंत्र्यपचमस्मरण, ॥
जल्दीहरोविघ्नोंकों, जिनेश्वरवीरकीआज्ञाके अनुसारचल
सिग्घमवहरउविग्घं, जिणवीराणाणुगामिस
णेवालेसघका, श्रीपार्श्वजिन, थभन, पुरमेरहे, वछित
घस्स, सिरिपासजिणो, थंभण, पुरट्ठिओ, निट्ठि
देणेवाले, १, गौतम, सुधर्म्मा, प्रमुख, गणपति,
यानिट्ठो, १, गोयम, सुहम्म, पमुहा, गणवइणो,
रचाहै, भव्यजीवोंकेसुख, श्रीवर्द्धमान, जिनकेतीर्थमें,
विहिय, भव्वसत्तसुहा, सिरिवद्धमाण, जिणतित्थ,
स्वस्ति[कल्याण]वहकरोनिरतर, २, सक्रेंद्रादिक देवताजो, जिनेश्वरके
सुत्थयंतेकुणंतुसया, २, सक्काइणोसुराजे, जिणवेया
टहलवदगीकरणेवालेहैं, दूरकर, विघ्नोकोशीघ्र, हुओ
वचकारिणोसंति, अवहरिय, विग्घसिग्घा, हवंतु
वहसघकोंशातिकर्त्ता, ३, श्रीथभणपुरमेरहे, पार्श्वनाथस्वामीके,

**तेसंघसंतिकरा, ३, सिरिथंभणयट्ठिय, पाससामी,**
पदकमलमेंविशेषपणेनमेंप्राणियोंका, समस्ततोडडाला, पापोंकावृंद,
**पयपउमपणयपाणीणं, निद्दलिय, दुरियविंदो,**
धरणेंद्रहरो, पापोंको, ४, गोमुखप्रमुख, यक्ष,
**धरणिंदो, हरउदुरियांइं, ४, गोमुहपमुख जक्खा,**
समस्तपणेहनदियाप्रतिपक्ष, पक्षीयोंकालक्षउनोंनें, कियाअच्छेगुण
**पडिहयपडिवक्ख, पक्खलक्खाते, कयसुगुण,**
वंतसंघकीरक्षा, हुओअच्छीतरेप्रासमोक्षसुख, ५, अप्रतिचक्रा,
**संघरक्खा, हवंतुसंपत्तसिवसुक्खा, ५, अप्पडि**
देवीप्रमुख, जिनशासनके, देवतादिक, जिनकोंनमेंपुरुषोंका,
**चक्का,पमुहा, जिणसासण, देवयाइ, जिणपणया,**
सिद्धायिकादेवीसंयुक्त, हुओ, संघकी, विघ्नोंकेहरणेवाली, ६,
**सिद्धाइयासमेया, हवंतु, संघस्स, विग्घहरा, ६, स**
शक्रकेआदेशमेंसाचोरपुरमेंरहा, वर्द्धमान, जिनराजकाभक्त,
**क्काएसासचउरपुरट्ठिओ, वद्धमाण, जिणभत्तो,**
श्रीब्रह्मशांति, यक्ष, रक्षाकरो, संघकीविशेपयत्नसें, ७,
**सिरिबंभसंति, जक्खो, रक्खउ, संघंपयत्तेणं, ७,**
क्षेत्रके, घरके, गोत्रके, शंतानके, देशके, देवताभी, देवियां,
**खित्त, गिह, गुत्त, संताण, देस, देवावि, देवया,**
उनोंका, निर्वाणपुरके, पंथीजन, भव्योंके, करो, सुक्खोंकों,
**ताओ, निव्वुइपुर,पहियाणं, भद्दाण, कुणंतु, सुक्खाणि,**
८, चक्रेश्वरीचक्रधारिणी, विधि, पक्षके, वैरियोंका, छेदडाला
**८, चक्केसरिचक्कधरा, विहि, पह, रिओ, च्छिन्नकं**
गरदन, धणियाणी, मुक्तिकेसरणमेंलगे, संघका, सर्वथाप्रकारे
**धरा, धणियं, सिवसरणलग्ग, संघस्स, सव्वहा,**
हरो, विघ्न, ९, तीर्थपति, वर्द्धमान, जिनेश्वरके,
**हरउ, विग्घाणि, ९, तित्थवइ, वद्धमाणो, जिणेसरो,**
संग, अच्छेसंघकरकै, जिनचंद्र, अभयदेव, रक्षाकरो, जिन

संगउ, सुसंघेण, जिणचंदो, भयदेवो, रक्खउ, जिण,
वल्लभप्रभु, सुझें, १०, वहजयनतहो, वर्द्धमान, जिनेश्वर,
वल्लहोपहुमं, १०, सोजयउ, वद्धमाणो, जिणेसरो,
दिनेश्वरकीतरे, हणदियाअधेरा, जिनचंद्र, अभयदेव, प्रभुतायुक्त,
गेसरुन्च, हयतिमिरो, जिणचंदा, भयदेवा, पहुणो,
जिनवल्लभ, जयवतहो, ११, गुरुजिनवल्लभकेचरण,
जिणवल्लहो, जयइ, ११, गुरुजिणवल्लहपाए,
अभयदेव, प्रभुताके, देणेवालेकोंवादताहू, जिनचंद्रयतियोंकेईश्वर,
भयदेव, पहुत्त, दायगेयंदे, जिणचंदजईसर,
वर्द्धमान, तीर्थकीवृद्धिकरणेंकू, १२, जिनदत्तआज्ञाकूअच्छीतरे
वद्धमाण, तित्थस्सवुद्धिकए, १२, जिणदत्ताणंसम्मं,
माने, करे, जो, करावे, मनसें, वचनसें, का
मन्नंति, कुणंति, जेय, कारंति, मणसा, वयसा, व
यासें, जयवतहो, साधर्म्मी, वहमी, १३, जिनदत्तगुण,
उसा, जयंतु, साहम्मिया, तेवि, १३, जिणदत्तगुणे,
ज्ञानादिक, निरतर, जो, धरे, धरावे, दिखाया साद्धा
नाणाइणो, सया, जे, धरंति, धारंति, दंसिय, सिय
दपद, नमताहू, सौधर्मेंद्रादिसाधर्मि, वहभी, १४,
वायपए, नमामि, साहम्मिया, तेवि, १४, इतिषष्टं
स्मरणं ॥

उवसग्गहरंपास इत्यादि ससमस्मरण ॥

---

## अठपहरीपोसहविधि।

प्रथम जमीन प्रमार्जकर एक खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमै ४ नवकारका काउसग्गकर प्रगट लोगस्सकहै फेर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिस्सह पोसह मुहपत्ती पडिलेहूं, पडिलेहे इच्छाका० संदि० पोसह संदिस्साउं पीछे इच्छं कहके खमास० इच्छाका० सं० पोसहठाऊं खमास० झुकता हुआ खडा रहके, मुखपर मुहपत्ती देकर ३ नवकारगिणे, इच्छकार भगवन पसाउकर पोसह दंडक उच्चरावोजी, करेमिभंते पोसहं ये पाठ ३ वेर उच्चरे पीछे खमासमण देकर इच्छाका० सामायक मुंहपत्ती पडिलेहूं दूसरी खमासमण देकर मुहपत्ती पडिलेहे फेरखमासमणदेके सामायक संदिस्साउं, फेर खमासमण देकर, खडा होकर, ३ नवकार, ३ करेमिभंते उच्चरे, खमासमण देकर वैसणो संदिस्साउं फेर खमासमण देकर वैसणोठाउं, फेर दोय खमासमण देकर, सिझाय संदिस्साउं, सिझाय करूं, खडा होकर आठ नवकारका सिझाय करै, फेर दोय खमासमणसैं पांगरणोसंदिस्साउं, पांगरणो पडिग्गहूं, इत्यादिसामायककी विधिकरै, लेकिन् करेमिभंते उच्चरे वाद, इरियावही नहीं पडिक्कमैं, क्योंकी पहली पडिक्कमली इसवास्ते, पीछै चैत्यवंदन जयवीयरायतक करकै कुसुमण दुस्समिणका काउसग्गकर फेरराई पडिक्कमणाकरै, लेकिन् इतना विशेष है ४ थुईसैं देव वांदे पीछै, खमासमण देकर इच्छाका० सं० बहुवेलं संदिस्साउं फेर खमास० इच्छाका० बहुवेलं करूं, तीन खमास० आचार्यजीमिश्र, १ उपाध्यायजी मिश्र २ सर्व्व साधूजीनैं त्रिकालवं० फेर कम्मभूमि २ यह चैत्यवंदन करकै सिझाय करै फेर पडिलेहण करै दोय खमासमणसैं इच्छाका० सं० पडिलेहण करूं, पीछै मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे दोय खमासमणसैं, अंग पडिलेहण संदिस्साउं, अंग पडिलेहण करूं, इच्छं कहकै धोती कणदोरा पडिलेहके वस्त्र पहनैं खमासमण देकर इच्छकार भगवन् पसाउकरी पडिलेहण करावोजी, पीछै थापनाचार्यकी पडिलेहण करै पीछै खमासमण देकर इच्छाका० सं० उपधिमुंहपत्ती पडिलेहूं इच्छं कहकै मुंहपत्ती पडिलेहे, दोय खमासमणसैं इच्छाका० सं० ओही पडिलेहण संदिस्साउं, ओहि पडिलहण करूं पीछे २४ थंडिलां इसतरे करै, आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे १ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे २ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ३ ये शय्याके दहणेतरफ करै, आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे १ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे २ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ शय्याके वांयेतरफ करै, आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे १ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे २ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ३, ये ३ दरवज्जेके भीतर दहिणेतरफ पडिलेहे, आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे १ आगाढे मझे पासवणे

अहियासे २ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ३, ये तीन दरवजेके भीतर वायेंतरफ पडिलेहे, अणागाढे उच्चारे पासवणे अणहियासे १ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे २ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ दरवजेके वाहिर दहणे तरफ पडिलेहे, अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे १ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे २ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ दरवजेके वाहिर वायेंतरफ पडिलेहे, अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे १ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे २ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ३ ये ३ दस्त पेसावकी जगे दहणे तरफ पडिलेहे, अनागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे १ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे २ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ३ इसतरे २४ थडिला पडिलेहे पीछे इच्छ कहके कवल कपडे आदिक पडिलेहके पोसहमाला प्रमार्जके काजा निधिसें परिठावे, खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमे १ लोगस्सका काउसग्गकर प्रगट लोगस्सकहै पीछे खमासमण देकर इच्छाका० स० सिझाय सदिस्साउ सिझाय करू पीछे १ नवकार कहके उपदेशमाला सिझाय जो पहले लिखा है सो पढे पीछे १ नवकार कह धर्म्म ध्यान करै, पूणपहर दिन चढेवाद उग्घाडा पोरिसी अथवा वहुपडिपुन्ना पोरिसी कहके खमासमण देकर इरिया वही पडिक्कमके १ लोगस्सका काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहके इच्छामि खमासम० इच्छका० स० पडिलेहण करू मुहपत्ती पडिलेहके पाणी पानादिक पडिलेहके रख्खे, फेर सिझाय ध्यान करै,

## ॥ अथ देववंदनविधि ॥

॥ कालवेला देहरे आवस्सही कहकै जाकर ५ शक्रस्तवसें देववादेसो लिखते हैं. तीन प्रदिक्षिणा देकर ३ वेर नमस्कार जमीनप्रमार्जकै पुरुप प्रभूके दहणे तरफ स्त्री होय तो वाये तरफ वैठे इच्छाका० स० भगवन् चैत्य वदन करू चैत्य वदन कहै फेरनमोत्थुण सव्वेतिविहेण वदामितक कहके फेर खडा होकर इरिया वही पडिक्कमें १ लोगस्सकाका उसग्ग प्रगट लोगस्स प्रमार्जकर वैठे, ३।४।५ आदि चैत्यवदन कहकै जकिंचिनामतित्थ नमोत्थुण खडा होकर अरिहतचेइयाण करे मिका० वदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग करके नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके थुईकी १ गाथा कहे, सो लिखते हैं, चउवीसे जिनवर प्रणमू हू नितमेव, आठमदिन करिये चद्राप्रभुनी सेव, मूरति मनमो है जाणे पूनमचद, दीठा दुख जावै पावै परमानद १, पीछै लोगस्स कहे, सव्वलोए अरि० वदणव० अन्नत्थू० १ नवकारका काउसग्ग फेर थुईकी दूसरी गाथा कहै, मिल चउसठ इद्र पूजै प्रभुजीना पाय, इद्राणी अपछर करजोडी गुणगाय, नदीश्वरद्वीपेमिल सुरवरनी कोड, अठाई महोच्छव करता होडाहोड २, फेर पुरुखरवरदी० कहे सुयस्स भगवओ करेमि काउसग्ग वदणव० अनत्थू० १ नवकारका का-

उसग्ग पारकै, नमोर्हं० कहके, सेत्रुंजा शिखरे जांणी लाभ अपार, चो मासे रहिया गणधर मुनिपरिवार, भवियणनैंतारै देई धर्म उपदेश, दूधसाकरथी पिणवांणी अधिकविसेस, ३ पीछै सिद्धाणं बुद्धाणं कहकै वेयावच्चगराणं० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग पारकै, पोसो पडिकमणो करिये व्रत पच्चखाण, आठमतपकरतां आठकरमनीहाण, आठमंगलथायै दिन२कोडि कल्याण, जिनसुखसूरिकहैइम शासनसूरिसुहझाण ४, पीछै नीचै वैठकै नमोत्थुणं० फेर अरिहंतचेइयाणंक० वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग थुईकी गाथा लोगस्स दूजी १ थुईकी गाथा, इसी तरे पुख्खरवर० तीसरी गाथा सिद्धाणं बुद्धाणं० चोथी गाथा कहकै नीचै वैठ नमोत्थुणं कहे नमोर्हत् सिद्धा० कहकै वडा स्तवन कहै पीछै जयवीयराय कहै फेर नमोत्थुणं सव्वेतिविहेण वंदामि तक कहै, इति पांचशक्रस्तवे देववंदनविधि ॥

[ पीछै निस्सही कहकै पोसह सालामैं आकर, इरिया वही पडिक्कमकै १ लोगस्सका काउसग्गकर प्रगट लोगस्स कहकै धर्म्म ध्यान करै, तिविहार उपवास किया हो तो पच्चख्खाणका वख्त पूरा हुये वाद जल पीणेकूं पच्चख्खाणपारे, खमासमण देकर इरिया वही पडिक्कमै फेर खमासमण देकर इच्छाका० सं० भगवान् पच्चख्खाण पारवा मुंहपत्ती पडिलेहूं इच्छं कहकै खमासमण० मुंहपत्ती पडिलेहै फेर खमास० इच्छाका० सं० पाणहार अमुक पच्चख्खाणपारूं गुरु कहे पुणोत्तिकायव्वो फेर यथाशक्ति कहकै, खमासमण०, इच्छाका० सं०, पाणहारपारूं, गुरु कहै, आयारो नमोत्तव्वो, पीछे तहत्ति कहके, पारणेका पच्चख्खाण पहली लिखा है सो ३ वेर पढके नवकार गिणके, चैत्यवंदन करै, क्षणमात्र सिझायकर यथाशंभव अतिथि संविभागकर, जलवावरै, उपधानवाही पच्चख्खाण पोरसी प्रमुखपार आहार करै आसण वैठा ही दिवस चरम पच्चख्खे पीछै इरिया वही पडिक्कमकै चैत्यवंदन करै ये चैत्यवंदन आहार संवरणवास्ते है इतना विधान उपधानवाहीका है,

फेर वहिर्भूमी जाणा होय तो वस्त्रवदलकर आवस्सही कहके उपयोगीपणे निर्जीव जमीनपर मलमूत्रपरठणेकै वख्त अणुजाणह जस्सुग्गहोकहकै पूर्व उत्तर सूर्य गामआदिक कूं पीठ नहीं दैता मलमूत्र परिठवै, शुद्धहोकर वोसिरामि ३वेर कहै, पोसही शालामैं निस्सही कहके प्रवेशकर इरियावही पडिक्कमै खमासण देकर इच्छाका० सं० गमणागमण आलोयहं इच्छं कहके गमणागमण आलोवै आवंति, जंतेहिं, जंखंडियं, जंविराहियं, तस्समिच्छामिदुक्कडं, सांझकी पडिलेहणकी वख्त इरियावही पडिक्कमैं, फेरखमासमण०, इच्छाका० सं०, पडिलेहणकरूं फेर खमास० इच्छाका० सं० पोसहसाला प्रमार्जूं, इच्छं कहकै मुंहपत्ती पडिलेहे, दोयखमासमणसैं अंगपडिलेहणसंदिस्साउं, अंगपडिलेहण करूं, दंडासणा, पूंजणी, प्रमुखप्रमार्जकै, पोसहशालाप्रमार्जै, फेरकाजेकों देखै, वाद

एकातमैं, काजा, विसरता परठै, इरियावही पडिक्कमें, खमास० इच्छाकारेण सदिस्सह भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावोजी, पीछे स्थापनाचार्य पडिलेहके थापे खमास० इच्छाका० स० मुहपत्ती पडिलेहू, इच्छकहके, खमास० मुहपत्ती पडिलेहे, पीछे दोयखमासमणसें इच्छाका० स० सिज्झायसदिस्साउ, सिज्झायकरू, क्षणमात्र सिज्झायकर, तिविहार उपवास किया होय तो, गुरुमुख पाणिहारका पच्चख्खाण करे, उपधानवाही भोजनकरा होयतो दोवांदणा देकर चोविहार या पाणिहारपच्चख्खे, पीछे खमासमण० इच्छाका० स० उपधि थंडिलां पडिलेहण सदिस्साउ खमासमण० इच्छाका० स० उपधिथंडिलापडिलेह इच्छ कहके दोयखमासमणसे इच्छाका० स० वैसणोसदिस्साउ वैसणो ठाउ कहके वैठे वस्त्रकंबलादिकपडिलेहे पूजणीकू मुहपत्तीसें पडिलेहै धोती कणदोरापडिलेहै उपधानवाही भोजनकराहोय वह पहले धोती कणदोरा पडिलेहेवाद वस्त्रकंबलपडिलेहै पीछै आगे मुजब २४ थंडिला पडिलेहै पीछै पक्षी चोमासी संवच्छरी अथवादेवसी पडिक्कमण करे देव सियआलोएमि पाठकहे पीछै ठाणेक्कमणे चक्कमणे ये पाठ कहै इच्छाका० स० सिझायसदिस्साउ सिझाय करू ३ नवकारगुणे, प्रतिक्रमण कियेबाद सिझायकरै पीछे पूणपहर रातगये बहुपडिपुन्नापोरसीकहकै खमासम० इरियावही पडिक्कमै, [ अब रात्रीसंथाराविधि लिखते हैं, ]

॥ खमासमण० इच्छाका० स० राईसंथारा मुहपत्ती पडिलेहू इच्छ कहके खमासमण० मुहपत्ती पडिलेहे खमासमण० इच्छाका० स० राइसंथारासदिस्साउ, खमासमण० इच्छाका० स० राइसंथाराठाउ, इच्छ कहके चउक्कसायका चैत्यवंदनकरै जयवीरायतक पीछे जमीनप्रमार्जके संथारा उत्तरपट्टा पाथरे फेर शरीरप्रमार्जके निस्सही २ कहके संथारेपरवैठे तीननवकार तीनकरेमिभंते कहकै णमोंखमासमणाणं इत्यादि राईसंथारा पूरापढै, बाया हाथ मस्तकनीचैदेकर सोवै निद्रा नहीं आवे जहातक मुनियोंके गुणविचारे, शरीरपूजके पसवाडाफेरे देहशकावास्ते उठे तो आसज्जशब्द कहता देहशका दूरकर पीछा आकर इरियावही पडिक्कमे जघन्यसेजघन्य ३ गाथाकी सिझायकरके सोवे रातके पिछलेपहर ऊठके नवकारगुण इरियावही पडिक्कमे खमासमण देकर कुसुमिण दुस्सुमिणका १६ नवकारका काउसग्गकरे फेर पूर्वोक्तविधिसें सामायक लेवै लेकिन् इरियावही नहीं पडिक्कमे, दोयखमासमणसें सिझायसदिस्साउ सिझायकरू ८ नवकारकी सिझायकरे फेरराईपडिक्कमणकरे राइय आलोएमि कहेवाद, संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी सव्वस्सविराइय दुचिंतिय दुब्भासिय, दुचिट्ठिय इच्छतस्समिच्छामिदुक्कड, पडिलेहणकीबख्त पूर्वोक्तमुजब पडिलेहणकरे काजानिकाल इरियावही पडिक्कमै दोयखमासमणसें सिझायसदिस्साउ सिझायकरू उपदेशमाला पढे,

## ॥ अथ पोसहपारणविधि लिख्यते ॥

[ खमासमणदेयर, मुंहपत्ती पडिलेहे, खमासमण देकर, इच्छाका०, सं०, पोसह- पारूं, गुरु कहे पुणोत्तिकायव्वो, यथाशक्ति कहके खमास० इच्छाका० सं० पोसहपाखुं, गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो, तहत्तिकहके, खमासमण० झुकताहुवा खडाहोकर ३ नव- कार गुणके, खमासम० मुंहपत्ती पडिलेहे फेर खमासमण० इच्छाका० सं० सामायक पारूं, गुरु कहे पुणोत्तिका० यथाशक्तिकहके खमास० इच्छाका० सं० सामायकपाखुं गुरुकहे आयारो नमोत्तव्वो, तहत्तिकहके खमासमण देकर झुकता खडारहकर हाथजोड मुंहपत्ती मुखदेकर ३ नवकार गिणे संडासाप्रमार्जे गोडालिये वैठ मस्तकनमाय भयवं- दसण्णभद्दो, इत्यादि कहे, देहरे जाकर देवजुहारे साधूकूं पडिलाभ अतिथिसंविभागकर शेषवचे आहारसैं आप आहार करै, इति अठपहरी पोसहविधिः ॥

## ॥ अव दिनको चौपहरी पोसहविधि ॥

॥ पहिले उपगरण पडिलेहके काजानिकाल इरियावही पडिक्कमे खमासमणदे इच्छाका० सं० पोसहमुंहपत्ती पडिलेहे और विधि पहले लिखे मुजव लेकिन् पोसहदंडक उच्चरते जावदिवसं पज्जुवासामी कहे फेर सामायककी विधि सव करै चैत्यवंदन कुसुमिण दुस्स- मिणका काउसग्ग करके पडिक्कमणा राईकरै दोयखमासमणसैं वहुवेलं संदिस्साउं, वहुवेलं करूं, अगर पहले गुरुसंग प्रतिक्रमण करा होय तो, पडिक्कमणकेवाद, जो कप- डादिक पडिलेहके रख्खाहोय तो पोसह सामायक विधी करै, दोय खमासमणसैं वहुवे- लसं० वहुवेलकरूं, तथा जो गुरुसैं अलग, प्रतिक्रमणकरा होय तो, गुरुपास आयकै, पोसहसामायककी सव विधि करै, आलोयणखामणादिकके वास्ते मुंहपत्ती पडिलेहके २ वांदणां देवै इच्छाका० सं० राइयं आलोउं फेर खमास० देके इच्छाका० सं० अ- भ्भूट्ठिओमि अ० सव पाठ कहै, पहले नवकारसीवगेरे पच्चख्खाण किया होय तो उपवा- सकाकरे दोयखमासमणसैं वहुवेलसं० वहुवेल करूं० इसतरे ३ प्रकारहै, पडिलेहणपहले- करीहै, तोभी खमासम० इच्छाका० सं० भ० पडिलेहण, संदिस्साउं, पडिलेहणकरूं, मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछेदोखमास० अंगपडिलेहण संदिस्सा करकै मुंहपत्ती पडिलेहे, फेर खमास० इच्छा कार भगवन् पसाउकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी, खमासमण० इच्छा- का० सं० उपधिमुंहपत्ती पडिलेहं कहके कोईभी वस्त्रविगर पडिलेहे रहा होय तो पडि- लेहे नहीं तो आसणपडिलेहे, दोयखमा० सिज्झायसंदिस्साउं सिज्झायकरूं उपदेशमाला- सुणे, वाकीविधि अठपहरी पोसहमैं लिखेमुजव, लेकिन् अठपहरीपोसहवाला पिछलीरातकों सामायकनहीं लेवै, चोपहरीपोसहवाला, पिछलेपहर, पच्चख्खाणकियेवाद, दोयखमास- मणदेकर, ओहिपडिलेहणसंदिस्साउं, ओहिपडिलेहणकरूं, लेकिन् थंडिलानहींकरै ये- दिनसंवंधीपोसहमैं विशेषविधिहैसोलिखीहै इति ॥

## ॥ अथरातके चोपहरी पोसहकी विधि ॥

किसीनें दिनका चोपहरी पोसहकियाहै, और सांझकू पडिलेहणकीवख्त, रातके पोसहकरणेका फेर भावहुआ, तव पच्चख्खाणकियेपीछे, दोयखमासमणसैं, पोसहमुहपत्तीपडिलेहके ३ नवकार गिणके, पोसहदंडक ३ वेरउच्चरता, जावरत्ति पज्जुवासामि, ऐसा पाठकहे, पीछेसामायकआगेमुजवलेनै, दोयखमासमणसैं सिझाय सदिस्साकर ८ नवकारगिणे, वेसणासदिस्सावे, पागरणासंदिस्सावे, पीछे दोयखमासमणसैं इच्छाका० स० ओहीथडिला पडिलेहण सदिस्साउ, ओहीथडिला पडिलेहणकरू, इच्छकहके, उपधिपडिलेहे, आगेलिखाउसमुजब, तेसैं, जो दिनकों पोसह नहीं किया, ओर उपवासकियाहुआ है, उसका रातके पोसहचोपहरीकाभाव हुआ, तव पिछले पहोर उपाश्रय आयके प्रमार्जना करै, काजा परठके उपगरण पडिलेहके इरियावही पडिकमे पीछै चोविहारका पच्चख्खाणकर, दोयखमासमणसैं मुहपत्तीपडिलेहके दोयखमासमणसैं, पोसहसदिस्सावे, फेरखमासणदेकर ३ नवकार गुणके, पोसहदंडकमैं उचरते रत्ति पज्जुवासामि पाठकहे अगर कुछदिनवाकीरहते पच्चख्खेतोदिवससेसरत्तिं पज्जुवासामिकहे फेरदोखमासमणसैं सामायक मुहपत्ती पडिलेहे, सामायकलेवे, दोयखमासमणसैं, सिझायसदिस्सावे, आठनवकार गिणे, फेरदोयखमासमणसैं वेसणोसदिस्सावे, फेरदोयखमासमणसैं, पागरणोसंदिस्सावे, फेरदोयखामासमणसैं, पडिलेहणसदिस्साकर, मुहपत्ती पडिलेहे, फेरदोयखमासमणसैं, ओही थडिला पडिलेहण सदिस्साकर, जोविगरपडिलेहा उपगरण होय सो पडिलेहे अगर नहीं होय तो आसणपडिलेहे, इरियावहीपडिक्कमे २४ थंडिला पडिलेहे, फेर प्रतिक्रमण करै, पिछलीरातको फेर सामायक नहीं लेवे, इति रात्री ४ पहरी पोसहकी विशेषविधि. ।

## ॥ अथ दशमीस्तुति ॥

॥ अश्वसेननरेश्वर वामादेवीनंद, नवकरतनु निरुपम नीलवरण सुखकंद, अहिलंछन सेवितपउमावइधरणिंद, प्रह ऊठी प्रणमूनित प्रतिपासजिनंद, १ कुलगिरिवैयढे कणयाचल अभिराम, मानुपोत्तरनदी रुचक कुंडल सुखठाम, भुवनेसरव्यंतर जो इस वैमानियनाम, वरतेजे जिनवर पूरो मुझमनकाम, २ जिहा अगइआरे वारे उपागछछेद, दशपयन्नादाख्या मूलसूत्रचिहुभेद, जिनआगमषट्द्रव्य सप्तपदारथजुत्त, साभलसरदहता तूटे करम तुरत्त, ३ पउमावई देवी पार्श्वयक्षप्रत्यक्ष, सहुसघना सकटदूरकरेयादक्ष, तेसमरोजिनभक्ति सूरिकहे इकचित्त, सुखसुजससमापै पुत्रकलत्रवहुवित्त ४, इति

## ॥ अथ अमावसस्तुति ॥

॥ वीर देन नित्य वंदे १ जैना पादा युष्मान्पातु २ जैन वाक्य भूयाद् भूत्यै ३ सिद्धादेवी दद्यात्सौख्य ४ इति वीरजिनस्तुति. ॥

## ॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ निरुपसुखदायक जगनायक लायक शिवगतिगामीजी, करुणासागर निजगुणआगर शुद्धसमतारस धामीजी, श्री सिद्धचक्रशिरोमणि जिनवर ध्यावेजे मनरंगेजी, तेमानव श्रीपालतणीपर पामे सुखसुरसंगेजी १ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महागुणवंताजी, दरशण ज्ञानचरण तप उत्तम नवपदजगजयवंताजी, एहनो ध्यांनधरंतालहिये अविचलपद अविनासीजी, तेसगलाजिननायक नमिये जिनये नीति प्रकाशीजी, २ आसू मासमनोहर तिमवलि चैत्रकमास जगीसेजी, उजवाली सातमथी करिये नवआंबिलनवदिवसेजी, तेरेसहसवलिगुणनो गुणिये नवपद केरोसारोजी, इणपर निरमल तप आदरिये आगमसाख उदारोजी, ३ विमलकमलदल लोयण सुंदर श्रीचक्केसरिदेवीजी, नवपदसेवक भविजनकेरा विघनहरो सुरसेवीजी, श्रीखरतरगछनायक सद्‌गुरु श्रीजिनभक्ति मुणिंदाजी, तासुपसाये इणपर पभणै श्रीजिनलाभ सुरिंदाजी, ४ इति नवपदस्तुति ॥

## ॥ अथ पर्यूषणस्तुति ॥

॥ वलि २ हूंध्याउं गाऊं जिनवरवीर, जिनपर्वपयूषण दाख्या धरमनी सीर, आषाढ चौमासाहूंती दिन पच्चास, पडिक्कमणोसंवच्छरी करिये त्रिण उपवास, १ चोवीसे जिनवरपूजा सतर प्रकार, करिये भलभावे भरिये पुण्यभंडार, वलिचैत्यप्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व्वपजूषणसहुमैं महिमावंत, २ पुस्तकपूजावीनववाचनाय वचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय, प्रतिदिनपर भावन धूप अगर उखेव इम भवियणप्रांणी पर्व्वपजूषणसेव, ३ वलिसाहमीवच्छल करिये वारंवार, केइभावनाभावे केई तपसीशीलधार, अडदीहपजूसण इम सेवित आनंद, सुयदेवी सानिध कहे जिनलाभ सुरिंद, ४ इति ॥

## ॥ अथ बृहदतीचारलिख्यते ॥

॥ नाणंम्मि दंसणम्मिय, चरणंम्मितवेयतहयविरियम्मि,आयरणं आयारो, इयएसो पंचहाभणिओ १ अर्थ, ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार५, इस पांच विधि आचारमैं जो कोई भी अतीचार पक्षीके दिनोंमैं सूक्ष्म बादरजाणमैं अजाणमैं हुआ होय वह सब मन वचन कायासैं कर मिच्छामिदुक्कडं,

## ॥ ज्ञानाचारके ८ अतीचार ॥

कालेविणए बहुमाणे, उवहाणेतहय निन्हवणे, वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहोनाणमायारो १, ज्ञान कालवेलामैं पढा गुणा नहीं, अकालमैं पढा, विनयहीन, बहुमानहीन, उपधानहीन, श्री उपाध्यायजी पास नहीं पढा, वा दुसरेपास पढा, दुसरेकों गुरु कहा, व्यंजन, अर्थ, वा तदुभय अशुद्ध पढा, देववंदन, प्रतिक्रमण, सिझाय करते,

अशुद्ध अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, जादा, या कम, आगे, या पीछे पढा, सूत्रअर्थ अशुद्ध पढा, पढके भूल गया, तपोधनके धर्ममें, काजा नहीं निकाला, दंडी नहीं पडिलेही, वसती नहीं शुद्ध करी, असिज्झाय, अनाध्याय, अकालमस्त, दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढा गुणा योगवहेविगर पढा, ज्ञानका उपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सापडा, सापडी, वही दस्तरी, ओलिया, कागदकू, आशातना हुई, पावलगा, थूकलगा, शिराणेरख्खा, पास रहते भोजन या फरागत जाणाकिया, ज्ञान द्रव्य खाया, या संभाल नहीं करी, बुद्धिके अपराधसें नाश किया, विनाश होते संभाल नहीं करी, शक्ती होते भी सार संभाल नहीं करी, ज्ञानवंतसें अहंकार किया, और अवज्ञा आशातनाकरी, किसीको पढते गुणते देख द्वेष अहंकार अपघात अंतराय करा, मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंकी असर्दहनाकरी कोईतोता अटकते बोलतेंको हसा नकल करी, आपणे जाणकारीपणेका गरूर किया आठ तरेके ज्ञानाचारमें जो अतीचारमें पक्षीके दिनोमें सूक्ष्म बादर जाण० अजाण० वह सबका त्रिविधिसें मिच्छामि० २

## ॥ दर्शनाचारके आठ अतीचार ॥

॥ निस्संकिय निकंखिअ, निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीअ, उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ १ देव, गुरु, धर्ममें, निशंकपणा नहीं करा, तैसें एकांत निश्चय धरा नहीं, सबी मत अच्छे हैं, ऐसी श्रद्धा करी, धर्मसंबधि ये फलमें, निसंदेहबुद्धि रख्खी नहीं, चारित्रवंत, साधु, साध्वीयोंके, मैले कुचीले वस्त्र, गात्रदेख, दुगछाकरी, मिथ्यात्वीकी पूजा प्रभावना देख मूर्ख दृष्टिपणा किया, संघमें गुणवंतकी अनुपवृहणा, अथिरताकरणी, अवात्सल्यता, अप्रीति, अभक्ति विचारी, संघमें थिरकरण, वात्सल्यता, शक्तिरहते प्रभावना नहीं करी, देवद्रव्यका नास किया, विनासकरतेकों नहीं रोका, समर्थवंत होकै सार संभाल नहीं करी, साधर्मीसें लडाई करी, जिनमंदिरकी ८४ आशातना करी, गुरूकी तेतीस आशातना करी, विगर धोये वस्त्रसें देवपूजा करी, तीन ठिकाणेविगर देवपूजा करी, वासकूंपा कलशका ठबका लगा, मूकी वाफ लगी, स्थापनाचार्य हाथसें गिराया, पडिलेहण करणा भूल गया, नवकरवालीकू पाव लगा, दर्शनाचारमें जो अतीचार पक्षदि० मिच्छा०

## ॥ चारित्राचारके आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणयोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिंतिहिंगुत्तीहिं, एसचरित्तायारो, अट्ठविहोहोइनायव्वो १ इर्यासमिती १ भाषासमिति २ एषणासमिति ३ आयाणभंडमत्त निक्षेपनासमिति ४ उच्चार प्रस्रवण खेल जल्ल संघाण परिष्ठापनिकासमिति ५, मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति, २,

कायगुप्ति, ३ पांचसमिती, तीनगुप्ति, अच्छीतरेपाली नहीं, साधूके, हमेस, अष्ट प्रकारके चारित्राचारमैं, जो अतीचार पक्षी० मिच्छामि० ८

## ॥ श्रीसम्यक्तके ५ अतीचार ॥

॥ विशेषकरकै श्रावकके धर्ममैं, श्रीसम्यक्तमूल १२ व्रत उससम्यक्तके ५ अतीचार संकाकंखविगंछा पसंसतहसंथवोकुलिंगीसु सम्मत्तस्सअइयारे संकाश्री अरिहंतोका वल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियोंका चारित्र, जिनवचनकी शंकाकरी, आकांक्षा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगा, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुवंत, इनोंकों आदिलेकर, ग्राम गोत्र देश नगरके जुदे २ देवदेहरोंका प्रभावदेखके रोगआतंक, इसलोकार्थ, परलोकार्थ, माना, पूजा, बौद्धसांख्यादिकके संन्यासी, भरडे, भक्तलिंगिये, योगी, दरवेस, और किसीभी दर्शनीका, कष्ट, मंत्रचमत्कार, देखके, परमार्थ जांणे विगर, मूला, प्रशंसा करी, कुशास्त्रसीखा, सुणा, सराध, संवत्सरी, होली वलेव, माहीपूनिम, अजापडिवा, प्रेतवीज, गौरतीज, विनायकचौथ, नागपांचम, झूलणाछट्ठ, शीलशातम, द्रो आठम, नवलीनवम, अहवदशम, व्रतइग्यारस, वच्छवारस, धन्नतेरस, अनंतचउदस, डाभीअमावस, आदित्यवार, उत्तरायण, नवोदक, जाग, भोग, उतारा करा, पीपलमैं पाणी डाला, डलाया, वरवाहिर कूआ, तलाव, नदी, समुद्र, कुंड, पुन्य हेतुस्नान करा, दान दिया, ग्रहण, शनिश्चर, माव महिना कार्तिकस्नान करा, अजाणका स्थापन करा, ओर कोईभी व्रत व्रतोला क्रिया कराया, विचिकिच्छा, धर्मसंवंधी फलमैं संदेह करा, जिन अरिहंत धर्मके आगर, विश्वोपगारसागर, मोक्षमार्गदातार, देवाधिदेवबुद्धिसैं शुद्धभावसैं न पूजा न माना महातमोंके भातपाणीकी दुगंछा करी कुचारित्रियोंकों देख चारित्रियोंपर अभाव हुआ मिथ्यात्वीकी प्रभावना देख प्रशंसा करी दाक्षिणतासैं उसका धर्म माना श्रीसमकितमैं दुसरा कोई जो अतीचार पक्ष० सूक्ष्म वादर जाणतेअजाणते० मिच्छामि०

## ॥ प्राणातिपातविरमणव्रतके ५ अतीचार ॥

॥ वहवंधच्छविच्छेए, अईभारे भत्तपाणवुच्छेए, द्विपद चउपदकों गुस्सेसैं जवर जखम प्रहार मारा सख्तवंधनसैं वांधा वहोत भारसैं पीडा दी निर्लांछन कर्मकरा, चारापाणीकी वख्त सारसंभाल नहीं करी, लेणे देणेमें किसीकों लंघन कराया, वह भूखा और आप जीमा, विगरछाणापाणीवरता, अच्छीतरे छाणानहीं, छणायानहीं, विगर छाणे पाणीसैं न्हाया कपडाधोया इंधण विगरशुद्धकियेजलाया, सांप, कानखजूरा, सुलहली, खटमल, जूं, गोगींडे, साहते मरे, दुखदिया, अच्छेठिकाणे नहींधरा, चिमटी, मकोडे, दिमक, घीवेल, कातरे, चूडेल, पतंगिये, मींडक, अलसिये, इली, कूति, डांस, मच्छर, भगतरा, मख्खी,

प्रमुख, हरकोई जीव विनष्ट किया, चांपा, दुखदिया, माला हिलाते, पक्षी, कउआ, चिडियोंके इडे फूटे, ओर कोईभी, एकेंद्रियादिक जीव, विनासा, चापा, दुखदिया, हलते चलते ओर कोईभी कामकाज करते निद्धसपणा किया, जीवदया अच्छीतरे नहीं करी, खसारा सूकाया, सुला अनाज धूपमें दिया, दलाया, मरडाया, खाट, पिलंग, धूपमें झडाकाया, धग, धराया, जीवाकुल जमीन, नीपी, निपाई, वासी गार रख्खी, रखाई, दलते, कूटते, नींपते, अच्छी जयणा नही करी, अष्टमी, चौदसका नियम तोडा, धूणी कराई, पहिला प्राणातिपात व्रतमें जो कोईभी अतीचार पक्ष० १

## ॥ थूल मृषावाद विरमणके ५ अतीचार ॥

सहस्सा रहस्सदारे, मोसवएसे अकूडलेहेय, सहसात्कार किसीको अयुक्त एव छीपालगाया, किसीको एकात वात करते देख, तुम्हतो राजाके विरुद्धवात विचारते हो, इत्यादिक कहा, अपणी स्त्रीकी गुप्तवात कही, किसीकी गुप्तसला या मर्मका प्रकाशन करा, किसीकों झूठी बुद्धि दी, झूठा खतलिखा, झूठी गवाभरी, थरपट दावी, कन्या, जानवर, गऊ, जमीनसवधी, लेणदेणै. व्यवसाय, वादविवाद, वचन कलह करते, वडा झूठ बोला, हाथ पावोंकी गाली दी, करडके मोडे, अधर्म वचन बोला दूसरे थूल मृषावाद व्रतमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० २

## ॥ अदत्तादानविरमणव्रतके ५ अतीचार ॥

ते नाहडप्प ओगे, घरके बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु विगर मगाई, ली, दी, वापरी, चोरीकी वस्तु मोलली चोर डकैतको सवल दिया शकेत करा विरुद्ध राज्यातिक्रमकिया, नये, पुराणे, सरस, निरस, सजीव, निर्जीव, वस्तूका भेल सभेलकरा खोटे-तोल मान मापसें विवहार किया, महसूलकी चोरीकरी, वदलावदली करी, मा, वाप, वेटा, स्त्री, परिवारके विचमे ठगाईसें जुदी गाठकरी, किसीको हिसाव किता-वमें, धोखादिया, गिरीवस्तुको छिपायली, तीसरे अदत्तादान व्रतमें जो कोईभी अतीचार पक्ष० ३

## ॥ स्वदारासतोष मैथुनव्रतके ५ अतीचार ॥

अप्परिग्गहिया इत्तर, अणगविवाहतिव्व अणुरागे० अपरिगृहीतागमन, इत्वर परिगृहीतागमन, विधवा वैश्यास्त्री कुलस्त्री, अपणी विवाहिता दो स्त्रियोंके चारणेमें, तफावत-रख्खा, सराग वचन बोला, आठम, चउदस, ओर किसी भी पर्व्व तिथीका, नियम तोडा, पुनर्विवाह किया, कराया, अनुमोदना करी, खोटे सकल्प विकल्प किये, कामक्रीडा करी, पराये विवाह जोडे, कामभोगमें तीव्र अभिलाषाकरी. खोटे स्वप्न देखे, नट विट

पुरुषसैं हस्सीकरी, चोथे मैथुन व्रतमैंजो कोई भी अतीचार पक्ष० वह सब म० व० का०

## ॥ परिग्रह प्रमाणव्रतके ५ अतीचार ॥

धण धन्न खित्त वत्थु, धन, धान्य, क्षेत्र, वस्तु, रूपा, सोना, कुप्पद, द्विपद, चोपद, नव प्रकारके परिग्रहका नियम ऊपर, वढोतरी देख, मूर्च्छासैं, संक्षेप नहीं किया, माता पिता पुत्र कलत्रादिकके लेखे किया, परिग्रहप्रमाण लेकर याद नहीं किया, याद करकै भूलगया, नियम भूलगया, पांचमैं परिग्रहप्रमाण व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० सूक्ष्म बा० जांणते अजा० ५

## ॥ दिग्विरमण व्रतके ५ अतीचार ॥

गमण स्सय परिमाणे० उर्द्धदिशि अधोदिशि तिरछीदिशि, जाणे आणेका नियम, जो कोईभी, अजांणपणे तूटा, एकतरफ घटाकर, दुसरे तरफ वधाई, भूल करकै जादा जमीन गया, प्रस्थाना दूर भिजवाया, छठे दिग् व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० ६

## ॥ भोगोपभोगविरमण व्रतके भोजन आश्री ५ कर्मसेती १५ एवं २० अतीचार ॥

सचित्ते पडिवद्धे० सचित्तकां नियम लेकर, जादा सचित्त लिया, तैसैं सचित्त मिली वस्तु, विगरपका आहार, दुपक्क आहार, तुच्छ दवाओंका भक्षण किया, होला, ऊंबी, पहूंक, ककडी, भडथाकरा, सुलानाज प्रमुख भक्षण करा, सचित्त दव्वविगई, वाहण तंबोलवत्थकुसुमेसु, पाहण सयण विलेवण, बंभंदिसिन्हाणभत्तेसु १ ये चवदै नियम दिनप्रते, संभारे, संक्षेपे नहीं, लेकर नियम तोडा, २२ अभक्ष, ३२ अनंतकाय मैं, अद्रक, मूला, गाजर, सूरण, सेलरा, कच्ची अमली, गोल्हफल खाया, चौमासे प्रमुखमैं, वासी मिस्सा [कठोल]की रोटी खाई, तीन दिनका दही खाया, सहत, महुआ, मख्खण, मट्टी, वैंगण, पीलू, पीचु, पपोटा, पीपी, जहर, वरफ, गडे, [ओले] घोलवडा, अजाणेफल, ठीवरू, आचार, आमण, बोर, कच्चानिमक, तिल, खसखस, कच्चेकाचर खाये, रात्रि भोजन करा, लगवगती वख्त व्यालूकरा दिन ऊगे विगरजीमा, तैसैं पनरे-कर्मादान, अंगारकम्मे, वनकम्मे, साडीकर्म, भाडीकर्म, फोडीकर्म, दांतका व्यापार, लाखका व्यापार, रसका व्यापार, केशका व्यापार, विष [जहर]का व्यापार, जंत्र पीलनकर्म, निर्लांछनकर्म, दावाग्निदेणा, सरद्रहतलाव सू-काणा, इनोंमैं ५ कर्म, ५ वाणिज्य, ५ सामान्य, महाआरंभ, लीहालेकराये, ईंटपजावा, निवाही पकाई, धाणी, चिणा, पकवान करके वेचा, वासी मक्खणतपाया,

अगीठी करी, करायी, तिलादिकका सचय किया, फागण महीने उपरात रक्खा, मुरगा, तोता, बुलबुल वगेरे पाला, ओर भी जो कोई वहोत सावद्य करडा कर्म्मादिक समाचरा, सातमें भोगोपभोग व्रतमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ७

## ॥ अनर्थ दंड विरमण व्रतके ५ अतीचार ॥

कदप्पे कुकुईए० कामदेवके रस निटकीतरे, हसी, कौतूहल, मुखादिअगकुचेष्टा-करी, मूर्खपणसें, किसीको, नहीं कहणे योग बात कही, खांडा, कटारी, कमी, कुहाडी, रथ, ऊखल, मूमल, अग्नि, चक्की आदिक तइयार करके रक्खा, मागणेमें दिया, कणक वस्तु ढोर लिराया, ओर भी किमीतरेका पापका उपदेश दिया, स्नान दातण, पग-धोणे पाणी, तेल जादा मगाया, नदी प्रमुखमें तिरा, राजकथा, देशकथा, भोजनकथा, स्त्रीकथा, पराई बातकरी, आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्याया, कठोर वचन बोला, करडका मोडा, जिनावर लडाया, भैसा, साड, मुरगा, मीढा, कुत्ता वगेरेकों, जुडते, लडतेको, देखा, होड [सरत] लगाकर, दुसरे जिनावरपर, द्वेष भाव किया, मट्टी, निमक, कण, कपासिये, विगरकाम दबाया, उसपर बैठा, हरी वनसपती खूदी, छाछ, जल, घी, रस, तेल, गुड, आम्लवेतस, गवेनिरोजादिकका वरतन उघाडा रक्खा, उसमें, चिमटी, कुथु अे, मक्खी, चूआ, गिलेरी वगेरे जीवमरे, तोता वगेरे जीव, क्रीडावास्ते बाध रक्खा, बहोत नींदली, रागद्वेषसें एकक्रू ऋद्धिपरिवारकी चाहना करी, एकक्रू मरणा, नुकसान विचारा, आठमें अनर्थदडव्रतमें जो कोईभी अतीचार पक्ष०

## ॥ सामायकव्रतके ५ अतीचार ॥

तिविहे दुप्पणिहाणे, सामायक लेकर मनमें आर्त्त, रौद्रक विचारा, वचन पापकारी बोला, शरीर विगर पडिलेहे हि लाया, वख्त रहते भी सामायक नहीं किया सामायक लेकर ऊवाडे मूसे बोला, नींदली, बिजली दियेकी उद्योती लगी, कण कपासिये मट्टी लूण भीलण फलण सब्जी वनसपतीका सघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचका सघट्ट हुआ, मुहपत्ती सघट्टी सामायक विगर पूरी पारी, पारणा भूलगया, नवमें सामायकव्रतमें जो कोई अतीचार पक्ष०

## ॥ देशावकासिक व्रतका अतीचार ॥

आणवणेपेसवणे० आणवणप्रयोग, पेसवणप्रयोग, सद्दानुपात, रूपानुपात, वहि पुद्ग-लक्षेप, प्रमाणमुजबनियम किये जमीनमें, बाहिरक्षेत्रमें कुछमगाया, आपके पासमें बाहिर-क्षेत्रमें भेजा, पुकारके, रूपदिखाकर, ककर फेंकके, अपणापणा जणाया, दशमें देशावका-सिकव्रतमें जो कोईभी अतीचारपक्ष०

## ॥ पोषधनुपवासव्रतके ५ अतीचार ॥

संथारुच्चारविहि० पोसहलेकर संथारेकी जमीन बाहिरका थडिला दिनकों सोधना पडिलेहणां नकरी, मात्रा विगर पडिलेहे किया, विगरपूंजी जमीनमें परठा, परठतेविचारणा नहीं करा, अणुजाणह जस्सुग्गहो नहींकहा, परठेवाद तीनवेर वोसरामि नहीं कहा, पोसहसालमें पैसते निकलते, निस्सही, आवस्सही, कहणा भूलगया, पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतीकाय, त्रसकायका संघट्ट परिताप उपद्रवहुआ, संथाग पोरसीकीविधि परठणाभूलगया, प्रथम पोरसीमें नींदली विधिविगर संथारा विछाया, कालवेलाप्रतिक्रमण नहीं करा, पारणेका फिकरकरा, कालवेलामें देव वांदना भूलगया, पोसहदेरसेंलिया, फजरमेंही पारलिया, पर्वतिथी आणेसें पोसहलिया नहीं इग्यारमें पोषधोपवासव्रतमें जो कोईभी अतीचारपक्ष० ॥

## ॥ अतिथिसंविभागव्रतके ५ अतीचार ॥

सचित्तेनिक्खवणे०, सचित्तवस्तु, नीचै, ऊपर रहते, साधूकूं, असूझता दान दिया, नहीं देणेकी बुद्धिसैं, सूझता पलटा कर, असूझता करा, अपणा पलटा कर पराया करा, विहरणका वख्त टले वाद, देरी करकैं, साधूकूं वुलाया, अहंकारके वस दान दिया, गुणवंत आणेसें भक्ती नहीं करी, शक्तिरहतेभी साधर्मी वात्सल्यता नहीं करी, ओर भी धर्म्मक्षेत्र कोई भी कष्ट पाते कूं, शक्ति रहते भी उद्धार नहीं करा, वारमें अतिथिसंविभाग व्रतमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० १२

## ॥ संलेषणाका ५ अतीचार ॥

इह लोए पर लोए० इह लोकासंसप्प ओगे, पर लोगा संसप्प ओगे, जीविआ संसप्प ओगे, मरणासंसप्प ओगे, काम भोगा संसप्प ओगे, इह लोक मनुष्य भव, मान, वडाई, लोकोंकी सेवा, ठकुराई, वलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्तिपदकी चाहना करी, पर लोकमें इंद्र, अहमिंद्रादिक पदवी चाही, सुख आणेसैं जीणेकी चाहना करी, दुःख आणेसैं मरणे की चाहना करी, कामभोगकी इच्छा करी, संलेषणाव्रतमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

## ॥ तपाचार १२ भेद वाह्यतपके ६ भेद, ॥

अण सण मुणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाओ, काय किलेसो संलीनयाय, वज्झोयतवोहोई १, अण सण कहिये उपवास वह पर्वतिथिमें शक्ति रहते किया नहीं, ऊनोदरी, ५।७ग्रास कमखाया नहीं, द्रव्यसंक्षेप, विगयप्रमुखका परिमाण किया नहीं, आसनादिक कायक्लेश नहीं करा, संलीनता, अंग उपांग समटके रक्खा नहीं, नवकारसी,

पोरसी, गठसी, मुठसी, साढ पोरसी, पुरमड्ड, एकासणा, बैयासणा, निवी, आंबिल, प्रमुख पच्चक्खाण पारणा भूल गया, बैठते नवकार गुणा नहीं, ऊठते दिवसचरम नहीं करा, नी वी, आंबिल उपवासादिक तप करके काचा पाणी पीया, वमन हुआ, बाह्यतपमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

## ॥ ६ अभ्यतर तप ॥

पायच्छित्त विणओ, वेयावच्च तहेवसज्झाओ, झाण उस्सग्गोविय, अब्भितरओं तवोहोई१, गुरूके पास मन शुद्धसें आलोयण लिया नहीं, गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेके शुद्ध पहुचाया नहीं, देव, गुरु, सघ, साधर्मीका, विनय नहीं किया, वाचना, पृछणा, पीछेका उथलना अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, ये पाच भेद लक्षणका स्वाध्याय किया नहीं, धर्म्म यान, शुक्लध्यान, ध्याया नहीं, कर्मक्षयके वास्ते १०।२० लोगस्सका काउसग्ग नहीं करा, अभ्यतर तपमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

## ॥ वीर्याचारके ३ अतीचार ॥

अणगूहिय बलविरिओ, परक्कमइ जोजहुत्तठाणेसु, जजइ अजहाथाम, नायव्वोवीरियायारो १ पढणे, गुणणे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायक, दान, शील, तप, भावना, प्रमुख धर्म्मकृत्यमें, मन, वचन, कायाका, विद्यमान बलवीर्यक्र छिपाया, अब्भीतरे पचाग खमासमण नहीं दिया, बैठे पडिक्कमणाकरा वीर्याचारमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

नाणाइ अट्ठ पइवय, समसलेहणपनर कम्मेसु, बारस तव विरियतिग, चऊवी सय अइयारा, १ ज्ञान, दर्शन, चारित्रके, आठ २, एकेक व्रत, एव १२ व्रतोंके तथा सम्यक्तके, तैसें सलेषणाके, पाच २, कर्मादानके १५, तपके १२, वीर्यके ३, ऐसें एक सो २४ अतीचार, पडिसिद्धाण करणे० जिनेश्वरके मना किये २२ अभक्ष, ३२ अनतकाय, बहुबीज भक्षण, महाआरभ, महापरिग्रहादिक, करा, नित्यकृत्य देवपूजा, सामायकादिक, तथा तीर्थयात्रादिक नहीं करा, जीवाजीवादिक विचार में श्रद्धा नहीं करी, अपणी कुमतिमें, उत्सूत्ररूपणाकरी, प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ परपरिवाद १४ पैशुन्य १५ अरतिरति १६ मायामृषावाद १७ मिथ्यात्व शल्य १८ इसतरे अठारे पापस्थानकमें, जो कुछ किया, कराया, अनुमोदा, इसतरे श्रावकधर्म सम्यक्तमूल १२ व्रत ऐकसो २४ अतीचारमें जो अतीचार पं० जाण० अजाणते वह सब मन वचनकायाकर मिच्छामि० ॥

---

१ चोमासीमें चोमासी दिवसमें, संवत्सरीमें सवत्सरीका नाम लेना,

## ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय सात लाख पृथिवीकाय सात लाख अप्पकाय सात लाख तेउ काय सात लाख वाउकाय दशलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय चउदे लाख साधारण वनस्पति काय दोय लाख बेइंद्रिय दोय लाख तेंद्रिय दोय लाख चौरिंद्रिय चार लाख देवता चार लाख नारकी चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय चउदे लाख मनुष्य एवं चार गति चौराशी लाख जीवा योनिमें, माहारे जीवें जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

## ॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥१२॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ १५ ॥ अरति परपरीवाद ॥ १६ ॥ मायामृपावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवता प्रत्यें भला जाण्या होय, ते सव्वे हुं, मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ [इति] ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली देव, गुरु, धर्मकी आशातना करी होय पन्नरे कर्मा दानोंकी आसेवना करी होय राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, ओर जो कोई पापपर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करता अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करके, दिवस अतिचार आलोयण करके पडि क्कमणामें आलोउं तस्स मिछामि दुक्कडं इति आलोयणं ॥

---

## ॥ अथ साधुप्रतिक्रमणसूत्र ॥

**चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगल सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलि पन्नत्तो धम्मोमंगलं १, चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो २ चत्तारि सरण पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ३**

चाहताहू पापसैंअलगहोणे दिनकासोणा, रातकूनिगरस्वाध्यायसोणाऐसीसज्या,
**इच्छामि पडिक्कमिउं पगाम सिज्जाए**
अत्यतनींदकीसज्यासैं पसवाडाफेरतेसयारेमेंअजयणासे दूसरापसवाडाफिराते
**निगामसिज्जाए सथाराउवट्टणाए परियट्टणाए**
अजयणासैं, शरीरवेप्रमार्जेसकोचणेसैं, पसारणेमें, जू, माकड, आदिककीसघट्टणासैं,
**आउ ट्टणाए, पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए**
खासीकरतेअजयणासैं, करडीशय्यासे, छीकसे, वगासीआणेसें, पामकीजमीफर
**कुइए कुकराइए छीए जंभाइए आमोसे**
सणेसे, धूडवालीजमीनफरसणेसैं, आकुलव्याकुलपणेसैं, स्वप्नेमैंमैथुनविचारसे,
**ससररवामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए**
स्त्रीकीवाछाकरणेसैंजोपापलगाहो, आसोकेविपर्यासैंसैंजोदोपलगाहो,
**इत्थीविप्परियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए,**
मनकेविपर्यासैंसैंजोदोपलगाहोय पीणेकाभोजनका विपर्यासैंसैंजोदोपल
**मणविप्परियासिआए पाणभोयण विप्परियासिआ**
गाहो, जोमैंनेदिनसनधी, अतिचारक्रियाहोय, उसकामिथ्याहुओमेरा
**ए जोमेदेवसिओ, अइयारोकओ तस्समिच्छामिदुक्कडं**
पाप, विचारकरताहू, गऊकीतरेफिरणेचरणेमे, भिक्षाकेवास्तेजोदोपलगाहो,
**पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिक्खायरिआए**
उघाडेकिमाडोंकेउघाडणेसैं, ओढालेहुयेको, विलाईगोगलमेंनघद्वारके, खोल
**उग्घाटकवाट उग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट**
णेमें, ढकणेपरनिकालाहुआभोजनमें, देवपूजावास्तेरखेअन्नमें, भिखारियो
**णाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ठवणापा**

वास्तेरखाअन्नसैं, आधाकर्मीशंकासैं, एकदम, विगरविचारेअन्नसैं, जीवजंतुकाविग
**हुडिआए, संकिएसहस्सागारे आणेसणाए पाणेस**
रदेखाहुआपाणीसैं, अन्नकेभोजनसैं, पाणीकेभोजनसैं वीजकेभोजनसैंदोपलगाहो
**णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए वीअभोयणाए**
हरीवनस्पतीकेभोजनसैं, आहारदियेवादकच्चेजलसैंहाथधोणेसैं, देणेकेपहलेकच्चेजलसैं
**हरियभोयणाए पच्छाकम्मियाए पुराकम्मिआए**
हाथधोणेसैं नजरसैंविनादेखेलेणेसैं, कच्चेजलसैंस्पर्शितआहारलेणेमैं, सचित्तमट्टीफरसते
**अदिट्ठहडाए दगसंसिट्ठहडाए रयसंसट्ठह**
आहारलेणेसैं, आहारदेतेनीचेगिरणेसैं, आहारपरठणेसैंदोपलगाहो, उत्तमवस्तुमांगके
**डाए पारिसाडनिआए पारिट्ठावणिआए ओहासण**
लेणेकीभिक्षासैं, जोउद्गमदोपकरके, कहकरआहारकराणेसैं, समस्तपणेअशुद्धआहारपाणी
**भिक्खाए, जंउग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं प**
ग्रहणकरनेसैं अथवाखायाहो, जोपरठणेयोग्यनहींपरठणेसैं, उसकामिथ्याहुओमेरापाप,
**डिग्गहियं परिभुत्तंवा जंनपरिट्ठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं**
प्रतिक्रमता[विचारता]हूं चारसमयकालकों, सूत्रअर्थरूपपढणागुणनानहींकरणेसैं, दोनों
**पडिक्कमामिचाउक्कालं, सिज्झायस्सअकरणयाए, उभओ**
काल पात्रादिकउपगरणके नहींपडिलेहणाकरणेसैं दुष्टपडिलेहणसैं नहींप्रमार्जणेसैं,
**कालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए**
दुष्टमनविगरप्रमार्जणेसैं, नहींकरणेयोग्यसैं, विधिउलंघणेसैं, अतीचार,
**दुप्पमज्जणाए, अइक्कमे, वइक्कमे, अइयारे,**
अनाचार, जोमैनैंदिनसंबंधी, अतीचारकियाहोय, उसकामिथ्याहु
**अणायारे जोमेदेवसिओ, अइयारोकओ तस्समिच्छा**
ओमेरापाप, विचारताहूं, एकप्रकारका, असंजमसैं प्रतिक्रमताहूं
**मिदुक्कडं, पडिक्कमामि, एगविहे, असंजमे पडिक्कमामि**
दो, बंधनोंसैं, रागस्नेहकेबंधनकरके, द्वेषकेबंधनकरके, प्रतिक्र
**दोहिं, बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडि**
मताहूं, तीन, दंडोंसैं, मनदंडकरके, वचनदंडकरकै, कायाकेदंडसैं,
**क्कमामि, तिहिं, दंडेहिं, मणदंडेणं, वयदंडेणं, कायदंडेणं.**

प्रतिक्रमताहु, तीनों, गुप्तियोंसें, मनगुप्तिसें, वचनगुप्तिसें, कायाकी
**पडिक्कमामि तिहिं, गुत्तिहिं मणगुत्तिए वयगुत्तिए कायगु**
गुप्तीसें, पीछाहटताहू, तीनसल्योंसें, कपटाईसल्यसें, तपकानियाणा
**त्तिए पडिक्कमामि तिहिंसल्लेहिं, मायासल्लेणं, नीयाणास**
सल्यसें, मिथ्यात्वदर्शनशल्यसेंदोषलगाहो, पीछाहटताहू, तीनगरूरीकरणेसें
**ल्लेण, मिच्छादंसणसल्लेण, पडिक्कमामि तिहिंगारवेहिं,**
ऋद्धि[मेंसिद्धपूजनीक]हू, सुझेरसमिलताहे, मेरीकायानिरोगहैऐसे ३गरूरसें,
**इड्ढीगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं**
पीछाहटताहू तीनविराधनासें, ज्ञानविराधनासें दर्शन[सम्यक्त]विराधनासें,
**पडिक्कमामि तिहिंविराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए**
चारित्रविराधनासें, पीछाहटताहू चारकषायोंसेंहुयेदोषोंसें, क्रो
**चारित्तविराहणाए, पडिक्कमामि चउहिंकसाएहिं, को**
धकषायसें, अहंकारकषायसें, कपटाईकषायसें, लोभकषाय
**हकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसा**
सें, पीछाहटताहू, चारोंही, सज्ञासें, आहारसज्ञासें
**एणं, पडिक्कमामि, चउहिं, सण्णाहिं आहारसण्णाए**
डरकीसज्ञासें, मैथुनसज्ञासें, परिग्रहकीसज्ञासें, पीछा
**भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए पडि**
हटताहू, चारों विकथाओंसें, स्त्रियोंकीकथासें, भोजनकीकथासें
**क्कमामि, चउहिं, विगहाहिं, इत्थिकहाए, भत्तकहाए,**
देसोंकीकथासें, राजाओंकीकथासें, पीछाहटताहू, चारों ध्यानोंमें
**देसकहाए, रायकहाए, पडिक्कमामि, चउहिं, झाणेहिं,**
आर्त्तधरसनधीध्यानमें परकूंठगणामारणाध्यानसें, धर्मवस्तुकेध्यानसें, शुद्ध
**अट्टेणंझाणेणं रूद्देणंझाणेण, धम्मेणंझाणेण सुक्के**
ध्यानमेंजोदोषलगाहो, पीछाहटताहू, पांचक्रियाओंसें, कायकीसें
**णंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिंकिरियाहिं काइयाए**
उत्सूत्रप्ररूपणाकरणेसें, जादाद्वेषकरणेसें, आत्मघातकरणेकीक्रियासें, प्राणी
**अहिगरणियाए पाउसिआए पारितावणिआए पाणा**

जीवोंकीमारणेकीक्रियासैं, पीछाहटताहूं पांचकामगुणोंसेंहुयेदोषोंसैं, शब्दसैं,
**यवायकिरिआए पडिक्कमामि पंचहिंकामगुणेहिं सद्देणं**
रूपसैं छरससैं गंधसैं स्पर्शसैं पीछाहटताहूं पांचमहाव्रत
**रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिंम**
केहुयेदोषोंसैं, प्राणीजीवोंकेमारणेसैंअलगहोणा, झूठबोलणेसैंअलगहोणा
**हव्वएहिं पाणाइवायाओवेरमणं मुसावायाओवेरमणं**
विनादातारकेदियेलेणेसैंअलगहोणा, मैथुनसैंअलगहोणा परिग्रहप्रकारसैं
**अदिन्नादाणाओवेरमणं मेहुणाओवेरमणं परिग्गहाओ**
अलगहोणा, पीछाहटताहूं पांच समितिसैं रस्तेकीसमितिसैं बोल
**वेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरियासमिईए भा**
णेकीसमितिसैं, आहारलेणेकीसमितिसैं, लेतेपात्रप्रमुख रखते[धरते]
**सासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्त निक्खेवणा**
समितिसैं, लघुनीति,वडनीति;थूक,खंखार,मैल,नाककामैल, गेरणेकीवख्त
**समिईए, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाण पारिट्ठावणि**
समितिसैं, पीछाहटताहूं, छव जीवनिकायासैं पृथ्वीकायासैं
**यासमईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं**
अप्पकायासैं तेज[अग्नि]कायासैं, वायूकायासैं, वनस्पतिकायासैं
**आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं**
त्रसकायासैंदोषलगाहो, पीछाहटताहूं, छव लेस्यासैं, कृष्णमनपरि
**तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिंलेसाहिं किन्हलेसा**
णामसैं, नीलपरिणामसैं, कापोतपरिणामसैं, तेजपरिणामसैं, पद्मपरिणामसैं,
**ए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए**
शुक्लपरिणामसैं, पीछाहटताहूं, सात भयकेठिकाणेसैं, आठमदके
**सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयट्ठाणेहिं अट्ठहिं**
ठिकाणेसैं नवब्रह्मचर्यकीगुप्तिसैं दशप्रकारकेसाधूधर्मसैं,
**मयट्ठाणेहिं नवहिंबंभचेरगुत्तीहिं दसविहेसमणधम्मे**
इग्यारे श्रावकोंकीप्रतिमामैं दोषलगाहोय बारेसाधुओंकी प्रतिमासैं
**एगार सहिंउवासगपडिमाहिं बारसहिंभिक्खु पडिमाहिं**

तेरेक्रियाकेस्थानोसें चवदेजीवोकेसमूहोंसे, पनरे
**तेरसहिंकिरियाठाणेहिं चउदसहिंभूयगामेहिं पण्णरसएहिं**
परमाधार्म्मिकदेवोसें, सोलेसुयगडांगसूत्रप्रथम१६गाथासें, सतरेप्र
**परमाहम्मिएहिं सोलसएहिंगाहाहिं सतरसविहे**
कारअसजमसें, अठारेप्रकारकेअब्रह्मचर्यसें उगणीसज्ञातासूत्रकेअध्ययनोंसें
**असंजमे अट्ठारसविहेअबंभे इगुणवीसाएनायझयणेहिं**
वीसअसमाधिस्थानकोसें इकवीससबलचारित्रकेदोषोंसें
**वीसाएअसमाहिठाणेहिं, इकवीसाएसबलेहिं,**
बाईसपरीषहोंसेंदोषलगाहो, तेवीससुयगडांगकेअध्ययनोंसें चउवीस
**बावीसाएपरीसहेहिं, तेवीसाएसुयगडझयणेहिं, चउवी,**
अरिहंतोसें पचवीसपचमहाव्रतोंकीभावनासें, छाईसदशाश्रुत
**साएअरिहंतेहिं पचवीसाएभावणाहिं छव्वीसाएदसा**
स्कंध,कल्पव्यवहारसें, उद्देसणकालसेंदोष सत्ताईसअणगारकेगुणोंमेंदो
**कप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्तावीसाएअणगा**
षलगाहोय, अठाईसआचारप्रकल्पमेंदोषलगाहो गुणतीसपापश्रुत
**रगुणेहिं अट्ठावीसाएआयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए**
शास्त्रकेप्रसंगसेंदोषलगाहो, तीसमोहनीकेस्थानमेंदोषलगाहोय, इकतीससिद्धोंके
**पावसुअप्पसगेहिं तीसाएमोहणीअट्ठाणेहिं इगतीसाए**
गुणोंमेंदोषलगाहोय, ३२योगमप्रहमेंदोषलगाहोय ३३गुरूकीआशात
**सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाएजोगसंगहेहिं तित्तीसाएआ**
नामेंदोषलगाहोय, अरिहंतोंकीआशातनासें, सिद्धोंकीआशातनासेंदोष
**सायणाए अरिहंताणआसायणाए सिद्धाणंआसाय**
लगाहो, आचार्योंकीआशातनासेंदोषलगाहोय, उपाध्यायोंकीआशातनामें
**णाए आयरिआणंआसायणाए उवझायाणआसाय**
दोषलगा, साधुओंकीआशातनासें साधवियोंकीआसातनासेंदोषलगाहोय
**णाए साहूणंआसायणाए साहुणीणंआसायणाए**
श्रावकोंकीआशातनासें श्रावकणियोंकीआशातनासें देवतोंकी
**सावयाणंआसायणाए सावियाणंआसायणाए देवाण**

आशातनासैं, देवियोंकीआशातनासैंदोप, इसलोककीआशातनासैं
**आसायणाए देवीणंआसायणाए इहलोगस्सआसा**
दोषलगा, परलोककीआशातनासैंदोपलगा, केवलीप्ररूपितधर्मकी
**यणाए परलोगस्सआसायणाए केवलिपन्नत्तस्स**
आशातनासैंदोपलगाहोय देवलोक मनुष्यलोक असुरलोककीआशा
**धम्मस्सआसायणाए सदेवमणुआसुरस्सलोगस्स**
तनासैंजोदोपलगाहोय, सर्व्वप्राणभूत जीव सत्वोंकीआशातनासैंदोप
**आसायणाए सव्वपाणभूअ जीव सत्ताणंआसायणा**
लगा, कालकी आशातनासैंदोपलगा श्रुतजिनोक्तकी आशातनासैं, श्रुत
**ए, कालस्स आसायणाए सुअस्स आसायणाए सु**
देवताकी आशातनासैंजोदोपलगा, वाचनाचार्यकी आशातनासैंजोदोपल
**यदेवयाए आसायणाए वायणारिअस्स आसाय**
गा, सूत्रकूंआगापीछा, दोतीनवख्तसूत्रकूंबोलाहो, कमअक्षरबोलाहो,
**णाए जंवाइद्धं वच्चामेलिअंहीनक्खरिअं अच्च**
जादाअक्षरबोलाहो, पदकमबोलाहो, विनयहीनपढाहो, योगतपविगर, उदात्त
**क्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोस**
स्वरहीण, अच्छीतरेंदियापाठ, दुष्टपणेअंगीकारकियाहो, अकालमेंकिया
**हीणं सुट्ठुदिन्नं दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकओ**
पढनागुणना, कालमेंनहींकियापढणागुणना, असझाईकीवख्त पढना
**सज्झाओ कालेनकओसज्झाओ असज्झाइए स**
कराहो, स्वाध्यायकी वख्तनहींस्वाध्यायकरा, उसकामिथ्याहुओमेरापाप
**ज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्समिच्छामिदुक्कडं**
नमस्कारहोचउवीस तीर्थंकरोंकों ऋषभादिक महावीर
**णमोचउवीसाए तित्थयराणं उसभाई महावीरप**
स्वामीपर्यंतोकूं निग्रंथकाद्वादशांग सत्य इसकेजैसानहींदुसरा,
**ज्जवसाणाणं इणमेवनिग्गंथंपावयणं सच्चं अनुत्तरं**
केवलीकथितप्रतिपूर्ण, न्याययुक्त शुद्ध सत्यकाटणे
**केवलियंपडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्त**

वाला सिद्धिकामार्ग मुक्तिकामार्ग सुखअनतकामार्ग मोक्षका
णं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाण
मार्ग नहीअसत्यनिच्छेदरहित, सर्व्वदुःखोंकेनासकरणेकामार्ग
मग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं
इसमेंरहेजीव, सिद्धहोतेहैं, बुद्धहोतेहैं, छुटतेहैं, समस्तपणेपीछे
इत्थठियाजीवा, सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वा
जन्मनहीलेते, सर्व्वदुःखोंकाअतकरतेहैं, उसधर्मकोसर्दहताहू प्रतीति
यंति, सव्वदुक्खाणमंतंकरंति तधम्मंसद्दहामि पत्ति
कर्त्ताहू, रुचिसैंधारताहू, फरसताहू, पालताहू, पूर्वपुरुषोकेतरेपालताहू उस
यामि, रोएमि, फासेमि पालेमि, अणुपालेमि, तं
धर्मकों, सर्दहता, प्रतीतिकरता, रुचताहुआ, फरसता पालता पूर्वपु
धम्मं, सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासतो पालंतो अ
रुषोकेतरेपालता, उसधर्मकों केवलीप्ररूपितधर्मकों उठाहूसम
णुपालंतो तस्सधम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठि
स्तपणे आराधनाकेवास्ते दूरहोताहू निराधनाकरकै असज
ओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असं
मकूसमस्तपणेजाणताहू, सजमकूअगीकारकर्त्ताहू अब्रह्मचर्य
जमंपरिआणामि, संजमंउवसंपज्जामि अबंभंप
कूसमस्तपणेजाणताहू, ब्रह्मचर्यकूअगीकारकर्त्ताहू, नहींकरणेयोग्यकृत्य
रिआणामि बंभंउवसंपज्जामि, अकप्पंपरिआणा
जाणताहू, करणेयोग्यकृत्यअगीकारकर्त्ताहू अज्ञानकूसमस्तपणेजाणताहू
मि कप्पंउवसंपज्जामि अन्नाणंपरिआणामि
ज्ञानकूअगीकारकर्त्ताहू अक्रियाकोंसमस्तपणेजाणताहू क्रियाको
नाणंउवसंपज्जामि अकिरियंपरिआणामि किरियं
अगीकारकर्त्ताहू मिथ्यात्वकोंसमस्तपणेजाणताहू सम्यक्तकोअगी
उवसपज्जामि मिच्छत्तंपरिआणामि सम्मत्तंउवस

कारकर्त्ताहूं अबोधकूंसमस्तपणेजाणताहूं बोधकोंअंगीकारकर्त्ता
**पज्जाभि, अबोहिंपरिआणामि बोहिंउवसंपज्जा**
हूं अमार्गकोंसमस्तपणेजाणताहूं मार्गकूंअंगीकारकर्त्ताहूं जो
**म्मि अमग्गंपरिआणामि मग्गंउवसंपज्जामि जं**
यादकरलिया औरजोनहींयादआया, जिसकोंविचारसेंनिवर्त्तताहूं, ओरजो
**संभरामि जंचनसंभरामि जंपडिक्कमामि जंचन**
नहीनिवर्त्ता[हटा] उनसबोंका दिनसंबंधीपक्षीचोमासी संवत्सरीअतीचारोंकों
**पडिक्कमामि तस्ससव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स**
प्रतिक्रमताहूं, साधूहूंमैं संजती, विरक्त समस्तहणा
**पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय**
त्यागकिया पापकर्म्म, नियाणारहित तत्वरूपनजरयुक्तहूं
**पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो**
कपट झूठ विवर्जित हूं

**मायामोसविवज्जिओ अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु जावंतिकेविसाहू रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठार सहस्स सीलांगधारा अक्खयआयारचरित्ता तेसव्वे सिरसा मणसा मत्थ एणवंदामि, खामेमिसव्वजीवे सव्वेजी वा खमंतुमे मित्तिमेसव्वभूएसु वेरंमज्झनकेणई १ एवमहं आलोइय निंदियगरहिय दुगंच्छियं सम्मं तिविहेणपडिक्कंतो वंदामिजिणेचउव्वीसं २ इति साधु प्रतिक्रमणसूत्रं ॥**

---